FAIZANE UMMAHATUL MOMINEEN (HINDI)

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के फ़ज़ाइले मुबारका, ह़याते मुक़द्दसा और बे शुमार मदनी फूलों पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ

DAWAT-E-ISLAMI

(دعوتِ اسلامی)
शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتھم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **'उर्दू'** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **'हिन्दी' रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءٔ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ के फ़ज़ाइल और
पाकीज़ा ह़यात के बयान पर मुश्तमिल, मदनी फूलों से
मा'मूर एक मुफ़स्सल और तख़्रीज शुदा किताब

फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात

-: नाशिर : -

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ یَا حَبِیۡبَ اللہ

नाम किताब : फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ

पेशकश : शो'बए फ़ैज़ाने सहाबियात व सालिहात
(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

पहली बार : ज़िल क़ा'दा 1436 हि. ब मुताबिक़ सितम्बर 2015 ई.

ता'दाद : 3000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 29 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि.   हवाला नम्बर : 198

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब '**फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ' (मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के हवाले से मक़दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
22-12-2014

www.dawateislami.net
E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़	6	सीरते हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	134
पेशे लफ़्ज़	8	सीरते हज़रते ज़ैनब बिन्ते जहश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	188
उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ	11	सीरते हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	230
सीरते हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	26	सीरते हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	256
सीरते हज़रते सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	41	सीरते हज़रते सफ़िया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	285
सीरते हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	68	सीरते हज़रते मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	318
सीरते हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	94	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	343
सीरते हज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	119		

अपने नफ़्स को लोगों से बदला लेने में मश्ग़ूल न करो कि इस तरह नुक़्सान ज़ियादा होगा और इस में मश्ग़ूल रहने की वज्ह से उम्र भी ज़ाएअ़ होगी ।

[احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفة والاخوة، الباب الثالث فی حق المسلم...الخ، ۲/۲٦۳]

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

'उम्महातुल मोमिनीन' के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 13 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، ۳/۵۲۰، الحدیث: ۵۸۰۹)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (दिल में निय्यत होने की सूरत में इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुतालआ़ करूंगा। (8) क़ुरआनी आयात व अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (9) जहां जहां '**अल्लाह**' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां '**सरकार**' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (11) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (12) इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (13) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** *रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस '**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम کثرھم اللہ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजुमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़रीज

'**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सहल उस्लूब में पेश करना है।

www.dawateislami.net

तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह्क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **'दा'वते इस्लामी'** की तमाम मजालिस ब शुमूल **'अल मदीनतुल इल्मिय्या'** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

वस्वसे के लफ़्ज़ी मा'ना

'वस्वसा' के लुग़वी मा'ना हैं : 'धीमी आवाज़' शरीअ़त में बुरे ख़यालात और फ़ासिद फ़िक्र (या'नी बुरी सोच) को वस्वसा कहते हैं। (اشعۃ ج۱ص۳۰۰).

'तफ़्सीरे बग़वी' में है : वस्वसा उस बात को कहते हैं जो शैत़ान इन्सान के दिल में डालता है।

(تفسیر بغوی ج٤ص١٨٠٥، ١٢٧)

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

वोह खुश नसीब ख़्वातीन जिन्हें सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे गफ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शरफ़े ज़ौजिय्यत से नवाज़ा, कुरआने करीम ने उन्हें मोमिनों की माएं क़रार दिया है। खुदाए ज़ुल जलाल ने अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक अज़्वाज को बेहतरीन अवसाफ़ से नवाज़ा था, अह़कामे शरअ़ की पासदारी, तक़्वा व परहेज़गारी, ज़ोह्दो इबादत अल ग़रज़ ऐसे बे शुमार अवसाफ़ हैं जो इन्हें दुन्या जहान की सब औ़रतों से नुमायां और ऊंचे मक़ाम पर फ़ाइज़ कर देते हैं और येह दर ह़क़ीक़त प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत और तर्बिय्यत का ही असर था कि इन्हें इस क़दर बुलन्द मक़ाम व रुत्बा ह़ासिल हुवा और इन की पाकीज़ा ह़यात के शबो रोज़ क़ियामत तक के लोगों के लिये बेहतरीन नुमूना क़रार पाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के फ़ैज़ान से उम्मत को माला माल फ़रमाए (आमीन)।

याद रखिये कि इस्लामी बहनें इन नेक व पारसा हस्तियों की सीरत के सांचे में ढल कर बिल ख़ुसूस घरों को अम्न का गहवारा बनाने और बिल उ़मूम पूरे मुआ़शरे को सुधारने में अहम किरदार अदा कर सकती हैं लिहाज़ा इन नुफ़ूसे कुदसिय्या का फ़ैज़ान ज़ियादा से ज़ियादा आ़म करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने इस्लाह़ी नहज के मुत़ाबिक़ इस मौज़ूअ़ पर काम का बीड़ा उठाया जो अब तक्मील व इशाअ़त के मराह़िल त़ै कर के आप के हाथों में पहुंच चुका है। तफ़्सील कुछ इस त़रह़ है :

www.dawateislami.net

- इख़्तिलाफ़ से सर्फ़े नज़र करते हुवे सिर्फ़ उन सहाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ का ज़िक्र किया गया है जिन का हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे पाक की फ़ेहरिस्त में शामिल होना सब के नज़्दीक साबित व मुसल्लम (तस्लीम शुदा) है और येह कुल ग्यारह नुफ़ूसे कुदसिय्या हैं।
- किताब को बारह अबवाब में तक़्सीम किया गया है, पहला बाब इजतिमाई त़ौर पर तमाम उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ाइल व मसाइल पर मुश्तमिल है और बक़िय्या ग्यारह अबवाब बित्तरतीब ग्यारह उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की सीरते त़य्यिबा पर मुश्तमिल हैं।
- हर बाब की तरतीब इस अन्दाज़ में की गई है कि गोया वोह अलग से एक रिसाला है इस लिये मा'दूदे चन्द मक़ामात पर मज़ामीन का तकरार ना गुज़ीर है।
- किताब में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए अव्वल ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और ज़ौजए दुवुम ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सीरत हुसूले बरकत के लिये और तक्मीले मौज़ूअ़ की ख़ातिर मुख़्तसर त़ौर पर बयान की गई है क्यूंकि इन पर शो'बे की अलग से दो किताबें '**फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا' और '**फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا' मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) के शो'बे '**फ़ैज़ाने सहाबियात व सालिहात**' के कुल पांच इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआ़दत हासिल की बिल ख़ुसूस मुहम्मद

www.dawateislami.net

खुर्रम शहज़ाद अ़त्तारियुल मदनी, मुह़म्मद शहज़ाद अम्बर अ़त्तारियुल मदनी और मुह़म्मद आ़दिल अ़त्तारियुल मदनी ने ख़ूब कोशिश की। इस में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद व तौफ़ीक़, उस के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब, हुज़ूर अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायत और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़रे शफ़्क़त का समरा है और ख़ामियों में हमारी कोताहियों का दख़्ल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि वोह **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। उन्हें दिन पच्चीसवीं और रात छब्बीसवीं तरक़्क़ियां अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

ह़सद की ता'रीफ़

किसी की ने'मत छिन जाने की आरज़ू करना।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24 स. 428)

मसलन किसी शख़्स की शोहरत या इ़ज़्ज़त है अब येह आरज़ू करना कि उस की इ़ज़्ज़त या शोहरत ख़त्म हो जाए। अलबत्ता दूसरे की ने'मत का ज़वाल (या'नी ज़ाएअ़ हो जाना) न चाहना बल्कि वैसी ही ने'मत की अपने लिये तमन्ना करना येह **ग़िबत़ा** (या'नी रश्क) कहलाता है और येह शरअ़न जाइज़ है। (त़रीक़ए मुह़म्मदिय्या, जि. 1 स. 610)

www.dawateislami.net

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द हम्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "اُدْعُ تُجَبْ وَسَلْ تُعْطَہ दुआ मांग ! क़बूल की जाएगी, सुवाल कर ! दिया जाएगा।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

निकाह़ सुन्नते अम्बिया है। शैख़े मुह़क़्क़िक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा और ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या (عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने निकाह़ फ़रमाया।(2) हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी कई ह़िक्मतों के पेशे नज़र मुतअ़द्दिद निकाह़ फ़रमाए।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की ता'दाद

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितने निकाह़ फ़रमाए और उन खुश नसीब ख़्वातीन की ता'दाद क्या है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक हो कर उम्महातुल मोमिनीन के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ हुईं....? इस सिलसिले में जिन पर सब का इत्तिफ़ाक़ है वोह ग्यारह सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ हैं।

(1) ...سنن النسائی، کتاب السھو، باب التمجید والصلاۃ...الخ، ص۲۲۰، الحدیث:۱۲۸۱
(2) ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم درذ کرِ ازواجِ مطہرات رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ، ۲/۴۶۲.

www.dawateislami.net

इन में से छे[6] तो क़बीलए क़ुरैश के ऊंचे घरानों की चश्मो चराग़ थीं, जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1)...ह़ज़रते ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (2)...ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (3)...ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (4)...ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान (5)...ह़ज़रते उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या (6)...ह़ज़रते सौदह बिन्ते ज़मआ़ (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)

चार का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से नहीं था बल्कि अ़रब के दूसरे क़बाइल से तअ़ल्लुक़ रखती थीं, वोह येह हैं : (1)...ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श (2)...ह़ज़रते मैमूना बिन्ते ह़ारिस (3)...ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (4)...ह़ज़रते जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ)

और एक ग़ैर अ़रबिय्या थीं, बनी इसराईल से तअ़ल्लुक़ था। येह ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते हुय्य رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا क़बीलए बनी नुज़ैर से थीं।

इन ग्यारह में से दो अज़्वाजे मुत़ह्हरात ह़ज़रते ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद और ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) तो रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में ही दारे आख़िरत को कूच कर गई थीं जब कि बक़िय्या नव अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इन्तिक़ाल फ़रमाया।[1]

(1)...المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ۱/۴۰۱.

www.dawateislami.net

चार[4] से ज़ियादा औरतें निकाह में रखना

वाज़ेह रहे कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले भी अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आ़म लोगों की निस्बत ज़ियादा शादियों की इजाज़त दी गई थी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी इस बाब में वुस्अ़त व कुशादगी अ़ता हुई,

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۟ۙ ﴿۳۸﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *नबी पर कोई हरज नहीं इस बात में जो* ***अल्लाह*** *ने उस के लिये मुक़र्रर फ़रमाई* ***अल्लाह*** *का दस्तूर चला आ रहा है इन में जो पहले गुज़र चुके और* ***अल्लाह*** *का काम मुक़र्रर तक्दीर है।*

सदरुल अफ़ाज़िल, बदरुल अमासिल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को बाबे निकाह़ में वुस्अ़तें दी गईं कि दूसरों से ज़ियादा औ़रतें इन के लिये ह़लाल फ़रमाईं जैसा कि ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की सो बीबियां और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام की तीन सो बीबियां थीं। येह इन के ख़ास अह़काम हैं इन के सिवा दूसरों को रवा नहीं न कोई इस पर मो'तरिज़ हो सकता है, **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दो में जिस के लिये जो हुक्म फ़रमाए उस पर किसी को ए'तिराज़ की क्या

www.dawateislami.net

मजाल ? इस में यहूद का रद्द है जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर चार से ज़ियादा निकाह़ करने पर ता'न किया था इस में उन्हें बताया गया कि येह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ास है जैसा कि पहले अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के लिये ता'दादे अज़्वाज में ख़ास अह़काम थे ।(1)

निकाह़ की ह़िक्मतें

याद रखना चाहिये कि सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो मुतअ़द्दिद निकाह़ फ़रमाए और मुतअ़द्दिद ख़वातीन को शरफ़े ज़ौजिय्यत से नवाज़ा इन में सियासी व क़ौमी और दीनी ह़वाले से बहुत सारी ह़िक्मते पाई जाती थीं, مَعَاذَ اللہ कोई निकाह़ किसी नफ़्सानी जज़्बे और ख़्वाहिश की बिना पर हरगिज़ नहीं था । चुनान्चे, शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ियादा तर जिन औ़रतों से निकाह़ फ़रमाया, वोह किसी न किसी दीनी मस्लह़त ही की बिना पर हुवा, कुछ औ़रतों की बे कसी पर रह़्म फ़रमा कर और कुछ औ़रतों के ख़ानदानी ए'ज़ाज़ व इकराम को बचाने के लिये, कुछ औ़रतों से इस बिना पर निकाह़ फ़रमा लिया कि वोह रन्जो अलम के सदमों से निढाल थीं, लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के ज़ख़्मी दिलों पर मर्हम रखने के लिये उन को ए'ज़ाज़ बख़्श दिया कि अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात में उन को शामिल फ़रमा लिया । हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इतनी औ़रतों से निकाह़ फ़रमाना हरगिज़ हरगिज़ अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सी की बिना पर नहीं था, इस का सब से बड़ा सुबूत येह

1....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़तुल आयत : 38, स. 783

www.dawateislami.net

है कि हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बीवियों में ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا के सिवा कोई भी कंवारी नहीं थीं बल्कि सब उ़म्र दराज़ और बेवा थीं ह़ालांकि अगर हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ख़्वाहिश फ़रमाते तो कौन सी ऐसी कंवारी लड़की थी जो हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से निकाह़ करने की तमन्ना न करती मगर दरबारे नबुव्वत का तो येह मुआ़मला है कि शहनशाहे दो आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का कोई क़ौल फ़े'ल, कोई इशारा भी ऐसा नहीं हुवा जो दुन्या और दीन की भलाई के लिये न हो, आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने जो कहा और जो किया सब दीन ही के लिये किया बल्कि आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने जो कहा और किया वोही दीन है बल्कि आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ाते अकरम ही **मुजस्समे दीन** है ।[1] यहां इन निकाह़ों की बरकत से ह़ासिल होने वाले कसीर दर कसीर फ़वाइद और इन में पाई जाने वाली ह़िक्मतों में से चन्द का ज़िक्र किया जाता है :

अह़कामे शरीअ़त की तब्लीग़ो इशाअ़त : हुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के मुतअ़द्दिद निकाह़ फ़रमाने में एक बहुत बड़ी ह़िक्मत येह थी कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن के ज़रीए़ ख़ुसूसन ख़्वातीन को इस्लामी ता'लीमात से आगाह किया जाए और उन्हें अह़कामे शरीअ़त से रू शनास किया जाए क्यूंकि इस्लाम दीने कामिल है, येह ज़िन्दगी के हर गोशे व शो'बे में अपने मानने वालों की रहनुमाई करता है और इन्हें ज़िन्दगी गुज़ारने का ढंग सिखाता है । इस तनाज़ुर में बहुत से निस्वानी

1 ....जन्नती ज़ेवर, स. 408

www.dawateislami.net

पहलू ऐसे भी आते हैं जिन्हें हर किसी के सामने खुल कर बयान करने में ह़या मानेअ़ होती है लेकिन शरई नुक्त़ए नज़र से इन का जानना ज़रूरी भी है ताकि फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तह़ब्बात की बेहतर त़ौर पर बजा आवरी हो सके। उम्मत के इन मसाइल से आगाह होने का बेहतरीन त़रीक़ा येह था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुतअ़द्दिद औ़रतों से निकाह़ फ़रमा कर उन की ता'लीमो तर्बिय्यत करें और येह ज़ियादा से ज़ियादा औ़रतों को इस इ़ल्म से बहरा वर करें, इस त़रह़ तब्लीग़े दीन का येह फ़रीज़ा जल्द अज़ जल्द अन्जाम पज़ीर हो। इस ह़वाले से उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ का किरदार बहुत अहम रहा है। दीगर सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर शरई अह़काम का इ़ल्म ह़ासिल करतीं और पेश आमदा मसाइल का ह़ल दरयाफ़्त करतीं और येह रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछ कर उन्हें बता देतीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शहाबुद्दीन सय्यिद मह़मूद आलूसी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی इसी ह़िक्मत की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाते हैं :

لِتَكَثُّرِهِ النِّسَاءَ حِكْمَةٌ دِيْنِيَّةٌ جَلِيْلَةٌ اَيْضًا وَ هِيَ نَشْرُ الْاَحْكَامِ الشَّرْعِيَّةِ لَا تَكَادُ تُعَلَّمُ اِلَّا بِوَاسِطَتِهِنَّ

ह़ुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कसरते अज़्वाज में एक अ़ज़ीम दीनी ह़िक्मत येह भी है कि इस से उन अह़कामे शरइय्या को आ़म किया जाए जो इन्हीं के ज़रीए़ सिखाए जा सकते हैं।"(1)

---

1 ...روح المعانی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۵۱، ۲۲/۳۲۸.

www.dawateislami.net

गलत् रुसूमात का ख़ातिमा : एक हिक्मत येह थी कि दौरे जाहिलिय्यत में फ़रोग़ पाई हुई ग़लत् रुसूमात की काट हो और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंका जाए। मसलन जाहिलिय्यत के दस्तूर के मुत़ाबिक़ मुंह बोले बेटे को भी ह़क़ीक़ी और अस्ली बेटे की त़रह़ समझा जाता था और इस की मुत़ल्लक़ा (त़लाक़ याफ़्ता) या बेवा से निकाह़ को ह़राम समझा जाता था। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़क़्दे ज़ौजिय्यत में क़बूल फ़रमाने से जाहिलिय्यत के इस दस्तूर का ख़ातिमा हो गया क्यूंकि ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से त़लाक़ याफ़्ता थीं और ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कमाले शफ़्क़त व मेहरबानी फ़रमाते हुवे अपना बेटा फ़रमाया था। बहर ह़ाल इस तमाम तर सूरते ह़ाल से उम्मत पर येह बात वाज़ेह़ हो गई कि ले पालक और मुंह बोले बेटे के वोह अह़काम नहीं होते जो ह़क़ीक़ी बेटे के होते हैं और दौरे जाहिलिय्यत की वोह मज़्मूम रस्म मिट गई।[(1)]

मुख़्लिस व जांनिसार अस्ह़ाब की ह़ौसला अफ़्ज़ाई : बा'ज़ शादियों के ज़रीए़ अपने बा'ज़ मुख़्लिस व जांनिसार अस्ह़ाब की ह़ौसला अफ़्ज़ाई और हिम्मत बन्धाई फ़रमाई और उन्हें उन की ख़िदमत का सिला अ़त़ा फ़रमाते हुवे शरफ़े मुसाहरत से नवाज़ा। जी हां ! उम्मती के लिये येह बहुत बड़ी सआ़दत है कि कौनैन के वाली صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

1 ....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब 'सीरते उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا' का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

इसे मुसाहरत का शरफ़ ह़ासिल हो जाए बल्कि उ़श्शाक़ का तो येह ह़ाल है कि

इतनी निस्बत भी मुझे दोनों जहां में बस है
तू मेरा मालिको मौला है मैं बन्दा तेरा (1)

और

ज़ाहिद उन का मैं गुनहगार वोह मेरे शाफ़ेअ़
इतनी निस्बत क्या कम है तू समझा क्या है (2)

आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जांनिसारी व वफ़ा शिआ़री से कौन वाक़िफ़ नहीं, जब लोगों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया इन्हों ने तस्दीक़ की और राहे इस्लाम में अपना तन मन धन सब कुछ क़ुरबान कर दिया चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की साहिबज़ादी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपनी ज़ौजिय्यत में क़बूल फ़रमा कर इन्हें उस अ़ज़ीम शरफ़ व फ़ज़ीलत से नवाज़ा जिस पर ज़माना रश्क करता है। नीज़ ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ निकाह़ से ख़वातीन को इस्लामी ता'लीमात से आगाह करने और इन्हें अह़कामे शरीअ़त से रू शनास करने का मक़्सद भी ब ख़ूबी अन्जाम पज़ीर हुवा क्यूंकि इल्मी शानो शौकत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सब अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ पर फ़ौक़िय्यत ह़ासिल हुई और अह़कामे शरीअ़त का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा उम्मत तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वासित़े से पहुंचा।

---

1 ....ज़ौक़े ना'त, स. 14

2 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171

www.dawateislami.net

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग और अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन ज़ोहरी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं :

لَوْ جُمِعَ عِلْمُ عَائِشَۃَ اِلٰی عِلْمِ اَزْوَاجِ
النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَعِلْمِ جَمِیْعِ النِّسَاءِ لَکَانَ عِلْمُ عَائِشَۃَ اَفْضَلَ

अगर ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا के इ़ल्म के मुक़ाबले में दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن और तमाम औ़रतों का इ़ल्म जम्अ़ कर लिया जाए तब भी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا के इ़ल्म का पल्ला भारी निकलेगा।"(1)

ग़ुलामी से आज़ादी : बा'ज़ निकाहों से येह फ़ाइदा ह़ासिल हुवा कि जिस क़बीले में आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने निकाह़ फ़रमाया उस क़बीले के तमाम अफ़राद जो मुसलमानों के पास ग़ुलाम थे, आज़ाद कर दिये गए। इस का मुख़्तसर वाक़िआ येह है कि जब क़बीलए बनी मुस्त़लक़ के लोगों ने मुसलमानों पर चढ़ाई करने की तय्यारियां शुरूअ़ कीं तो इत्तिफ़ाक़न मुसलमानों को भी इस की ख़बर पहुंच गई। पहले तो इस ख़बर की तस्दीक़ के लिये ह़ज़रते बुरैदा बिन हुसैब رضی اللہ تعالٰی عنہ को बनी मुस्त़लक़ की त़रफ़ भेजा गया जब इन्हों ने देखा कि वाक़ेई मुसलमानों

---

(1)...الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، کتاب النساء وکناھن، باب العین، ۴/۱۸۸۳.

नोट : तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब 'फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا' के अबवाब (1) : सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا की इ़ल्मी शानो शौकत (2) : सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا ब ह़ैसिय्यते मुफ़स्सिरा और (3) : सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا ब त़ौरे मुह़द्दिसा व मुफ़्तिया का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

पर ह़म्ला करने के लिये एक बड़ा लश्कर तय्यार किया जा रहा है तो आ कर रसूले अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को बताया । आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़ितना परदाज़ कुफ़्फ़ार को उन के नापाक अ़ज़ाइम से रोकने के लिये मुसलमानों को उन से जंग के लिये बुलाया । शम्ए़ रिसालत के परवाने जान की बाज़ी लगाने के लिये फ़ौरन मैदान में उतर आए । **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई । बहुत सारा माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया और बनी मुस्त़लक़ के सेंकड़ों लोग क़ैदी बना लिये गए । सरदारे क़बीला की बेटी जिस का नाम बर्रह था फिर प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तब्दील फ़रमा कर जुवैरिय्या रखा, इस्लाम ले आई और आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया । जब सह़ाबए किराम علیہم الرضوان को इस निकाह़ की ख़बर हुई तो इन शम्ए़ रिसालत के परवानों को येह बात गवारा न हुई कि जिस क़बीले में मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم निकाह़ फ़रमाएं उस क़बीले के लोग इन की ग़ुलामी में रहें चुनान्चे, इन्हों ने क़बीले के तमाम लोगों को येह कह कर आज़ाद कर दिया कि येह हमारे प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अस्हार (सुस्राली रिश्तेदार) हैं ।[1]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की शानो अ़ज़मत

अल्लाह عزّوجلّ ने इन्हें बहुत बुलन्द मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है । फ़रमाने रब्बानी है :

1 ....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब 'सीरते उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते जुवैरिय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا' का मुत़ालआ़ कीजिये ।

www.dawateislami.net

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ (پ۲۲، الاحزاب:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ नबी की बीवियों तुम और औ़रतों की त़रह़ नहीं हो ।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِى इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : (या'नी) तुम्हारा मर्तबा सब से ज़ियादा है और तुम्हारा अज्र सब से बढ़ कर, जहान की औ़रतों में कोई तुम्हारी हमसर नहीं ।(1)

ह़ुरमते निकाह़ और अदबो एह़तिराम के सिलसिले में इन्हें तमाम मोमिनीन की माएं क़रार दिया गया है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को इन से निकाह़ करना ह़लाल नहीं और इन का अदबो एह़तिराम मां बल्कि इस से भी बढ़ कर है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ (پ۲۱، الاحزاب:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है और इस की बीवियां उन की माएं हैं ।*

अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद आलूसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं (कि इन का मोमिनीन की माएं होना दो हुक्मों में हैं) :

(1)...निकाह़ के ह़राम होने में ।

(2)...ता'ज़ीम की ह़क़दार होने में ।

---

1 ....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 32, स. 780

www.dawateislami.net

इस के इलावा दूसरे अह्काम मसलन विरासत और पर्दा वग़ैरा के सिलसिले में इन का वोही हुक्म है जो अजनबी औ़रतों का। नीज़ (शरई अह्काम में) इन की बेटियों को मोमिनीन की बहनें और इन के भाइयों को मोमिनीन के मामूं न कहा जाएगा।(1)

इत़ाअ़त और नेक आ'माल पर इन के लिये आ़म लोगों की निस्बत दुगना सवाब है।

कुरआने करीम में है :

وَ مَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝۳۱

(پ۲۲، الاحزاب:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो तुम में फ़रमां बरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना (दुगना) सवाब देंगे और हम ने उस के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है।

इन के लिये गुनाहों की नजासत से आलूदा न होने की बिशारत है।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝۳۳

(پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालों कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस आयत की तफ़्सीर करते हुवे फ़रमाते हैं :

1 ...روح المعانی، پ۲۱، الاحزاب، تحت الآیۃ:۶، ۲۱/۲۰۲، ملتقطا.

www.dawateislami.net

इस त़रह़ कि तुम को गुनाहों और बद अख़्लाक़ियों की नजासत में आलूदा न होने दे। येह मत़लब नहीं कि مَعَاذَ الله अब तक गुनाह थे अब पाकी अ़त़ा हुई। इस आयत से दो[2] मस्अले मा'लूम हुवे : एक येह कि हुज़ूर की अज़्वाज व अवलाद गुनाहों से पाक है। दूसरे येह कि अज़्वाज यक़ीनन हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अहले बैत हैं क्यूंकि येह तमाम आयात अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ) से ही मुख़ात़िब हैं।(1)

सह़ाबए किराम व सह़ाबियात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِين में से बा'ज़ वोह ह़ज़रात जिन्हों ने इस्लाम को इस के इब्तिदाई अय्याम में क़बूल किया और सब से पहले हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत की तस्दीक़ की, क़ुरआने करीम ने उन्हें اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ के दिल नशीन ख़ित़ाब से नवाज़ा। आयते मुबारका है :

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۰۰

(پ۱۱، التوبۃ:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे, **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा इन में रहें, येही बड़ी कामयाबी है।*

1....नूरुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब तह़्तुल आयत : 33, स. 829 मुलतक़त़न

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल, बदरुल अमासिल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : (मुहाजिरीन में से اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ वोह हैं) जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं या अहले बद्र या अहले बैअ़ते रिज़्वान (और अन्सार में से) अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए ऊला जो छे[6] ह़ज़रात थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सानिय्या जो बारह थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सालिसा जो सतरह अस्ह़ाब हैं ।[(1)] इस ए'तिबार से बा'ज़ उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن भी इस फ़ज़ीलत में दाख़िल हैं यहां सिर्फ़ उन के अस्माए गिरामी ज़िक्र किये जाते हैं जिन का दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ पढ़ना मा'लूम है :

(1)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ رضی اللہ تعالٰی عنھا

(2)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا

(3)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنھما

(4)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رضی اللہ تعالٰی عنھا

(5)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا

(6)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا

(7)...उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنھا

1....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 11, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 100, स. 380

www.dawateislami.net

वाज़ेह रहे कि येह तमाम उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ हिजरते मदीना से पहले ही मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुकी थीं जब कि 'तब्दीलिये क़िब्ला हिजरत के अठ्ठारह माह बा'द या'नी दो हिजरी, माहे शा'बान, मंगल के दिन हुई ।'(1)

वोह निसाए नबी तृय्यिबातो ख़लीक़
जिन के पाकीज़ा तर सारे त़ौरो त़रीक़
जो बहर ह़ाल नूरे ख़ुदा की रफ़ीक़
अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़
बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम (2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

1....तफ़्सीरे नईमी, पारह 11, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 100, 11/26
2....शर्हे कलामे रज़ा, स. 1057

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنہا[1]

क़बूलिय्यते दुआ़ का एक सबब

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا مِنْ دُعَآءٍ اِلَّا وَبَیْنَهٗ وَ بَیْنَ السَّمَآءِ حِجَابٌ حَتّٰی یُصَلّٰی
عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ فَاِنْ فُعِلَ اِنْخَرَقَ ذٰلِکَ الْحِجَابُ وَ دَخَلَ
الدُّعَآءُ وَ اِذَا لَمْ یُفْعَلْ رَجَعَ ذٰلِکَ الدُّعَآءُ

हर दुआ़ और आस्मान के दरमियान एक ह़िजाब होता है ह़त्ता कि मुझ पर और मेरी आल पर दुरूद पढ़ा जाए, अगर ऐसा किया जाए तो वोह पर्दा चाक हो जाता है और दुआ़ आस्मान में दाख़िल हो जाती है और अगर ऐसा न किया जाए तो वोह पलट आती है।[2]

दुआ़ के साथ न होवे अगर दुरूद शरीफ़
न होवे ह़श्र तलक भी बर आवर ह़ाजात
क़बूलिय्यत है दुआ़ को दुरूद के बाइ़स
येह है दुरूद कि साबित करामात व बरकात[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....इन के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा 84 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنہا' का मुत़ालआ़ कीजिये।

2...الصلات والبشر، الباب الثانی، الحدیث الثانی والخمسون، ص ۸۳.

3....माहनामा ना'त (अक्तूबर 1995 ईसवी), स. 41

www.dawateislami.net

तारीकियों का ख़ातिमा

छटी सदी ईसवी जब हर त़रफ़ ज़ुल्म व बरबरिय्यत और क़त्लो ग़ारत गिरी का दौर दौरा था, अख़्लाक़ी व मआशी, मुआ़शरती व सियासी ज़िन्दगी में इन्तिहाई घिनावनी बुराइयां जनम ले चुकी थीं, ज़ुल्म की ह़द येह थी कि छोटी छोटी बे गुनाह बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर (दफ़्न) कर दिया जाता था, ज़िनाकारी जैसे अख़्लाक़ सोज़ जराइम का ऐसे खुले आ़म इर्तिकाब होता था कि गोया येह गुनाह ही न हों, हर चहार जानिब शिर्को कुफ़्र की घनघोर घटाएं छाई हुई थीं, जहालत व बे वुक़ूफ़ी की इन्तिहा येह थी कि इन्सान अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इबादत से मुंह मोड़ कर खुद के तराशीदा (अपने हाथों से बनाए हुवे) बाति़ल मा'बूदों की पूजापाट में मसरूफ़ था कि काइनाते अरज़ी की इन अन्धेर वादियों को कुफ़्र की तारीकियों से नजात देना जब मन्ज़ूरे मा'बूदे ह़क़ीक़ी होता है तो **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** की पाक सर ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर का सूरज तुलूअ़ फ़रमा देता है, चुनान्चे, फिर काइनात का ज़र्रा ज़र्रा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से जगमगा उठता है, गोशा गोशा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से मुनव्वर हो जाता है, ज़ुल्मो कुफ़्र की तारीक बदलियां छट जाती हैं और ज़माना ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से पुरनूर हो जाता और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुश्बू से महक उठता है।

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ल्क़े ख़ुदा को सिर्फ़ उस एक मा'बूदे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की त़रफ़ बुलाते

www.dawateislami.net

हैं जो सब का ख़ालिक़ो मालिक है, न उस की कोई अवलाद है और न वोह किसी से पैदा हुवा, वोह सब का पालने वाला है, सब उसी से रिज़्क़ पाते और उसी के दर से ह़ाजतें बर लाते हैं। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को उस मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इबादत की दा'वत देते हैं तो बजाए इस के कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत को क़बूल करते हुवे ह़क़ की पुकार पर लब्बैक कहा जाता, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मसाइबो आलाम के पहाड़ तोड़े जाते हैं, राह में कांटे बिछाए जाते हैं, तने नाज़नीन (या'नी मुबारक जिस्म) पर पथ्थर बरसाए जाते हैं, इत्तिहाम व दुश्नाम त़राज़ी (झूटे इल्ज़ामात व गालियों) के तीरों की बारिश कर दी जाती है और कल तक का सब की आंखों का तारा आज सब से बड़ा दुश्मन क़रार दे दिया जाता है। ऐसे नाज़ुक दौर में जो हस्तियां ह़क़ की पुकार पर लब्बैक कहती हुई सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ को क़बूल करने की सआ़दत से सरफ़राज़ हुई और " یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ऐ ईमान वालो !" की पुकार की सब से पहले ह़क़दार क़रार पाईं, उन में एक नुमायां नाम मुजस्समए हुस्ने अख़्लाक़, पाकीज़ा सीरत व बुलन्द किरदार, फ़हमो फ़िरासत और अ़क़्लो दानिश से सरशार, जूदो सख़ा की पैकर, सिद्क़ो वफ़ा की ख़ूगर उस अ़ज़ीमुल क़द्र ज़ाते सुतूदा सिफ़ात का है जिन्हों ने औ़रतों में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने का शरफ़ ह़ासिल किया, हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत से जो सब से पहले मुशर्रफ़ हुईं, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जिन्हें जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वसात़त से सलाम भेजा, जिन्हों ने ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा

www.dawateislami.net

बरकत में कमो बेश 25 साल रहने की सआ़दत ह़ासिल की, जिन्हों ने शिअ़्बे अबी ता़लिब में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मह़सूर रह कर रफ़ाक़त, मह़ब्बत और वारफ़्तगी का मिसाली नुमूना पेश किया, जिन्हों ने अपनी सारी दौलत हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में ढेर कर दी, जिन की क़ब्र में हादिये बरह़क़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उतरे और अपने दस्ते अक़्दस से उन्हें क़ब्र में उतारा, तारीख़ में जिन्हें ता़हिरा व सिद्दीक़ा जैसे अ़ज़ीमुश्शान अल्क़ाब से याद किया जाता है, येह ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की वालिदए माजिदा, नौजवानाने जन्नत के सरदारों ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا की नानीजान, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا, सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही मह़बूब ज़ौजए मुत़ह्हरा हैं, आप की ह़यात में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी और से निकाह़ न फ़रमाया और आप को जन्नत में शोरो ग़ुल से पाक मह़ल की बिशारत सुनाई ।

क़दम क़दम हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने हर हर क़दम पर सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हौसला बढ़ाया और हिम्मत बन्धाई । इस सिलसिले में इब्तिदाए वह़ी के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के आ'ला किरदार की झलक नुमायां तौ़र पर देखी

www.dawateislami.net

जा सकती है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ मदनी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जब भी कुफ़्फ़ार की जानिब से अपना रद्द और तक्ज़ीब वग़ैरा कोई ना पसन्दीदा बात सुन कर ग़मगीन हो जाते, इस के बा'द ह़ज़रते ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنھا के पास तशरीफ़ लाते तो इन के बाइ़स आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की वोह रन्जो ग़म की कैफ़िय्यत दूर हो जाती ।"(1)

वोह अनीसे ग़म, मूनिसे बे कसां
वोह सुकूने दिल, मालिके इन्सो जां
वोह शरीके ह़यात, शहे ला मकां
सीमा पहली मां कह्फ़े अम्नो अमां
ह़क़ गुज़ारे रफ़ाक़त पे लाखों सलाम (2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی مُحَمَّد

एक अनमोल मदनी फूल

इस से उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنھا की अ़ज़ीम शान का इज़्हार होता है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने उस दौर में प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की तस्दीक़ की और हर मुश्किल से मुश्किल वक़्त में आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का साथ दिया जब इस्लाम के मानने वालों को त़रह़ त़रह़ की मुश्किलात और आज़्माइशों का सामना

1 ... السیرۃ النبویۃ لابن اسحاق، تحدید لیلۃ القدر، ۱/۱۷۶.

2 ....बहारे अ़क़ीदत, स. 11

www.dawateislami.net

था । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ह़याते त़य्यिबा के इस दरख़्शां (रोशन व चमक दार) पहलू से हमें येह **मदनी फूल** चुनने को मिलता है कि ख़्वाह कैसे ही कठिन ह़ालात हो, कैसी ही मुश्किलात का सामना हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से रू गर्दानी हरगिज़ नहीं करनी चाहिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लाए हुवे प्यारे दीन 'इस्लाम' की ख़ात़िर माली व जानी किसी क़िस्म की भी क़ुरबानी से दरेग़ नहीं करना चाहिये ।

तआ़रुफ़े ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا क़ुरैश की एक बा हिम्मत, बुलन्द ह़ौसला और ज़ीरक (अ़क़्ल मन्द) ख़ातून थीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को बहुत बेहतरीन अवसाफ़ से नवाज़ा था जिन की बदौलत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا जाहिलिय्यत के दौरे शरो फ़साद में ही त़ाहिरा के पाकीज़ा लक़ब से मश्हूर हो चुकी थीं ।

अव्वलीन इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

सरकारे अबदे क़रार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए निकाह़ में मुन्सलिक होने से पहले दो मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की शादी हो चुकी थी पहले अबू हाला बिन ज़ुरारह तमीमी से हुई उस के फ़ौत हो जाने के बा'द अ़तीक़ बिन आ़बिद मख़्ज़ूमी से,(1) जब येह भी वफ़ात पा गया तो कई रुअसाए क़ुरैश ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को शादी के

1 ... المواهب اللدنية، المقصد الثانی، الفصل الثالث، ١/٤٠٢، ملتقطًا.
बा'ज़ रिवायात में है कि पहले अ़तीक़ से हुई इस की वफ़ात के बा'द अबू हाला से । देखिये : [المعجم الكبير للطبرانی، ٩/٣٩٢، الحديث: ١٨٥٢٢]. وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم

www.dawateislami.net

लिये पैग़ाम दिया लेकिन आप ने इन्कार फ़रमा दिया और किसी का भी पैग़ाम क़बूल न किया फिर ख़ुद सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शादी की दरख़्वास्त की और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़िबालए अ़क़्द में आईं।

विलादत और नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की विलादते बा सआ़दत आ़मुल फ़ील से 15 साल पहले है।(1) नाम ख़दीजा, वालिद का नाम ख़ुवैलिद और वालिदा का नाम फ़ाति़मा है। वालिद की त़रफ़ से आप का नसब इस त़रह़ है : **"ख़ुवैलिद बिन असद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन कु़सय्य बिन किलाब बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य बिन ग़ालिब बिन फ़िह्र"** और वालिदा की त़रफ़ से येह है : **"फ़ाति़मा बिन्ते ज़ाइदह बिन असम्म बिन हरिम बिन रवाह़ा बिन ह़जर बिन अ़ब्द बिन मईस बिन आ़मिर बिन लुअय्य बिन ग़ालिब बिन फ़िह्र"**(2)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

ह़ज़रते **कु़सय्य बिन किलाब** में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है। इस ह़वाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल है

---

1 ...الطبقات الکبری، ذکر تزویج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خدیجۃ..الخ، ١/١٠٥

2 ...المرجع السابق، تسمیۃ نساء المسلمات...الخ، ٤٠٩٦-ذکر خدیجۃ...الخ، ٨/١١.

www.dawateislami.net

कि दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की निस्बत सब से कम वासित़ों से आप का नसब रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के नसब से मिलता है।

कुन्यत व अल्क़ाब

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की कुन्यत **उम्मुल क़ासिम**(1) और **उम्मे हिन्द** है।(2) लक़ब बहुत से हैं जिन में सब से मश्हूर **अल कुब्रा** है। मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में आप को **त़ाहिरा** कह कर पुकारा जाता था।(3)

मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنھا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब बे शुमार हैं। सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे गफ़्फ़ार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم को आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से बहुत मह़ब्बत थी ह़त्ता कि जब आप का विसाल हो गया तो प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم कसरत से आप का ज़िक्र फ़रमाते और अपनी बुलन्दो बाला शान के बा वुजूद आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की सहेलियों का इकराम फ़रमाते। रिवायत में है कि बारहा जब आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की बारगाहे अक़्दस में कोई शै पेश की जाती तो फ़रमाते : इसे फ़ुलां औ़रत के पास ले जाओ क्यूंकि वोह ख़दीजा की सहेली थी, इसे फ़ुलां औ़रत के घर ले जाओ क्यूंकि वोह ख़दीजा से मह़ब्बत करती थी।(4)

---

1 ...سیر اعلام النبلاء، ١٦-خدیجۃ ام المؤمنین، ٢/١٠٩.
2 ...معرفۃ الصحابۃ للاصبھانی، ذکر الصحابیات...الخ، ٣٧٤٦-خدیجۃ...الخ، ٦/٣٢٠٠.
3 ...المعجم الکبیر للطبرانی، ذکر تزویج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٩/٣٩١، الحدیث: ١٨٥٢٢.
4 ...الادب المفرد، باب قول المعروف، ص ٧٨، الحدیث: ٢٣٢.

www.dawateislami.net

यादे ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

एक बार ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बहन ह़ज़रते हाला बिन्ते ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब की, इन की आवाज़ ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से बहुत मिलती थी चुनान्चे, इस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इजाज़त त़लब करना याद आ गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने झुर झुरी ली ।(1)

चार अफ़्ज़ल जन्नती ख़वातीन

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا उन चार ख़वातीन में से हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती औ़रतों में सब से अफ़्ज़ल क़रार दिया है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार रसूले काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़मीन पर चार ख़ुत़ूत़ (Line's) खींच कर फ़रमाया : तुम जानते हो येह क्या हैं ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : 'اَللّٰہُ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं ।' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नती औ़रतों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली येह औ़रतें हैं :

---

1 ... صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی...الخ، ص ۹۶۲، الحدیث ۳۸۲۱ .

www.dawateislami.net

(1)...ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद

(2)...फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

(3)...फ़िरऔन की बीवी आसिया बिन्ते मुज़ाहिम[1]

(4)...और मरयम बिन्ते इमरान। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ)[2]

दुन्या में जन्नती फल से लुत्फ़ अन्दोज़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को दुन्या में रहते हुवे जन्नती फल से लुत्फ़ अन्दोज़ होने का शरफ़ भी हासिल है चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को जन्नती अंगूर खिलाए।[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे आख़िरत

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक होने के बा'द

1....हज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا मोमिना ख़ातून थीं कि एक जलीलुल क़द्र नबी हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान ला कर इन की सहाबिय्यत का शरफ़ पाया। फ़िरऔन को जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के ईमान लाने की ख़बर हुई तो उस दुश्मने ख़ुदा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا पर ऐसे ऐसे जां सोज़ मज़ालिम ढाए कि धरती का कलेजा कांप कर रह गया बिल आख़िर इन मज़ालिम की ताब न लाते हुवे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا शहीद हो गईं।

2...مسند احمد، مسند بنی ھاشم، مسند عبد اللّٰہ بن العباس...الخ، ۲/ ۲۴۱، الحدیث: ۲۷۲۰

3...المعجم الاوسط للطبرانی، باب المیم، من اسمہ محمد، ۴/ ۳۱۵، الحدیث: ۶۰۹۸.

www.dawateislami.net

ता हयात आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआ़मलात में आप की मुमिद्द व मुआ़विन रहीं और हर क़िस्म की परेशानी में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़म गुसारी करती रहीं बिल आख़िर नबुव्वत के दसवें साल, दस रमज़ानुल मुबारक को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और अपने आख़िरत के सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया। ब वक़्ते वफ़ात आप की उ़म्र मुबारक 65 बरस थी।(1)

नमाज़े जनाज़ा

जिस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का विसाल हुवा उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नहीं आया था इस लिये आप पर जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी गई। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में तह़रीर फ़रमाते हैं : "फ़िल वाक़ेअ़ (दर ह़क़ीक़त) कुतुबे सियर (सीरत की किताबों) में उ़लमा ने येही लिखा है कि उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के जनाज़ए मुबारका की नमाज़ न हुई कि उस वक़्त येह नमाज़ हुई ही न थी। इस के बा'द इस का हुक्म हुवा है।"(2)

---

1 ...امتاع الاسماع، فصل فی ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ام المؤمنین خدیجۃ بنت خویلد، ٦/٢٨.

2 ....फ़तावा रज़विय्या, 9/369.

www.dawateislami.net

तदफ़ीन

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को **मक्कए मुकर्रमा** زادھا اللہ شرفًا و تعظیمًا में वाक़ेअ़ **ह़जून**[1] के मक़ाम पर दफ़्न किया गया। हु़ज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم खुद ब नफ़्से नफ़ीस आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की क़ब्र में उतरे[2] और अपने मुक़द्दस हाथों से दफ़्न फ़रमाया।

सय्यिदतुना ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنھا की अवलाद

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنھا वोह खुश नसीब और बुलन्द रुत्बा ख़ातून हैं जिन्हों ने कमो बेश 25 बरस ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ख़िदमते अक़्दस में रहने की सआ़दत ह़ासिल की और सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رضی اللہ تعالٰی عنہ के कि वोह ह़ज़रते मारिय्या क़िब्त़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا से पैदा हुवे, आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की तमाम अवलादे अत़हार इन्हीं से हुईं[3] आप

1...'**ह़जून**' **मक्कए मुकर्रमा** زادھا اللہ شرفًا و تعظیمًا के बालाई हिस्से में वाक़ेअ़ एक पहाड़ है, इस के पास अहले मक्का का क़ब्रिस्तान है। [معجم البلدان، حرف الحاء والجیم...الخ، ۲/۲۲۵]

अब इसे **जन्नतुल मा'ला** कहा जाता है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتھم العالیہ तह़रीर फ़रमाते हैं : **जन्नतुल बक़ीअ़** के बा'द **जन्नतुल मा'ला** दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है। यहां उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कई सह़ाबा व ताबेई़न رضوان اللہ تعالٰی علیھم اجمعین और औलिया व सालिह़ीन رحمھم اللہ المبین के मज़ाराते मुक़द्दसा हैं। अब इन के कुब्बे (या'नी गुम्बद) वग़ैरा शहीद कर दिये गए हैं, मज़ारात मिस्मार कर के इन पर रास्ते निकाले गए हैं।

(रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स.123)

2...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، وفاۃ خدیجۃ وابی طالب، ۲/۴۹.

3...فتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی صلی اللہ علیہ وسلم خدیجۃ...الخ، ۷/۱۷۲، تحت الحدیث: ۳۸۲۱، بتقدم وتأخر.

www.dawateislami.net

मोमिनीन की सब से पहली मां और रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर ईमान लाने वाली सब से पहली ख़ातून हैं। शहनशाहे ज़ी वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के निकाह में आने से पहले दो[2] मरतबा आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का निकाह हो चुका था, पहले अबू हाला बिन ज़ुरारह तमीमी से हुवा। अबू हाला से दो[2] फ़रज़न्द हाला और हिन्द पैदा हुवे और दोनों ईमान ला कर शरफ़े सहाबिय्यत से मुशर्रफ़ हुवे।(1) अबू हाला की मौत के बा'द हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने अ़तीक़ बिन आ़बिद मख़ज़ूमी से निकाह फ़रमाया, इस से एक लड़की हिन्दा पैदा हुई, येह भी ईमान ला कर शरफ़े सहाबिय्यत से मुशर्रफ़ हुई।(2)

रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की अवलादे पाक

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के तीन[3] शहज़ादे :

(1)....**हज़रते सय्यिदुना क़ासिम** رضی اللہ تعالٰی عنہ

(2)....**हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह** رضی اللہ تعالٰی عنہ

(3)....**हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम** رضی اللہ تعالٰی عنہ

और चार[4] शहज़ादियां :

(1)....**हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब** رضی اللہ تعالٰی عنہا

(2)....**हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या** رضی اللہ تعالٰی عنہا

(3)....**हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम** رضی اللہ تعالٰی عنہا

(4)....**हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा** رضی اللہ تعالٰی عنہا थीं।

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، تزوجه صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم من خدیجة، ۱/۳۷۳، ملتقطاً.

2 ...المرجع السابق، ص ۳۷٤.

www.dawateislami.net

और सिवाए ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सब अवलाद ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से हुई । शहज़ादगान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا अ़हदे तुफ़ूलिय्यत में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गए जब कि चारों शहज़ादियां ह़यात रहीं और बड़ी हो कर अपने अपने घर वालियां हुईं । सिवाए ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के तीनों शहज़ादियां प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गईं, ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से पर्दए ज़ाहिरी फ़रमाने के छे 6 माह बा'द इन्तिक़ाल फ़रमाया ।(1)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ाबिले रश्क मौत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़ुयूज़े सह़ाबा व सह़ाबियात वग़ैरा अख़्यारे उम्मत से फ़ैज़याब होने के लिये आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से अ़मल का जज़्बा पैदा होता है और इन सालिह़ीने उम्मत की सीरत पर अ़मल पैरा होने का ज़ेह्न बनता है, आइये ! **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सह़ाबा व सालिह़ीन رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن से

---

(1)....फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, स. 69-73, मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

फ़ैज़्याब होने वाली एक इस्लामी बहन की क़ाबिले रश्क **मदनी बहार** मुलाहज़ा फ़रमाइये और झूमिये, चुनान्चे, मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी वालिदा एक अ़र्से से गुर्दों के मरज़ में मुब्तला थीं। रबीउ़न्नूर शरीफ़ के पुरनूर महीने में पहली मरतबा हम मां बेटी **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के **अल्लाह अल्लाह** और मरहबा या मुस्त़फ़ा की पुर कैफ़ सदाओं से गूंजते हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुईं। शरई पर्दा करने के लिये मदनी बुर्क़अ़ पहनने, आयिन्दा भी सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत करने और मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें कर के हम दोनों घर लौट आईं। रात के वक़्त अम्मीजान को यकायक दिल का दौरा पड़ा, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में गूंजने वाली **अल्लाह अल्लाह** की मस्हूर कुन सदाओं का नशा गोया अभी बाक़ी था शायद इसी लिये मेरी अम्मीजान अपनी ज़िन्दगी के तक़रीबन आख़िरी 25 मिनट **अल्लाह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का विर्द करती रहीं और फिर..फिर.. उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

अ़फ़्व फ़रमा ख़त़ाएं मेरी ऐ अ़फ़ुव्व !
शौक़ व तौफ़ीक़ नेकी की दे मुझ को तू
जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक्रे हू
आ़दते बद बदल और कर नेक ख़ू (1)

»»»»»»···«·»···««««««

(1)....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 279।

www.dawateislami.net

सीरते ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद पढ़ता हूं, आप फ़रमाएं कि मैं ज़िक्रो अवराद का कितना वक़्त दुरूद ख़्वानी के लिये मुक़र्रर करूं ? फ़रमाया : जितना तुम चाहो । मैं ने कहा : एक चौथाई...? फ़रमाया : जितना चाहो, अगर इस से बढ़ा दो तो तुम्हारे लिये बेहतर है । मैं ने कहा : आधा...? फ़रमाया : जितना चाहो, अगर और बढ़ा दो तो तुम्हारे लिये बेहतर है । मैं ने कहा : दो[2] तिहाई...? फ़रमाया : जितना चाहो, लेकिन अगर और इज़ाफ़ा करो तो तुम्हारे लिये बेहतर है । मैं ने कहा : मैं सारा वक़्त दुरूद ही पढ़ूंगा । फ़रमाया : तब येह तुम्हारे ग़मों को काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा ।(1)

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد
ता'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد (2)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...سنن الترمذی، ابواب صفة القیامة...الخ، ۲۱-باب، ص۵۸۳، الحدیث:۲۴۵۷.

2 ....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 1

www.dawateislami.net

ज़ुल्माते शिर्क से अन्वारे तौह़ीद तक

छटी सदी ईसवी जब इन्सान जाहिलिय्यत के ज़मानए शरो फ़साद में अपनी ह़यात के क़ीमती अय्याम ग़फ़्लत में पड़े बसर कर रहा था और इस का रुवां रुवां कुफ़्रो शिर्क की नजासतों से लिथड़ा हुवा था तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़रब के रैगज़ारों(1) और कोहसारों(2) में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया। आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से वोह प्यारा दीने इस्लाम ले कर इस कुरए अरज़ी पर तशरीफ़ लाए जिस ने अपने नूर से जाहिलिय्यत के अन्धेरों को दूर कर दिया और शिर्को कुफ़्र की तारीकियों में भटकती हुई इन्सानिय्यत को तौह़ीदो ईमान के अन्वार से जगमगा कर राहे हिदायत पर गामज़न किया।

اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ए'लाने नबुव्वत फ़रमाया और लोगों को क़बूले इस्लाम की दा'वत दी तो बुग़्ज़ो ह़सद से पाक दिल रखने वाली नेक त़य्यिब हस्तियों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ पर लब्बैक कहा, इन के आ'ज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के लिये झुक गए और क़ुलूब व अज़्हान (दिलो दिमाग़) दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिये तय्यार हो गए। इस त़रह़ येह पाकबाज़ हस्तियां कुफ़्रो जहालत की तारीकियों से निकल कर इस्लाम की रोशनी में आ गईं। इन में से वोह ह़ज़रात जिन्हों ने इस्लाम को इस के इब्तिदाई दिनों

1....रेगिस्तान, रैतिले मैदान। 2....पहाड़ी सिलसिला, जहां बहुत से पहाड़ हों।

www.dawateislami.net

में क़बूल किया, कुरआने करीम में इन्हें اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ के दिल नशीन ख़िताब से नवाज़ा और साथ ही साथ येह तीन[3] अज़ीम व जलील बिशारतें भी सुनाईं कि

- **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी है।
- वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हैं।
- उन के लिये ऐसे बाग़ तय्यार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं और वोह हमेशा हमेशा इन में रहेंगे।

चुनान्चे, पारह ग्यारह, सूरए तौबह, आयत नम्बर 100 में है :

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾ (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे, **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा इन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।*

येह اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ जिन्हों ने इस्लाम को इस के इब्तिदाई अय्याम में क़बूल किया और सब से पहले हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नबुव्वत व रिसालत की गवाही दी, इन में से जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना **सुहैल बिन अम्र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के भाई हज़रते सय्यिदुना **सकरान बिन अम्र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और आप की ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं।

www.dawateislami.net

सब्रो इस्तिक़ामत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह वोह दौर था कि जब इस्लाम के जिलव (हमराही) में आने वालों को हर त़रह़ से सताया जाता था और इस की ईज़ा रसानी में कोई कसर उठा न रखी जाती थी, ऐसे पुर आशोब दौर में येह नेक सीरत व पाक त़बीअ़त ज़वाते मुक़द्दसा इस्लाम के दामने रह़मत से वाबस्ता हुई और इस पुख़्तगी के साथ वाबस्ता रहीं कि कुफ़्रो शिर्क के तुन्दो तेज़ झोंके भी इन के पायए सबात (इस्तिक़ामत) में लग़्ज़िश न ला सके।

हिजरते ह़बशा की इजाज़त

जब दीने इस्लाम के पैरूकारों पर कुफ़्फ़ार की जानिब से जोरो सितम की इन्तिहा हो गई और इन के मज़ालिम ने मुसलमानों पर अ़र्सए ह़यात तंग कर दिया तो ग़म गुसारे जहां, शफ़ीए़ मुज़्निबां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन दीने इस्लाम के फ़िदाइयों को येह कहते हुवे सर ज़मीने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी कि

اِنَّ بِاَرْضِ الْحَبَشَةِ مَلِكًا لَا يُظْلَمُ اَحَدٌ عِنْدَهٗ فَالْحَقُوْا بِبِلَادِهٖ حَتّٰى يَجْعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ فَرَجًا وَّمَخْرَجًا مِمَّا اَنْتُمْ فِيْهِ

सर ज़मीने ह़बशा में ऐसा आ़दिल बादशाह है कि उस के हां किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाता, तुम लोग उस के मुल्क में चले जाओ ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये कुशादगी और इन मसाइब से निकलने का रास्ता बना दे जिस में तुम मुब्तला हो।"(1)

(1) ... السنن الكبرى للبيهقى، كتاب السير، باب الاذن بالهجرة، ٩/١٦، الحديث: ١٧٧٣٤.

www.dawateislami.net

मुसलमानों की हिजरते ह़बशा और कुफ़्फ़ार का तआ़क़ुब

कुफ़्फ़ारे मक्का को जब इन लोगों की हिजरत का पता चला तो उन ज़ालिमों ने इन लोगों की गिरिफ़्तारी के लिये इन का तआ़क़ुब किया लेकिन येह लोग कश्ती पर सुवार हो कर रवाना हो चुके थे इस लिये कुफ़्फ़ार ना काम वापस लौटे। येह मुहाजिरीन का क़ाफ़िला ह़बशा की सर ज़मीन में उतर कर अम्नो अमान के साथ ख़ुदा की इ़बादत में मसरूफ़ हो गया। चन्द दिनों बा'द नागहां येह ख़बर फैल गई कि कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमान हो गए। येह ख़बर सुन कर चन्द लोग ह़बशा से मक्का लौट आए मगर यहां आ कर पता चला कि येह ख़बर ग़लत़ थी। चुनान्चे, बा'ज़ लोग तो फिर ह़बशा चले गए मगर कुछ लोग मक्का में रू पोश हो कर रहने लगे लेकिन कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन लोगों को ढूंड निकाला और इन लोगों पर पहले से भी ज़ियादा ज़ुल्म ढाने लगे तो ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर लोगों को ह़बशा चले जाने का ह़ुक्म दिया। चुनान्चे, ह़बशा से वापस आने वाले और इन के साथ दूसरे मज़लूम मुसलमान कुल तिरासी 83 मर्द और अठ्ठारह 18 औ़रतों ने ह़बशा की जानिब हिजरत की।(1) इस दूसरी बार की हिजरत में ह़ज़रते सय्यिदुना **सकरान बिन अ़म्र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना **सौदह बिन्ते ज़मआ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी शरीक हुवे।(2)

---

1 ....सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, चौथा बाब, स. 127

2 ...تتمة جامع الاصول، الرکن الثالث، الفن الثانی، الباب الاول فی ذکر النبی صلی اللہ علیہ وسلم وما یتعلق بہ، الفصل السابع فی ازواجہ وسراریہ، ۱۲/ ۹۷.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की मक्का वापसी

हिजरत के कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अपने शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना सकरान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا वापस आ गईं।(1) उस वक़्त भी कुफ़्फ़ारे नाहन्जार मुसलमानों की ईज़ा रसानी में इसी त़रह़ सरगर्म थे और इन की तक्लीफ़ देही में कोई कसर न छोड़ते थे। लेकिन येह दोनों मुक़द्दस हस्तियां सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब से फ़ैज़याब होने के लिये मक्का में रिहाइश पज़ीर दीगर मुसलमानों के साथ यहीं मुक़ीम हो गईं और कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार के ज़ुल्मो सितम निहायत सब्रो तह़म्मुल से सहती रहीं लेकिन अपने ईमान के लहलहाते हुवे चमन को शिर्को कुफ़्र की आग की हल्की सी आंच तक भी न आने दी।

दो मुबारक ख़्वाब

एक रात ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने ख़्वाब देखा कि शहनशाहे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पैदल चलते हुवे इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे ह़त्ता कि अपने पाए अक़्दस इन की गर्दन पर रखते हुवे गुज़र गए। जब आप ने अपने शोहर (ह़ज़रते सकरान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) को इस ख़्वाब के बारे में बताया तो इन्हों ने कहा : अगर तुम्हारा ख़्वाब सच्चा है तो अ़न क़रीब मैं यक़ीनी त़ौर पर वफ़ात पा जाऊंगा और सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुझ से निकाह़ फ़रमाएंगे।

---

1 ...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

फिर एक दूसरी रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने ख़्वाब देखा कि चांद टूट कर आप पर गिर पड़ा है और आप करवट के बल लैटी हुई हैं। बेदार होने पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इस ख़्वाब का भी अपने शोहर से तज़्किरा किया। इन्हों ने कहा : अगर तेरा ख़्वाब सच्चा है तो मैं बहुत जल्द इन्तिक़ाल कर जाऊंगा और तुम मेरे बा'द शादी करोगी।(1)

ख़्वाब ह़क़ीक़त के रूप में

ह़ज़रते सकरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इन्तिक़ाल

जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अपना दूसरा ख़्वाब बयान किया था उसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सकरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बीमार हो गए, कुछ दिन बीमार रहे और फिर बहुत जल्द इस दारे नापाएदार से रुख़्सत हो कर दारे आख़िरत की त़रफ़ कूच फ़रमा गए।(2)

मसाइबो आलाम का पहाड़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! ज़रा ग़ौर फ़रमाइये! सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लिये वोह लम्ह़ात किस क़दर ग़म अंगेज़ और तक्लीफ़ देह साबित हुवे होंगे कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के शोहरे नामदार ह़ज़रते सय्यिदुना सकरान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ वफ़ात पा गए थे, यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर मसाइबो आलाम का पहाड़ टूट पड़ा होगा और फिर ऐसे में कि जब कोई हमसाज़ व हम ख़याल भी पास मौजूद न हो तो

❶...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤/٣٧٨.

❷...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मुसीबत में और इज़ाफ़ा हो जाता है, ऐसे तक्लीफ़ देह ह़ालात में बड़े बड़े सूरमाओं (बहादुरों) के ह़ौसले पस्त हो जाते हैं और पायए सबात में लर्ज़िश आ जाती है, लेकिन क़ुरबान जाइये ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنہا के अ़ज़्मो इस्तिक़लाल और इस्तिक़ामत अ़लल इस्लाम पर कि ऐसे जां सोज़ और रूह़ फ़रसा अवक़ात में भी ज़बान पर ह़र्फ़े शिकायत न आने दिया और सीना सिपर हो कर तमाम मसाइबो आलाम का मुक़ाबला किया। ह़बीबे ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की ज़ौजिय्यत से आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का मुशर्रफ़ होना अगर्चे बारगाहे इलाही عزّوجلّ में मन्ज़ूर हो चुका था लेकिन सुवाल येह उठता था कि ऐसा कैसे हो...?

ह़ज़रते ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنہا की वफ़ात के बा'द...

उन दिनों उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنہا और इन से कुछ रोज़ पहले आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के चचा अबू त़ालिब के वफ़ात पा जाने की वज्ह से ह़ुज़ूरे अक़्दस صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم बहुत ज़ियादा मग़मूम और रन्जीदा ख़ातिर थे क्यूंकि ह़ज़रते ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنہا, सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की बहुत ही मह़बूब ज़ौजए मुत़ह्हरा, आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की नबुव्वत व रिसालत पर औ़रतों में सब से पहले ईमान लाने वाली, आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की मूनिस व ग़म ख़्वार और आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के बच्चों की वालिदा थीं और अबू त़ालिब भी हर मुश्किल घड़ी में आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की मदद करते थे, चुनान्चे, तीन[3] या पांच[5] रोज़ के फ़ासिले से यके बा'द दीगरे इन दोनों का इन्तिक़ाल कर जाना आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के लिये बड़ा

www.dawateislami.net

दिलदोज़ सानेहा था और इसी बाइस आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस साल को ग़म व अलम का साल क़रार दिया चुनान्चे, रिवायत में है कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे **आ़मुल हुज़्न** का नाम दिया।[1] जिस का मत़लब है : ग़म व परेशानी का साल। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अक़्दस में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की जो क़द्रो मन्ज़िलत थी सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان इसे जानते थे इस लिये वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अफ़्सुर्दगी की वज्ह से भी ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे, चुनान्चे,

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निकाह़ की पेशकश

एक दिन जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा ख़याल है कि ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के न होने की वज्ह से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तन्हाई ने आ लिया है ? फ़रमाया : हां ! वोह मेरे बच्चों की मां और घर की निगहबान थी।[2] ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शादी क्यूं नहीं फ़रमा लेते ? इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस से ? अ़र्ज़ किया : अगर चाहें तो

---

1 ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، ھجرتہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۱۳۵.

2 ...الطبقات الکبری، تسمیۃ النساء المسلمات...الخ، ذکر ازواج...الخ، ۸/۴۵.

www.dawateislami.net

बाकिरा (कंवारी) से और अगर चाहें तो सय्यिबा (या'नी त़लाक़ याफ़्ता या बेवा) से। फ़रमाया : बाकिरा कौन है ? अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा मह़बूब शख़्स की शहज़ादी आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا। फिर फ़रमाया : सय्यिबा कौन है ? अ़र्ज़ किया : सौदह बिन्ते ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا, वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाई हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन की पैरवी करती हैं। इस पर हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : जाओ ! दोनों को मेरी त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम दे दो।

ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को निकाह़ का पैग़ाम

सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से इजाज़त पा कर ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के हां तशरीफ़ ले गईं, इन के वालिदैन से इस सिलसिले में बात चीत की फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास आ कर कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें क्या ख़ूब ख़ैरो बरकत अ़त़ा फ़रमाई है ! ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने पूछा : वोह क्या ? कहा : मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे पास भेजा है ताकि मैं तुम्हें हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम दूं। ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : मैं चाहती हूं कि तुम मेरे वालिद के पास जा कर उन्हें येह बात बताओ।

www.dawateislami.net

हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद बहुत ज़ियादा बुढ्ढे थे उन्हें इस क़दर बुढ़ापा आया हुवा था कि हज भी अदा न कर सके थे। हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बात सुन कर हज़रते ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इन के पास तशरीफ़ ले आईं और ज़मानए जाहिलिय्यत के दस्तूर के मुताबिक़ सलाम किया। उन्हों ने पूछा : कौन है ? कहा : ख़ौला बिन्ते हकीम। पूछा : क्या काम है ? कहा : मुझे **मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा है ताकि मैं उन की तरफ़ से सौदह को निकाह का पैग़ाम दूं। इस पर उन्हों ने कहा : कुफ़्[1] तो अच्छा है, तुम्हारी सहेली (या'नी हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) इस बारे में क्या कहती हैं ? हज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : उन्हें येह रिश्ता पसन्द है। कहा : उसे मेरे पास बुला लाओ।

हज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इन के वालिद के पास लाई तो वोह हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहने लगे : ऐ मेरी बच्ची ! येह कहती हैं कि **मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तुम्हारी तरफ़ निकाह का पैग़ाम

1....कुफ़ू के लुग़वी मा'ना मुमासलत और बराबरी के हैं। मलिकुल उ़लमा हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन बिहारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इस की वज़ाहत करते हुवे फ़रमाते हैं : "मुहावरए आ़म (या'नी आ़म बोल चाल) में फ़क़त हम क़ौम को कुफ़ू कहते हैं और शरअ़न वोह कुफ़ू है कि नसब या मज़्हब या पेशे या चाल चलन या किसी बात में ऐसा कम न हो कि उस से निकाह होना औलियाए ज़न (या'नी औ़रत के बाप दादा वग़ैरा) के लिये उ़रफ़न बाइसे नंगो आ़र (शर्मिन्दगी व बदनामी का सबब) हो। (फ़तावा मलिकुल उ़लमा, किताबुन्निकाह, स. 206)

नोट : कुफ़ू के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम, हिस्सा सात, सफ़हा 53 ता 57 और पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, सफ़हा 361 ता 384 का मुतालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

भेजा है, वोह अच्छे कुफ़ू हैं, क्या तुम्हें पसन्द है कि मैं तुम्हारी शादी उन से कर दूं ? ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जवाब दिया : जी हां।

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़

ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की राए मा'लूम करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वालिद ज़मआ बिन क़ैस कहने लगे : इन्हें (या'नी रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को) मेरे पास बुला लाइये। जब **सय्यिदुस्सक़लैन, नबिय्युल ह़रमैन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो इन्हों ने ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ कर दिया।(1) और इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर उम्महातुल मोमिनीन की फ़ेहरिस्त में शामिल हो गईं। ए'लाने नबुव्वत के 10 वें साल, शव्वालुल मुकर्रम के महीने में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ फ़रमाया।(2)

वोह निसाए नबी त़य्यिबातो ख़लीक़
जिन के पाकीज़ा तर सारे त़ौरो त़रीक़
जो बहर ह़ाल नूरे ख़ुदा की रफ़ीक़
अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़
बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...مسند احمد، حدیث السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنھا، ۱۰/ ۴۸۵، الحدیث: ۲۶۵۱۷، ملتقطاً.
2 ...سیر اعلام النبلاء، ۴۰- سودۃ ام المؤمنین، ۲/ ۲۶۷.
3 ....शर्हे कलामे रज़ा, स. 1058

www.dawateislami.net

निकाह़ पर ह़ज़रते सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا के भाई का रद्दे अ़मल

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا का एक भाई अ़ब्द बिन ज़मआ़ जो उन दिनों ह़ज के लिये गया हुवा था (और अभी तक मुशर्रफ़ ब इस्लाम नहीं हुवा था), जब वोह वापस आया और उसे ह़ज़रते सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا के हु़ज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के साथ निकाह़ का इ़ल्म हुवा तो ग़ैज़ो ग़ज़ब और रन्जो मलाल के सबब अपने सर में ख़ाक डालने लगा।(1)

इस्लाम लाने के बा'द...

फिर जब अल्लाह عزوجل ने उन की बसारत व बसीरत को नूरे इस्लाम से रोशन कर दिया और वोह क़बूले इस्लाम से मुशर्रफ़ हुवे, कुफ़्फ़ारे ना हन्जार के मा'बूदाने बात़िला के मुन्किर और अल्लाह عزوجل के एक और मा'बूदे ह़क़ीक़ी होने के मो'तक़िद हुवे और हु़ज़ूर सरवरे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की नबुव्वत व रिसालत पर ईमान ला कर तमाम अ़क़ाइदे इस्लामिय्या के **मो'तरिफ़** हुवे तो अपनी उस गुज़श्ता ह़रकत पर नादिम व पशेमान होते हुवे कहा :

لَعَمْرُکَ اِنِّیْ لَسَفِیْهٌ یَوْمَ اَحْثِیْ فِیْ رَاْسِی التُّرَابَ اَنْ تَزَوَّجَ
رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ

---

1 ...مسند احمد، حدیث السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنھا، ۱۰/۴۸۵، الحدیث: ۲۶۵۱۷، مفصلاً.

www.dawateislami.net

क़सम है ज़िन्दगी की ! उस दिन मैं नादान और कम अ़क़्ल था कि जब रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के सौदह बिन्ते ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہا के साथ निकाह़ करने की वज्ह से मैं ने अपने सर में मिट्टी डाली थी।"(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुफ़्र एक तारीक खाई और इस्लाम एक रोशन मनारा है, कुफ़्र अपने मुक़्तदाओं (पैरूकारों) को जहन्नम की त़रफ़ खींच कर ले जाता है और इस्लाम का पैरूकार जन्नत की अबदी व सरमदी ने'मतों से फ़लाह़ याब होता है, कुफ़्र पर इसरार अबू जहल जैसा बदबख़्त बनाता और इस्लाम पर इस्तिक़ामत के साथ हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام का दीदार सह़ाबिय्यत जैसी अ़ज़ीम ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाता है। किसी ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

ع لَعَمْرُكَ مَا الْاِنْسَانُ اِلَّا بِدِيْنِهٖ
فَلَا تَتْرُكِ التَّقْوٰى اِتِّكَالًا عَلَى النَّسَبِ
لَقَدْ رَفَعَ الْاِسْلَامُ سَلْمَانَ فَارِسٍ
وَقَدْ وَضَعَ الشِّرْكُ الشَّقِيَّ اَبَا لَهَبٍ(2)

या'नी क़सम है ज़िन्दगी की ! इन्सान दीन के बिग़ैर कुछ भी नहीं लिहाज़ा तुम नसब पर भरोसा करते हुवे तक़्वा को तर्क मत करो कि इस्लाम ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ को बुलन्द फ़रमा दिया और शिर्क ने अबू लहब को बदबख़्त बना दिया।

---

1 ...المرجع السابق.

2 ...جامع العلوم والحکم، الحدیث السادس والثلاثون، ۲/۳۱۰.

www.dawateislami.net

हिजरते मदीना

जब मुसलमानों को मुशरिकीन की त़रफ़ से ईज़ाएं दिये जाने का सिलसिला बहुत त़वील हो गया और इन के ज़ुल्मो सितम से मुसलमानों पर अ़र्सए ह़यात तंग हो गया जिस की वज्ह से मुसलमानों का अपने प्यारे वत़न **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में ज़िन्दगी बसर करना दूभर (दुश्वार) हो गया तो **सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا की त़रफ़ हिजरत की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी और कुछ रोज़ बा'द ख़ुद भी हिजरत फ़रमा कर **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ ले गए और इस के गली कूचों को अपने जल्वों से जगमगाने लगे। **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में क़ियाम पज़ीर होने के कुछ अ़र्से बा'द ह़ुज़ूरे अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा और अपने ग़ुलाम ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا को 500 दिरहम और दो[2] ऊंट दे कर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا भेजा और येह ह़ज़रते फ़ात़िमा, ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम, ह़ज़रते सौदह बिन्ते ज़मआ़, ह़ज़रते उसामा और ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को ले कर मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا आ गए। जब येह ह़ज़रात मदीना शरीफ़ पहुंचे इन दिनों **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इस के गिर्द हुजरों की ता'मीर फ़रमा रहे थे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हीं हुजरों में अपने अहलो इ़याल को ठहराया।(1)

---

1 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة رضى الله عنهم، ذكر اداء الصداق...الخ، ٥/٦، الحديث: ٦٧٧٣، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में क़ियाम

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में क़ियाम के कुछ अ़र्से बा'द तक तो सिर्फ़ हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ही हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहीं फिर सात[7] या आठ[8] माह बा'द हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا भी रुख़्सत हो कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर हो गईं।[(1)] इस के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पे दर पे मुतअ़द्दिद निकाह़ फ़रमाए और कई ख़्वातीन को शरफ़े ज़ौजिय्यत से नवाज़ा।

रिज़ाए रसूल की त़लब

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बहुत ही दीनदार और सलीक़ा शिआ़र ख़ातून थीं, काशानए नबवी में आने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا हमेशा रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के हुसूल के लिये कोशां रहीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا येह बात यक़ीनी त़ौर पर जानती थीं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब अज़्वाज से ज़ियादा हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मह़ब्बत फ़रमाते हैं नीज़ उ़म्र रसीदा होने के सबब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को येह अन्देशा भी हुवा कि कहीं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे त़लाक़ न दे दें चुनान्चे, आप ने रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अक़्दस में फ़रह़त व सुरूर

1 ...البداية والنهاية، كتاب سيرة رسول الله صلى الله عليه وسلم...الخ، باب هجرة رسول الله صلى الله عليه وسلم...الخ، فصل وبنى رسول الله صلى الله عليه وسلم بعائشة..الخ، الجزء الثالث، ٢/٢٤٥.

www.dawateislami.net

दाख़िल करने और अपना अन्देशा दूर करने की ग़रज़ से अपनी बारी का दिन भी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को हिबा कर दिया जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सौदह बिन्ते ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को इस बात का अन्देशा हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें त़लाक़ दे देंगे तो इन्हों ने अ़र्ज़ किया : (या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मुझे त़लाक़ मत दीजियेगा, मुझे अपनी ज़ौजिय्यत में ही रखिये और मेरी बारी का दिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के लिये मुक़र्रर फ़रमा दीजिये। रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे मन्ज़ूर फ़रमा कर ऐसा ही किया।(1)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने मह़्ज़ सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाने और बरोज़े क़ियामत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में उठने के लिये जिस अ़ज़ीम ईसार व क़ुरबानी का मुज़ाहरा फ़रमाया है इस से पता चलता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का सीना मह़ब्बते रसूल का ख़ज़ीना था और इतनी बड़ी क़ुरबानी दे कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने वोह आ'ला तारीख़ रक़म की है जिस की मिसाल नादिर व नायाब है। ऐ काश ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के इ़श्क़े रसूल का एक ज़र्रा हमें भी नसीब हो जाए और हम गुनाह व ना फ़रमानियों से किनारा कश हो कर अ़मली त़ौर पर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार हो जाएं। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

1 ...سنن الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ النساء، ص۷۰٤، الحدیث:۳۰٤۰

www.dawateislami.net

तआरुफ़े सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا ने जिस वालिहाना मह़ब्बत व अ़क़ीदत से सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की वफ़ादारी व ख़िदमत गुज़ारी की, वोह अपनी मिसाल आप है। गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप ने इन की पाकीज़ा सीरत के चन्द सुन्हरी उ़न्वान मुलाह़ज़ा किये, आइये ! आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के नाम व नसब और ख़ानदान के ह़वाले से चन्द इब्तिदाई बातें भी मा'लूम करते जाइये, चुनान्चे,

नाम व नसब

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का नाम **सौदह** वालिद का नाम **ज़मआ़** और वालिदा का नाम **शमूस** है। वालिद की त़रफ़ से आप का नसब इस त़रह़ है : **"ज़मआ़ बिन क़ैस बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे वुद्द बिन नस्र बिन मालिक बिन ह़िस्ल बिन आ़मिर बिन लुअय्य"** और वालिदा की त़रफ़ से येह है : **"शमूस बिन्ते क़ैस बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन लबीद बिन ख़िराश बिन आ़मिर बिन ग़नम बिन अ़दी बिन नज्जार ।"**

कुन्यत

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की कुन्यत **उम्मे अस्वद** है।(1)

---

(1)...الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، کتاب النساء وکناھن، باب السین، ۳۳۹٤-سودۃ بنت زمعۃ، ٤/١٨٦٧.

www.dawateislami.net

रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते **लुअय्य** में जा कर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है।(1) हज़रते **लुअय्य** रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के 9 वें जद्दे मोह़तरम हैं।

हुल्या मुबारक और अवलाद

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنھا त़वीलुल क़ामत और भारी जिस्म की ह़ामिल थीं। आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के पहले शोहर हज़रते सय्यिदुना सकरान बिन अ़म्र رضی اللہ تعالٰی عنہ से आप के एक लड़का पैदा हुवा जिस का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रखा गया।(2)

मरवी अह़ादीस की ता'दाद

अह़ादीस की राइज किताबों में आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से मरवी अह़ादीस की ता'दाद पांच[5] है जिन में से एक बुख़ारी शरीफ़ में है बाक़ी सुनने अरबआ़ (या'नी अह़ादीस की चार[4] मश्हूर किताबों सुनने अबू दावूद, सुनने तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा और सुनने निसाई) में हैं।(3)

---

1 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم درذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۶۷۔
2 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ۴/۳۷۷۔
3 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم درذکر ازواجِ مطہرات، ۲/۴۶۷۔

www.dawateislami.net

चन्द शरफ़े सहाबिय्यत पाने वाले क़राबत दार

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا के ढेरों ढेर फ़ज़ाइल में से एक फ़ज़ीलत येह भी है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के ख़ानदान के बेशतर अफ़राद को रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के सहाबी होने का शरफ़ हासिल है, इन में से तीन[3] का यहां ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

हज़रते अ़ब्द बिन ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ

येह फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाए और रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم का दीदार कर के शरफ़े सहाबिय्यत से मुशर्रफ़ हुवे। उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنھا के बाप शरीक भाई हैं। इन की वालिदा आ़तिका बिन्ते अख़्यफ़ हैं।(1)

हज़रते मालिक बिन ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا के भाई हैं। क़दीमुल इस्लाम सहाबी हैं और हिजरते हबशा में अपनी अहलिया के साथ शरीक हुवे।(2)

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह बिन्ते ज़मआ़ رضی اللہ تعالٰی عنھا के बाप शरीक भाई हैं। इन्हीं के बारे में हज़रते अ़ब्द बिन ज़मआ़ और हज़रते सा'द बिन अबू वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنھما के दरमियान

---

1 ...الاصابۃ، ذکر من اسمہ عبد...الخ، ۵۲۸۹-عبد بن زمعۃ، ۳۱۰/۴، ماخوذًا.

2 ...اسد الغابۃ، باب المیم و الالف، ۴۵۹۷-مالك بن زمعۃ، ۲۳/۵، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

इख़्तिलाफ़ हुवा था । हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते थे कि येह मेरे भतीजे हैं और हज़रते अ़ब्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दा'वा येह था कि येह मेरे भाई हैं । मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ैसला करते हुवे हज़रते अ़ब्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ अ़ब्द बिन ज़मआ़ ! येह तुम्हारा भाई है ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पसन्दीदा शख़्सिय्यत

अपने आ'ला अवसाफ़ और हुस्ने अख़्लाक़ की बदौलत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पसन्दीदा शख़्सिय्यत बन चुकी थीं ह़त्ता कि हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बा'ज़ अवक़ात यहां तक फ़रमातीं :

مَا رَاَیْتُ امْرَاَۃً اَحَبَّ اِلَیَّ اَنْ اَکُوْنَ فِیْ مِسْلَاخِہَا مِنْ سَوْدَۃَ بِنْتِ زَمْعَۃَ

मैं ने ऐसी कोई औ़रत नहीं देखी जिस के त़रीक़े पर होना मुझे सौदह बिन्ते ज़मआ़ के त़रीक़े पर होने से ज़ियादा मह़बूब हो ।"(2)

मसर्रत भरा मुज़ाह़

येह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा और उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दरमियान मह़ब्बत ही

❶...اسد الغابۃ، باب العین والباء، ۳۳۱۱-عبد الرحمن بن زمعۃ، ۳/ ٤٤٤، ملتقطًا.

❷...صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب جواز ھبتھا..الخ، ص ۵۵۲، الحدیث: ۱٤٦۳.

www.dawateislami.net

का असर था जो बा'ज़ अवक़ात आपस में मुज़ाह़ (ख़ुश त़बई) का सबब बनता था, चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं एक दफ़्आ़ मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ज़ीरा[1] पका कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लाई (वहां ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا भी मौजूद थीं) मैं ने ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से कहा : इसे खाओ। उन्हों ने इन्कार किया। मैं ने दोबारा कहा : इसे खाओ वरना मैं इसे तुम्हारे चेहरे पर मल दूंगी। उन्हों ने फिर इन्कार किया तो मैं ने अपना हाथ ख़ज़ीरे में डाला और उसे ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के चेहरे पर मल दिया। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराने लगे फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के लिये ख़ज़ीरा डाल कर उन से फ़रमाया : तुम भी इसे आ़इशा के मुंह पर मल दो और फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराने लगे।[2]

पसन्दीदा व ना पसन्दीदा मुज़ाह़ का बयान

याद रहे कि मुज़ाह़ करना अगर्चे मुबाह़ है मगर इस के लिये ज़रूरी है कि न तो इस में झूट शामिल हो और न इस से किसी का दिल दुखे। नीज़ बहुत कसरत से मुज़ाह़ करने को भी उ़लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن

1....एक अ़रबी खाना जिस में गोश्त के टुकड़े पानी में पकाते हैं जब पानी थोड़ा रह जाता है तो आटा मिला कर उतार लेते हैं।

2...مسند ابی یعلی الموصلی، تتمۃ مسند عائشۃ، ۴/۴، الحدیث:۴۴۷۶، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ने ना पसन्द फ़रमाया है, **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मुज़ाह में इफ़रात (हद से बढ़ना) ज़ियादा हंसने का बाइस होता है और ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा करता, बा'ज़ हालतों में कीना (छुपी दुश्मनी) और बुग़्ज़ो अदावत पैदा करता और शख़्सिय्यत के हैबत व वक़ार को गिराता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर तुम ऐसा मुज़ाह कर सकते हो जैसा हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाया करते थे तो इस में कोई हरज नहीं, उन हज़रात का मुज़ाह ऐसा होता था कि मुज़ाह में भी हमेशा सच बोलते, न किसी का दिल दुखाते और न हद से बढ़ते बल्कि कभी कभार ही किया करते। लेकिन येह बहुत बड़ी ग़लती है कि इन्सान मुज़ाह को पेशा बना ले, हमेशा और बहुत ज़ियादा करे फिर सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़े'ले मुबारक को दलील बनाए।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईसार व सख़ावत

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا निहायत करीम व सख़ी ख़ातून थीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सख़ावत की ने'मत से भी बहुत नवाज़ा था। एक दफ़्आ़ का ज़िक्र है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास दिरहमों से भरा हुवा एक बड़ा सा थेला भेजा।

(1) ...احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفۃ العاشرۃ: المزاح، ۳/۱۵۹، ۱۵۸، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : येह क्या है ? कहा : दिरहम । इस पर आप ने हैरान होते हुवे फ़रमाया : खजूरों की तरह इतने बड़े थेले में....!! फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह सब दिरहम राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम फ़रमा दिये ।(1)

पर्दे का एहतिमाम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे सुवाल जवाब"** के सफ़्ह़ा 102 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़र्ज़ ह़ज अदा कर चुकी थीं । जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दोबारा नफ़्ली ह़ज व उ़मरह के लिये अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया कि मैं फ़र्ज़ ह़ज कर चुकी हूं । मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे घर में रहने का हुक्म फ़रमाया है । खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मेरे बजाए मेरा जनाज़ा ही घर से निकलेगा । रावी फ़रमाते हैं : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस के बा'द ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا घर से बाहर नहीं निकलीं ।(2)

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जब उस पाकीज़ा दौर में भी उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पर्दे के मुआ़मले में इस क़दर एह़तियात़ थी तो आज इस गए गुज़रे दौर में जिस में पर्दे का तसव्वुर ही मिटता जा रहा है, मर्द व औ़रत की आपसी बे

1 ...الطبقات الکبری، ذکر ازواج...الخ، ٤١٢٧–سودة بنت زمعة، ٨/٤٥.

2 ...الدر المنثور، سورة الاحزاب، تحت الآیة:٣٣، ٦/٥٩٩.

www.dawateislami.net

तकल्लुफ़ी और बद निगाही को معاذ اللہ عزوجل ऐब ही नहीं समझा जा रहा ऐसे नामुसाइद ह़ालात में हर ह़यादार पर्दादार इस्लामी बहन समझ सकती है कि उस को कितनी मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنہا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने कमो बेश तीन[3] बरस रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के काशानए अक़्दस में ऐसे गुज़ारे कि इस अ़र्से में आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के काशानए अक़्दस में और कोई ज़ौजए मुत़ह्हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا नहीं थीं।(1)

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के क़ल्बे अक़्दस में ख़ुशी दाख़िल करने के लिये अपनी बारी का दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا के लिये ईसार कर दिया था।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا उन छे[6] अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में से हैं जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से था।

(1) ...سیر اعلام النبلاء، ٤٠-سودة ام المؤمنين، ٢/٢٦٥.

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا **साहिबतुल हिजरतैन** हैं कि पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरते सानिय्या (दूसरी हिजरत) में शिर्कत फ़रमाई और फिर शहनशाहे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की ज़ौजिय्यत में आने के बा'द **मदीनतुल मुनव्वरा** زادھا اللہ شرفا و تعظیما की त़रफ़ हिजरत की।

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ सह़ाबए किराम علیھم الرضوان में से हैं।(1)

सफ़रे आख़िरत

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक होने के बा'द आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ता ह़यात सरवरे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की ख़िदमत गुज़ारी में कोशां रहीं, हर मुमकिन त़रीक़े से आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की दिलजूई में मसरूफ़ रहीं ह़त्ता कि आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के क़ल्बे अक़्दस में ख़ुशी दाख़िल करने के लिये अपनी बारी का दिन भी उम्मुल मोमिनीन, ज़ौजए सय्यिदुल मुर्सलीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا को हिबा कर दिया। बिल आख़िर ज़मानए सल्त़नते ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رضی اللہ تعالٰی عنہ में शव्वालुल मुकर्रम 54 हिजरी को आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने पैके अजल को लब्बैक कहते हुवे अपने आख़िरत के सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 24 मुलाह़ज़ा कीजिये।

2...الطبقات الکبری، ذکر ازواج...الخ، ٤١٢٧-سودۃ بنت زمعۃ، ٨/٤٦.

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنہا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द ह़सीन बाब मुलाह़ज़ा किये, इस में बिल ख़ुसूस इस्लामी बहनों के लिये रहनुमाई के बे शुमार मदनी फूल हैं । आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की सीरत का मुत़ालआ़ हमें सिखाता है कि रिज़ाए रसूल को हर चीज़ पर मुक़द्दम जाना जाए, कैसी ही मुश्किल और कठिन घड़ी क्यूं न हो सब्रो शिकेबाई का दामन हरगिज़ न छोड़ा जाए । याद रखिये ! आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करने वाली इस्लामी बहन खुद को **अल्लाह** عزوجل व रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की मुक़र्रब बन्दी और अपने घर को अम्न का गहवारा बना सकती हैं । तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल इसी बात का ख़्वाहां है कि तमाम इस्लामी बहनें सह़ाबियात व सालिह़ात की सीरते पाक की रोशनी में ज़िन्दगी गुज़ारने वाली बन जाएं और इन की ज़िन्दगी क़ुरआनो सुन्नत के सांचे में ढल जाए । आप भी इस मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत कीजिये और फ़िक्रे मदीना करते हुवे रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का जे़ह्न बनेगा ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

»»»»»»···«·»···««««««

www.dawateislami.net

सीरते ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا(1)

क़ियामत के ह़िसाब से जल्द नजात...

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़बूआ़ 25 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**ग़फ़्लत**" के सफ़ह़ा 1 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتھم العالیہ दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत नक़्ल करते हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।"(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तारीख़े इस्लाम की वोह अ़ज़ीमुल क़द्र हस्तियां जिन के इ़ल्म के नूर से ज़माना आज भी पुरनूर है और वोह अपने आ'ला अख़्लाक़ और उ़म्दा अवसाफ़ की वज्ह से आज भी उसी त़रह़ ज़िन्दा व जावीद हैं जैसे ज़ाहिरी ह़यात में थीं इन में से एक बुलन्द रुत्बा ज़ात उम्मुल मोमिनीन, ज़ौजए सय्यिदुल मुर्सलीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا की है । उम्मत की इस अ़ज़ीम मां को

1....इन के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक्तबतुल मदीना** की शाएअ़ कर्दा 608 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा** رضی اللہ تعالٰی عنھا" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

2...فردوس الاخبار، باب حرف الیاء، ۵/۳۷۵، الحدیث:۸۲۱۰.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस क़दर कसीर फ़ज़ाइल से नवाज़ा है जिस का इहाता व शुमार मुमकिन नहीं, एक येही फ़ज़ीलत क्या कम है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से महबूब ज़ौजए मुत़हहरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا हैं। मज़ीद येह कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की पाक दामनी की गवाही ख़ुद रब तआ़ला ने दी और इस के लिये क़ुरआने करीम की 18 आयात नाज़िल फ़रमाईं, आप को ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने सलाम कहा, आप के बिस्तरे अक़्दस में रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़ी नाज़िल हुई, आप ही के हुजरए अक़्दस में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया, यहीं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे अक़्दस बना और क़ियामत तक येह मज़ारे अक़्दस फ़िरिश्तों के झुरमट में घिरा रहेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर करोड़हा करोड़ रह़मतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाए। आइये ! अब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सीरत के चन्द ह़सीन गोशों के बारे में पढ़िये और इन से ह़ासिल होने वाले मदनी फूलों से अपनी सोचो फ़िक्र को महकाइये, चुनान्चे,

इस्लाम का सायए रह़मत

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब अपनी नबुव्वत व रिसालत का ए'लान फ़रमाया और लोगों को बुतों की पूजापाट से किनारा कश होने और ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने की दा'वत दी तो शिर्को कुफ़्र में परवान चढ़े लोगों की त़बीअ़तों पर येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मन हो गए। इस शर्रो फ़ितना से भरपूर दौर में कुछ ह़ज़रात ऐसे भी थे कि जब उन तक

www.dawateislami.net

आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ए'लाने नबुव्वत की ख़बर पहुंची तो वोह बिग़ैर किसी हीलो हुज्जत के आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर ईमान ला कर इस्लाम के सायए रहमत में दाख़िल हो गए। इन में से एक नुमायां नाम अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का है। दौलते इस्लाम से बहरा वर होते ही आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने तब्लीग़े दीन का आग़ाज़ फ़रमा दिया और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की दा'वत की बदौलत बहुत से अफ़राद मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो कर अजिल्ला सहाबा رضی اللہ تعالٰی عنھم की फ़ेहरिस्त में शामिल हुवे।

विलादते सय्यिदतुना आइशा رضی اللہ تعالٰی عنھا

बिअ़सते नबवी के चौथे साल जब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के घर में इस्लाम का नूर दाख़िल हो चुका था तब इस बा बरकत घराने में हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا की विलादत हुई।[(1)] इस तरह से आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को येह शरफ़ भी हासिल हुवा कि इस्लामी माहोल में ही आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की पैदाइश हुई, इसी माहोल में शुऊर की आंख खोली और इसी माहोल में परवान चढ़ीं।

हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल

ए'लाने नबुव्वत के 10 वें साल 10 रमज़ानुल मुबारक को जब हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا की उम्र तक़रीबन छे[6] बरस थी, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल हो गया, इन के इन्तिक़ाल से तीन[3] दिन पहले अबू तालिब

1....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, हिस्सए अव्वल, 4 बिअ़सते नबवी, स. 94

www.dawateislami.net

भी वफ़ात पा चुके थे। अबू तालिब और ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वफ़ात के बा'द रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत रन्जीदा व मग़मूम रहने लगे थे।(1) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अक़्दस में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की जो क़द्रो मन्ज़िलत थी सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان इसे जानते थे इस वज्ह से वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अफ़्सुर्दगी की वज्ह से भी ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे, चुनान्चे,

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निकाह़ की पेशकश

एक दिन जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा ख़याल है कि ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के न होने की वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तन्हाई ने आ लिया है ? फ़रमाया : हां ! वोह मेरे बच्चों की मां और घर की निगहबान थी।(2) ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शादी क्यूं नहीं फ़रमा लेते ? इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस से ? अ़र्ज़ किया : अगर चाहें तो बाकिरा (कंवारी) से और अगर चाहें तो सय्यिबा (या'नी त़लाक़ याफ़्ता या बेवा)

1....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, ह़िस्सए अव्वल, 10 बिअ़्सते नबवी, स. 119 व 120 मुल्तक़तन

2...الطبقات الکبری، تسمیۃ النساء المسلمات...الخ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۴۱۲۷-سودۃ بنت زمعۃ، ۸/۴۵.

www.dawateislami.net

से । फ़रमाया : बाकिरा कौन है ? अ़र्ज़ किया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा मह़बूब शख़्स की शहज़ादी आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا । फ़िर फ़रमाया : सय्यिबा कौन है ? अ़र्ज़ किया : सौदह बिन्ते ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाई हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन की पैरवी करती हैं । इस पर हुज़ूरे अक़्दस عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : जाओ ! दोनों को मेरी त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम दे दो ।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को निकाह़ का पैग़ाम

सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से इजाज़त पा कर ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हां तशरीफ़ ले गईं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से कहा : ऐ उम्मे रूमान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम लोगों को क्या ख़ूब ख़ैरो बरकत अ़त़ा फ़रमाई है...!! ह़ज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने पूछा : वोह क्या ? कहा : मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा है ताकि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लिये निकाह़ का पैग़ाम दूं । ह़ज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : आप, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के आने का इन्तिज़ार कीजिये । जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तशरीफ़ लाए तो सूरते ह़ाल मा'लूम होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : क्या आ़इशा का हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ हो सकता है ? क्यूंकि येह

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भाई की बेटी (या'नी भतीजी) है ? हज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो कर हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह सुवाल अ़र्ज़ किया तो मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अबू बक्र के पास लौट जाओ और उस से कहो कि मैं तुम्हारा भाई और तुम मेरे भाई इस्लामी रिश्ते के ए'तिबार से हो लिहाज़ा तुम्हारी बेटी का निकाह़ मुझ से हो सकता है । हज़रते सय्यिदतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बताया और फिर उन्हों ने हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ कर दिया ।(1) और इस त़रह़ हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की फ़ेहरिस्त में शामिल हो गईं । हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात के चन्द हफ़्तों बा'द शव्वालुल मुकर्रम के महीने में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया था लेकिन उस वक़्त रुख़्सती अ़मल में नहीं आई बल्कि रुख़्सती बा'द में हुई ।(2)

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भाई कहना....???

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान की गई रिवायत में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ताजदारे रिसालत, शहनशाहे

1 ...مسند احمد، حدیث السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنھا، ۱۰/۴۸۵، الحدیث:۲۶۵۱۷، ملتقطاً

2 ....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, हिस्सए अव्वल, 10 बिअ्सते नबवी, स. 120

www.dawateislami.net

नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भाई कहने का ज़िक्र गुज़रा, याद रहे ! यहां हुज़ूर रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये इस लफ़्ज़ का इस्ति'माल मस्अला दरयाफ़्त करने के लिये ज़रूरतन था वरना आ़म ह़ालात में और बिला ज़रूरत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भाई कह कर पुकारना या आ़म गुफ़्त्गू में भाई कहना अहले इस्लाम के अ़क़ीदे में ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, मुह़द्दिसे जलील ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : बशर या भाई कह कर पुकारना या मुहावरे में नबी عَلَیْہِ السَّلَام को येह कहना ह़राम है, अ़क़ीदे के बयान या दरयाफ़्ते मसाइल के और अह़काम हैं। यहां ज़रूरतन इस कलिमे का इस्ति'माल फ़रमाया है (कि) ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने मस्अला दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मुझे ख़ित़ाबे उख़ुव्वत से नवाज़ा है, क्या इस ख़ित़ाब पर ह़क़ीक़ी भाई के अह़काम जारी होंगे या नहीं और मेरी अवलाद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ह़लाल होगी या नहीं ?(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिजरते मदीना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अभी रुख़्सती नहीं हुई थी

1....जाअल ह़क़, ह़िस्सा अव्वल, हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام को बशर या भाई कहने की बह़्स, स. 150 मुल्तक़तन।

www.dawateislami.net

और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने मां–बाप के घर में ही थीं कि हिजरते मदीना का वाक़िआ़ पेश आया और मुसलमान अपने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से हिजरत कर के **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا चले गए। कुछ रोज़ बा'द हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ हिजरत कर के मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले आए। **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में क़ियाम पज़ीर होने के कुछ अ़र्से बा'द हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अहले ख़ाना को मदीना शरीफ़ लाने के लिये ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा और अपने ग़ुलाम ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को 500 दिरहम और दो[2] ऊंट दे कर मक्का रवाना किया, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपनी अहलिया ह़ज़रते उम्मे रूमान और दो[2] शहज़ादियों ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) को मदीना शरीफ़ लाने के लिये ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़ित़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दो[2] या तीन[3] ऊंट दे कर इन के हमराह कर दिया। जब येह ह़ज़रात, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अहले ख़ाना को ले कर मदीना शरीफ़ पहुंचे इन दिनों **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इस के गिर्द हुजरों की ता'मीर फ़रमा रहे थे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने घर वालों को इन्हीं हुजरों में ठहराया।(1)

---

❶...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة رضي الله عنهم، ذكر اداء الصداق...الخ، ٥/٦، الحديث:٦٧٧٣، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रुख़्सती

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आमद के कुछ अ़र्से बा'द तक तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने वालिदैन के पास रहीं फिर हिजरत के सात7 माह बा'द शव्वालुल मुकर्रम में रुख़्सत हो कर काशानए नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुईं।(1)

काशानए नबवी में आने के बा'द

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا काशानए अक़्दस में आईं उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र सिर्फ़ नव9 साल थी(2) चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ आप के खिलोने भी थे और आप उन के साथ खेला करती थीं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दिलजूई का ख़ास एहतिमाम फ़रमाते थे। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरी कुछ सहेलियां थीं जो मेरे साथ खेला करती थीं जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते तो वोह अन्दर छुप जातीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें मेरे पास भेज देते और वोह फिर मेरे साथ खेलने लगतीं।(3)

1....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, ह़िस्सए दुवुम, बाबे सिवुम, 1 हिजरी के वाक़िआ़त, स. 250

2...المرجع السابق.

3...صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الانبساط الی الناس، ص ۱۵۲۱، الحدیث: ۶۱۳۰.

www.dawateislami.net

परों वाला घोड़ा

इसी त़रह़ एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ लाए और इन की गुड़ियों को देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह क्या है ? उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : मेरी गुड़ियां हैं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन गुड़ियों में एक घोड़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाया जिस के कपड़े के दो² पर थे । फ़रमाया : येह इन के दरमियान क्या नज़र आता है ? अ़र्ज़ की : घोड़ा । फ़रमाया : इस के ऊपर क्या है ? अ़र्ज़ की : दो² पर । फ़रमाया : घोड़े के दो² पर...? ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं सुना कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े परों वाले थे । ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इतना तबस्सुम फ़रमाया कि मैं ने दन्दाने मुबारक की ज़ियारत कर ली ।(1)

उमूरे ख़ानादारी

बहर ह़ाल इस कम उ़म्री के आ़लम में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उमूरे ख़ानादारी (घर के काम-काज) सीखे और निहायत ख़ुश उस्लूबी से इन्हें अन्जाम देती रहीं ह़त्ता कि अपने कपड़े ख़ुद सी लेतीं, ख़ुद ही जव शरीफ़ को पीस कर आटा बनातीं । सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुरबानी के लिये जो जानवर भेजते ख़ुद अपने हाथों से उन के लिये

1 ... مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم، درذکر ازواج مطہرات، ۲/۴۷۱.

www.dawateislami.net

रस्सियां बटतीं और इस के साथ साथ रह़मते आ़लम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भी कोई कमी न होने देतीं।

इ़ल्मी शानो शौकत

काशानए अक़्दस में आने के बा'द दिन रात सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार शरीफ़ और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से फ़ैज़याब होने के साथ साथ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चश्मए इ़ल्म से भी ख़ूब सैराब हुईं और इस बह़्‌रे मुह़ीत़ से इ़ल्म के बेश बहा मोती चुन कर आस्माने इ़ल्मो मा'रिफ़त की उन बुलन्दियों को पहुंच गईं जहां बड़े बड़े जलीलुल क़द्र सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त में नज़र आने लगे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जब भी कोई घम्बीर (गंभीर) और नाह़ल मस्अला आन पड़ता तो इस के ह़ल के लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की त़रफ़ रुजूअ़ लाते, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम अस्ह़ाबे रसूल को किसी बात में इश्काल होता तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ही की बारगाह में सुवाल करते और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से ही उस बात का इ़ल्म पाते।(1)

इ़बादत गुज़ारी

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا इन तमाम मुआ़मलात को बत़ौरे अह़सन अन्जाम देने के साथ साथ

1 ...سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب فضل عائشۃ رضی اللہ عنھا، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۲.

www.dawateislami.net

रब तबारक व तआ़ला की इ़बादत भी बहुत करती थीं, दिन को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अक्सर रोज़ादार होतीं और रात को मस्जूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे समदिय्यत में सजदा रेज़ रहतीं, चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का बयान है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की पाबन्द थीं और अक्सर रोज़ादार भी रहा करती थीं।(1)

शदीद गर्मी में भी रोज़ा

एक दफ़्आ़ का ज़िक्र है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا यौमे अ़रफ़ा को (मदीना शरीफ़ में) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास आए उस दिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रोज़े से थीं और गर्मी की शिद्दत की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर पानी छिड़का जा रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : रोज़ा इफ़्त़ार कर लीजिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इरशाद फ़रमाया : मैं इसे इफ़्त़ार कर लूं...? ह़ालांकि मैं ने अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि अ़र्फ़े के दिन का रोज़ा एक साल पहले के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।(2)

सख़ावत

दीगर आ'ला अवसाफ़ की त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सख़ावत का वस्फ़ भी बहुत नुमायां था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन

1 ....सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्नीसवां बाब, स. 660

2 ...مسند احمد، ١١٤٤٠–حديث السيدة عائشة رضي الله عنها، ١٠/٢٦٧، الحديث: ٢٥٧١٢.

www.dawateislami.net

ज़ुबैर رضی اللہ تعالٰی عنھما फ़रमाते हैं कि मैं ने दो[2] औरतों से बढ़ कर किसी को सख़ावत करते नहीं देखा और वोह ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते अस्मा (رضی اللہ تعالٰی عنھما) हैं लेकिन इन दोनों की सख़ावत का अन्दाज़ मुख़्तलिफ़ था। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا जम्अ़ करती रहतीं, जब अच्छी ख़ासी रक़म जम्अ़ हो जाती तो फिर **अल्लाह** عزّوجلّ की राह में ख़र्च कर देतीं और ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رضی اللہ تعالٰی عنھا जम्अ़ नहीं करती थीं, जो चीज़ जब इन के हाथ में आती **अल्लाह** عزّوجلّ की राह में ख़र्च कर देतीं, कल के लिये बचा कर न रखतीं।(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाकीज़ा व मुबारक ह़यात में हमारे लिये सीखने के बे शुमार मदनी फूल हैं। आप رضی اللہ تعالٰی عنھا, हुज़ूरे अक़्दस صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में सब से कम उ़म्र थीं मगर इ़ल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहदो तक़्वा, सख़ावत और इ़बादत व रियाज़त में बहुत नुमायां थीं और इस के साथ साथ घरेलू काम काज भी निहायत ख़ुश उस्लूबी से अन्जाम देतीं, इस से पता चलता है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنھا आराम पसन्द और काम काज से जी चुराने वाली न थीं बल्कि इन का हर हर मिनट **अल्लाह** عزّوجلّ की इ़बादत, हुज़ूरे अक़्दस صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की ख़िदमत, इ़ल्मे दीन सीखने और घरेलू काम काज करने में गुज़रता था। काश ! आज कल की इस्लामी बहनें भी आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की सीरत के इन दरख़्शन्दा (دَرَخْ-شَن-دَہ)

1 ...الادب المفرد، باب سخاوۃ النفس، ص۹۲، الحدیث:۲۸۰.

www.dawateislami.net

पहलूओं को अपना लें, यक़ीन जानिये ! अगर ऐसा हो गया तो रोज़ रोज़ के झगड़ों और घरेलू नाचाक़ियों का ख़ातिमा हो जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर अम्न का गहवारा बन जाएंगे।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا दिन रात सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शरबते दीदार से अपनी आंखों को सैराब करते हुवे काशानए अक़्दस में आराम व सुकून के दिन गुज़ार रही थीं कि वोह क़ियामत ख़ेज़ सानेह़ा बपा होने का वक़्त क़रीब आया जब सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया। विसाल शरीफ़ से चन्द रोज़ पेशतर जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिस्तरे अ़लालत पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कैफ़िय्यत येह थी कि बार बार दरयाफ़्त फ़रमाते : कल मैं कहां होऊंगा....? कल मैं कहां होऊंगा...? इस से उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ जान गईं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास रहना चाहते हैं लिहाज़ा सभी ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुज़ूर जहां रहना पसन्द फ़रमाते हैं, रहिये...! चुनान्चे, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास रहने लगे।[(1)]

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب اذا استأذن الرجل...الخ، ص ۱۳۴۱، الحدیث: ۵۲۱۷.

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करीमाना शान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करीमाना शान थी कि इस क़दर अ़द्ल फ़रमाया करते थे वरना आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह वाजिब न था। यक़ीनन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़मले मुबारक से उम्मत को ता'लीम ह़ासिल करते हुवे अपने लिये राहे अ़मल मुतअ़य्यन करनी चाहिये मगर बद क़िस्मती से आज का मुसलमान इस से यक्सर ग़ाफ़िल है। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان मज़्कूरए बाला रिवायत के तह़त फ़रमाते हैं : येह है ह़ुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का अ़द्लो इन्साफ़ ! जब इतना अ़द्ल करे तो चन्द बीबियां रखे। आज मुसलमानों ने चार4 बीवियों की इजाज़त की आयत तो पढ़ ली, अ़द्ल की आयत से आंखें बन्द कर ली हैं, आज जिस क़दर ज़ुल्म मुसलमान अपनी बीवियों पर कर रहे हैं इस की मिसाल नहीं मिलती, नबी की ता'लीम क्या है और उम्मत का अ़मल क्या...!![1]

सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا की एक बड़ी फ़ज़ीलत

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا को लाखों करोड़ों फ़ज़ाइले आ़लिय्या अ़ता फ़रमाए हैं इन में से एक येह भी है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात शरीफ़ से कुछ पहले ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا की नर्म की हुई

1 ....मिरआतुल मनाजीह़, बारी मुक़र्रर करने का बयान, पहली फ़स्ल, 5/ 82.

www.dawateislami.net

मिस्वाक इस्ति'माल फ़रमाई जिस से आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का लुआ़ब रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के लुआ़ब शरीफ़ से मिल गया चुनान्चे, इस की सूरत येह हुई कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र (رضی اللہ تعالٰی عنہما), रसूले रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के विसाल शरीफ़ से कुछ पहले जब आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, इन के हाथ में मिस्वाक थी। आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मिस्वाक की त़रफ़ नज़र फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने इस में आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रग़बत देखते हुवे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رضی اللہ تعالٰی عنہ से वोह मिस्वाक ली, चबा कर नर्म की और फिर आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में पेश कर दी, प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इसे क़बूल फ़रमाया और अपने दन्दाने मुबारक से इसे शरफ़ बख़्शा।(1)

दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा

तक़रीबन आठ8 रोज़ तक ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا के हुजरे में मुक़ीम रहने के बा'द आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इस दुन्या से पर्दए ज़ाहिरी फ़रमाया। विसाल शरीफ़ के वक़्त उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को अपने सीने पर सहारा दिया हुवा था।(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1... صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی صلی اللہ علیہ وسلم ووفاتہ، ص۱۱۰۴، الحدیث:۴۴۵۰، بتغیر قلیل.

2....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, ह़िस्सए दुवुम, बाबे सिवुम, 11 हिजरी के वाक़िआ़त, स. 597 बित्तग़य्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नाम आ़इशा है, वालिदे मोह़्तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं और वालिदए मोह़्तरमा का नाम ज़ैनब था लेकिन येह अपनी कुन्यत उम्मे रूमान से ज़ियादा मश्हूर हैं। वालिदे मोह़्तरम की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नसब इस त़रह़ है। **"अबू बक्र बिन उ़स्मान बिन आ़मिर बिन अ़म्र बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य"**(1) और वालिदए मोह़्तरमा की त़रफ़ से येह है : **"उम्मे रूमान बिन्ते आ़मिर बिन उ़वैमिर बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़त्ताब बिन उज़ैना बिन सुबैअ़ बिन दुहमान बिन ह़ारिस बिन ग़नम बिन मालिक बिन किनाना"**(2)

कुन्यत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की कुन्यत उम्मे अ़ब्दुल्लाह है, येह कुन्यत अवलाद की निस्बत से नहीं बल्कि भांजे ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की निस्बत से है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि एक बार मैं ने रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में

❶ ...الاصابة، ذكر من اسمه عبد الله، ٤٨٣٥-عبد الله بن عثمان بن عامر، ٨/٤٤٠.
❷ ...المرجع السابق، كتاب النساء، فيمن عرف بالكنية من النساء، ١٢٠٢٧-ام رومان، ٨/٤٤٠.

www.dawateislami.net

हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दीगर बीबियों को कुन्यत से नवाज़ा है, मुझे भी अ़ता फ़रमाइये तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने भांजे **अ़ब्दुल्लाह** की निस्बत से कुन्यत रख लो ।(1)

अल्क़ाब

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के अल्क़ाब बेशुमार हैं जिन में से एक **सिद्दीक़ा** भी है क्यूंकि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की सदाक़त की गवाही कुरआने करीम ने दी है और एक लक़ब **हुमैरा** है, सय्यिदुल अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बहुत से मक़ामात पर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को इसी लक़ब से याद फ़रमाया है ।

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते **मुर्रह** में जा कर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का नसब रसूले ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है । हज़रते **मुर्रह**, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सातवें जद्दे मोह़तरम हैं ।

मरवी रिवायात की ता'दाद

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से दो हज़ार दो सो दस (2210) अहादीस मरवी हैं जिन में से 174 **मुत्तफ़िक़ुन अ़लयह** या'नी बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में, 54 अहादीस सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में और 68 अहादीस सिर्फ़ मुस्लिम शरीफ़ में हैं ।(2) हज़रते उ़र्वा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं

---

1 ...الادب المفرد، باب کنیۃ النساء، ص۲۰۲، الحدیث:۸۵۱.

2 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم در ذکرِ ازواجِ مطہرات رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ، ۲/۴۷۳ .

www.dawateislami.net

कि मर्द व औ़रत में सिवाए ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के किसी ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बराबर अह़ादीस रिवायत नहीं कीं।[(1)]

ख़ानदानी पस मन्ज़र

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का ख़ानदान अ़रब के बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीले बनू तमीम से तअ़ल्लुक़ रखता था जिस के पास ज़मानए जाहिलिय्यत में ख़ून बहा और दियतें जम्अ़ करने का ओ़हदा था। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا क़बीला बनू तमीम के उस अशरफ़ व अकरम ख़ानदान की चश्मो चराग़ थीं जो इस्लाम की इब्तिदा में ही इस के नूर से मुनव्वर हो गया था। ख़ानदानी ए'तिबार से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को बहुत शरफ़ो कमाल ह़ासिल है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ख़ानदान के बहुत से अफ़राद ईमान की दौलत से बहरा वर हो कर रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अजिल्ला सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की फ़ेहरिस्त में शामिल हुवे जिन में से चन्द का यहां ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

↳ वालिदे गिरामी सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ क़ुरैश के एक तिजारत पेशा निहायत मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का शुमार ज़मानए जाहिलिय्यत में रुअसाए क़ुरैश में होता था और दीगर सरदार आप से मुख़्तलिफ़ उमूर में मश्वरे किया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَدُوۡد से रिवायत है

---

(1) ... البداية والنهاية، السنة الثامنة والخمسين للهجرة، ذكر من توفي فيها الاعيان، ٨/٤٨٦.

www.dawateislami.net

कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार क़ुरैश के उन दस मायानाज़ लोगों में होता है जिन की शराफ़त ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में तस्लीम की जाती है। ज़मानए जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास लोग फ़ैसला करवाने के लिये अपने मुक़द्दमात लाया करते थे क्यूंकि उस वक़्त कोई इन्साफ़ पसन्द बादशाह तो था नहीं जिस के पास वोह अपने तमाम मुआ़मलात को पेश करते, इस लिये हर क़बीले में इस के रईस और शरीफ़ शख़्स को इस की विलायत ह़ासिल होती थी लिहाज़ा लोग अपने फ़ैसले करवाने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते।(1)

वालिदए आ़लिया सय्यिदतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सिद्क़ो सफ़ा, ज़ोह्दो वफ़ा, जूदो सख़ा और फ़ौज़ो फ़लाह़ की ख़ूबियों से आरास्ता व पैरास्ता निहायत नेक सीरत ख़ातून थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन ख़ुश नसीब औ़रतों में से हैं जिन्हों ने अवाइले इस्लाम में ही सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते इस्लाम पर लब्बैक कहते हुवे सरे तस्लीम ख़म किया था और ईमान की दौलत से बहरा वर हो कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ाबिय्यत का शरफ़ पाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हिजरत के छटे साल ज़ुल ह़िज्जा के महीने में इन्तिक़ाल फ़रमाया। तदफ़ीन के वक़्त हुज़ूर रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद इन की क़ब्र

1 ...تاریخ الخلفاء، ابوبکر صدیق، فصل فی مولدہ ومنشئہ، ص ۲۰.

www.dawateislami.net

में उतरे और दुआए मग़्फ़िरत से नवाज़ा। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को क़ब्र में उतारा गया तो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّنْظُرَ اِلَی امْرَاَۃٍ مِّنَ الْحُوْرِ الْعَیْنِ فَلْیَنْظُرْ اِلٰی اُمِّ رُوْمَان''

जो हूरे ऐन में से किसी को देखने का ख़्वाहिश मन्द हो तो वोह उम्मे रूमान को देख लें।''(1)

भाई जान सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सगे भाई हैं, बहुत ही बहादुर और अच्छे तीर अन्दाज़ थे, जंगे बद्र व उहुद में कुफ़्फ़ार के साथ थे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन पर अपना खुसूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाया और येह मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात 53 हिजरी में **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से तक़रीबन 10 मील पर वाक़ेअ़ एक पहाड़ के क़रीब हुई और फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्का शरीफ़ में ला कर सिपुर्दे ख़ाक किया गया।(2)

सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे बहुत से फ़ज़ाइल

---

1 ... الاصابۃ، کتاب النساء، حرف الراء، ۱۲۰۲۷-ام رومان، ۸/۴۴۰و ۴۴۱، ملتقطاً.

2 ... الاستیعاب، حرف العین، باب عبد الرحمٰن، ۱۳۹۴-عبد الرحمٰن بن ابی بکر الصدیق، ۲/۸۲۴-۸۲۶، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

से नवाज़ा है जो बिला मुबालग़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को औजे सुरय्या (सुरय्या की बुलन्दी) पर पहुंचाने के लिये काफ़ी हैं मसलन

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا, रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से महबूब ज़ौजा हैं।
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की पाक दामनी की गवाही खुद रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने दी और "इस बराअत में उस ने अठ्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमाई।"(1)
- रसूले खुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिवा और किसी कंवारी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया।
- रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ के आख़िरी लम्ह़ात में फ़िरिश्तों और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिवा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास और कोई न था।
- शहनशाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के हुजरए मुबारका में ही दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया।
- यहीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रौज़ा शरीफ़ बना जो अ़र्शे उ़ला से भी अफ़्ज़ल है और
- इस फ़ज़ीलते बे पायां की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का हुजरए मुबारका क़ियामत तक फ़िरिश्तों के झुरमट में रहेगा।

1....तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 18, अन्नूर, तह़तुल आयत : 11, स. 651

www.dawateislami.net

बतौरे नुमूना येह चन्द एक मिसालें पेश की गई हैं वरना आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के फ़ज़ाइल तो हद व शुमार से भी बाहर हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के येही फ़ज़ाइल हैं जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को दीगर तमाम अज़्वाजे त़य्यिबात व त़ाहिरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ में नुमायां कर देते हैं और एक मुन्फ़रिद व बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ कर देते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आप पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे आख़िरत

दुन्याए इस्लाम को अपने इल्मो इरफ़ान के अन्वार से जगमगाते हुवे ब इख़्तिलाफ़े अक़्वाल 17 रमज़ानुल मुबारक मंगल की रात 58 हिजरी, को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इस फ़ानी दुन्या से कूच फ़रमाया, अ़ज़ीम मुह़द्दिस, जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और ह़स्बे वसिय्यत रात के वक़्त **जन्नतुल बक़ीअ़** में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को सिपुर्दे ख़ाक किया गया, ब वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की उ़म्र शरीफ़ 67 साल थी।[(1)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल ऐसा पाकीज़ा और प्यारा माह़ोल है जिस की बरकत से लाखों इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث، عائشۃ ام المؤمنین، ٤/٣٩٢.

www.dawateislami.net

बरपा हो गया है और वोह गुनाहों की दलदल से निकल कर नेकियों के सफ़र में जानिबे मदीना रवां दवां हो गए हैं, आइये एक ऐसी ही इस्लामी बहन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब आने का वाक़िआ़ पढ़िये जिस की हर शामो सह़र गुनाहों में बसर होती थी और नित नए फ़ेशन करना, बे पर्दा तफ़रीह़ गाहों में घूमना, फ़िल्में डिरामे देखना गोया उस की आ़दते सानिय्या हो चुकी थी। फिर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस को दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर हुवा तो यकलख़्त उस की ज़िन्दगी ने पलटा खाया और वोह गुनाहों की दलदल से निकल कर सुन्नतों की राह पर गामज़न हो गई मज़ीद करम बालाए करम येह हुवा कि आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदारे पुर अन्वार भी नसीब हुवा, आइये ! मुलाह़ज़ा कीजिये :

दीदारे शहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) की मुक़ीम इस्लामी बहन की तह़रीर का ख़ुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मेरी अ़मली ह़ालत इन्तिहाई अबतर थी, मॉडर्न सहेलियों की सोह़बत के बाइ़स मैं फ़ेशन की पुतली और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों की बे ह़द मतवाली थी, مَعَاذَ اللہ न नमाज़ पढ़ती न ही रोज़े रखती और बुर्क़अ़ से तो कोसों दूर भागती थी बस T.V और V.C.R होता और मैं। खुदसर इतनी थी कि अपने सामने किसी की चलने नहीं देती थी। उन दिनों मैं कॉलेज में फ़र्स्ट ईयर की त़ालिबा थी। एक रोज़ मुझे किसी ने मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की केसिट बनाम **"वुज़ू और साइन्स"** तोह़फ़े में दी, बयान मा'लूमाती और ख़ासा

www.dawateislami.net

दिल चस्प था। इस बयान से मुतअस्सिर हो कर मैं ने अ़लाक़े में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जाना शुरूअ़ कर दिया। मदनी माह़ोल का नूर मेरी तारीक ज़िन्दगी को मुनव्वर करने लगा। वक़्त गुज़रने के साथ साथ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी बुरी आ़दतों से तौबा करने में कामयाब हो गई। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की बरकत से कुछ ही अ़र्से में मदनी बुर्क़अ़ पहनने लगी। मेरे घर वाले, रिश्तेदार और मेरी सहेलियां इस ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली पर बहुत ह़ैरान थे, उन्हें येह सब ख़्वाब लग रहा था मगर येह सो फ़ीसदी ह़क़ीक़त थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब मैं अपने घर में **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देती हूं। दीगर इस्लामी बहनों के साथ मिल कर मदनी काम करने की सआ़दत से भी बहरा मन्द होती हूं, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात के रिसाले के ख़ाने पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाना मेरा मा'मूल है। एक रोज़ मुझ पर रब عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि मैं जितना भी शुक्र करूं कम कम और कम है। हुवा यूं कि एक रात मैं सोई तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मैं ने ख़्वाब में देखा कि दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ हो रहा है, मैं जिस जगह बैठी हूं वहां खिड़की से ठन्डी ठन्डी हवा आ रही है, मैं बे साख़्ता खिड़की से बाहर की त़रफ़ देखती हूं तो आस्मान पर बादल नज़र आते हैं, मैं बे इख़्तियार येह सलाम पढ़ना शुरूअ़ कर देती हूं :

ऐ सबा ! मुस्त़फ़ा से कह देना
ग़म के मारे सलाम कहते हैं

www.dawateislami.net

अचानक मेरे सामने एक ह़सीनो जमील और नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सरे मुबारक पर सजाए मुस्कुराते हुवे तशरीफ़ ले आए, मैं अभी नज़ारे ही में गुम थी कि किसी की आवाज़ सुनाई दी : येह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। फिर मेरी आंख खुल गई। मैं अपनी सआ़दतों की इस मे'राज पर शिद्दते जज़्बात से रोने लगी। दिल चाहता था कि आंखें बन्द करूं और बार बार वोही मन्ज़र देखूं। अब भी हर रात इसी उम्मीद पर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते सोती हूं कि काश ! मेरे भाग दोबारा जाग उठें।

क्या ख़बर आज की शब दीद का अरमां निकले
अपनी आंखों को अ़क़ीदत से बिछाए रखिये (1)

»»»»»»···«·»···««««««

रोज़े क़ियामत वज़्नदार अ़मल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ाने अ़मल में सब से ज़ियादा वज़्नदार नेकी "अच्छे अख़्लाक़" होंगे।

[سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی حسن الخلق، ص٤٨٦، الحدیث:٢٠٠٢]

---

1 ....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 276

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

बा'दे अज़ान दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है कि उन्हों ने ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना :

اِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُوْلُوْا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ ثُمَّ صَلُّوْا عَلَيَّ

"जब तुम मुअज़्ज़िन को अज़ान कहते सुनो तो ऐसे ही कहो जैसे वोह कहता है इस के बा'द मुझ पर दुरूद भेजो ।" बेशक जो मुझ पर एक दुरूद भेजता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये वसीला मांगो, वसीला जन्नत में एक जगह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक ही के लाइक़ है, मुझे उम्मीद है कि वोह मैं ही हूं । जो मेरे लिये वसीला मांगे उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम है ।[1]

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद और सलाम, बारगाहे रब्बुल अनाम में किस क़दर मह़बूब और क़ारिये दुरूदो सलाम के लिये किस क़दर ख़ैरो बरकत का मूजिब है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जो कोई एक बार दुरूद भेजता है रब तआ़ला उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । नीज़ इस

1 ...صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب استحباب القول...الخ، ص۱۵۰، الحدیث:۳۸۴.

www.dawateislami.net

हदीस शरीफ़ से येह भी मा'लूम हुवा कि बा'दे अज़ान दुरूद शरीफ़ पढ़ना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि बाइसे सवाब भी है।

हुक्मे हक़ है पढ़ो दुरूद शरीफ़
छोड़ो मत ग़ाफ़िलो ! दुरूद शरीफ़
पढ़ के एक बार पाओ दस रह़मत
ख़ूब सौदह है लो दुरूद शरीफ़[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शुरूअ़ से ही इस दुन्याए आबो गिल में बा'ज़ हस्तियां ऐसी भी होती आई हैं जिन के इल्मो अ़मल के नूर और ज़ोह्दो इबादत की खुश्बू से ज़माना सदियों तक चमकता और महकता रहता है, गुलिस्ताने हिदायत की ऐसी ही इत्रबीज़ (खुश्बू फैलाने वाली) कलियों में से एक खुशनुमा कली अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को बहुत से फ़ज़ाइल व कमालात अ़ता फ़रमाए थे।

आइये ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द खुशनुमा पहलूओं के बारे में पढ़िये और सीरत के इन ह़सीन मदनी फूलों से अपने मशामे जां को मुअ़त्तर कीजिये, चुनान्चे,

इस्लाम के झन्डे तले

आफ़्ताबे रुश्दो हिदायत, शहनशाहे नबुव्वत व विलायत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब जज़ीरा नुमा अ़रब की पाक ज़मीन से शिर्को कुफ़्र

1....नूरे ईमान, स. 39

www.dawateislami.net

की नजासत दूर करने और कुल आ़लम को ख़ुश्बूए इस्लाम से महकाने के लिये नबुव्वत व रिसालत का इज़्हार व ए'लान फ़रमाया और लोगों को जाहिलिय्यत के बाति़ल मा'बूदों की बन्दगी तर्क करने और एक मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने की दा'वत दी तो शिर्क व कुफ़्र की फ़ज़ाओं में परवान चढ़े हुवे, उन मा'बूदाने बाति़ला के पुजारियों ने ह़क़ की पुकार पर लब्बैक कहने के बजाए उल्टा इस की तरवीजो इशाअ़त की राह में रुकावटें ह़ाइल करनी शुरूअ़ कर दीं, ज़ालिम हर उस शख़्स के दर पे आज़ार हो जाते जो क़बूले इस्लाम से मुशर्रफ़ होता। उस दौर में बा'ज़ शख़्सिय्यात ऐसी भी थीं कि अगर वोह इस्लाम ले आतीं तो कुफ़्फ़ार के क़ल्ब पर इस्लाम की हैबत और अ़ज़्मत का सिक्का बैठ जाता। इस सिलसिले में सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इन्तिख़ाब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर पड़ी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़बूले इस्लाम की तौफ़ीक़ दिये जाने की दुआ़ करते हुवे अ़र्ज़ किया :

اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِاَحَبِّ ھٰذَیْنِ الرَّجُلَیْنِ اِلَیْکَ بِاَبِیْ جَھْلٍ اَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दो[2] आदमियों अबू जहल और उ़मर में से तुझे जो मह़बूब है उस के ज़रीए़ इस्लाम को ग़लबा अ़ता फ़रमा।''(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ को शर्फ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ा और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूले करीम,

---

1 ...سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب فی مناقب ابی حفص...الخ، ص۸۳۹، الحدیث:۳۶۹۰.

www.dawateislami.net

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत फ़रमाने के छटे साल ईमान लाने की सआ़दत से बहरा वर हुवे जब कि अभी ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे तीन[3] रोज़ ही हुवे थे।(1) ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने से मुसलमानों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, इन के हौसले और ज़ियादा बुलन्द हो गए और कुफ़्फ़ार बुग़्ज़ो अ़दावत की आग में जल कर कोइला हो गए। इस मौक़अ़ पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :(2)

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۴﴾

(پ۱۰، الانفال:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे।*

आप के ज़रीए़ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा और फ़त्ह़ो नुस्रत अ़त़ा फ़रमाई, चुनान्चे, इस का तज़्किरा करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "مَا زِلْنَا اَعِزَّةً مُنْذُ اَسْلَمَ عُمَرُ जब से ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे हैं तब से हम हमेशा ग़ालिब रहे हैं।"(3)

---

1 ...مدارج النبوۃ، قسم دوم، باب در سال ششم...الخ، ۲/ ۴۴، ملتقطاً.
2 ...المرجع السابق، ص ۴۵.
3 ...صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی رضی اللہ عنہم، باب مناقب عمر ابن الخطاب رضی اللہ عنہ...الخ، ص ۹۳۴، الحدیث: ۳۶۸۴.

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के इस्लाम लाने के बा'द आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की कोशिशों के नतीजे में आप के घर वाले भी इस्लाम ले आए और यूं येह पाक व मुतबर्रक घराना इस्लाम के झन्डे तले आ कर इस के ज़ेरे साया ज़िन्दगी गुज़ारने लगा और साथ ही साथ रसूले काइनात, शहनशाहे मौजूदात صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के इल्मी व रूहानी चश्मे से सैराब भी होने लगा। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا की उ़म्र मुबारक तक़रीबन 10 बरस होगी क्यूंकि रिवायत के मुत़ाबिक़ आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की विलादत हुज़ूर सरवरे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के ए'लाने नबुव्वत से पांच साल पहले हुई।(1)

ह़ज़रते ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से निकाह़

ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا अपने वालिदे बुज़ुर्गवार ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के काशानए अक़्दस में परवरिश पाती रहीं ह़त्ता कि जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہا सिन्ने बुलूग़त को पहुंची तो اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ में से एक जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ जो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ के भाई हैं और मुजाहिदीने बद्र में से भी हैं, के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक हो गईं।(2)

---

1 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ علیہ السلام، ٤١٢٩-حفصۃ بنت عمر، ٨/٦٥.

2 ...اسد الغابۃ، باب الخاء والنون، ١٤٨٥-خنیس بن حذافۃ، ٢/١٨٨، ماخوذاً.

www.dawateislami.net

हिजरते मदीना

कुफ़्फ़ार के जोरो सितम से तंग आ कर मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के मज़्लूम मुसलमानों ने जब सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ हिजरत की तो ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا भी अपने शोहरे नामदार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ यहां हिजरत कर आईं और आराम व चैन से ज़िन्दगी बसर करने लगीं। कुछ रोज़ बा'द बाइ़से तख़्लीक़े काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हिजरत कर के **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا तशरीफ़ ले आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से मदीना के दरो दीवार जगमगा उठे, घर घर ख़ुशियां फैल गईं और पूरे मदीने में ई़द का सा समां हो गया।

ग़ज़्वए बद्र

कुफ़्फ़ार जिन को मुसलमानों का आराम व सुकून से ज़िन्दगी बसर करना एक आंख न भाता था, मुसलमानों के मदीना शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत कर आने के बा'द भी सताने से बाज़ न आए, हमेशा मुसलमानों के मज़्हबी फ़राइज़ की बजा आवरी में मुज़ाह़मत करते रहते और दीने इस्लाम को सफ़्ह़ए हस्ती से मिटाने की कोशिश में मसरूफ़े पैकार रहते न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि आस पास के दीगर क़बाइल को भी मुसलमानों की मुख़ालफ़त पर उभारते जिस के नतीजे में कुफ़्फ़ार और मुसलमानों के दरमियान कशीदगियां बढ़ती गईं और ह़ालात संगीन से संगीन तर होते गए। बिल आख़िर ह़ालात की इस संगीनी ने हिजरत के दूसरे साल एक ज़बरदस्त जंग की सूरत इख़्तियार कर ली चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मदीनतुल मुनव्वरा زادھا اللہ شرفا و تعظیما से तक़रीबन 80 मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ बद्र के मक़ाम पर वोह अ़ज़ीम मा'रका हुवा जिस में कुफ़्फ़ारे कुरैश और मुसलमानों के दरमियान सख़्त ख़ून रेज़ी हुई और मुसलमानों को वोह अ़ज़ीमुश्शान फ़त्हे मुबीन नसीब हुई जिस के बा'द इस्लाम की इ़ज़्ज़त व इक़्बाल का परचम इतना सर बुलन्द हो गया कि कुफ़्फ़ारे कुरैश की अ़ज़्मत व शौकत ख़ाक में मिल गई। **अल्लाह** तआ़ला ने जंगे बद्र के दिन का नाम **यौमुल फ़ुरक़ान** रखा है। जंगे बद्र में कुल 14 मुसलमान शहादत से सरफ़राज़ हुवे जिन में से छे[6] मुहाजिर और आठ[8] अन्सार थे।(1)

ह़ज़रते ख़ुनैस رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात

बद्र के शह सुवारों में से एक ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا के शोहरे नामदार ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सह्मी** رضی اللہ تعالٰی عنہ भी थे, वाक़िअ़ए बद्र के बा'द मदीना शरीफ़ में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ रिह़्लत फ़रमा गए(2) जब कि एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इस के बा'द ग़ज़्वए उहुद में भी शरीक हुवे और ज़ख़्मी हुवे, फिर इन्हीं ज़ख़्मों की वज्ह से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का इन्तिक़ाल हो गया।(3)

ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की फ़िक्रमन्दी

ह़ज़रते ख़ुनैस رضی اللہ تعالٰی عنہ की रिह़्लत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ अपनी शहज़ादी ह़ज़रते ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا की दूसरी शादी के लिये फ़िक्रमन्द हुवे और ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर और

---

1 ...عامۂ کتب سیرت۔
2 ...ارشاد الساری، کتاب المغازی، باب (۱۲/۱۲)، ۷/۱۸۰، تحت الحدیث: ۴۰۰۵۔
3 ...اسد الغابۃ، باب الخاء والنون، ۱۴۸۵-خنیس بن حذافۃ، ۲/۱۸۸۔

www.dawateislami.net

हज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को इन से निकाह़ की पेशकश भी की, चुनान्चे, खुद फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आ कर उन्हें ह़फ़्सा से निकाह़ की पेशकश की। उन्हों ने जवाब दिया : मैं अपने मुआ़मले में ग़ौर करूंगा। मैं चन्द रोज़ इन्तिज़ार करता रहा फिर एक रोज़ उन से मेरी मुलाक़ात हुई तो कहने लगे : मुझ पर अभी येही वाज़ेह़ हुवा है कि फ़िलह़ाल निकाह़ न करूं। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई, मैं ने उन से कहा : अगर आप चाहें तो मैं ह़फ़्सा से आप की शादी कर दूं ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया।(1)

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ौसला अफ़्ज़ाई

दोनों त़रफ़ से रिज़ामन्दी न पाई जाने की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रन्जीदा ख़ात़िर हो गए और बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया। रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें तसल्ली देते हुवे और ह़ौसला बढ़ाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

“يَتَزَوَّجُ حَفْصَةَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِّنْ عُثْمَانَ وَيَتَزَوَّجُ عُثْمَانُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِّنْ حَفْصَةَ”

ह़फ़्सा से वोह शादी करेगा जो उ़स्मान से बेहतर है और उ़स्मान उस से शादी करेगा जो ह़फ़्सा से बेहतर है।”(2)

1 ...صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب عرض الانسان ابنتہ...الخ، ص۱۳۱۹، الحدیث:۵۱۲۲.

2 ...الاصابۃ، کتاب النساء، حرف الحاء المھملۃ، القسم الاول، حفصۃ بنت عمر، ۸/۹۴.

www.dawateislami.net

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह

इस वाक़िए को गुज़रे अभी चन्द रोज़ ही हुवे थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तरफ़ निकाह का पैग़ाम दिया और हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इन का निकाह कर दिया। निकाह के बा'द जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुलाक़ात हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई तो हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : जब आप ने मुझ से हफ़्सा की बात की थी और मैं ने कोई जवाब न दिया था इस पर शायद आप को मुझ पर गुस्सा आया हो ? दर हक़ीक़त मैं येह बात जानता था कि शहनशाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़िक्र फ़रमाया है और मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ भी ज़ाहिर नहीं कर सकता था। अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से निकाह न फ़रमाते तो मैं ज़रूर क़बूल कर लेता।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़कूरए बाला रिवायत अपने ज़िम्न में नसीहत के बे शुमार मदनी फूल लिये हुवे है मसलन किसी के राज़ की हिफ़ाज़त करना, रन्जीदा दिल शख़्स को तसल्ली देना और किसी के दिल में पैदा होने वाले मुतवक़्क़ेअ़ शुकूक व शुब्हात की बेख़्कनी करना

(1) ... صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب عرض الانسان ابنته...الخ، ص۱۳۱۹، الحدیث:۵۱۲۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

वग़ैरा नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि शरई तक़ाज़ों की रिआ़यत के साथ बेवा औ़रत का दूसरा निकाह़ करने में शरअ़न कोई क़बाह़त नहीं जैसा कि खुद ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी शहज़ादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ के लिये फ़िक्रमन्द हुवे और बिल आख़िर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत से मुशर्रफ़ हुईं। इस से आज कल की एक बेहूदा रस्म की काट भी हो गई जिस के मुत़ाबिक़ बेवा या त़लाक़ याफ़्ता औ़रत का दूसरा निकाह़ करने को इन्तिहाई बुरा और बाइ़से नंगो आ़र समझा जाता है। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن दौरे ह़ाज़िर की इस बेहूदा रस्म का रद्द करते हुवे फ़रमाते हैं : (बा'ज़ जाहिल लोग) निकाहे़ बेवा को हुनूद (हिन्दुओं) की त़रह़ सख़्त नंगो आ़र जानते और مَعَاذَ اللّٰہ ह़राम से भी ज़ाइद इस से परहेज़ करते हैं। नौजवान लड़की बेवा हो गई अगर्चे शोहर का मुंह भी न देखा हो अब उ़म्र भर यूं ही ज़ब्ह़ होती रहे, मुमकिन है निकाह़ का ह़र्फ़ भी ज़बान पर न ला सके। अगर हज़ार में से एक आध ने ख़ौफ़े ख़ुदा व तर्से रोज़े जज़ा कर के अपना दीन संभालने को निकाह़ कर लिया तो इस पर चार त़रफ़ से त़ा'न व तश्नीअ़ की बोछार है, बेचारी को किसी मजलिस में जाना बल्कि अपने कुम्बे में मुंह दिखाना दुश्वार है। وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم येह बुरा करते और बेशक बहुत बुरा करते हैं, बइत्तिबाए़ कुफ़्फ़ार (काफ़िरों की पैरवी करते हुवे) एक बेहूदा रस्म ठहरा लेनी फिर इस की बिना पर मुबाहे़ शरई पर ए'तिराज़ बल्कि बा'ज़ सुवर (सूरतों) में अदाए वाजिब से ए'राज़ (रू गर्दानी) कैसी जहालत और निहायत ख़ौफ़नाक ह़ालत है फिर ह़ाजत

www.dawateislami.net

वाली जवान औरतें अगर रोकी गईं और مَعَاذَ الله ब शामते नफ़्स किसी गुनाह में मुब्तला हुईं तो इस का वबाल उन रोकने वालों पर पड़ेगा कि येह इस गुनाह के बाइ़स हुवे। मज़ीद फ़रमाते हैं : (क्या येह) **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ास जिगर पारूं सय्यिदतुन्निसा, बतूले ज़हरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى اَبِيْهَا وَعَلَيْهَا وَسَلَّم की बत़्नी साहि़ब ज़ादियों से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वालियां, बढ़ कर ग़ैरत वालियां हैं, जिन के दो दो, तीन तीन और इस से भी ज़ाइद निकाह़ हुवे...!![1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें चाहिये कि तमाम रुसूमे यहूदो हुनूद से पीछा छुड़ाएं और अपने प्यारे दीने इस्लाम के अह़कामात को अ़मली त़ौर पर अपनाएं, कहीं ऐसा न हो कि जहन्नम का दर्दनाक अ़ज़ाब मुक़द्दर हो जाए। याद रखिये ! अगर ऐसा हुवा तो तबाही ही तबाही होगी !!! इस लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

सुन्नतों से भाई रिश्ता जोड़ तू
नित नए फ़ेशन से मुंह को मोड़ तू
छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रवाज
सुन्नतों पे चलने का कर अ़हद आज
या ख़ुदा है इल्तिजा अ़त्त़ार की
सुन्नतें अपनाएं सब सरकार की[2]

1....फ़तावा रज़विय्या 12/289,318

2....वसाइले बख़्शिश, स. 670

www.dawateislami.net

हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इबादत गुज़ारी

शहनशाहे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا काशानए नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अपनी ज़िन्दगी के ख़ूब सूरत तरीन लम्हात गुज़ारने लगीं । तमाम अज़्वाजे पाक की तरह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाने में कोई कसर उठा न रखतीं और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इल्मी व रूहानी फ़ैज़ान से फ़ैज़याब हो कर इबादते इलाही में ख़ूब ख़ूब कोशिश करतीं, दिन को रोज़ा रखतीं रात को शब बेदारी कर के इबादत में गुज़ारतीं । बारगाहे इलाही में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह अ़मल इस क़दर मक़्बूल हुवा की एक दफ़्आ़ जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को त़लाक़ देने का इरादा फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने रब तआ़ला के हुक्म से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर इन की शब बेदारी और रोज़ादारी को बयान करते हुवे त़लाक़ देने से मन्अ़ कर दिया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को त़लाक़ देने का इरादा फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : لَا تُطَلِّقْهَا فَاِنَّهَا صَوَّامَةٌ قَوَّامَةٌ وَاِنَّهَا زَوْجَتُکَ فِی الْجَنَّةِ या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें त़लाक़ मत दीजिये क्यूंकि येह रोज़ादार व शब बेदार हैं और जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहलिया हैं ।"(1)

---

1 ... المعجم الكبير، ذكر ازواج رسول الله صلى الله عليه وسلم، حفصة بنت عمر...الخ، ١٠/٨، الحديث:١٨٨٢٧.

www.dawateislami.net

मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا की पाकीज़ा हयात के बा बरकत अय्याम पर ग़ौर कीजिये कि किस त़रह़ घर के तमाम काम काज बत़ौरे अह़सन पूरे करने के बा वुजूद इन का कोई दिन रब तआला की इबादत से ख़ाली नहीं गुज़रता था, आप की सीरते तय्यिबा उम्मत की बेटियों के लिये बेहतरीन राहे अमल मुहय्या करती है। शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : घरेलू काम धन्दा संभालते हुवे रोज़ाना इतनी इबादत भी करनी फिर ह़दीस व फ़िक़्ह के उ़लूम में भी महारत ह़ासिल करनी येह इस बात की दलील है कि हुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की बीबियां आराम पसन्द और खेलकूद में ज़िन्दगी बसर करने वाली नहीं थीं बल्कि दिन रात का एक मिनट भी वोह ज़ाएअ़ नहीं करती थीं और दिन रात घर के काम काज या इबादत या शोहर की ख़िदमत या इल्म ह़ासिल करने में मसरूफ़ रहा करती थीं। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इन ख़ुश नसीब बीबियों की ज़िन्दगी नबिय्ये रह़मत صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के निकाह़ में होने की बरकत से कितनी मुक़द्दस, किस क़दर पाकीज़ा और किस दरजा नूरानी ज़िन्दगी थी।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

1....जन्नती ज़ेवर, तज़्किरए सालिह़ात, ह़ज़रते ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا, स. 458.

www.dawateislami.net

तआ़रुफे़ सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالیٰ عنھا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالیٰ عنھا बहुत ही बुलन्द हिम्मत और सख़ावत शिआ़र ख़ातून हैं। ह़क़गोई ह़ाज़िर जवाबी और फ़ह़मो फ़िरासत में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार का मिज़ाज पाया था। अक्सर रोज़ादार रहा करती थीं और तिलावते क़ुरआने मजीद और दूसरी क़िस्म की इ़बादतों में मसरूफ़ रहा करती थीं। इन के मिज़ाज में कुछ सख़्ती थी इसी लिये ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالیٰ عنہ हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि कहीं इन की किसी सख़्त कलामी से ह़ुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की दिल आज़ारी न हो जाए। चुनान्चे, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ बार बार इन से फ़रमाया करते थे कि ऐ ह़फ़्सा ! तुम को जिस चीज़ की ज़रूरत हो मुझ से त़लब कर लिया करो, ख़बरदार ! कभी ह़ुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم से किसी चीज़ का तक़ाज़ा न करना न ह़ुज़ूर صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की कभी हरगिज़ हरगिज़ दिल आज़ारी करना वरना याद रखो कि अगर ह़ुज़ूर صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم तुम से नाराज़ हो गए तो तुम ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरिफ़्तार हो जाओगी।[1]

विलादत, नसब और क़बीला

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنھما का तअ़ल्लुक़ अ़रब के एक निहायत ही मुअ़ज़्ज़ज़ व अशरफ़ क़बीले क़ुरैश की शाख़ बनी अ़दी से था। ताजदारे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया

1 ....सीरते मुस्त़फ़ा, उन्नीसवां बाब, ह़ज़रते ह़फ़्सा رضی اللہ تعالیٰ عنھا, स. 662

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत से पांच[5] साल पहले जब कुरैश **बैतुल्लाह** शरीफ़ की ता'मीरे नव (नए सिरे से ता'मीर) में मसरूफ़ थे तब हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के हां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की विलादत हुई। वालिद की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का नसब येह है : **"उ़मर बिन ख़त़्त़ाब बिन नुफ़ैल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन रबाह़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुरत़ बिन रज़ाह़ बिन अ़दी बिन का'ब बिन लुअय्य बिन ग़ालिब"** और वालिदा की त़रफ़ से इस त़रह़ है : **"ज़ैनब बिन्ते मज़ऊ़न बिन ह़बीब बिन वह्ब बिन हुज़ाफ़ा बिन जुमह़"**(1)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते का'ब में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है। हज़रते का'ब रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आठवें जद्दे मोह़तरम हैं।

ख़ानदाने सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के चन्द जलीलुल क़द्र सहाबी

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को एक शरफ़ येह भी ह़ासिल था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के ख़ानदान के बहुत से अफ़राद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शरफ़े सह़ाबिय्यत अ़त़ा फ़रमाया था और

---

(1)... المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ رضی اللہ عنھم، ذکر ام المؤمنین حفصۃ...الخ، ۵/۱۸،۱۹، الحدیث:۶۸۰۹،۶۸۱۲.

www.dawateislami.net

वोह रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सफ़ में शामिल हुवे थे इन में चन्द का यहां ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

वालिदे माजिद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहज़ादी हैं और

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह सहाबी हैं जिन के बारे में नबिय्ये अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِہٖ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर की ज़बान और दिल पर ह़क़ जारी फ़रमाया है।"(1) और फ़रमाया : لَوْ کَانَ نَبِیٌّ بَعْدِیْ لَکَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर बिन ख़त्ताब होता।"(2)

कुरआने पाक की कई आयात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ नाज़िल फ़रमाई हैं।(3)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की बिशारत सुनाई।(4)

---

1 ...سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب فی مناقب ابی حفص...الخ، الحدیث: ۳۶۹۱، ص۸۳۹.

2 ...المرجع السابق، ص۸۴۰، الحدیث: ۳۶۹۵.

3 ...تاریخ الخلفاء، عمر ابن الخطاب رضی اللہ عنہ، فصل فی موافقات...الخ، ۷۸.

4 ...سنن ابوداؤد، کتاب السنۃ، باب فی الخلفاء، ص۷۳۲، الحدیث: ۴۶۴۹.

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में **रसूलुल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ख़बर दी है कि शैतान आप से ख़ौफ़ खाता है।(1)

चचाजान सय्यिदुना ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब رضی اللہ تعالٰی عنہ हैं। येह ग़ज़्वए बद्र, उहुद, ख़न्दक़, हुदैबिय्या वग़ैरा तमाम ग़ज़्वात में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के साथ शरीक हुवे। उहुद के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपनी ज़िरह इन्हें पहनने के लिये कहा तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जवाब दिया : मुझे भी शहादत का शौक़ है जैसे आप को है। फिर दोनों ही इसे छोड़ कर मैदाने जंग में दुश्मन से नबर्द आज़्मा हुवे।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जंगे यमामा में जामे शहादत नोश फ़रमाया। आप की शहादत पर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ बहुत ज़ियादा रन्जीदा व पुर मलाल हुवे और फ़रमाया : "**مَاهَبَّتِ الصَّبَا اِلَّا و اَنَا اَجِدُ مِنْهَا رِيْحَ زَيْدٍ** जब भी हवा चलती है मैं इस से ज़ैद की ख़ुश्बू पाता हूं।" और फ़रमाया : **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ ज़ैद पर रह़्म फ़रमाए...!! मेरा भाई दो2 अच्छी बातों में मुझ पर सबक़त ले गया है :

(1)....मुझ से पहले इस्लाम क़बूल किया।

(2)....मुझ से पहले जामे शहादत नोश किया।(2)

---

1 ...السنن الکبری للبیھقی، کتاب النذور، باب مایوفی بہ...الخ، ۱۰/۱۳۲، الحدیث: ۲۰۱۰۱.

2 ...اسد الغابۃ، باب الزاء والھاء والواو، ۱۸۳۴-زید بن خطاب، ۲/۳۵۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

वालिदए माजिदा सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बहन हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **जन्नतुल बक़ीअ़** में दफ़्न होने वाले पहले सह़ाबी हैं।(1) मरवी है कि जब ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इन्तिक़ाल हुवा तो रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें बोसा दिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक से आंसू रवां थे।(2)

फूफीजान सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की फूफी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا क़दीमुल इस्लाम सह़ाबियात में से हैं और अ़शरए मुबश्शरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم में शामिल एक जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की अहलिया हैं। आप ही अपने भाई ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस्लाम क़बूल करने का सबब बनी थीं।(3)

---

1 ...المرجع السابق، باب العين والثاء، ٣٥٩٤-عثمان بن مظعون، ٣/٥٩١.

2 ...سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی تقبیل المیت، ص٢٦٠، الحدیث:٩٨٩.

3 ...اسد الغابة، حرف الفاء، ٧١٨٢-فاطمة بنت الخطاب، ٧/٢١٥، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

भाईजान सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) निहायत इ़बादत गुज़ार, परहेज़गार, बुलन्द पाया आ़लिम, फ़क़ीह और मुजतहिद सह़ाबी हैं। आप के नेक व परहेज़गार होने की गवाही खुद **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दी है, चुनान्चे, बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ عَبۡدَ اللہِ رَجُلٌ صَالِحٌ अ़ब्दुल्लाह नेक आदमी है।"(1)

سُبۡحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ क्या खूब और प्यारी प्यारी निस्बतें हैं...!! वाक़ेई जिस हस्ती को ऐसी अ़ज़ीम निस्बतें ह़ासिल हों उन की अ़ज़मतो शान का अन्दाज़ा कौन कर सकता है...!! एक येही निस्बत क्या कम है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मह़बूबे रब्बे गफ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ में से हैं :

वोह निसाए नबी त़य्यिबातो ख़लीक़
जिन के पाकीज़ा तर सारे त़ौरो त़रीक़
जो बहर हाल नूरे ख़ुदा की रफ़ीक़
अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़
बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम (2)

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عبد اللہ بن عمر...الخ، ص۹۴۷، الحدیث:۳۷۴۰.

2 ....शर्हे कलामे रज़ा, स. 1057

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए बद्र में ख़ानदाने ह़फ़्सा का किरदार

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہا को एक बहुत अ़ज़ीम निस्बत येह भी ह़ासिल है कि ग़ज़्वए बद्र जिस में मुसलमानों को ग़लबा और कुफ़्फ़ार को शिकस्ते फ़ाश हुई थी और इस ग़ज़्वे में शरीक होने वाले मुसलमानों के बारे में रसूले रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया था : ''لَا يَدْخُلُ النَّارَ اَحَدٌ شَهِدَ بَدْرًا وَّالْحُدَيْبِيَةَ जो बद्र और हुदैबिय्या में मौजूद था वोह दोज़ख़ में नहीं जाएगा।''(1) इस में आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के ख़ानदान के इन छे[6] अफ़राद ने शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की थी :

(1)....आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (رضی اللہ تعالٰی عنہ)

(2)....चचाजान ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब (رضی اللہ تعالٰی عنہ)

(3-5).....मामूंजान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मज़्ऊ़न और ह़ज़रते सय्यिदुना कुदामा बिन मज़्ऊ़न (رضی اللہ تعالٰی عنہم)

(6) मामूंज़ाद भाई ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न (رضی اللہ تعالٰی عنہما)(2)

रिवायत कर्दा अह़ादीस

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا बहुत बड़ी इ़बादत गुज़ार होने के साथ साथ फ़िक़्ह व ह़दीस में भी एक मुमताज़ दरजा रखती थीं, मुरव्वजा और मश्हूर

1...مسند احمد، مسند النساء، حدیث ام مبشر...الخ، ۱۷۱/۱۱، الحدیث: ۲۷۸۰۱.

2...المعجم الکبیر، ذکر ازواج رسول اللہ رضی اللہ عنھن، حفصۃ بنت عمر...الخ، ۷/۱۰، الحدیث: ۱۸۸۲۲، ۱۸۸۲۳.

www.dawateislami.net

कुतुब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी अह़ादीस की ता'दाद 60 है। इन में चार[4] **मुत्तफ़क़ुन अ़लैह** या'नी बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में हैं और तन्हा मुस्लिम में छे[6] अह़ादीस और 50 अह़ादीस दीगर किताबों में मरवी है।(1) इल्मे ह़दीस में बहुत से सह़ाबा व ताबेईन इन के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त में नज़र आते हैं जिन में ख़ुद इन के भाई ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बहुत मश्हूर हैं।(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (या'नी तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन छे[6] अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में से हैं जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से था।(3)

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़लीफ़ए सानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहज़ादी हैं।

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हैं।(4)

---

1 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم در ذکر ازواج مطہرات، حفصہ بنت عمر، ۲/ ۴۷۴.

2 ..सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन्नीसवां बाब, ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, स. 663

3 ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث...الخ، ۱/ ۴۰۱.

4 ....इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 24 मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत

दुन्या को अपने इल्मी फ़ैज़ान से फ़ैज़याब करते हुवे बिल आख़िर शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 45 हिजरी को **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन्तिक़ाल फ़रमाया। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हुकूमत का ज़माना था और मरवान बिन ह़कम जो मदीने का ह़ाकिम था, उसी ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और कुछ दूर तक इन के जनाज़े को भी उठाया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ब्र तक जनाज़े को कांधा दिये चलते रहे। इन के दो भाइयों ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) और इन के तीन[3] भतीजों ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ने इन्हें क़ब्र में उतारा और येह जन्नतुल बक़ीअ़ में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के पहलू में मदफ़ून हुईं। ब वक़्ते वफ़ात इन की उ़म्र 60 या 63 बरस थी।[(1)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हर वक़्त अपनी आख़िरत की फ़िक्र में रहना और इसे बेहतर बनाने की कोशिश करना उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की सीरत का एक नुमायां पहलू है। इन मुक़द्दस

1..सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन्नीसवां बाब, ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا, स. 664 बित्तग़य्युरिन क़लील.

www.dawateislami.net

हस्तियों की सीरत को अपने लिये मश्अ़ले राह बनाते हुवे हमें भी अपनी क़ब्रो आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये कोशां रहना चाहिये। आइये ! इस पर मज़्बूती से कारबन्द होने का ज़ेह्न पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से मुन्सलिक हो जाइये कि इस मदनी माहोल की बरकत से कई बद अख़्लाक़ और बिगड़े अफ़राद की ज़िन्दगियों में सुधार आ गया है, कल तक दुन्या ही की महब्बत में मस्त रहने वाले और वालियां बेहतरिये आख़िरत के लिये मसरूफ़ हो गईं, अ़दमे तर्बिय्यत और मदनी माहोल से दूरी की वज्ह से जिन के घर बद सुकूनी और बे आरामी के शिकार थे वोह अब मदनी माहोल की बरकत से अम्न का गहवारा बन गए हैं जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत्बूआ़ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले '**मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ?**' सफ़हा 11 पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के मदनी रंग में रंगने से पहले बहुत सी औ़रतों की त़रह़ मैं भी बे पर्दगी, फ़ेशन ज़दगी और फ़ोह़्श कलामी जैसी बुराइयों में मुलव्वस थी, फ़िल्में डिरामे देखना मेरा शौक़ और घर वालों से लड़ना झगड़ना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, अपने बच्चों के अब्बू से ज़बान दराज़ी करने को गोया मैं अपना ह़क़ समझती थी, इल्मे दीन से कोसों दूर और फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल थी, मेरे सुधरने की तरकीब यूं बनी कि एक दिन मैं अपनी बहन के साथ उन की सहेली के घर गई उन की सहेली जो एक बा ह़या और पुर वक़ार शख़्सिय्यत की मालिक थीं, बड़ी मिलनसारी से पेश आईं। दौराने गुफ़्तगू इन्किशाफ़ हुवा कि वोह **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता हैं।

www.dawateislami.net

मैं इन की खुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी व इन्किसारी से बड़ी मुतअस्सिर हुई। उन्हों ने बड़े धीमे और मह़ब्बत भरे लहजे में हमें **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी। उन की इस मुख़्तसर सी इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में मुझे इतवार के रोज़ होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई। वहां पर मैं ने तिलावते क़ुरआन, ना'त शरीफ़ और बयान सुना। जब **ज़िक्रुल्लाह** के बा'द इजतिमाई दुआ़ में की जाने वाली गिर्या व ज़ारी सुनी तो मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, मुझ पर अ़जीब रिक़्क़त त़ारी थी, पिछली ज़िन्दगी के गुनाह मेरी निगाहों में घूम रहे थे, मैं मारे शर्म के पानी पानी हो गई, आंखों से अश्के नदामत बह निकले, मैं ने ख़ूब गिड़ गिड़ा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने तमाम गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगी और तौबा कर ली। इजतिमाअ़ के बा'द मैं ने एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया जिस में नमाज़ों की पाबन्दी थी, पर्दे की आ़दत थी, बड़ों का अदब छोटों पर शफ़्क़त थी, गुफ़्तार में नर्मी थी, निगाहों की ह़िफ़ाज़त थी अल ग़रज़ क़दम क़दम पर शरीअ़त की पासदारी की कोशिश थी। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल पर क़ुरबान ! जिस की ब दौलत मुझे सुधरने का मौक़अ़ मिला।

या रब मैं तेरे ख़ौफ़ से रोती रहूं हर दम

दीवानी शहनशाहे मदीना की बना दे

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! इख़्लास के साथ की गई इनफ़िरादी कोशिश की कैसी बरकतें नसीब हुईं और बरबादिये आख़िरत के

www.dawateislami.net

रास्ते पर चलने वाली इस्लामी बहन को जन्नत में ले जाने वाले रास्ते पर गामज़न होने की तौफ़ीक़ मिल गई । हर इस्लामी बहन को चाहिये कि घबराए और शर्माए बिग़ैर दीगर इस्लामी बहनों (ख़्वाह उन का तअ़ल्लुक़ किसी भी शो'बे से हो) को नेकी की दा'वत ज़रूर पेश किया करें । क्या अ़जब कि हमारे चन्द कलिमात किसी की दुन्या व आख़िरत संवारने और हमारे लिये कसीर सवाबे जारिय्या का ज़रीआ़ बन जाएं ।

»»»»»»···«·»···««««««

आ़लिम की फ़ज़ीलत में दो रिवायात

आ़लिमों की दवातों की रोशनाई क़ियामत के दिन शहीदों के ख़ून से तोली जाएगी और उस पर ग़ालिब हो जाएगी ।

[كنز العمال، كتاب العلم، قسم الاقوال، المجلد الخامس، ١٠/٦١، الحديث: ٢٨٧١١]

एक फ़क़ीह एक हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा शैत़ान पर भारी है । [سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فضل العلماء...الخ، ص٤٩، الحديث: ٢٢٢]

www.dawateislami.net

सीरते ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رضی اللہ تعالٰی عنھا

कसरते दुरूद के सबब नजात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़्दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" वोह बोला : मैं सख़्त हौलनाकियों से दोचार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि मुझ पर येह मुसीबत क्यूं आई है...? क्या मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा....? इतने में आवाज़ आई : दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है। अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े। इतने में एक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्तर मुअ़त्तर थे वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान ह़ाइल हो गए और उन्हों ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने इसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ? फ़रमाया : "तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है।[(1)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلوۃ علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۱۲۷ .

www.dawateislami.net

तुलूए आफ़्ताबे इस्लाम

मक्का की पाक सर ज़मीन में जब इस्लाम का सूरज तुलूअ़ हुवा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब रसूल हुज़ूर अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत व रिसालत का इज़्हार व ए'लान फ़रमाते हुवे दा'वते इस्लाम का आग़ाज़ फ़रमाया तो जो पाक त़बीअ़त व नेक त़ीनत हस्तियां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत पर लब्बैक कहते हुवे पहले पहल ही ईमान लाने की सआ़दत से मुशर्रफ़ हुई इन में ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी शामिल हैं। येह अपनी सख़ी व फ़य्याज़ त़बीअ़त और यतीमों व मिस्कीनों पर मेहरबानी व शफ़्क़त की बदौलत ज़मानए जाहिलिय्यत में ही **उम्मुल मसाकीन** के दिल आवेज़ ख़िताब से मश्हूर हो चुकी थीं[1] और इस्लाम जो ब ज़ाते ख़ुद सख़ावत व फ़य्याज़ी का दर्स देता है इस से तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इस सिफ़त में चार चांद लग गए। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब उम्मतियों की येह शान है तो प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आ़लम क्या होगा....? कौन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने जूदो सख़ावत का अन्दाज़ा कर सकता है...?

तेरे जूदो करम का कोई अन्दाज़ा करे क्यूंकर
तेरा इक इक गदा फ़ैज़ो सख़ावत में है ह़ातिम सा[2]

---

1 ...المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ رضی اللہ عنھم، ذکر ام المؤمنین زینب بنت خزیمۃ رضی اللہ عنھا...الخ، ٥/٤٤، الحدیث: ٦٨٨٤.

2 ....ज़ौक़े ना'त, स. 59

www.dawateislami.net

काशानए नबवी में आने से पहले

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर काशानए नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल होने से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا सहीह़ तर क़ौल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक थीं। हिजरत के तीसरे साल **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से तक़रीबन तीन[3] मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ उहुद के मैदान में मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के दरमियान जो अ़ज़ीम मा'रका बपा हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में सफ़र कर के ह़क़ व बात़िल के इस अ़ज़ीम मा'रके में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की और कुफ़्र की गर्दनें काट कर अ़लमे इस्लाम को बुलन्द फ़रमाते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमाया।(1)

निराली दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि उहुद के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : क्यूं न हम बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ करें ? फिर येह दोनों ह़ज़रात तन्हा एक गोशे में चले गए। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन

1...المواهب اللدنية، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات...الخ، ۱/۴۱۰، ملتقطًا.
والمستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة رضی الله تعالٰی عنهم، ذكر ام المؤمنين زينب بنت خزيمة العامرية رضی الله تعالٰی عنها، ۵/۴۳، الحديث: ۶۸۸۳، مختصرًا.

www.dawateislami.net

अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की : ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ कल जब क़ौमे कुफ़्फ़ार से हमारा आमना सामना हो तो मुझे सख़्त जंग जू और ग़ैज़ो ग़ज़ब से भरपूर शख़्स मिले, फिर मैं तेरी राह में उस से लड़ूं वोह मुझ से लड़े, अन्जामे कार मुझे उस के मुक़ाबले में कामयाबी अ़ता फ़रमा ह़त्ता कि मैं उसे क़त्ल कर दूं और उस का माले ग़नीमत ले लूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आमीन कही। फिर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की : ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ कल ऐसे शख़्स से मेरी मुढ भेड़ (आमना सामना) हो जो सख़्त जंग जू और ग़ैज़ो ग़ज़ब से भरपूर हो, मैं तेरी राह में उस से लड़ूं और वोह मुझ से लड़े, बिल आख़िर वोह मुझ पर ग़ालिब आए, मेरा नाक (और कान) काट डाले और कल जब मैं तुझ से मिलूं तो, तू फ़रमाए : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तेरा नाक और कान किस वज्ह से काटे गए ? मैं अ़र्ज़ करूं : मौला ! तेरी और तेरे प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह में। इस पर तू इरशाद फ़रमाए : "**सदक़्त** या'नी तू ने सच कहा।"

(येह वाक़िआ़ बयान फ़रमाने के बा'द) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (अपने बेटे से) फ़रमाया : ऐ बेटे ! अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श की दुआ़ मेरी दुआ़ से बेहतर थी, मैं ने उन्हें दिन के आख़िरी पहर देखा कि उन के कान और नाक धागे में पिरो कर लटकाए गए हैं।[1]

1 ...السنن الکبری للبیہقی، جماع ابواب الانفال، باب السلب للقاتل، ٦/٥٠١، الحدیث:١٢٧٦٩.

www.dawateislami.net

जज़्बए शहादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का जज़्बए शहादत मुलाह़ज़ा किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह में तन मन धन कुरबान करने के अ़मली मुबल्लिग़ थे बल्कि सब सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का ही येह मा'मूल था कि वोह दीने इस्लाम की ख़ात़िर किसी भी क़िस्म की क़ुरबानी से दरेग़ नहीं किया करते थे, काश ! सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के इस जज़्बए सादिक़ के सदक़े हमें ऐसी तौफ़ीक़ नसीब हो कि हम किसी भी परेशानी व मुसीबत को ख़ात़िर में न लाते हुवे दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में हमा तन मसरूफ़ रहें, हमारा लफ़्ज़ लफ़्ज़ कलिमए ह़क़ का बयान हो और रूएं रूएं से इ़श्क़े रसूल आश्कार हो, ऐ काश ! ऐसा जज़्बा नसीब हो कि दीन की ख़ात़िर जान की बाज़ी लगाने से भी दरेग़ न करें, क्यूंकि

शहादत है मत़्लूब व मक़्सूदे मोमिन
न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई [1]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काशानए नबवी में.....

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का निकाह़ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत व विलायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

1....कुल्लिय्याते इक़्बाल, स. 432

www.dawateislami.net

साथ हुवा। मरवी है कि जब सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें निकाह़ का पैग़ाम दिया तो इन्हों ने अपना मुआ़मला आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दिया फिर हु़ज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ फ़रमा लिया और साढ़े 12 ऊक़िया महर निकाह़ मुक़र्रर फ़रमाया।(1)

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बहुत कम अ़र्सा सरकारे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा फ़ैज़ में बसर किया है क्यूंकि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ के चन्द माह बा'द ही इन का इन्तिक़ाल हो गया था, इस लिये कुतुबे सीरत व तारीख़ में बहुत कम आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के अह़वाल का ज़िक्र मिलता है, इस कमिये ज़िक्र के बा वुजूद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अ़ज़्मत का सितारा बहुत बुलन्द नज़र आता है जिस के चन्द ह़सीन गोशे आप ने मुलाह़ज़ा किये, अब आइये! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के नाम व नसब और ख़ानदान के ह़वाले से भी चन्द इब्तिदाई बातों से मुतआ़रिफ़ हो जाइये, चुनान्चे,

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इस्मे गिरामी ज़ैनब और वालिद का नाम ख़ुज़ैमा है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब इस त़रह़ है : "**ख़ुज़ैमा बिन**

(1)...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ رضی اللہ عنھن، ۴۱۳۳-زینب بنت خزیمۃ رضی اللہ عنھا، ۸/۹۱.

www.dawateislami.net

हारिस बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन हिलाल बिन आ़मिर बिन सा'सआ़ बिन मुआ़विया बिन बक्र बिन हवाज़ुन बिन मन्सूर बिन इकरमा बिन ख़सफ़ह बिन क़ैस बिन ईलान[1] बिन मुज़र"[2]

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते मुज़र में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है। हज़रते मुज़र **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 18 वें जद्दे मोह़तरम (दादाजान) हैं।

मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन ख़ातून

एक क़ौल के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की अख़्याती (मां शरीक) बहन हैं[3] इस क़ौल के मुताबिक़ अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का ख़ानदानी पस मन्ज़र मुलाह़ज़ा किया जाए तो इस में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को सआ़दत दर सआ़दत ह़ासिल थी क्यूंकि इस ए'तिबार से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, हिन्द बिन्ते औ़फ़ की बेटी हैं और हिन्द बिन्ते औ़फ़ वोह ख़ातून हैं जिन के बारे में मश्हूर था कि येह सुसराली रिश्तों के ए'तिबार से सब से मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ातून हैं। इस की वज्ह येह थी कि इन की दो[2] बेटियां हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा

1 ...عیون الاثر فی فنون المغازی والسیر، ذکر ازواجہ...الخ، زینب بنت خزیمۃ، ۲/۳۹۶.

2 ...نسب قریش، ولد معد بن عدنان، ص۷.

3 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث، زینب ام المساکین...الخ، ۴/۴۱۶.

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) तो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत से मुशर्रफ़ हुईं कि जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का इन्तिक़ाल हो गया इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमाया और दीगर बेटियां भी मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन अफ़राद के निकाह़ में थीं, चुनान्चे, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन हाद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ) जैसे अ़माइदीने इस्लाम भी इन के दामादों में शामिल हैं।(1)

अल अख़वातुल मोमिनात

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ख़ानदानी ए'तिबार से एक येह शरफ़ भी ह़ासिल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उन चार 4 अ़ज़ीम बहनों की अख़वाती (मां शरीक) बहन हैं जिन को हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल अख़वातुल मोमिनात का दिल नशीन लक़ब अ़ता फ़रमाया है, वोह चार 4 बहनें मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

- उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **मैमूना** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)
- उम्मे फ़ज़्ल ह़ज़रते सय्यिदतुना **लुबाबा बिन्ते ह़ारिस** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)
- ह़ज़रते सय्यिदतुना **सलमा बिन्ते ड़मैस** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)

1 ...اسد الغابة، حرف اللام، ٧٢٥٢-لبابة بنت الحارث، ٧/ ٢٤٦، بتغير قليل.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदतुना **अस्मा बिन्ते उ़मैस** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा हयात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।
- ग़रीबों व मिस्कीनों पर शफ़्क़त व एह़सान की बदौलत ज़मानए जाहिलिय्यत में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उम्मुल मसाकीन के दिल नवाज़ ख़िताब से पुकारा जाने लगा था।[2]
- अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इलावा सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ही हैं जिन्हों ने सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका में इन्तिक़ाल किया[3] और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें दफ़्न फ़रमाया।[4]
- अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नमाज़े जनाज़ा ख़ुद प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अदा फ़रमाई क्यूंकि

---

1 ...معرفة الصحابة لأبي نعيم، باب السين، ٣٩٠٤-سلمى بنت عميس الخثعمية، ٣٣٥٤/٦، الحديث: ٧٦٧٦.

2 ...السيرة الحلبية، باب ذكر ازواجه وسراريه، ٤٤٦/٣.

3 ...الاستيعاب فى معرفة الاصحاب، محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم، ٤٥/١.

4 ...الطبقات الكبرى، ذكر ازواج رسول الله، ٤١٣٣-زينب بنت خزيمة، ٩٢/٨.

www.dawateislami.net

जब ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنہا का इन्तिक़ाल हुवा था उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नहीं आया था।[1]

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا उन ख़्वातीन में से हैं जिन्हों ने अपनी जानें **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के लिये हिबा कर दी थीं और इन के बारे में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

تُرْجِیْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُـْٔوِیْۤ اِلَیْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَ مَنِ ابْتَغَیْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكَ ؕ

(پ۲۲، الاحزاب:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पीछे हटाओ उन में से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो और जिसे तुम ने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं।*

चुनान्चे, बुख़ारी शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि मैं उन औ़रतों पर ग़ैरत करती थी जो अपनी जानें **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को बख़्श देती थीं। मैं कहती थी : क्या औ़रत अपनी जान बख़्शती है ? फिर जब **अल्लाह** عزوجل ने येह (मज़्कूरए बाला) आयत उतारी तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के रब को नहीं देखती मगर वोह आप की ख़्वाहिश पूरी करने में जल्दी फ़रमाता है।[2]

1....फ़तावा रज़विय्या, 9/369

2... صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الاحزاب، باب [ترجي من تشاء...الخ]، ص۱۲۱۷، الحدیث:۴۷۸۸.

www.dawateislami.net

शर्हे हदीस

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस हदीस शरीफ़ की शर्ह करते हुवे फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि हज़रते उम्मुल मोमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का अ़क़ीदा येह था :

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद

लिहाज़ा अगर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हम जैसे गुनहगारों को रब (عَزَّوَجَلَّ) से बख़्शवाना चाहें तो रब तआ़ला ज़रूर बख़्श देगा क्यूंकि वोह हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की रिज़ा चाहता है :

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें
कि ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा

ख़याल रहे कि चन्द औ़रतों ने अपने को हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर पेश किया है :

(1)....**मैमूना**

(2)....**उम्मे शरीक**

(3)....**ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा**

(4)....**ख़ुवैलद बिन्ते हकीम** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) ।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....मिरआतुल मनाजीह, बीवियों से बरताव, पहली फ़स्ल, 5/95

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मी व रूहानी फ़ैज़ान से फ़ैज़याब होते हुवे और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार के शरबत से अपनी आंखों को सैराब करते हुवे सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आने के आठ8 माह बा'द रबीउ़ल आख़िर चार4 हिजरी में 30 बरस की उ़म्र पा कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने सफ़रे आख़िरत का आग़ाज़ फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आने के बा'द सिर्फ़ दो2 या तीन3 माह ह़यात रहीं। रसूले अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और **जन्नतुल बक़ीअ़** में दफ़्न फ़रमाया।(1)

हुजरए सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्दे ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वफ़ात के बा'द जब सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अ़क़्दे निकाह़ फ़रमाया तो इन्हें ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के हुजरे में ठहराया।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث، زینب ام المساکین...الخ، ٤/٤١٨، بتغییر قلیل.

2 ...امتاع الاسماع، فصل فی ذکر من بنی...الخ، واما بیوته، ١٠/٩٣.

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सीरते पाक के चन्द रोशन पहलू आप ने मुलाह़ज़ा किये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को कसीर इन्आ़मात से नवाज़ा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ऐसा दिल अ़ता फ़रमाया था जो ग़रीबों व मिस्कीनों की मह़ब्बत से लबरेज़ था और इस सिफ़त में इम्तियाज़ी शान की वज्ह से ही आप को उम्मुल मसाकीन कह कर पुकारा जाता था। आप की सीरते मुबारका को मश्अ़ले राह बनाते हुवे हमें भी फ़ुक़रा और मसाकीन के साथ मेहरबानी व एह़सान के साथ पेश आना चाहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में क़ुरआनो सुन्नत पर अ़मल करने और अस्लाफ़े किराम के नुक़ूशे क़दम पर चलने का ज़ेहन दिया जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी ज़ेहन को इस्लामी बहनें क़बूल करती हैं और आए दिन ऐसी मदनी बहारें रूनुमा होती हैं कि नेकियों में सबक़त और शरई पर्दे का ज़ेहन न रखने वालियां नेकूकार और पर्दादार बन जाती हैं। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार यहां बयान की जाती है, चुनान्चे,

मैं ने मदनी बुर्क़अ़ कैसे अपनाया......?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **'बद नसीब दुल्हा'** सफ़ह़ा 19 पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन की तह़रीर का खुलासा है कि मैं पहले बहुत ज़ियादा फ़ेशनेबल थी, फ़ोन के ज़रीए़ ग़ैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, आस पड़ोस की शादियों में रस्मे मेहंदी के

www.dawateislami.net

मौक़अ़ पर मुझे ख़ास तौ़र पर बुलाया जाता, वहां मैं दूसरी लड़कियों को डान्स और डान्डिया सिखाती थी, एक से बढ़ कर एक गाने मुझे ज़बानी याद थे। आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मुझ से गाना सुनाने की फ़रमाइश की जाती। (وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہ)

वैसे मैं कभी कभार नमाज़ भी पढ़ लेती और रमज़ानुल मुबारक में रोज़े भी रख लेती थी। बद क़िस्मती से घर में T.V बहुत देखा जाता था जिस की वज्ह से मैं गुनाहों से बच नहीं पाती थी। मुझे ना'तें पढ़ने का शौक़ तो था मगर फ़ुज़ूल मशाग़िल की वज्ह से न पढ़ पाती। एक बार रबीउ़न्नूर शरीफ़ की शाम नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए उन के हाथ में तीन[3] केसिट थे जिन में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का सुन्नतों भरा केसिट बयान बनाम **'क़ब्र की पहली रात'** भी था। मैं ने जब उस बयान को सुना तो मुझे झटका तो लगा मगर मैं गुनाहों के दल-दल में इस क़दर फंसी हुई थी कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई, इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि गुनाहों का एह़सास होने लगा। एक दिन पड़ोस में **दा'वते इस्लामी** की ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिलसिलए ग्यारहवीं शरीफ़ **इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम किया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के सुन्नतों भरे केसिट बयान सुनने की बरकत से मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में जाने का इरादा किया। मगर वहां जाने के लिये भी ख़ूब मेक-अप कर के जदीद फ़ेशन का

www.dawateislami.net

लिबास पहना। इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में एक इस्लामी बहन ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिस ने मेरे दिल पर बड़ा असर किया। बयान के बा'द ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ की शान में अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का लिखा हुवा कलाम **'या ग़ौस ! बुलालो मुझे बग़दाद बुला लो'** पढ़ा गया। इस कलाम को सुन कर मेरी दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। यूं मेरा दा'वते इस्लामी के इजतिमाआ़त में जाने का सिलसिला बन गया और कुछ ही अ़र्से में मदनी बुर्क़अ़ पहनने की सआ़दत भी पाने लगी। आज मैं **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

»»»»»···«·»···««««««

इन्सान के तीन[3] दुश्मन

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ राज़ी علیہ رحمۃ اللہ الہادی फ़रमाते हैं कि इन्सान के तीन[3] दुश्मन हैं :

.....दुन्या.....शैतान.....नफ़्स......

लिहाज़ा दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार कर के, शैतान की मुख़ालफ़त कर के और नफ़्स की ख़्वाहिशात तर्क कर के इस से महफ़ूज़ रहे।

[احیاء علوم الدین، کتاب ریاضۃ النفس،بیان الطریق الذی یعرف بہ الانسان...الخ، ۳/۸٤]

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इमाम मजदुद्दीन मुहम्मद बिन या'क़ूब फ़ीरोज़ाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि मिस्र में एक नेक व पारसा शख़्स था जिसे अबू सईद ख़य्यात़ कहा जाता था। वोह लोगों से मिलता जुलता था न उन की महफ़िलों में शरीक होता। फिर अचानक उस ने पाबन्दी के साथ हज़रते इब्ने रशीक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ اللَّطِیْف की महफ़िल में हाज़िर होना शुरूअ़ कर दिया। इस पर लोगों को हैरानी हुई और उन्हों ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस की वज्ह दरयाफ़्त की। फ़रमाया : मुझे ख़्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे पुर अन्वार की सआ़दत ह़ासिल हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इब्ने रशीक़ की महफ़िल में हाज़िर हुवा करो क्यूंकि वोह इस में मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ता है। (लिहाज़ा मैं ने हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने गोहर बार पर अ़मल करते हुवे उन की महफ़िल में हाज़िर होना शुरूअ़ कर दिया।)

फिर जब हज़रते इब्ने रशीक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ اللَّطِیْف का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हें ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में देखा गया। पूछा गया : "بِمَ اُوْتِیْتَ ھٰذَا؟ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह इन्आ़मात मिलने का सबब क्या बना ?" फ़रमाया : "بِکَثْرَۃِ صَلَاتِیْ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم महबूबे ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना।"(1)

---

1 ...الصلات والبشر، الباب الرابع، الآثار الواردة فی فضائل...الخ، ص ١٦٥.

www.dawateislami.net

وِرد کُن ہر دَم دُرودِ پاک را
شاد کُن بَر خود شہِ لولاک را
تا بیابد قطرہ از بحرِ کرم
محو سازد جملہ عصیاں و جرم [1]

(या'नी हर दम दुरूदे पाक का विर्द कर कर के शहे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुद से ख़ुश कर कि अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बह्‌रे करम से एक क़त्‌रा भी नसीब हो गया तो वोह तमाम गुनाह और जुर्म मिटा देगा ।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़बूले इस्लाम और वाक़िआते हिजरत

दुन्या तबाही के किनारे...

दिलो दिमाग़ पर कुफ़्रो जहालत की तारीकियां छा चुकी थी, क़बीलों और मुख़्तलिफ़ अफ़राद के सीनों में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत व अ़दावत की आग भड़क रही थी जिस की वज्ह से क़त्लो ग़ारत गिरी का बाज़ार गर्म था । नीज़ जहालत व बे वुक़ूफ़ी ने लोगों की अ़क़्लों पर कुछ ऐसे पर्दे डाल रखे थे कि वोह अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से मुंह मोड़ कर अपने बनाए हुवे बात़िल मा'बूदों की पूजापाट में मसरूफ़ थे । ज़िनाकारी जैसे अख़्लाक़ सोज़ जराइम का ऐसे खुले आ़म इर्तिकाब होता था कि गोया येह गुनाह ही न हों । औ़रतों से हुक़ूक़े ज़िन्दगी छीन लिये गए थे, ज़ुल्म की ह़द येह थी कि छोटी छोटी बे गुनाह बच्चियों को ज़िन्दा

1 ...شفاء القلوب، ص ۱۹۵.

www.dawateislami.net

दरगोर (दफ़्न) कर दिया जाता था अल ग़रज़ इस त़रह़ के कई इन्सानिय्यत सोज़ जराइम की वज्ह से दुन्या तबाही के किनारे पहुंची हुई थी और बिलकती हुई इन्सानिय्यत किसी नजात दिहन्दा (नजात देने वाले) के इन्तिज़ार में थी।

आफ़्ताबे रिसालत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की किरनें

ऐसे में ख़ालिके काइनात جل جلالہ ने इन्सानिय्यत की फ़लाहो बहबूद के लिये उस अ़ज़ीम हस्ती को मबऊ़स फ़रमाया जिन्हें उस ने सब से पहले पैदा फ़रमाया और जिन के लिये येह काइनात की रोनकें सजाईं। आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم सर चश्मा रुश्दो हिदायत होने की हैसिय्यत से फ़र्शे गेती पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और लोगों को खुदाए वाहिद عزوجل की इ़बादत की त़रफ़ बुलाने लगे। बहुत जल्द आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के नूर की किरनों से कुफ़्र व गुमराहिय्यत और अलह़ाद व बे दीनी की घटाटोप (सख़्त तारीक) रात का ख़ातिमा हुवा और दुन्या में तौह़ीदो रिसालत और ईमान के नूर से मुनव्वर एक नए सवेरे ने तुलूअ़ किया। जो लोग सब से पहले आफ़्ताबे रिसालत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के नूर की किरनों से मुनव्वर हुवे और कुफ़्र व गुमराहिय्यत की उस तारीक रात में सुब्हे सादिक़(1) की त़रह़ रोशनी की पहली किरन बन कर चमके इन में से एक ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह हिन्द बिन्ते अबू उमय्या رضی اللہ تعالٰی عنہا और दूसरे आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के शोहरे नामदार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद رضی اللہ تعالٰی عنہ भी हैं। इन दोनों

---

(1)....वोह रोशनी जो जानिबे मशरिक़ उस जगह ज़ाहिर होती है जहां से आफ़्ताब तुलूअ़ होने वाला हो और बढ़ती जाती है यहां तक कि तमाम आस्मान पर फैल जाती है और ज़मीन पर उजाला हो जाता है।

www.dawateislami.net

मुबारक हस्तियों ने इस्लाम के इब्तिदाई दिनों में ही इस की हक़्क़ानिय्यत को पहचाना और मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो कर اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ की फ़ेहरिस्त में शामिल हो गए जिन के बारे में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍۙ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝۱۰۰ (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा इन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।*

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग्यारहवें नम्बर पर इस्लाम लाने की सआ़दत से मुशर्रफ़ हुवे।(1)

मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार के मज़ालिम

आ़म्मए कुतुबे सीरत के मुत़ाबिक़ शुरूअ़ शुरूअ़ में पोशीदा त़ौर पर दा'वते इस्लाम दी जाती रही और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़दारी के साथ दीने इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाते रहे क्यूंकि उस वक़्त तक ए'लानिय्या दा'वत का हुक्म नहीं आया था। चन्द बरसों बा'द जब

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، ذکر اول من امن...الخ، ۱/۴۵۸.

www.dawateislami.net

इस का हुक्म आया और सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ए'लानिय्या तौ़र पर इस्लाम की दा'वत देने लगे और खुल्लम खुल्ला जाहिलिय्यत की बुराइयों का रद्द फ़रमाने लगे तो जाहिलिय्यत की फ़ज़ाओं में परवान चढ़ने वालों को येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त पर कमर बस्ता हो गए। यहां से मुसलमानों की ईज़ा रसानियों का एक त़वील सिलसिला शुरूअ़ हुवा और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन ने इस्लाम के फ़िदाइयों पर ज़ुल्मो सितम के वोह वोह पहाड़ ढाए कि धरती का कलेजा कांप कर रह गया, आइये ! इन मज़ालिम की मुख़्तसर रूदाद ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के क़लम से मुलाह़ज़ा कीजिये और राहे ख़ुदा में पेश आने वाली हर मुसीबत व परेशानी को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करने का ज़ेह्न बनाइये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन ग़ुरबा मुस्लिमीन पर जोरो जफ़ाकारी के बे पनाह अन्दोहनाक मज़ालिम ढाए और ऐसे ऐसे रूह़ फ़रसा और जां सोज़ अ़ज़ाबों में मुब्तला किया कि अगर उन मुसलमानों की जगह पहाड़ भी होता तो शायद डगमगाने लगता। सह़राए अ़रब की तेज़ धूप में जब कि वहां की रैत के ज़र्रात तन्नूर की त़रह़ गर्म हो जाते, उन मुसलमानों की पुश्त को कोड़ों की मार से ज़ख़्मी कर के उस जलती हुई रैत पर पीठ के बल लिटाते और सीनों पर इतना भारी पथ्थर रख देते कि वोह करवट न बदलने पाएं, लोहे को आग में गर्म कर के इन से उन मुसलमानों के जिस्मों को दाग़ते, पानी में इस क़दर डुबकियां देते कि उन का दम घुटने लगता, चटाइयों में उन मुसलमानों को लपेट कर उन की नाकों में धुवां देते

www.dawateislami.net

जिस से सांस लेना मुश्किल हो जाता और वोह कर्ब व बे चैनी से बद हवास हो जाते।"(1)

इस्लाम पर इस्तिक़ामत....!!

लेकिन येह तमाम तक्लीफ़ें और येह तमाम मज़ालिम सहने के बा वुजूद इन शम्ए रिसालत के परवानों के पाए सबात में ज़र्रा बराबर लग़्ज़िश न आई। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ येह कैसा इस्तिक़्लाल था और कैसी इस्तिक़ामत थी कि चारों तरफ़ से कुफ़्रो शिर्क की तुन्दो तेज़ आंधियों में घिरे हुवे होने के बा वुजूद अपने ईमान की शम्अ़ को बुझने न दिया....!! इस का तज़्किरा करते हुवे हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम ! शराबे तौह़ीद के इन मस्तों ने अपने इस्तिक़्लाल व इस्तिक़ामत का वोह मन्ज़र पेश कर दिया कि पहाड़ों की चोटियां सर उठा उठा कर हैरत के साथ इन बला कशाने इस्लाम (इस्लाम की राह में मुसीबतें बरदाश्त करने वालों) के जज़्बए इस्तिक़ामत का नज़्ज़ारा करती रहीं। संग दिल, बे रह़्म और दरिन्दा सिफ़त काफ़िरों ने इन ग़रीब व बे कस मुसलमानों पर जब्रो इकराह और ज़ुल्मो सितम का कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं छोड़ा मगर एक मुसलमान के पाए इस्तिक़ामत में भी ज़र्रा बराबर तज़लज़ुल नहीं पैदा हुवा और एक मुसलमान का बच्चा भी इस्लाम से मुंह फेर कर काफ़िर व मुर्तद नहीं हुवा।"(2)

हिजरते ह़बशा का पस मन्ज़र

इन नाक़ाबिले बरदाश्त मज़ालिम की वज्ह से मुसलमानों के लिये **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल हो

(1)...सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तीसरा बाब, मुसलमानों पर मज़ालिम, स. 118

(2)...المرجع السابق، ص۱۱۷.

www.dawateislami.net

जाता है और वोह न चाहते हुवे भी अपनी मादरे वत़न से हिजरत कर जाने पर मजबूर हो जाते हैं, चुनान्चे, रिवायत का ख़ुलासा है कि जब सर ज़मीने मक्का (अपनी तमाम तर कुशादगी के बा वुजूद) मुसलमानों पर तंग हो गई, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़िदाइयों को त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतों से दोचार किया गया और इन्हें मुसीबतों व बलाओं में गिरिफ़्तार किया गया तो रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें जानिबे ह़बशा हिजरत कर जाने का फ़रमाया कि

اِنَّ بِاَرْضِ الْحَبَشَةِ مَلِكًا لَا يُظْلَمُ اَحَدٌ عِنْدَهٗ فَالْحَقُوْا بِبِلَادِهٖ حَتّٰى يَجْعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ فَرَجًا وَّمَخْرَجًا مِمَّا اَنْتُمْ فِيْهِ

"सर ज़मीने ह़बशा में ऐसा (आ़दिल) बादशाह है जिस के हां किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाता, तुम लोग उस के मुल्क में चले जाओ ह़त्ता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये कुशादगी और इन मसाइब से निकलने का रास्ता बना दे जिन में तुम मुब्तला हो।"(1)

हिजरते ह़बशा

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त पा कर ए'लाने नबुव्वत के पांचवें साल, रजबुल मुरज्जब के महीने में 11 मर्द और 4 औ़रतों ने जानिबे ह़बशा हिजरत की।(2) उन मुहाजिरीने ह़बशा की सफ़ में ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और आप के शोहरे नामदार

1 ...السنن الكبرى للبيهقي، كتاب السير، باب الاذن بالهجرة، ٩/١٦، الحديث: ١٧٧٣٤.
2 ...المواهب اللدنية، المقصد الاول، هجرته صلى الله عليه وسلم، ١/١٢٥.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शरीक थे।[1]

ह़बशा की ज़िन्दगी

सर ज़मीने ह़बशा मुसलमानों के लिये बहुत अम्नो सुकून की जगह साबित हुई और मुसलमान बिला ख़ौफ़ो ख़त़र ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत में मस्रूफ़ हो गए। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़बशा के पुर सुकून माह़ोल से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं : "हमें अपने दीन के ह़वाले से इत़्मीनान व सुकून ह़ासिल हुवा और हम ने इस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, कि न हमें तक्लीफ़ दी जाती और न हम कोई ना पसन्दीदा बात सुनते।"[2]

मक्का वापसी और हिजरते मदीना

कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (अपनी ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ले कर) मक्का वापस आ गए यहां पहुंच कर जब दोबारा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की अज़िय्यतों से दोचार हुवे नीज़ मदीना शरीफ़ में अन्सार के ईमान लाने की ख़बर भी मिली तो उस की त़रफ़ हिजरत के लिये निकल खड़े हुवे।[3] हिजरत का वाक़िआ़ बयान करते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल मलिक बिन हिशाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام नक़्ल फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीना शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत का पुख़्ता इरादा किया तो ऊंट पर कजावा बांधा और सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، الھجرۃ الاولی الی الحبشۃ، ۱/ ۵۰۴.

2 ...مسند احمد، مسند عقیل بن ابی طالب رضی اللہ عنہ، ۱/ ۵۴۶، الحدیث: ۱۷۶۶.

3 ...السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، الجزء الثانی، ذکر المھاجرین الی المدینۃ، ۱/ ۸۵.

www.dawateislami.net

अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को कजावे में सुवार किया फिर उन्हें लिये हुवे ऊंट की नकील पकड़ कर चल पड़े । जब ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मैके वालों बनू मुग़ीरा ने उन्हें देखा तो वोह आए और कहने लगे : तुम्हें तो हम नहीं रोक सकते लेकिन हमारे ख़ानदान की इस लड़की के बारे में तुम क्या चाहते हो ? हम क्यूं इसे तुम्हारे पास छोड़ दें कि तुम इसे शहर ब शहर लिये फिरो ? येह कह कर उन्हों ने ऊंट की नकील को उन से छीन लिया और ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को उन से अ़लाह़िदा कर दिया । इस पर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ख़ानदान बनू अ़ब्दुल असद के लोगों को तैश आ गया और उन्हों ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : ब ख़ुदा ! जब कि तुम ने उम्मे सलमह को उस के शोहर से अ़लाह़िदा कर दिया है जो हमारे ख़ानदान में से हैं तो हम हरगिज़ हरगिज़ अबू सलमह के बेटे सलमह को इस के पास नहीं रहने देंगे क्यूंकि वोह बच्चा हमारे ख़ानदान का एक फ़र्द है । फिर इन में ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बेटे सलमह को ले कर छीना झपटी हुई बिल आख़िर बनू अ़ब्दुल असद वाले उसे ले कर चले गए और ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को बनू मुग़ीरा के लोगों ने अपने पास रोक लिया । मगर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हिजरत का इरादा तर्क नहीं किया बल्कि बीवी और बच्चा दोनों को छोड़ कर तन्हा मदीना शरीफ़ चले गए ।

ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا शोहर और बच्चे की जुदाई पर हर सुब्ह़ वादिये मक्का में बैठ कर रोना शुरूअ़ कर देतीं इसी त़रह़ तक़रीबन एक साल का अ़र्सा गुज़र गया । एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का एक चचाज़ाद भाई आप के पास से गुज़रा और आप का ह़ाल देख कर उस को

www.dawateislami.net

आप पर रह्म आया और उस ने बनू मुग़ीरा को समझाते हुवे कहा : तुम ने इस मिस्कीना को इस के शोहर और बच्चे से क्यूं जुदा कर रखा है और इसे क्यूं नहीं जाने देते...!! बिल आख़िर बनू मुग़ीरा ने इस पर रिज़ामन्द होते हुवे ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से कहा : अगर चाहो तो अपने शोहर के पास चली जाओ । फिर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान वालों ने बच्चे को ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिपुर्द कर दिया । ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बच्चे को गोद में ले कर ऊंट पर सुवार हुई और तन्हा जानिबे मदीना रवाना हो गईं । जब तनईम के मक़ाम पर पहुंचीं तो ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई, उन्हों ने कहा : ऐ अबू उमय्या की बेटी ! कहां का इरादा है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जवाब दिया कि मैं अपने शोहर के पास मदीना जा रही हूं। उन्हों ने कहा : तुम्हारे साथ कोई दूसरा नहीं है ? फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मेरे साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मेरे इस बच्चे के सिवा कोई नहीं ? येह सुन कर ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हें इस त़रह़ तन्हा नहीं छोड़ सकता। येह कह कर उन्हों ने ऊंट की मुहार अपने हाथ में ली और पैदल चलते हुवे आगे बढ़े । ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : ख़ुदाए जुल जलाल की क़सम ! मैं ने अ़रब के किसी शख़्स को ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा शरीफ़ नहीं पाया कि वोह जब किसी मन्ज़िल पर पहुंचते, ऊंट को बिठाते फिर मुझ से दूर हट जाते । जब मैं नीचे उतर जाती तो आ कर ऊंट ले जाते, उस से कजावा उतार कर किसी दरख़्त के साथ बांधते और फिर दूर जा कर किसी दरख़्त के

www.dawateislami.net

नीचे लेट जाते । जब रवानगी का वक़्त क़रीब होता तो ऊंट के पास जा कर उसे आगे बढ़ाते, उस की पीठ पर कजावा बांधते और फिर दूर जा कर कहते : सुवार हो जाइये । जब मैं सुवार हो कर दुरुस्त हो कर बैठ जाती तो आ कर उस की मुहार पकड़ कर चलने लगते ह़त्ता कि अगली मन्ज़िल पर पहुंच जाते । इस त़रह़ करते करते मुझे मदीना तक पहुंचा दिया, जब क़ुबा के मक़ाम में वाक़ेअ़ बनी अ़म्र बिन औ़फ़ का गाऊं नज़र आया तो वोह वहां से येह कह कर मक्का वापस चले गए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बरकत की उम्मीद पर गाऊं में दाख़िल हो जाओ, तुम्हारा शोहर इसी गाऊं में है ।(1) इस त़रह़ ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا भी ब ख़ैरिय्यत मदीनए मुनव्वरा पहुंच गईं । कुछ अ़र्से बा'द दीगर मुसलमान और प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم भी हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए और आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के जल्वों से उस के दरो दीवार जगमगाने लगे और जो मुसलमान पहले से ही मदीना शरीफ़ में मौजूद थे आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की आमद से उन के दिल फ़रह़त व सुरूर से भर गए ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम की ता'मीर व तरक़्क़ी और तरवीज व इशाअ़त में मर्दों के साथ साथ औ़रतों ने भी ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और इस की राह में आने वाली हर मुसीबत व परेशानी

---

(1) ...السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، الجزء الثانی، ذکر المھاجرین الی المدینۃ، ۱/ ۸۵.

www.dawateislami.net

को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त किया। मज़्कूरा वाक़िआ़ इस की वाज़ेह़ दलील है, ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! एक मां से जब उस का बच्चा छीन लिया जाए और शोहर भी क़रीब मौजूद न रहे तो येह उस के लिये किस क़दर सब्र आज़्मा और जां सोज़ घड़ी होगी...? लेकिन इस सब के बा वुजूद ज़बान पर ह़र्फ़े शिकायत न आने देना बल्कि दिल में भी शिक्वा को जगह न देना और येह तमाम मुसीबतें और परेशानियां सहने के बा वुजूद राहे इस्लाम पर मज़्बूत़ी के साथ क़ाइम रहना यक़ीनन बहुत बड़ी क़ुरबानी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उम्मत की इन अ़ज़ीम माओं के सदक़े हमें भी अपने तन मन धन से दीने इस्लाम की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़ज़्वए बद्र व उहुद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार की इस्लाम दुश्मनी इस ह़द तक बढ़ी हुई थी कि मुसलमानों के **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا हिजरत कर आने के बा वुजूद भी वोह अपनी सफ़्फ़ाकाना ह़रकतों से बाज़ न आए, हमेशा मुसलमानों की ईज़ा रसानी के दरपे रहते और मुसलमानों को सफ़्ह़ए हस्ती से मिटाने के लिये कोई दक़ीक़ा बाक़ी न छोड़ते। जिस के नतीजे में हिजरत के दूसरे साल मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन 80 मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ बद्र के मक़ाम पर और फिर इस के एक साल बा'द तीन[3] हिजरी में मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन तीन[3] मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ उहुद के मैदान में ह़क़ व बात़िल की अ़ज़ीम जंगें हुईं जिन में कुफ़्फ़ार को मुंह की खानी पड़ी, इस्लाम का सूरज बुलन्द हुवा और कुफ़्र ज़लीलो रुस्वा हुवा।

www.dawateislami.net

इस्लाम व कुफ़्र के इन दो[2] अ़ज़ीम मा'रकों में शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में ह़ज़रते अबू सलमह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी सफ़र कर के शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की और इन्तिहाई शुजाअ़त व बहादुरी और जवांमर्दी से कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करते हुवे कुफ़्र को पाउं तले रौंद कर परचमे इस्लाम बुलन्द से बुलन्द फ़रमाया। मरवी है कि उहुद के कारज़ार (जंग) में दुश्मनों को तहे तेग़ करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद भी ज़ख़्मी हो गए, एक माह तक इलाज मुआ़लजा करते रहे ह़त्ता कि सिह़्ह़त याब हो गए।(1)

निराली वफ़ा

शबो रोज़ यूं ही गुज़रते रहे कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : मुझे मा'लूम हुवा है कि जब किसी औ़रत का ख़ावन्द फ़ौत हो जाए और वोह मियां बीवी दोनों जन्नती हों, इस के बा'द वोह औ़रत किसी से शादी न करे तो **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त दोनों को जन्नत में जम्अ़ फ़रमाएगा। इसी त़रह़ जब औ़रत मर गई और इस के बा'द उस का ख़ावन्द ज़िन्दा रहा।

लिहाज़ा आओ ! अ़हद करें कि तुम मेरे बा'द शादी नहीं करोगे और मैं तुम्हारे बा'द। इस पर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम मेरी एक बात मानोगी ? ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : मैं जब भी आप से मश्वरा करती हूं इस में मेरा इरादा आप की इत़ाअ़त का ही होता है। येह सुन कर ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : फिर ऐसा करो कि जब मैं वफ़ात पा जाऊं तो तुम दूसरी शादी कर लेना।

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه...الخ، ٤/٣٩٨.

www.dawateislami.net

इस के बा'द आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने बारगाहे इलाही में इस त़रह़ दुआ़ की :

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْ اُمَّ سَلَمَةَ بَعْدِیْ رَجُلًا خَیْرًا مِّنِّیْ لَا یُحْزِنُھَا وَ لَا یُؤْذِیْھَا

"इलाही ! उम्मे सलमह को मेरे बा'द मुझ से बेहतर शोहर अ़ता फ़रमा जो इसे ग़मज़दा करे न तक्लीफ़ दे ।"(1)

सय्यिदुना अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ का लश्कर

मुह़र्रमुल ह़राम चार[4] हिजरी में ना गहां **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में येह ख़बर पहुंची कि सलमह बिन ख़ुवैलिद और त़लह़ा बिन ख़ुवैलिद मदीनए मुनव्वरा पर चढ़ाई के लिये तय्यारी कर रहे हैं। जिस पर शाहे ख़ैरुल अनाम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने उन की पस्पाई के लिये ह़ज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ की सर कर्दगी में 150 मुहाजिरीन व अन्सार को रवाना फ़रमाया लेकिन जब उन्हें मुसलमानों के इस लश्कर की ख़बर हुई जो उन की सरकोबी के लिये भेजा गया था तो बहुत से ऊंट और बकरियां छोड़ कर भाग गए जिन्हें मुसलमान मुजाहिदीन ने माले ग़नीमत बना लिया और लड़ाई की नौबत ही नहीं आई ।(2)

सय्यिदुना अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ का इन्तिक़ाल

वोह ज़ख़्म जो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को उहुद के मैदान में कुफ़्फ़ार को नेस्तो नाबूद करते हुवे पहुंचा था अगर्चे मुन्दमिल हो चुका था लेकिन इस सफ़र से वापसी पर वोह फिर हरा हो गया जिस की वज्ह से

---

1 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤١٣٠–امسلمۃ، ٧٠/٨.

2 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، کتاب المغازی، سریۃ ابی سلمۃ...الخ، ٤٧٢/٢، ملخصاً.

....सीरते मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم, नवां बाब, सरियए अबू सलमह, स. 288 बित्तग़य्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ एक बार फिर बिस्तरे अ़लालत पर दराज़ हो गए। इस बार जां बर न हो सके और कुछ अ़र्सा इसी त़रह़ गुज़ार कर आठ[8] जुमादल उख़रा चार[4] हिजरी में दारे फ़ना (दुन्या) से दारे बक़ा (आख़िरत) की त़रफ़ कूच फ़रमाया।(1) اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن

प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की तशरीफ़ आवरी

नज़र, रूह़ के पीछे जाती है....

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को जब ह़ज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ हुई तो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم तशरीफ़ लाए, देखा कि उन की आंखें खुली हुई हैं तो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने अपने दस्ते अक़्दस से उन की आंखें बन्द फ़रमा दीं और फ़रमाया : रूह़ जब क़ब्ज़ कर ली जाती है तो नज़र उस के पीछे जाती है।(2)

शर्ह़े फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के इस फ़रमाने अ़ज़ीम की वज़ाह़त करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं कि रूह़ जब जिस्म से जुदा होती है तो नज़र भी उस की पैरवी करते हुवे चली जाती है लिहाज़ा आंख खुली रहने से फ़ाइदा कुछ नहीं होता।(3) इस लिये इन्हें फ़ौरन बन्द कर देना चाहिये।

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ۳۹۸/٤.

2 ... صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فی اغماض المیت...الخ، ص ۳۳۰، حدیث ۹۲۰.

3 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند من حضرہ الموت، الفصل الاول، ۷۷/٤، تحت الحدیث: ۱۶۱۹.

www.dawateislami.net

अहले ख़ाना की आहो बुका

फिर जब ह़ज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ के घरवालों ने ग़म व अन्दोह के सबब आहो बुका शुरूअ़ की तो हु़ज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि अपने मुतअ़ल्लिक़ ख़ैर ही की दुआ़ करना क्यूंकि फ़िरिश्ते तुम्हारे कहे पर **आमीन** कहते हैं।(1)

मग़्फ़िरत की दुआ़

फिर बारगाहे रब्बुल अनाम में दुआ़ करते हुवे आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने अ़र्ज़ किया :

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِاَبِیْ سَلَمَۃَ وَارْفَعْ دَرَجَتَہٗ
فِی الْمَھْدِیِّیْنَ وَاخْلُفْہُ فِیْ عَقِبِہٖ فِی الْغَابِرِیْنَ وَاغْفِرْلَنَا وَلَہٗ یَارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ وَافْسَحْ
لَہٗ فِیْ قَبْرِہٖ وَنَوِّرْ لَہٗ فِیْہِ

“इलाही ! अबू सलमह की बख़्शिश फ़रमा, हिदायत याफ़्ता लोगों में इस का दरजा बुलन्द फ़रमा, पसमांद गान में इस का बेहतर बदला अ़ता फ़रमा, ऐ रब्बुल आ़लमीन ! हमारी और इस की मग़्फ़िरत फ़रमा, इस की क़ब्र कुशादा फ़रमा दे और इस के लिये उस में रोशनी व नूर पैदा फ़रमा।”(2)

मय्यित पर रोना बुरा नहीं मगर....!!

ख़याल रहे कि मय्यित पर रोना बुरा नहीं मगर नौह़ा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, नौह़ा करने वालियों का अ़ज़ाब बयान करते हुवे रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم इरशाद

❶...صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فی اغماض المیت...الخ، ص۳۳۰، حدیث۹۲۰.
❷...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : नौह़ा करने वालियों की क़ियामत के दिन जहन्नम में दो[2] सफ़ें बनाई जाएंगी, एक सफ़ जहन्नमियों के दाएं त़रफ़, दूसरी बाएं त़रफ़। वोह जहन्नमियों पर यूं भोंकती रहेंगी जैसे कुत्ते भोंकते हैं।(1)

नौह़ा के मा'ना और हुक्म

नौह़ा या'नी मय्यित के अवसाफ़ (ख़ूबियां) मुबालग़े के साथ (ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर) बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को बैन (भी) कहते हैं बिल इजमाअ़ ह़राम है। यूं ही वावेला, **वा मुसीबताह** (हाए मुसीबत) कह कर चिल्लाना।(2)

मुसीबत पर सब्र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन्सान की मौत इस के पसमांदगान के लिये बहुत ही सब्र आज़्मा मर्ह़ला होता है, बड़े बड़े दिल गुर्दे वाले उस वक़्त जामे से बाहर आ जाते हैं लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर ज़बान को क़ाबू में रखना और सब्र का दामन हाथ से न जाने देना निहायत ही अज्रो सवाब का बाइ़स होता है। याद रखिये ! बे सब्री से काम लेने और ज़बान के बे क़ाबू होने से सब्र का अज्रो सवाब बरबाद और इन्सान त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में तो मुब्तला हो सकता है मगर मरने वाला पलट कर नहीं आ सकता।

आंखें रो रो कर सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले (3)

---

1 ...المعجم الاوسط، باب المیم، من اسمہ محمد، ٤/٦٦، الحدیث ٥٢٢٩.

2 ....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 49

3 ....ह़दाइके़ बख़्शिश, हि़स्सए अव्वल, स. 160

www.dawateislami.net

मुसीबत में बेहतर इवज़ पाने का नुस्ख़ा

इस लिये मुसीबत में वावेला करने के बजाए अपने अस्लाफ़े किराम رحمہم اللہ السلام की सीरते तृय्यिबा पर अ़मल करते हुवे सब्र से काम ले कर अज्रो सवाब कमाना चाहिये नीज़ रब तआ़ला की बारगाह में बेहतर बदल अ़ता किये जाने की दुआ़ करनी चाहिये कि सरकारे ज़ी वक़ार, महबूबे रब्बे गफ़्फ़ार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने अपने अस्हाब رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین को इसी की तल्क़ीन फ़रमाई और इसी पर अ़मल का हुक्म फ़रमाया है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जब भी किसी मुसलमान को कोई मुसीबत पहुंचे और वोह वोही कहे जिस का अल्लाह عزوجل ने हुक्म फ़रमाया है कि

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِيْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَيْرًا مِّنْهَا

"हम अल्लाह عزوجل का माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना (लौट कर जाना) है। इलाही ! मुझे मेरी मुसीबत में अज्र दे और इस का बेहतर बदल अ़ता फ़रमा।"

तो अल्लाह عزوجل उसे बेहतर बदल अ़ता फ़रमाता है।

हज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं : जब हज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं बोली कि हज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ से बेहतर कौन मुसलमान होगा कि वोह तो पहले घरवाले हैं जिन्हों ने सरकारे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की त़रफ़ (मदीनतुल मुनव्वरा زادھا اللہ شرفاً و تعظیماً) हिजरत की....!! फिर मैं ने येह दुआ़ कह ही ली चुनान्चे,

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इन के इवज़ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ता फ़रमाए।(1)

शर्हे ह़दीस

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْحَنَّان ह़दीसे मज़्कूरए बाला की शर्ह़ में तह़रीर फ़रमाते हैं : येह अ़मल बड़ा मुजर्रब (तजरिबा शुदा) है। फ़ौतशुदा मय्यित और गुमशुदा चीज़ सब पर पढ़ा जाए लेकिन जिस गुमी चीज़ के मिलने की उम्मीद हो उस पर رَاجِعُوْنَ तक पढ़े और जिस से मायूसी हो चुकी हो उस पर पूरा पढ़े, मगर ज़रूरी येह है कि ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ हों और दिल में सब्र।

नीज़ ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रमान "अबू सलमह से बेहतर कौन मुसलमान होगा" की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : (आप की) निगाह में इन ख़ुसूसिय्यात (या'नी सब से पहले मदीना शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत करने) के लिह़ाज़ से अबू सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) जुज़्वी त़ौर पर सब से बेहतर थे इस लिये आप ने येह ख़याल किया लिहाज़ा ह़दीस पर ए'तिराज़ नहीं हो सकता कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन तो अबू सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से अफ़्ज़ल थे। या'नी ईमान कहता था कि इस दुआ़ की बरकत से मुझे इन से बेहतर ख़ावन्द मिलेगा मगर अ़क़्ल व समझ कहती थी ना मुमकिन है, मैं ने अ़क़्ल की न मानी ईमान की मानी और दुआ़ पढ़ ली इस की बरकत से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आई जिन पर लाखों अबू सलमह क़ुरबान।(2)

---

1 ...صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب مایقال عند المصیبة، ص۳۲۹، الحدیث:۹۱۸.

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, बाब मरने वाले को तल्क़ीन, पहली फ़स्ल, 2/445,

www.dawateislami.net

रसूले अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के साथ निकाह

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ौजिय्यत से मुशर्रफ़ होना वोह अ़ज़ीम ने'मत है कि करोड़ों ने'मतें इस पर क़ुरबान की जा सकती हैं। किस क़दर ख़ुश बख़्त हैं वोह अ़ज़ीम हस्तियां जो इस ने'मत से बहरावर हुईं और आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ौजिय्यत में आ कर उम्मत के तमाम मोमिनीन की माएं कहलाईं। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا भी इस अ़ज़ीम ने'मत से सरफ़राज़ हुईं जिस का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا की इ़द्दत ख़त्म होने के बा'द पहले ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को पयामे निकाह़ दिया लेकिन आप ने इन्कार कर दिया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने पयामे निकाह़ दिया, आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने उन्हें भी इन्कार कर दिया। इस के बा'द सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने किसी शख़्स[1] के ज़रीए पैग़ाम भिजवाया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने जवाबन अ़र्ज़ किया : **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم और आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के क़ासिद को ख़ुश आमदीद ! आप बारगाहे

1....सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत के मुत़ाबिक़ येह शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब बिन अबू बल्तआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ थे।

[صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المصیبة، ص۳۲۹، الحدیث:۹۱۸]

और बैहक़ी की रिवायत के मुत़ाबिक़ येह शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ थे।

وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم [السنن الکبرٰی، کتاب النکاح، باب الابن یزوجھا اذا کان عصبة...الخ، ۷/۲۱۲، الحدیث:۱۳۷۵۲]

www.dawateislami.net

रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो कर मेरी त़रफ़ से अ़र्ज़ कीजिये : "(**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का पैग़ाम सर आंखों पर लेकिन अ़र्ज़े ह़ाल येह है कि) में रश्कनाक औ़रत हूं (या'नी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से शकर रन्जी का ख़याल है) और इ़यालदार हूं और मेरा कोई वली मौजूद नहीं।" क़ासिद (पैग़ाम रसां) ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर गुज़ारिश अह़वाल की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कहला भेजा : जहां तक तुम्हारे इस क़ौल का तअ़ल्लुक़ है कि "में इ़यालदार हूं।" इस सिलसिले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बच्चों को काफ़ी होगा और येह क़ौल कि "मैं ग़ैरतमन्द ख़ातून हूं।" इस के लिये मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करूंगा कि वोह तुम्हारी ग़ैरत दूर फ़रमा दे और जहां तक तुम्हारे औलिया(1) की बात है तो मौजूद व ग़ैर मौजूद में से कोई भी इसे ना पसन्द नहीं करेगा। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا तक येह पैग़ाम पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने अपने बेटे ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) से फ़रमाया : ऐ उ़मर ! उठो और रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मेरा निकाह़ कर दो।(2)

1....वली की जम्अ़। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ वली की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : इस्त़िलाहे़ फ़िक़्ह में वली उस आ़क़िल बालिग़ शख़्स को कहते हैं जिसे दूसरे की जान या माल पर मख़्सूस क़ुदरत या'नी "ऑथोरेटी" ह़ासिल हो। बहारे शरीअ़त में है : "वली वोह है जिस का क़ौल दूसरे पर नाफ़िज़ हो, दूसरा चाहे या न चाहे।" (पर्दे के बारे सुवाल जवाब, स. 358) तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 42 ता 52 और पर्दे के बारे में सुवाल जवाब सफ़ह़ा 357 ता 360 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

2...الطبقات الکبری، ذکر ازواج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۴۱۳۰-امسلمۃ...الخ، ۷۱/۸.

www.dawateislami.net

निकाह़ की तारीख़ और रिहाइश गाह

चार[4] हिजरी जब कि माहे शव्वालुल मुकर्रम के ख़त्म होने में दस रोज़ बाक़ी थे तब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इद्दत ख़त्म हुई और येह महीना ख़त्म होने से चन्द शब पहले ही प्यारे व करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमा लिया।(1) और उस मुबारक हुजरे में ठहराया जहां पहले ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रिहाइश पज़ीर थीं क्यूंकि उस वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो चुका था।(2)

ह़क़्क़े महर

सरकारे नामदार मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को दो[2] चक्कियां, दो[2] मिट्टी के घड़े और खजूर की छाल से भरा हुवा चमड़े का एक तकिया बत़ौरे ह़क़्क़े महर अ़त़ा फ़रमाया।(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इतने सामान के इवज़ ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमाया जिस की क़ीमत दस दिरहम बनती थी।(4)

---

1 ...المرجع السابق، ص٦٩.
2 ...المرجع السابق، ص٧٣.
3 ...المرجع السابق، ص٧١.
4 ...مسند ابی یعلی، مسند ثابت البنانی عن انس، ٣/١٢٩، الحدیث:٣٣٨٥.

www.dawateislami.net

नज्जाशी के दरबार से वापस आया हुवा तोहूफ़ा

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने शाहे ह़बशा ह़ज़रते नज्जाशी رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिये बत़ौरे तोहूफ़ा कुछ मालो मताअ़ रवाना फ़रमाया लेकिन उन तक येह तोहूफ़ा पहुंचने से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया और वोह मालो मताअ़ वापस आ गया फिर आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने उस में से थोड़ा बहुत अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن को अ़त़ा फ़रमाने के बा'द बाक़ी सब ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا को अ़त़ा फ़रमा दिया चुनान्चे, ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम बिन्ते अबू सलमह (رضی اللہ تعالٰی عنھا) से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि जब अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا से निकाह़ किया तो उन से फ़रमाया : मैं ने नज्जाशी की त़रफ़ एक हुल्ला और चन्द ऊक़िय्या[1] मुश्क भेजा है, मेरा नहीं ख़याल कि येह चीज़ें उस के पास पहुंचने तक वोह ज़िन्दा रहेगा और येह उसे मिलेंगी बल्कि मुझे वापस कर दी जाएंगी। जब वोह मुझे वापस कर दी जाएं तो वोह तेरे लिये हैं। रावी फ़रमाते हैं : जैसा हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया था वैसा ही हुवा कि (ह़ज़रते नज्जाशी رضی اللہ تعالٰی عنہ इन्तिक़ाल कर गए और) आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का तोहूफ़ा वापस कर दिया गया फिर आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن को एक एक ऊक़िय्या मुश्क अ़त़ा फ़रमाई और बाक़ी सारा मुश्क और हुल्ला ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا को अ़त़ा फ़रमा दिया।[2]

1....अहले अ़रब का एक वज़्न (तक़रीबन तीन तोले चार माशे)

2...مسند احمد، مسند القبائل، حدیث ام کلثوم...الخ، ۱۱/۲۴۳، الحدیث:۲۸۰۳۶.

www.dawateislami.net

शादी की रात खाना पकाना

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बहुत ही बा हिम्मत, बुल्द हौसला, मेहनत कश और हुनरमन्द ख़ातून थीं, प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ के बा'द घर में क़दम रखते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अपनी ज़िम्मेदारियों को समझा और आ़ली हिम्मत व हौसले और सलीक़ा शिआ़री व हुनरमन्दी का सुबूत देते हुवे उन्हें निभाने में मस्रूफ़ हो गईं। मरवी है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا घर में दाख़िल हुईं तो वहां मिट्टी का घड़ा, चक्की, पथ्थर की हांडी और देगची पड़ी हुई नज़र आई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने घड़े और देगची के अन्दर झांका तो घड़े में जव और देगची में थोड़ा सा घी पड़ा हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जव ले कर पीसे, फिर पथ्थर के बरतन में उन्हें गूंधा और घी ले कर सालन के तौर पर लगाया। फ़रमाती हैं कि शादी की रात येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहलिय्या का खाना था।(1)

बेहतरीन राहे अ़मल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के इस तर्ज़े ह़यात से मा'लूम होता है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ तन आसानी व आराम पसन्दी की ख़्वाहां न होती थीं बल्कि इस से कोसों दूर और घरेलू काम काज में मस्रूफ़ रहा करती थीं। साथ ही साथ रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कोई

1 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ٤١٣٠-ام سلمۃ...الخ، ٧٣/٨.

www.dawateislami.net

कसर उठा न रखना और फिर बढ़ चढ़ कर रब तबारक व तआ़ला की इ़बादत भी करना वोह मुमताज़ वस्फ़ हैं जो इन के आ़ली व बुलन्द मक़ामो मर्तबे को मज़ीद अरफ़अ़ व आ'ला कर देते हैं और इस से इन की शख़्सिय्यत मज़ीद निखर कर सामने आती और बा'द वालों के लिये बेहतरीन राहे अ़मल फ़राहम करती हैं। ऐ काश ! उम्मत की इन अ़ज़ीम माओं के सदक़े हम से भी सुस्ती व काहिली दूर हो जाए और हम मेह़नत व जफ़ा कशी और इ़बादत गुज़ारी जैसे आ'ला अवसाफ़ की बेहतरीन मिसाल बन जाएं।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तआ़रुफ़े ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत के चन्द अबवाब मुलाह़ज़ा किये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जिस सब्रो इस्तिक़ामत और अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल के साथ मसाइबो आलाम बरदाश्त किये और अपने पाए सबात में लग़्ज़िश न आने दी, वोह हमारे लिये मश्अ़ले राह है जिस की रोशनी में चल कर हम मन्ज़िले मक़्सूद (रब तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा) पाने के सिलसिले में कामयाबी से हम किनार हो सकते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस से बहरावर फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आइये ! अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नाम व नसब और ख़ानदान वग़ैरा के ह़वाले से सीरत की चन्द इबतिदाई और बुन्यादी बातें मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम **हिन्द** है, वालिद का नाम **हुज़ैफ़ा** या **सुहैल** और कुन्यत **अबू उमय्या** है और वालिदा का नाम **आ़तिका** है।(1) वालिद की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब इस त़रह़ है : "**अबू उमय्या बिन मुग़ीरा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन मख़्ज़ूम बिन यक़िज़ा बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य**"(2) और वालिदा की त़रफ़ से येह है : "**आ़तिका बिन्ते आ़मिर बिन रबीआ़ बिन मालिक बिन ख़ुज़ैमा बिन अ़ल्क़मा बिन फ़िरास बिन ग़नम बिन मालिक बिन किनाना।**"(3)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते **मुर्रह बिन का'ब** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है हज़रते **मुर्रह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सातवें जद्दे मोह़तरम हैं।

कुन्यत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की कुन्यत **उम्मे सलमह** है और आप नाम के बजाए कुन्यत से ज़ियादा मश्हूर हैं।

---

1 ...الاصابة، ١٢٠٦٥-ام سلمة بنت ابي امية، ٨/٤٥٥، ملتقطًا.
2 ...الجوهرة في نسب النبي واصحابه العشرة، ازواجه صلى الله عليه وسلم، ٢/٦٥.
3 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، خطبة النجاشي على نكاح ام حبيبة، ٥/٢٢، الحديث: ٦٨٢٥.

www.dawateislami.net

ख़ानदानी और नसबी शराफ़तें

ख़ानदानी और नसबी ह़वाले से भी आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को बहुत बुलन्द मक़ामो मर्तबा ह़ासिल है चुनान्चे, आप رضی اللہ تعالٰی عنھا अ़रब के सब से मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीले क़ुरैश की शाख़ **बनी मख़्ज़ूम** की चश्मो चराग़ थीं। आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के वालिद **अबू उमय्या हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरा** उन तीन[3] अफ़राद में से थे जिन्हें उन की सख़ावत की बिना पर "**ज़ादुर्राकिब** या'नी मुसाफ़िर का तौशा" कहा जाता था। **लिसानुल अ़रब** में है कि येह जब सफ़र पर निकलते और इन के साथ कुछ और लोग भी हो लेते तो न वोह ज़ादे सफ़र साथ लेते और न उन्हें दौराने सफ़र आग जलाने की ह़ाजत पेश आती बल्कि येह उन सब को ख़ूराक से बे परवाह करने के लिये काफ़ी होते।(1) और आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के चचा अबू उ़स्मान हिशाम बिन मुग़ीरा दौरे जाहिलिय्यत में सरदार थे इन की इत़ाअ़त की जाती थी और इन्हें "**फ़ारिसुल बत़्ह़ा** बत़्ह़ा का शह सुवार" कह कर पुकारा जाता था।(2)

शरफ़े इस्लाम

इन अख़्लाक़ी व मुआ़शरती ख़ूबियों के इ़लावा क़बूले इस्लाम में भी आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के ख़ानदान के कई अफ़राद ने सबक़त की और सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़ हो कर दोनों जहान की भलाइयों के ह़क़दार हुवे। ब नज़्रे इख़्तिसार इन में से चन्द के सिर्फ़ नाम और मुख़्तसर ज़िक्र किया जाता है :

---

1 ...لسان العرب، باب الزاء، تحت اللفظ "زود"، ۳/۱۷۱۱.

2 ...امتاع الاسماع، فصل فی ذکر اصهاره، اصهاره من قبل ام سلمة، ٦/٢٢٠.

www.dawateislami.net

हज़रते मुहाजिर बिन अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** येह हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सगे भाई हैं। इन का नाम वलीद था **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ना पसन्द फ़रमाया और बदल कर मुहाजिर रख दिया।(1)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** येह हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बाप शरीक भाई हैं। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी आ़तिका बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटे हैं।(2)

हज़रते ज़ुहैर बिन अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** येह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भाई हैं।

हज़रते आ़मिर बिन अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भाई हैं, फ़त्हे मक्का के साल ईमान क़बूल किया।(3)

हज़रते कुरैबा बिन्ते अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **:** हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं।

हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चचाज़ाद भाई हैं, दौरे जाहिलिय्यत में कुरैश के सरदारों में से थे, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ...اسد الغابة، ٥١٣٤-المهاجر بن ابی امية، ٢٦٥/٥.

2 ...المرجع السابق، ٢٨٢٠-عبد الله بن ابی امية بن المغيرة، ١٧٦/٣.

3 ...المرجع السابق، ٢٦٨٢-عامر بن ابی امية، ١١٥/٣.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को **सैफुल्लाह** का ख़िताब दिया । हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दौरे ख़िलाफ़त में 21 हिजरी में वफ़ात हुई ।[1] बहुत अज़ीम शख़्सिय्यत हैं ।

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़राबत दारी

येह शरफ़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को ह़ासिल है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के ख़ानदान में बहुत क़रीबी क़राबत दारी पाई जाती थी चुनान्चे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी **आ़तिका बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब**, हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के वालिद **अबू उमय्या बिन मुग़ीरा** की ज़ौजिय्यत में थी[2] इस लिह़ाज़ से येह ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की सोतेली वालिदा हुई ।

फ़ज़ाइल व मनाक़िब

❀......ह़िक्मते अ़मली और मुआ़मला फ़हमी

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की बे शुमार सिफ़ाते आ़लिय्या में एक सिफ़त ज़हानत और फ़िरासत का कमाल बहुत नुमायां है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا अ़क़्ल व दानाई, ह़िक्मते अ़मली और मुआ़मला फ़हमी का बेहतरीन नुमूना थीं, सुल्ह़े हुदैबिय्या के वाक़िए में इस की एक झलक नुमायां तौर पर नज़र आती है । इस सुल्ह़ का

1 ...الاکمال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ۲۱۶-خالد بن الولید، ص ۲۹.

2 ...الجوهرة فی نسب النبی واصحابه العشرة، عماته صلی اللّٰه علیه وسلم، ۲/ ۴۹.

www.dawateislami.net

मुख़्तसर वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ है कि ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम छे[6] हिजरी को प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया और चौदह सो (1400) से ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अपने साथ ले कर उ़मरह करने के लिये **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ रवाना हुवे, इस सफ़र में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थीं,(1) जब हुदैबिय्या के मक़ाम पर पहुंचे तो कुफ़्फ़ारे मक्का आड़े आए और मुसलमानों को मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया, फिर कुफ़्फ़ार और मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ का एक मुआ़हदा त़ै पाया जिसे तारीख़ में सुल्ह़े हुदैबिय्या के नाम से जाना जाता है। मुआ़हदे के मुत़ाबिक़...

- दस साल तक लड़ाई मौक़ूफ़ रहेगी और लोग अम्न में रहेंगे।
- अहले मक्का में से जो कोई अपने वली की इजाज़त के बिग़ैर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास चला आए उसे वापस कर दिया जाएगा लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से अगर कोई मक्का चला जाए तो अहले मक्का उसे वापस नहीं करेंगे।
- क़बाइले अ़रब को इख़्तियार होगा कि वोह फ़रीक़ैन में से जिस के साथ चाहें दोस्ती का मुआ़हदा कर लें।

---

(1) ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، صلح الحدیبیۃ، ۱/۲۶۶، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

- इस साल मुसलमान बिग़ैर ड़मरह किये ही लौट जाएंगे अलबत्ता आयिन्दा साल आएंगे और सिर्फ़ तीन[3] दिन मक्का में ठहरेंगे।
- सिवाए तल्वार के दूसरा कोई हथयार नहीं लाएंगे और तल्वारें भी नियामों में रखेंगे।(1)

जब मुआ़हदा लिखा जा चुका तो रसूले नामदार, शहनशाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : "قُوۡمُوۡا فَانۡحَرُوۡا ثُمَّ احۡلِقُوۡا उठो और कुरबानियां पेश कर के सर मुन्डाओ।"(2) लेकिन (ड़मरह अदा न कर पाने की वज्ह से) येह शम्ए़ रिसालत के परवाने इस दरजे दम ब खुद हो कर सोच बिचार में मस्रूफ़ थे कि उन्हें प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान की ख़बर ही न हो पाई या इन्हों ने इसे रुख़्सत पर महमूल किया कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें एह़राम खोल देने की इजाज़त अ़ता फ़रमाई है लेकिन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब ज़ाते ख़ुद एह़राम में ही रहेंगे,(3) लिहाज़ा इन में से कोई भी न उठा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन[3] मरतबा इसे दोहराया फिर ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए और इन से मुसलमानों के इस ह़ाल का ज़िक्र किया। इस पर ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने राए पेश की, कि **या नबिय्यल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ...الكامل فى التاريخ، سنة ست من الهجرة، ذكر عمرة الحديبية، ٢/٩٠، ملتقطًا.
2 ...صحيح البخارى، كتاب الشروط، باب الشروط فى الجهاد...الخ، ص٧٠٨، الحديث:٢٧٣١.
3 ...فتح البارى، كتاب الشروط، باب الشروط فى الجهاد والمصالحة مع اهل الحرب...الخ، ٥/٤٢٥، تحت الحديث:٢٧٣١، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

अगर आप पसन्द फ़रमाएं तो ऐसा कीजिये कि बाहर तशरीफ़ ले जाइये, किसी से कुछ मत फ़रमाइये और खुद अपने कुरबानी के जानवर ज़ब्ह फ़रमा दीजिये फिर हज्जाम को बुला कर हल्क़ करवा लीजिये।(1) गोया आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने अपनी फ़हमो फ़िरासत से येह बात जान ली थी कि सहाबए किराम علیھم الرضوان को कुरबानियां करने और हल्क़ करवाने (सर मुन्डाने) से किस चीज़ ने रोक रखा है? इसी लिये हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को अपने कुरबानी के जानवर ज़ब्ह करने और हल्क़ करवाने का मश्वरा दिया ताकि सहाबए किराम علیھم الرضوان के ज़ेह्नों से येह एहतिमाल दूर हो जाएं और वोह ता'मीले हुक्म में जल्दी करें चुनान्चे, रिवायत में है कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने ऐसा ही किया। जब मुसलमानों ने येह बात देखी तो वोह उठ खड़े हुवे, कुरबानियां दीं और एक दूसरे का हल्क़ करने के लिये यूं भाग दौड़ मची कि इज़्दिहाम की वज्ह से आपस में लड़ाई झगड़े का ख़त़रा मह़सूस होने लगा।(2)

मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : इस में मश्वरा करने की फ़ज़ीलत, साहिबे फ़ज़्लो कमाल औ़रत से मश्वरा करने का जवाज़, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا की फ़ज़ीलत और आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की ह़िक्मत

1 ...صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجھاد والمصالحۃ مع اھل الحرب...الخ، ص۷۰۸، الحدیث: ۲۷۳۱، ملخصًا.

2 ...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

व दानाई का बयान है हत्ता कि इमामुल हरमैन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के बारे में फ़रमाया : सिवाए हज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا के हम किसी ऐसी ख़ातून के बारे में नहीं जानते जिस की राए हमेशा दुरुस्त साबित हुई हो।[1]

...फ़िक़्ह में महारत

अक़्ल व दानाई और राए की पुख़्तगी के साथ साथ इल्मे फ़िक़्ह में भी आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को ग़ैर मा'मूली महारत हासिल थी क्यूंकि फ़ित़री ज़हीन तो आप थीं ही इस पर रसूले पाक, साहिबे लौलाक صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का फ़ैज़े सोहबत...!! इस ने सोने पर सुहागे का काम किया जिस से आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का मर्तबा सफ़े सहाबा में बहुत बुलन्द हो गया और आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का शुमार उन सहाबियात में होने लगा जिन्हें शरई अहकाम व क़वानीन की माहिर समझा जाता था। हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "كَانَتْ تُعَدُّ مِنْ فُقَهَاءِ الصَّحَابِيَاتِ आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को फुक़हा (या'नी शरई अहकाम व क़वानीन की माहिर) सहाबियात رضی اللہ تعالٰی عنھن में शुमार किया जाता था।"[2] आइये ! अब आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से मरवी चन्द मसाइल मुलाहज़ा कीजिये :

---

1 ...فتح الباری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد والمصالحة مع اهل الحرب...الخ، ٤٢٦/٥، تحت الحديث: ٢٧٣١، ملتقطاً.

2 ...سير اعلام النبلاء، ٢٠-ام سلمة ام المؤمنين، ٢٠٣/٢.

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا से सुवालात

अय्यामे इद्दत में सुर्मे का इस्ति'माल

जब हज़रते उम्मे हकीम बिन्ते उसैद رضی اللہ تعالٰی عنہا के वालिद का इन्तिक़ाल हुवा उस वक़्त उन की वालिदा की आंखों में तक्लीफ़ थी और वोह **जिला** का सुर्मा लगाती थीं। उन्हों ने अपनी कनीज़ को इस का हुक्म मा'लूम करने की ग़रज़ से उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا की ख़िदमत में भेजा। उस ने हज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सुवाल अ़र्ज़ किया। आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने इरशाद फ़रमाया : येह सुर्मा मत लगाओ मगर जब और चारए कार न हो और सख़्त तक्लीफ़ हो तो रात के वक़्त लगाओ और दिन में धो डालो।(1)

इद्दत के चन्द अह़काम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह रिवायत औ़रत के इद्दत के दिनों से मुतअ़ल्लिक़ है। आज कल औ़रतों की जानिब से त़लाक़ के मुत़ालबात ज़ोरों पर हैं, लेकिन इस पर क्या कहिये कि मुसलमानों की अक्सरिय्यत इस के अह़कामात से बे बहरा है, इस्लामी ता'लीमात से रू शनासी न होने के बराबर है, जहालत व बे अ़मली का दौर दौरा है येही वज्ह है कि इस्लामी ता'लीमात की रोशनी में इद्दत गुज़ारने की भी ज़रा परवा नहीं की जाती। वाज़ेह रहे कि हर आ़क़िला बालिग़ा मुसलमान औ़रत

(1) ...سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب فیما تجتنب...الخ، ص٣٦٩، الحدیث:٢٣٠٥۔

www.dawateislami.net

जो मौत या तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उस पर सोग वाजिब है।(1) सोग के येह मा'ना हैं कि ज़ीनत को तर्क करे या'नी हर क़िस्म के ज़ेवर चांदी सोने जवाहिर वग़ैरहा के और हर क़िस्म और हर रंग के रेशम के कपड़े अगर्चे सियाह हों, न पहने और ख़ुश्बू का बदन या कपड़ों में इस्ति'माल न करे और न तेल का इस्ति'माल करे अगर्चे इस में ख़ुश्बू न हो जैसे रोग़ने ज़ैतून और कंघा करना और सियाह सुर्मा लगाना। यूहीं सफ़ेद ख़ुश्बूदार सुर्मा लगाना और मेहंदी लगाना और ज़ा'फ़रान या कुसुम या गेरू का रंगा हुवा या सुर्ख़ रंग का कपड़ा पहनना मन्अ़ है इन सब चीज़ों का तर्क वाजिब है। यूहीं पुड़या का रंग गुलाबी, धानी, चंपई और तरह तरह के रंग जिन में तज़य्युन होता है सब को तर्क करे।(2)

नोट

इस्लामी बहनें इद्दत और सोग से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली और ज़रूरी मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबुतल मदीना** की मत़बूआ़ 1182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त**, जिल्द दुवुम, सफ़्ह़ा 232 ता 247 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

दिल में शैतानी ख़याल आए तो.....

एक शख़्स ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا से अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! बा'ज़ अवक़ात दिल में ऐसा ख़याल आता है कि अगर इसे ज़बान पर लाऊं तो आ'माल बरबाद हो जाएं और अगर लोग इसे जान ले तो मुझे क़त्ल कर दिया जाए। इस पर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने

1....बहारे शरीअ़त, हिस्सा हश्तुम, सोग का बयान, 2/243, बित्तग़य्युरिन क़लील

2...المرجع السابق، ص ٢٤٢.

www.dawateislami.net

रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी इस त़रह़ का सुवाल हुवा था तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैत़ान ऐसी बात मोमिन के दिल में ही डालता है ।(1)

वस्वसा क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बन्दए मोमिन की सब से क़ीमती दौलत उस का ईमान है और शैत़ान जो उस का अज़ली दुश्मन है हमेशा उसे इस अ़ज़ीम दौलत से मह़रूम करने के दरपे रहता है लिहाज़ा वोह उस बन्दए मोमिन के दिल में इस्लामी अ़क़ाइद व मा'मूलात से मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के ख़यालात डालता है । बसा अवक़ात येह ख़याल जिन्हें वस्वसा कहा जाता है, ईमान के लिये इस क़दर तबाह कुन और ख़त़रनाक होते हैं कि अगर बन्दए मोमिन इन पर अ़मल कर गुज़रे या इन्हें ज़बान पर ही ले आए तो दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो कर कुफ़्र की तारीक खाई में जा पड़े । ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से सुवाल करने वाला शख़्स भी शायद किसी ऐसे ही ख़याल में मुब्तला हुवा था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने जो जवाब दिया उस से येह बात वाज़ेह़ होती है कि दिल में ऐसे ख़याल का आ जाना क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं और न इन की वज्ह से बन्दा गुनहगार होता है ।

वस्वसा आए तो....

लेकिन याद रखिये ! जब भी दिल में ऐसे ख़यालात आएं तो फ़ौरन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हुवे इन्हें झटक दीजिये येह

(1)...المعجم الاوسط، باب الحاء، من اسمه الحسن، ۲/۳۲۴، الحدیث:۳۴۳۰.

www.dawateislami.net

अगर्चे क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं हैं लेकिन बा'ज़ अवक़ात बन्दा इन ख़यालात की रौ में बहता हुवा इतना दूर निकल जाता है कि वापसी का रास्ता ही मफ़्क़ूद हो जाता है और सिवाए तबाही व बरबादी के कुछ हाथ नहीं आता। बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَاْتِي الشَّيْطَانُ اَحَدَكُمْ فَيَقُوْلُ مَنْ خَلَقَ كَذَا
مَنْ خَلَقَ كَذَا حَتّٰى يَقُوْلَ مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ فَاِذَا بَلَغَهُ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللّٰهِ وَلْيَنْتَهِ

"तुम में से किसी के पास शैत़ान आ कर कहता है कि फ़ुलां चीज़ किस ने पैदा की...? फ़ुलां किस ने पैदा की...? ह़त्ता कि कहता है : तुम्हारे रब को किस ने पैदा किया...? जब इस ह़द को पहुंचे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करो और इस (ख़याल) से बाज़ रहो।"(1)

नोट

जब कभी कोई वस्वसा आए तो तअ़व्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ लीजिये। मुफ़स्सिरे शहीर, मुह़द्दिसे जलील, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ दफ़्ए़ शैत़ान के लिये इक्सीर (निहायत मुफ़ीद) है।(2)

---

1 ...صحيح البخاری، كتاب بدء الخلق، باب صفة ابليس...الخ، ص ٨٣٧، الحديث: ٣٢٧٦.

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, वस्वसे का बाब, पहली फ़स्ल, 1/82

नोट : वस्वसे के बारे में मज़ीद मा'लूमात और इन से बचने के इलाज जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला **"वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज"** सफ़्ह़ा 21 ता 28 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत

प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को बड़ी महब्बत थी जिस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक दफ़्आ़ शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसे बिस्तर और तकिये पर आराम फ़रमा हुवे जो खजूर की छाल से भरा हुवा था। जब बेदार हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक जिस्म पर उस के निशान पड़ गए। येह देख कर ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا रोने लगीं। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ उम्मे सलमह ! तुम्हें किस बात ने रुलाया ? अ़र्ज़ की : मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस पर खजूर की छाल के निशानात देखे हैं इस वज्ह से रो पड़ी। इस पर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا تَبْکِیْ فَوَاللّٰہِ لَوْ اَرَدْتُ اَنْ تَسِیْرَ مَعِیَ الْجِبَالُ لَسَارَتْ

“रो मत, ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! अगर मैं चाहूं कि पहाड़ मेरे साथ साथ चलें तो ज़रूर वोह चल पड़ें।”(1)

कुल काइनात के मालिको मुख़्तार

سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान कितनी बुलन्द है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कितने ज़ियादा इख़्तियारात से नवाज़ा है कि अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरादा फ़रमाते तो येह बुलन्दो बाला पहाड़ और इन की येह आस्मान को छूती हुई चोटियां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ चल पड़तीं।

(1)...المطالب العالیۃ بزوائد المسانید الثمانیۃ، ۱۳/۲۵۱، الحدیث:۳۱۶۰۔

www.dawateislami.net

ख़याल रहे कि येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की ह़द नहीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो रब तबारक व तआ़ला के इज़्न व अ़त़ा से कुल काइनात के मालिको मुख़्तार हैं, इन्सान व फ़िरिश्ते, जिन्नात व शयात़ीन कोई चीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ब्ज़े व इख़्तियार से बाहर नहीं और क्यूं न हो कि

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहां हैं आप के क़ब्ज़े व इख़्तियार में (1)

बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि मक्के मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اِنِّیْ اُعْطِیْتُ مَفَاتِیْحَ خَزَائِنِ الْاَرْضِ बेशक मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां अ़त़ा कर दी गईं।''(2) और फ़रमाया : ''اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللّٰہُ یُعْطِیْ मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाता है।''(3) चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने प्यारे रब عَزَّوَجَلَّ के इज़्न व अ़त़ा से जिस को जो चाहें अ़त़ा फ़रमाएं और जिस से चाहें मह़रूम फ़रमा दें और जिस के लिये जो चाहें ह़लाल फ़रमाएं और जिस को जिस चीज़ से चाहें मन्अ़ फ़रमा दें, हर शै पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म नाफ़िज़ है और किसी को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के आगे दम मारने की गुन्जाइश नहीं। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

1.... रसाइले नईमिय्या, सल्त़नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, स. 14

2...صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب الصلاۃ علی الشھید، ص۳۷۷، الحدیث:۱۳۴۴.

3...المرجع السابق، کتاب العلم، باب من یرد اللّٰہ بہ خیرا...الخ، ص۹۲، الحدیث:۷۱.

www.dawateislami.net

हुक्म नाफ़िज़ है तेरा, ख़ामा[1] तेरा, सैफ़[2] तेरी
दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी

हज़रते सफ़ीनह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का गुलाम था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मैं तुम्हें आज़ाद करती हूं और येह शर्त़ करती हूं कि तुम ता ह़यात शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करते रहो। मैं ने अ़र्ज़ की : अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह बात शर्त़ न भी करतीं तब भी मैं कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदाई इख़्तियार न करता। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझे आज़ाद कर दिया और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी मुझ पर शर्त़ कर दी।[4]

मक़ामो मर्तबा

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बहुत नुमायां मक़ाम ह़ासिल था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महबूब तरीन अज़्वाज में से एक थीं। मरवी है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना

1....क़लम।

2....तल्वार।

3....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 30

4....سنن ابی داود، کتاب العتیق، باب فی العتیق علی الشرط، ص٦١٩، الحدیث:٣٩٣٢.

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से अ़र्ज़ किया : ख़ालाजान ! रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सी ज़ौजए मुत़ह्हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ ज़ियादा मह़बूब थीं ? फ़रमाया : मैं इस बारे में कुछ ज़ियादा नहीं जानती, हां ! ज़ैनब बिन्ते जह़्श और उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ख़ास मक़ाम ह़ासिल था और मेरा ख़याल है कि मेरे बा'द येह दोनों आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा मह़बूब थीं ।(1)

मूए सरकार से तबर्रुक

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक (बरकत वाले बाल) थे जब किसी इन्सान को नज़रे बद लग जाती या कोई और बीमारी आन पड़ती तो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक से आप उस का इलाज फ़रमातीं ।(2)

वोह करम की घटा गैसूए मुश्क सा
लक्कए अब्रे राफ़त पे लाखों सलाम (3)

मा'लूम हुवा कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मूए मुबारक भी दाफ़ेए़ बला और बाइसे शिफ़ा हो सकते हैं और इन से बरकत का

---

1 ...الطبقات الکبرٰی، ذکر ازواج رسول اللہ، ۴۱۳۲-زینب بنت جحش، ۸/۹۱.

2 ...صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب مایذکر فی الشیب، ص۱۴۸۰، حدیث۵۸۹۶.

3 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 299

www.dawateislami.net

हुसूल ज़मानए सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से ही चला आ रहा है। मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल शरीफ़ को दाफ़ेए बला, बाइसे शिफ़ा समझते थे कि इन्हें पानी में गुस्ल दे कर शिफ़ा के लिये पीते थे क्यूं कर न हो कि जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़मीस दाफ़ेए बला हो सकती है तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल शरीफ़ ब दरजए औला दाफ़ेए बला हो सकते हैं।[1]

हम सियह कारों पे या रब तपिशे महशर में
साया अफ़्गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गैसू[2]

जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत

एक दफ़्आ हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (हज़रते दहिय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सूरत में) सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवे तो हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास मौजूद थीं। हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ गुफ़्तुगू करते रहे फिर उठ कर चले गए। इस के बा'द प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त फ़रमाया : येह कौन थे ? अर्ज़ की : हज़रते दहिय्या (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)। फ़रमाती हैं : **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त की क़सम ! मैं ने इन्हें हज़रते

---

1 ....मिरआतुल मनाजीह, दवाओं और दुआओं का बयान, तीसरी फ़स्ल, 6/249, मुल्तक़तन
2 ....हदाइक़े बख़्शिश, स. 119

www.dawateislami.net

दहि़य्या कल्बी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही समझा था लेकिन फिर मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुत़बा सुना, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वोह ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام थे।(1)

ख़ुश्बूए रसूल

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जिस रोज़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया तो मैं ने अपना हाथ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीनए अक़्दस पर रखा, फिर कई हफ़्ते गुज़र गए मैं ब दस्तूर खाना खाती और वुज़ू करती रही लेकिन मेरे हाथ से मुश्क की ख़ुश्बू न गई।(2)

तौबा की क़बूलिय्यत

ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह शरफ़ भी ह़ासिल है कि उम्मते मुस्लिमा के बा'ज़ अफ़राद की तौबा के अह़कामात वह़ी के ज़रीए उस वक़्त नाज़िल हुवे जब कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के घर में थे चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तौबा की क़बूलिय्यत सुब्ह़ सह़री के वक़्त नाज़िल हुई जब कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरे में

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ص ۹۲۲، الحدیث: ۳۶۳۴.

2 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب مرض رسول اللہ صلی اللہ علیہ وفاتہ...الخ، باب ما یؤثر عنہ صلی اللہ علیہ وسلم من الفاظہ فی مرضہ...الخ، ۷/۲۱۹.

www.dawateislami.net

थे । हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सहरी के वक़्त मुस्कुराते हुवे मुलाहज़ा किया तो अ़र्ज़ की : ''مِمَّ تَضْحَکُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ؟ اَضْحَکَ اللّٰہُ سِنَّکَ'' या'नी या **रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप क्यूं मुस्कुराते हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमेशा मुस्कुराता रखे ।'' इरशाद फ़रमाया : ''تِیْبَ عَلٰی اَبِیْ لُبَابَۃَ अबू लुबाबा की तौबा क़बूल हो गई है ।''(1)

सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवालात

ब क़दरे हाजत इ़ल्मे दीन की त़लब हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है इस लिये हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का शुरूअ़ से ही येह त़रीक़ा रहा है कि अपनी गूनागूं मस्रूफ़िय्यात के बा वुजूद वक़्त निकालते और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते और अगर कोई पेचीदा व ना ह़ल मस्अला दर पेश होता तो इस के ह़ल के लिये अपने से आ'लम (ज़ियादा जानने वाले) की त़रफ़ रुजूअ़ करते । आइये ! इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वोह चन्द लम्ह़ात मुलाहज़ा कीजिये जो आप ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तह़सीले इ़ल्म की राह में बसर किये :

❶...السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، غزوۃ بنی قریظۃ فی...الخ، الجزء الثالث، ۱٤۷/۲.

www.dawateislami.net

गुनाहों की नुहूसत

एक दफ़्आ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास एक अन्सारिय्या औ़रत मौजूद थी कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में थे। उन अन्सारिय्या ख़ातून ने अपने कुर्ते की आस्तीन से पर्दा कर लिया। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से) कोई गुफ़्तगू की जिसे वोह अन्सारिय्या ख़ातून न समझ सकीं। (जब आप عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए तो) उन्हों ने ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से अ़र्ज़ किया : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! मेरा ख़याल है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल की ह़ालत में तशरीफ़ लाए थे ? ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने फ़रमाया : हां ! क्या तुम ने सुना नहीं जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था ? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या फ़रमाया था ? जवाब दिया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था : जब ज़मीन में शर फैल जाए और लोग इस से बाज़ न आएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों पर अपना हौलनाक अ़ज़ाब भेजेगा। मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन में नेक लोग भी होंगे ? फ़रमाया : हां ! उन में नेक लोग भी होंगे, लोगों को पहुंचने वाला अ़ज़ाब उन्हें भी घेर लेगा लेकिन फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपनी मग़्फ़िरत और रिज़्वान की त़रफ़ ले जाएगा।(1)

---

1 ...مسند احمد، مسند النساء، حدیث ام سلمة...الخ، ۱۱/ ۳۲، الحدیث: ۲۷۲۸٦.

www.dawateislami.net

नोट

इस रिवायत में गुनाहों की नुहूसत बयान की गई है कि येह अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होने का सबब बनते हैं, ऐसा अ़ज़ाब जो नेक लोगों को भी अपनी लपेट में ले लेता है। इस लिये अ़क्लमन्द शख़्स को चाहिये कि वोह खुद भी गुनाहों से बाज़ रहे और दूसरों को भी इन से मन्अ़ करे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इन से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मस्ख़शुदा क़ौम की नस्ल

एक दफ़्आ़ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मस्ख़ की गई क़ौम के बारे में सुवाल किया कि क्या इन की नस्ल भी है ? इरशाद फ़रमाया : "مَا مُسِخَ اَحَدٌ قَطُّ فَکَانَ لَہٗ نَسْلٌ وَّ لَا عَقِبٌ जिस किसी को भी मस्ख़ किया गया उस की नस्ल व अवलाद नहीं।"(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता उम्मतों में से बा'ज़ पर उन की सरकशी व नाफ़रमानी के सबब एक येह अ़ज़ाब भी नाज़िल हुवा कि उन की सूरतें मस्ख़ कर के बन्दरों और सुवरों की सी बना दी गईं।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِیْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِی السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـٕیْنَ ﴿۶۵﴾ (پ۱، البقرۃ:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की तो हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर धुतकारे हुवे।

---

1 ...مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ام سلمۃ...الخ، ۵/۲۶۷، الحدیث: ۶۹۶۱.

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : शहरे ईला में बनी इस्राईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शम्बा (हफ़्ते) का दिन इबादत के लिये ख़ास कर दें इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें इन के एक गुरोह ने येह चाल की, कि जुमुआ़ को दरया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और शम्बा की सुब्ह़ को दरया से इन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए़ पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं यकशम्बा (इतवार) को उन्हें निकाल लेते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा (हफ़्ते) के रोज़ नहीं निकालते चालीस या सत्तर साल तक येही अ़मल रहा जब ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नबुव्वत का अ़हद आया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्हें इस से मन्अ़ किया और फ़रमाया क़ैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो इस से बाज़ आओ वरना अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे । वोह बाज़ न आए । आप ने दुआ़ फ़रमाई । **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया, अ़क़्ल व ह़वास तो उन के बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई, बदनों से बद बू निकलने लगी, अपने इस ह़ाल पर रोते रोते तीन[3] रोज़ में सब हलाक हो गए, इन की नस्ल बाक़ी न रही । येह सत्तर हज़ार के क़रीब थे बनी इस्राईल का दूसरा गुरौह जो बारह हज़ार के क़रीब था इन्हें इस अ़मल से मन्अ़ करता रहा जब येह न माने तो उन्हों ने इन के और अपने मह़ल्लों के दरमियान दीवार बना कर अ़लाहि़दगी कर ली उन सब ने नजात पाई । बनी इस्राईल का तीसरा गुरौह साकित रहा उस के ह़क़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सामने (ह़ज़रते) इकरमा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने कहा

www.dawateislami.net

कि वोह मग़्फ़ूर हैं क्यूंकि अम्र बिल मा'रूफ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ का अदा करना कुल का हुक्म रखता है उन के सुकूत की वज्ह येह थी कि येह इन के पन्द पज़ीर होने से मायूस थे। (ह़ज़रते) इकरमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की येह तक़रीर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को बहुत पसन्द आई और आप ने सुरूर से उठ कर उन से मुआ़नक़ा किया और उन की पेशानी को बोसा दिया।(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ब्रत इ़ब्रत और सख़्त इ़ब्रत का मक़ाम है। इस वाक़िए़ से मा'लूम होता है कि शैत़ानी ह़ीला साज़ियों में पड़ कर रब तआ़ला के अह़कामात की बजा आवरी में कोताही और उस की हुक्म अ़दूली और सरकशी व नाफ़रमानी इन्तिहाई ख़त़रनाक व तबाह कुन है। लिहाज़ा अपने नाज़ुक बदन पर रह़्म कीजिये ! नफ़्सो शैत़ान की फ़रेब कारियों व दग़ा बाज़ियों से ख़ुद को बचाइये ! कहीं ऐसा न हो कि मौत आ ले और तौबा का भी मौक़अ़ न मिले। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि येह मस्ख़ शुदा अफ़राद सिर्फ़ तीन[3] दिन तक भूक प्यास की ह़ालत में ज़िन्दा रहे और चौथे रोज़ सब के सब हलाक कर दिये गए, न इन में से कोई ज़िन्दा रहा न इन की नस्ल चली। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मश्हूर है कि मौजूदा बन्दर इन्हीं की अवलाद में से हैं, ग़लत़ है इन से पहले भी बन्दर थे और येह मौजूदा बन्दर उन पहले बन्दरों की अवलाद से ही हैं क्यूंकि सह़ीह़ रिवायत में है कि कोई मस्ख़शुदा क़ौम तीन[3] दिन से ज़ियादा नहीं जीती न खाती है न पीती है न उस की नस्ल चलती है।(2)

---

1 ....ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 1, सूरतुल बक़रह, तह़्तुल आयत : 65, स. 24
2 ....तफ़्सीरे नई़मी, सूरतुल बक़रह, तह़्तुल आयत, 65, 1/452

www.dawateislami.net

❀... यतीमों पर ख़र्च करने का सवाब

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की अवलाद पर मैं जो कुछ ख़र्च करती हूं क्या इस में मेरे लिये सवाब है ? हालांकि मैं उन्हें कस्मपुर्सी की हालत में नहीं छोड़ सकती क्यूंकि वोह मेरी भी अवलाद है ? फ़रमाया :

"نَعَمْ لَکِ اَجْرُ مَّا اَنْفَقْتِ عَلَیْھِمْ

हां ! जो कुछ तुम उन पर ख़र्च करो उस का तुम्हें अज्र मिलेगा ।"(1)

शर्हे ह़दीस

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के बत़्न से इन के पहले शोहर हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की कुछ अवलाद थी, चूंकि वोह हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की भी अवलाद थी इस लिये आप के दिल में येह ख़याल आया कि पता नहीं मैं इन की ज़रूरियात पूरी करने के सिलसिले में जो ख़र्च करती हूं इस में मुझे सवाब मिलेगा या नहीं क्यूंकि अगर सवाब न मिले तब भी मैं उन्हें बे यारो मददगार तो नहीं छोड़ूंगी चुनान्चे, आप ने अपने मस्अले के ह़ल के लिये बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में रुजूअ़ किया और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! जो कुछ तुम उन पर ख़र्च करो उस का तुम्हें अज्र मिलेगा । हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب وعلی الوارث مثل ذالك، ص ۱۳۷۶، الحدیث ۵۳۶۹.

www.dawateislami.net

अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के इस फ़रमाने आ़ली की शर्ह़ में सवाब मिलने की वज्ह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : क्यूंकि येह यतीम भी हैं और तुम्हारे अ़ज़ीज़ तरीन भी, इन पर ख़र्च करना यतीम को पालना भी है, और अ़ज़ीज़ का ह़क़ अदा करना भी, अपने फ़ौतशुदा ख़ावन्द की रूह़ को ख़ुश करना भी।(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उन छे[6] अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में से होने का शरफ़ ह़ासिल है जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से था।
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْن सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ेहरिस्त में शामिल हैं।(2)
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पहले ह़बशा फिर मदीना की त़रफ़ हिजरत की।
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को फ़ुक़हा (या'नी शरई अह़काम व क़वानीन की माहिर) सह़ाबियात में शुमार किया जाता है।

---

1 ....मिरआतुल मनाजीह़, बाब बेहतरीन सदक़ा, पहली फ़स्ल, 3/118

2 ....इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 24 मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत

सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के बा'द अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में सब से पहले ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और सब से आख़िर में ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا ने। इमाम शम्सुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह़बी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : उम्महातुल मोमिनीन में सब से आख़िर में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाली आप ही हैं। आप ने बहुत उ़म्र पाई ह़त्ता कि **सय्यिदुश्शुहदा** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन बिन अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنھما की शहादत का ज़माना पाया और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की शहादत की वज्ह से उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا पर ग़शी त़ारी हो गई, बहुत ज़ियादा रन्जीदा ख़ात़िर हुईं और फिर बहुत कम अ़र्सा ह़यात रहने के बा'द इन्तिक़ाल फ़रमा गईं।(1)

तारीख़े विसाल

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के साले वफ़ात में बहुत इख़्तिलाफ़ है, शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी علیہ رحمۃ اللہ الوالی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا ने 59 हिजरी को इन्तिक़ाल फ़रमाया और एक क़ौल येह है कि 62 हिजरी को इन्तिक़ाल फ़रमाया जब कि पहला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है।(2)

---

1 ...سیر اعلام النبلاء، ۲۰-ام سلمۃ ام المؤمنین، ۲/۲۰۲.

2 ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث، ۱/۴۰۸.

www.dawateislami.net

नमाज़े जनाज़ा व तदफ़ीन

हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को दफ़्न किया गया। ब वक़्ते वफ़ात आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की उ़म्र मुबारक 84 बरस थी।(1)

अवलादे अत़्हार

हज़रते अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ के आप से दो2 बेटे सलमह और उ़मर और दो2 बेटियां ज़ैनब और दुर्रा पैदा हुईं।(2) **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की आप से कोई अवलाद नहीं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! जहालत की तारीकियों से निकल कर इल्मे दीन की रोशनियों से मुनव्वर होने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये कि इस मदनी माह़ोल की बरकत से गुनाहों से बचने और नेकियां करने के साथ साथ इल्मे दीन सीखने का जज़्बा भी बेदार होता है। आइये! एक ऐसी ही इस्लामी बहन की मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये जिस के शबो रोज़ गुनाहों की तारीकियों और ग़फ़्लत की अंधेरियों में बसर हो रहे थे लेकिन आख़िरे कार दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल ने उसे गुनाहों की दलदल से निकाल कर किस त़रह़ राहे इल्म की मुसाफ़िर बना दिया? आइये मुलाह़ज़ा कीजिये....!! चुनान्चे,

1 ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث، ۱/ ۴۰۸.

2 ...المرجع السابق، ص ۴۰۷، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

मैं रोज़ाना तीन चार फ़िल्में देख डालती

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं एक मॉडर्न लड़की थी। दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने का जुनून की ह़द तक शौक़ था, फ़िल्म बीनी का भूत तो कुछ ऐसा सुवार था कि मैं एक रात में तीन तीन चार चार फ़िल्में देख डालती और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ गानों की भी ऐसी रसिया थी कि घर का काम-काज करते वक़्त भी टेप रिकॉर्ड पर ऊंची आवाज़ से गाने लगाए रखती। मेरी एक बहन को (जो कि शादी हो जाने के बा'द दूसरे शहर में रिहाइश पज़ीर थीं) दा'वते इस्लामी से बड़ी मह़ब्बत थी। वोह जब कभी बाबुल मदीना (कराची) आतीं तो इतवार के दिन दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ज़रूर शिर्कत करतीं, रात में इश्क़े रसूल में डूबी हुई पुरसोज़ ना'तें सुना करतीं, जिस की वज्ह से मुझे गाने सुनने का मौक़अ़ न मिलता चुनान्चे, मुझे उन पर बहुत गुस्सा आता बल्कि कभी कभी तो उन से लड़ पड़ती। एक मरतबा जब वोह बाबुल मदीना आईं तो क़रीब बुला कर निहायत शफ़्क़त से कहने लगीं : "जो बेहूदा फ़िल्में और ड्रामे देखता है वोह अ़ज़ाब का ह़क़दार है।" मज़ीद इनफ़िरादी कोशिश जारी रखते हुवे बिल आख़िर उन्हों ने मुझे फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने पर राज़ी कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत

www.dawateislami.net

की सआ़दत ह़ासिल की। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन वहां बयान का मौज़ूअ़ भी टी. वी की तबाह कारियां था येह बयान सुन कर मेरे दिल की कैफ़िय्यत बदलना शुरूअ़ हो गई, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने सोने पर सुहागे का काम किया, दौराने दुआ़ मुझ पर रिक़्क़त त़ारी और आंखों से आंसू जारी थे, मैं ने सच्चे दिल से अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा भी कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब मैं सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ से वापस घर की त़रफ़ रवाना हुई तो मेरा दिल टी.वी के गुनाहों भरे प्रोग्रामों और गानों बाजों से बेज़ार हो चुका था। इजतिमाअ़ से वापसी पर अपने कमरे में मौजूद कार्टूनों की तसावीर उतार कर **का'बए मुशर्रफ़ा** और **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के प्यारे प्यारे त़ुग़रे आवेज़ां कर दिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं जामिअ़तुल मदीना (लिलबनात) में दर्से निज़ामी की ता'लीम ह़ासिल कर रही हूं नीज़ अपने अ़लाक़े में अ़लाक़ाई मुशावरत की ख़ादिमा (ज़िम्मेदार) की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने में कोशां हूं।

सरकार ! चार यार का देता हूं वासित़ा
ऐसी बहार दो न ख़िज़ां पास आ सके (1)

»»»»»»···«·»···««««««

---

(1)....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 302

www.dawateislami.net

सीरते ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا

गुनाह कैसे ख़त्म हों......?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना पानी के आग को बुझाने से भी ज़ियादा तेज़ी से गुनाहों को मिटाने वाला है और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना ग़ुलाम आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, राहे ख़ुदा में तल्वार चलाने से अफ़्ज़ल है।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रसूले रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक अज़्वाज رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ में एक नुमायां नाम सिद्क़ो वफ़ा की पैकर, जूदो सख़ा की ख़ू गर, अ़क़्लो दानिश से सरशार, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का है, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا आ'ला किरदार और ह़ुस्ने अख़्लाक़ का बेहतरीन नुमूना थीं, ख़ौफ़ व ख़शिय्यते इलाही आप के अन्दर कूट कूट कर भरी हुई थी, जूदो सख़ा और ज़ोह्दो क़नाअ़त गोया आप की आ़दते सानिय्या हो गई थी, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की इन सिफ़ाते आ़लिया का ज़िक्र करते हुवे फ़रमाते हैं :

كَانَتْ مِنْ سَادَةِ النِّسَاءِ دِيْنًا وَّوَرِعًا وَّجُوْدًا وَّمَعْرُوْفًا

---

1 ...الصلات والبشر، فصل فی کیفیة الصلاة علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۱٦٦.

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا दीन, तक़्वा, सख़ावत और नेकी के ए'तिबार से तमाम औ़रतों की सरदार थीं।''(1) आइये ! आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की ह़याते पाक के चन्द दरख़्शां पहलू मुलाह़ज़ा कीजिये :

ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में जब इस्लाम की मुअ़त्तर हवा के झोंके चलने लगे और आफ़्ताबे इस्लाम ने पूरी आबो ताब के साथ तुलूअ़ हो कर आफ़ाक़े आ़लम को अपनी ताबानी से दमकाना शुरूअ़ किया तो जिन लोगों ने सब से पहले इस की ताबानी से ताबां हो कर बिला ह़ीलो हुज्जत सदाए ह़क़ पर लब्बैक कहा येह वोही लोग थे जो फ़ित्री त़ौर पर नेक त़ब्अ़ वाक़ेअ़ हुवे थे और अदयाने बात़िला से बेज़ार हो कर पहले से ही दीने ह़क़ की तलाश में सरगर्दां थे चुनान्चे, शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : वाज़ेह़ रहे कि सब से पहले इस्लाम लाने वाले जो साबिक़ीने अव्वलीन के लक़ब से सरफ़राज़ हैं उन ख़ुश नसीबों की फ़ेहरिस्त पर नज़र डालने से पता चलता है कि सब से पहले दामने इस्लाम में आने वाले वोही लोग हैं जो फ़ित्रतन नेक त़ब्अ़ और पहले ही से दीने ह़क़ की तलाश में सरगर्दां थे और कुफ़्फ़ारे मक्का के शिर्क व बुत परस्ती और मुशरिकाना रुसूमे जाहिलिय्यत से मुतनफ़्फ़िर व बेज़ार थे चुनान्चे, नबिय्ये बरह़क़ (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم) के दामन में दीने ह़क़ की तजल्ली देखते ही येह नेक बख़्त लोग परवानों की त़रह़ शम्ए़ नबुव्वत पर निसार होने लगे और मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।(2)

---

1 ...سیر اعلام النبلاء، ۲۱-زینب ام المؤمنین، ۲/۲۱۲.

2 .....सीरते मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم चौथा बाब, स. 112

www.dawateislami.net

उन क़ुदसी सिफ़ात की हामिल हस्तियों में हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जहूश رضی اللہ تعالٰی عنھا भी हैं, हल्क़ा बगोशे इस्लाम होने के बा'द हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जहूश رضی اللہ تعالٰی عنھا ने इस्लाम के आंगन में अपने मुसलमान अफ़रादे ख़ाना के साथ एक नई ज़िन्दगी की शुरूआ़त की, एक ऐसी ज़िन्दगी जो कुफ़्र की तारीकियों से दूर हो कर इस्लाम की रोशनी में आ चुकी थी, ज़लालत व गुमराही की पग-डन्डियों में भटकने से जो रिहाई पा चुकी थी, गुनाहों की सियाही जिस से धुल चुकी थी और वोह नेकियों के नूर से मुनव्वर व ताबां हो चुकी थी।

हिजरते ह़बशा व मदीना

शबो रोज़ गुज़रते रहे, वक़्त का धारा पूरी रफ़्तार से बहता रहा लेकिन आफ़्ताबे इस्लाम के तुलूअ़ फ़रमाने के बा'द से हमराहियाने इस्लाम पर कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम की जो काली घटाएं छाई थीं इन में कोई कमी न आई बल्कि रोज़ ब रोज़ बढ़ती ही रहीं और क़ैदो बन्द की येह सुऊ़बतें त़वील से त़वील होती गईं, सर फ़रोशाने इस्लाम ने येह तमाम मज़ालिम सहने के बा वुजूद अपने पायए सबात में लर्ज़िश न आने दी, जोरो सितम की आग में तो जलते रहे लेकिन कुफ़्र की आग में कूदना इन्हें गवारा न हुवा और इस तरह इन फ़िदायाने इस्लाम ने चारों त़रफ़ से कुफ़्र की तारीकियों में घिरे हुवे होने के बा वुजूद अपने ईमान की शम्अ़ को रोशन रखा फिर जब बारगाहे रिसालत मआब علٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत कर जाने का हुक्म हुवा तो येह फ़िदायाने इस्लाम अपने घर बार और मादरे वत़न को छोड़ कर ह़बशा में जा बसे। मुहाजिरीने ह़बशा की इस फ़ेहरिस्त

www.dawateislami.net

में ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا भी शामिल हैं, आप ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और दीगर अफ़रादे ख़ाना की हमराही में हिजरत की।(1) हिजरते ह़बशा के कुछ अ़र्से बा'द जब सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का से हिजरत फ़रमा कर **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا भी सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में मदीना शरीफ़ हिजरत कर आईं।(2)

घर पर क़ब्ज़ा

बनू जह़्श के मक्का से हिजरत कर आने के बा'द सरदारे मक्का अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब ने इन के घर पर क़ब्ज़ा कर के इसे **अ़म्र बिन अ़ल्क़मा** के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। जब बनी जह़्श को इस की ख़बर हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में इस का ज़िक्र किया, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस से बेहतर घर जन्नत में अ़ता फ़रमाए ? इन्हों ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, मैं राज़ी हूं।(3)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...اسد الغابة، باب العين والباء، ٢٨٥٨-عبد الله بن جحش، ٣/١٩٥، بتغير قليل.

2 ...الطبقات الكبرٰى، ٤١٣٢-زينب بنت جحش، ٨/٨٠، بتغير قليل.

3 ...السيرة النبوية لابن هشام، مقام رسول في دار ابي ايوب، ٢/١١١.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رضی اللہ تعالٰی عنہ से निकाह

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का पहला निकाह **रसूलुल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رضی اللہ تعالٰی عنہ के साथ हुवा । आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمٰن इस का तफ़्सीली ज़िक्र करते हुवे फ़रमाते हैं : हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने क़ब्ले तुलूए़ आफ़्ताबे इस्लाम ज़ैद बिन हारिसा رضی اللہ تعالٰی عنہ को मौला (ग़ुलाम) ले कर आज़ाद फ़रमाया और **मुतबन्ना** (मुंह बोला बेटा) बनाया था, हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رضی اللہ تعالٰی عنہا कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की फूफी **उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब** की बेटी थीं, सय्यिदे आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इन्हें हज़रते ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ से निकाह का पैग़ाम दिया, अव्वल तो राज़ी हुईं इस गुमान से कि हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم अपने लिये ख़्वास्तगारी फ़रमाते हैं, जब मा'लूम हुवा कि ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिये त़लब है, इन्कार किया और अ़र्ज़ कर भेजा कि **या रसूलल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم मैं हुज़ूर की फूफी की बेटी हूं ऐसे शख़्स के साथ अपना निकाह पसन्द नहीं करती और इन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رضی اللہ تعالٰی عنہ ने भी इसी बिना पर इन्कार किया, इस पर येह आयए करीमा उतरी :

www.dawateislami.net

وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किसी मुसलमान मर्द न किसी मुसलमान औ़रत को पहुंचता है कि जब **अल्लाह** व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे और जो हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका ।

इसे सुन कर दोनों बहन भाई (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ताइब हुवे और निकाह़ हो गया ।[(1)]

महरे निकाह़

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को 10 दीनार, 60 दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, 50 मुद खाना और 30 साअ़ खजूरें बत़ौरे महर अ़त़ा फ़रमाईं ।[(2)]

शादी निभाई न जा सकी

ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا एक साल या कुछ ज़ियादा अ़र्सा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजिय्यत में रहीं, फिर आपस में ना साज़गारी पैदा हो गई ।[(3)] आख़िर ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन्हें त़लाक़ देने का इरादा कर लिया लेकिन जब प्यारे

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 30/517

2 ...تفسیر البغوی، سورۃ الاحزاب، تحت الآیۃ:۳۶، ۳/۵۶۰.

3 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم در ذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۷۶.

www.dawateislami.net

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इस बारे में बात की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया। जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शिकायत ले कर आए और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को त़लाक़ देने का इरादा कर लिया, जब इस बारे में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मश्वरा किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया (जैसा कि क़ुरआने करीम में है)।(1)

اَمۡسِكۡ عَلَیۡكَ زَوۡجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ (پ۲۲، الاحزاب:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपनी बीबी अपने पास रहने दे और* ***अल्लाह*** *से डर।*

उ़लमा फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रोकने का हुक्म देने में मक़्सूद ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आज़्माना था कि ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रग़बत बाक़ी है या बिल्कुल ही मुतनफ़्फ़िर हो गए हैं। उस वक़्त तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रुक गए लेकिन कुछ अ़र्से बा'द दोबारा बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ज़ैनब को त़लाक़ दे दी है।(2)

चन्द मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ के वाक़िए़ से हमें दर्जे ज़ैल मदनी फूल चुनने को मिले :

---

1 ...سنن الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ الاحزاب، ص۷۴۲، الحدیث:۳۲۱۴.

2 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم درذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۷۲.

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि बारगाहे रब्बे ज़ुल जलाल में रसूले नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बहुत अरफ़अ़ व आ'ला है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे महबूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ैसले को अपना फ़ैसला फ़रमाया और हुज़ूर के हुक्म फ़रमाने पर मुबाह काम को भी फ़र्ज़ क़रार दिया चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस वाक़िए़ पर तबसेरा करते हुवे फ़रमाते हैं : "ज़ाहिर है कि किसी औ़रत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फ़र्ज़ नहीं कि फ़ुलां से निकाह़ पर ख़्वाही न ख़्वाही राज़ी हो जाए ख़ुसूसन जब कि वोह इस का कुफ़ू न हो, ख़ुसूसन जब कि औ़रत की शराफ़ते ख़ानदान कवाकिबे सुरय्या से भी बुलन्दो बाला तर हो , बाईं हमा (इन तमाम बातों के बा वुजूद) अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दिया हुवा पयाम न मानने पर रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ ने बिऐ़निही वोही अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए जो किसी फ़र्ज़े इलाह (अल्लाह तआ़ला के फ़र्ज़) के तर्क पर फ़रमाए जाते और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे पाक के साथ अपना नामे अक़्दस भी शामिल फ़रमाया या'नी रसूल जो बात तुम्हें फ़रमाएं वोह अगर हमारा फ़र्ज़ न थी तो अब इन के फ़रमाने से फ़र्ज़े क़त़ई हो गई, मुसलमानों को इस के न मानने का अस्लन (बिल्कुल भी) इख़्तियार न रहा, जो न मानेगा सरीह़ गुमराह हो जाएगा, देखो ! रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म देने से काम फ़र्ज़ हो जाता है अगर्चे फ़ी नफ़्सिही ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का फ़र्ज़ न था एक मुबाह़ व जाइज़ अम्र था।(1)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 30/517

www.dawateislami.net

जितना मेरे ख़ुदा को है मेरा नबी अ़ज़ीज़
कौनैन में किसी को न होगा कोई अ़ज़ीज़
जो कुछ तेरी रिज़ा है ख़ुदा की वोही ख़ुशी
जो कुछ तेरी ख़ुशी है ख़ुदा को वोही अ़ज़ीज़
महशर में दो जहां को ख़ुदा की ख़ुशी की चाह
मेरे हुज़ूर की है ख़ुदा को ख़ुशी अ़ज़ीज़(1)

येह मदनी फूल भी ह़ासिल हुवा कि इस्लाम में किसी को किसी पर रंग व नस्ल और अ़लाक़े की बुन्याद पर फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं बल्कि इस्लाम में फ़ज़ीलत का मे'यार तक़्वा है चुनान्चे, **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ
(پ۲۶، الحجرات:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* ***अल्लाह*** *के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।*

मा'लूम हुवा कि किसी गोरे को काले पर या काले को गोरे पर, किसी अ़रबी को अ़जमी पर या अ़जमी को अ़रबी पर, किसी आज़ाद को ग़ुलाम पर या ग़ुलाम को आज़ाद पर रंग और नस्ल की बुन्याद पर कुछ फ़ज़ीलत नहीं है बल्कि इन में जो बड़ा मुत्तक़ी है वोही अफ़्ज़ल भी है। इस का अ़मली इज़्हार **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी फूफी की बेटी का निकाह़ एक आज़ाद कर्दा ग़ुलाम के साथ कर के फ़रमाया जिस से ग़ुलामों को नीच तसव्वुर करने की निहायत क़बीह़ सोच की काट भी हो गई।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....ज़ौक़े ना'त, स. 97 मुल्तक़तन

www.dawateislami.net

काशानए नबवी में...

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ामे निकाह

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के त़लाक़ देने के बा'द जब हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की इद्दत पूरी हो चुकी तो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की त़रफ़ निकाह़ का पैग़ाम भेजा और इस के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही मुन्तख़ब फ़रमाया ताकि लोग येह गुमान न करें कि येह अ़क़्द ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिज़ामन्दी के बिग़ैर ज़बरदस्ती वाक़ेअ़ हुवा है और उन्हें येह मा'लूम हो जाए कि ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ख़्वाहिश नहीं है चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि जाओ और ज़ैनब को मेरी त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम दो। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से चले जब ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا आटे का ख़मीर कर रही थीं। फ़रमाते हैं : जब मैं ने उन्हें देखा तो मेरे दिल में उन की इस क़दर अ़ज़्मत पैदा हुई कि मैं उन्हें नज़र भर कर देख भी न सका क्यूंकि रसूले ख़ुदा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें पैग़ामे निकाह़ भेजा था लिहाज़ा मैं ऐड़ियों के बल घूमा और पुश्त फेर कर कहा :

يَا زَيْنَبُ! اَبْشِرِیْ اَرْسَلَنِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْكُرُكِ

www.dawateislami.net

खुश हो जाओ क्यूंकि मुझे महबूबे खुदा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा है, हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हें निकाह का पैग़ाम दिया है।"(1)

सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का जवाब

महबूबे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ामे निकाह सुन कर हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जवाब दिया कि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मश्वरा किये बिग़ैर कुछ नहीं कर सकती फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अपने नमाज़ पढ़ने की जगह तशरीफ़ लाईं और सजदे में सर रख कर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे पाक पैग़म्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे निकाह का पैग़ाम दिया है अगर मैं तेरे नज़्दीक इन की ज़ौजिय्यत में दाख़िल होने के लाइक़ हूं तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इन के साथ मेरा निकाह फ़रमा दे।" दुआ क़बूल हुई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا (پ۲۲، الاحزاب:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब ज़ैद की ग़रज़ इस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह में दे दी।*

इस आयत के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : कौन है जो ज़ैनब के पास जाए और उस को येह खुश ख़बरी सुनाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को मेरी ज़ौजिय्यत में दे दिया है? येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

1 ...مسند احمد، مسند انس بن مالك، ۵/ ۵۶۳، الحديث: ۱۳۳۶۶.

www.dawateislami.net

एक ख़ादिमा ह़ज़रते सलमा رضی اللہ تعالٰی عنھا दौड़ती हुई ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا के पास पहुंचीं और येह आयत सुना कर खुश ख़बरी दी। ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا इस बिशारत से इस क़दर खुश हुईं कि अपना ज़ेवर उतार कर उस ख़ादिमा को इन्आ़म में दे दिया, सजदए शुक्र बजा लाईं और दो[2] माह के रोज़े रखने की नज़्र मानी।[(1)] इस के बा'द ना गहां (अचानक) आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم, ह़ज़रते ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا के मकान में तशरीफ़ ले गए इन का सर बरह्ना था। इस पर अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : **या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم बिग़ैर ख़ुत़बा और बिग़ैर गवाह के आप ने मेरे साथ निकाह़ फ़रमा लिया ? इरशाद फ़रमाया : "اَللّٰهُ الْمُزَوِّجُ وَ جِبْرِيْلُ الشَّاهِدُ" या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) निकाह़ फ़रमाने वाला है और ह़ज़रते जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) गवाह हैं।"[(2)]

दा'वते वलीमा

इस के बा'द दिन चढ़े आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने दा'वते वलीमा का एहतिमाम फ़रमाया और इतनी बड़ी दा'वत फ़रमाई कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में से किसी के साथ निकाह़ के मौक़अ़ पर इतनी बड़ी दा'वत नहीं फ़रमाई मरवी है कि आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने मुसलमानों को रोटी और गोश्त खिलाया ह़त्ता कि वोह शिकम सैर हो गए। खाने के बा'द सब लोग उठ कर चले गए लेकिन तीन[3] अफ़राद खाना खा कर उसी जगह बातों में मश्गूल हो गए और बातों का सिलसिला इस

❶...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم در ذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۷۷.
❷...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم در ذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۷۷.
المعجم الکبیر للطبرانی، ذکر ازواج رسول اللہ، ذکر تزویج النبی صلی اللہ علیہ وسلم زینب...الخ، ۱۰/۱۶۵، الحدیث: ۱۹۶۰۴، بتغیر قلیل.

www.dawateislami.net

क़दर दराज़ हो गया कि इन का बैठना हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام पर भारी मा'लूम हुवा, हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام उस जगह से इस लिये उठे कि येह लोग भी हम को क़ियाम फ़रमाते देख कर उठ जाएं मगर वोह हज़रात न समझे, मकान तंग था घरवालों को भी इन की वज्ह से तक्लीफ़ हुई, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वहां से उठ कर हुजरों में तशरीफ़ ले गए दौरा फ़रमा कर जो तशरीफ़ लाए तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि वोह लोग बैठे हुवे हैं हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام येह देख कर फिर वापस हो गए तब इन लोगों को ख़याल हुवा और उठ गए, इस पर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुसलमानों को बारगाहे रिसालत के आदाब से ख़बरदार करते हुवे येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ لٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَ اللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ

(پ۲۲، الاحزاب:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! नबी के घरों में न ह़ाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूं कि ख़ुद इस के पकने की राह तको, हां ! जब बुलाए जाओ तो ह़ाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न येह कि बैठे बातों में दिल बहलाओ, बेशक इस में नबी को ईज़ा होती थी तो वोह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे और* ***अल्लाह*** *हक़ फ़रमाने में नहीं शर्माता।*

1 .....शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 181

صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب زواج زینب...الخ، ص۵۳۴، الحدیث:۱۴۲۸.

www.dawateislami.net

बा बरकत ह़ल्वा

इस मौक़ए़ पर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े का ज़ुहूर भी हुवा चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि जब रह़मते आ़लम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमाया तो (वालिदए माजिदा) ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मुझ से फ़रमाया : काश ! हम ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कोई तोह़्फ़ा पेश करें । मैं ने अ़र्ज़ की : ऐसा ही कीजिये । पस उन्हों ने खजूरें, घी और पनीर लिया और इन्हें हांडी में डाल कर ह़ल्वा तय्यार किया और फिर इसे मेरे हाथ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेज दिया । मैं इसे ले कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : इसे रख दो । फिर ह़ुक्म देते हुवे फ़रमाया : फ़ुलां फ़ुलां आदमियों को बुला लाओ और इन के इ़लावा और जितने मिलें उन्हें भी । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने वोही किया जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ुक्म फ़रमाया था, जब मैं लौट कर वापस आया तो उस वक़्त काशानए अक़्दस आदमियों से खचा खच भरा हुवा था । मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस ह़ल्वे पर अपना दस्ते अक़्दस रखा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा उस के साथ कलाम फ़रमाया । फिर आप ने उस में से खाने के लिये दस दस आदमियों

www.dawateislami.net

को बुलाया और उन से फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर खाओ और हर शख़्स अपने सामने से खाए।[1] मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है, हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि लोगों ने सैर हो कर खाया हत्ता कि जब सब खा चुके तो रसूले अकरम, फ़ख़्रे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अनस ! इसे उठा लो। जब मैं ने उठाया तो मा'लूम नहीं कि रखते वक़्त ज़ियादा था या उठाते वक़्त।[2]

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** **अल्लाह** तबारक व तआला ने अपने प्यारे महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस क़दर कसीर मो'जिज़े अ़ता फ़रमाए थे जो हद व शुमार से बाहर हैं, बिला शुबा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सरापा मो'जिज़ा थे कि

दिये मो'जिज़े अम्बिया को ख़ुदा ने
हमारा नबी मो'जिज़ा बन के आया

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन ला ता'दाद मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा येह भी है कि क़लील खाना आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते पुर अन्वार और दुआ से इस क़दर बरकत वाला हो जाता है कि सेंकड़ों हज़ारों अफ़राद शिकम सैर हो कर खाते तब भी ख़त्म न होता। बारहा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस मो'जिज़े का ज़ुहूर हुवा जिन में से एक वाक़िआ़ अभी आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया, आइये ! इस से हासिल होने वाले चन्द मदनी फूल भी मुलाहज़ा कीजिये :

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب الھدیۃ للعروس، ص۱۳۲۸، الحدیث:۵۱۶۳.

2 ...صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب زواج زینب...الخ، ص۵۳۰، الحدیث:۱۴۲۸.

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि किसी तोह़्फ़े को ह़क़ीर और छोटा समझते हुवे रद्द नहीं करना चाहिये बल्कि भेजने वाले के ख़ुलूस पर नज़र करते हुवे ख़न्दा पेशानी से क़बूल करना चाहिये कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अर्फ़अ़ व आ'ला शान के बा वुजूद ग़ुलामों के मा'मूली नज़्रानों को भी रद्द न फ़रमाते थे ऐसी ख़ुशी व शादमानी से क़बूल फ़रमाते थे कि लाने वाले का दिल बाग़ बाग़ हो जाता था।

येह भी मा'लूम हुवा कि खाने को सामने रख कर कुछ पढ़ने में कोई ह़रज नहीं कि येह ख़ुद ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़े'ले मुबारक से साबित है, मुह़द्दिसे जलील, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीस शरीफ़ के इस ह़िस्से की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : येह ख़बर नहीं कि क्या पढ़ा, दुआ़ए बरकत ही फ़रमाई होगी। मा'लूम हुवा कि खाना सामने रख कर दुआ़ करना, क़ुरआने मजीद पढ़ना जाइज़ बल्कि सुन्नते **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है। फ़ातिह़ा में येह ही होता है कि खाना सामने रख कर दुआ़ करना, क़ुरआने मजीद पढ़ते हैं और ईसाले सवाब की दुआ़ करते हैं, ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरबानी कर के जानवर को सामने रख कर फ़रमाते थे कि मौला ! येह मेरी उम्मत की त़रफ़ से है इसे क़बूल फ़रमा, येह है ईसाले सवाब।[1]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, मो'जिज़ों का बयान, पहली फ़स्ल, 8/228

www.dawateislami.net

दो[2] मदनी फूल येह भी हासिल हुवे कि खाना **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ कर और अपने सामने से खाना चाहिये, बीच से या दूसरे के सामने से उठा कर न खाया जाए।

बे मिसाल निकाह

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا को सरकारे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ाते वाला तबार से किस क़दर वालिहाना मह़ब्बत और इश्क़ था कि आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के साथ अपने निकाह़ की ख़बर सुनते ही अपना सारा ज़ेवर ख़ुश ख़बरी सुनाने वाली बांदी को दे दिया और इस ने'मत के शुक्राने में दो[2] माह के रोज़े भी रखे, इस बात को सामने रख कर अगर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की उस हिचकिचाहट और तअम्मुल (تَ-اَمْ-مُل) को देखा जाए जो आप ने सरकारे दो आ़लम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का पैग़ामे निकाह़ सुन कर किया था तो पता चलता है कि येह हिचकिचाहट और तअम्मुल ना पसन्दीदगी की बिना पर नहीं था बल्कि इस की वज्ह हुज़ूरे अन्वर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हुक़ूक़ की बजा आवरी में कोताही का ख़ौफ़ था कि कहीं आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ौजिय्यत में आने के बा'द शबो रोज़ आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रफ़ाक़त में बसर करते हुवे मुझ से कोई ऐसा कलिमा न सरज़द हो जाए जो मेरे ईमान के ख़रमन को जला कर ख़ाकिस्तर (خَا-کِس-تَر- या'नी राख) कर दे तभी तो आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने बारगाहे रब्बे जुल जलाल में सजदा रेज़ हो कर येह दुआ़ मांगी थी कि बारी तआ़ला! अगर मैं तेरे औला व आ'ला रसूल صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ौजिय्यत के लाइक़ हूं तो तू उन के साथ मेरा निकाह़ फ़रमा दे। आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की येह आ़जिज़ी

www.dawateislami.net

और बारगाहे रिसालत علٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह बे मिसाल अदब ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ की पाक बारगाह में मक़्बूल हुवा और उस ख़ालिक़े बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ ने इस मुख़्लिसाना दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को वोह बे पायां ए'ज़ाज़ और बे मिसाल फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई कि इस पर जितना भी नाज़ किया जाए कम है येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इस पर फ़ख़्र करते हुवे अक्सरो बेशतर फ़रमाया करती थीं : मैं रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीगर अज़्वाजे पाक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ) की त़रह़ नहीं हूं क्यूंकि उन के निकाह़ महरों के साथ हुवे और उन के औलिया (या'नी बाप दादा वग़ैरा) ने उन के निकाह़ किये जब कि मेरा निकाह़ खुद रब तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ फ़रमाया और मेरे बारे में क़ुरआने करीम की आयात नाज़िल फ़रमाईं जिन्हें मुसलमान पढ़ते हैं और इन में किसी क़िस्म की तग़य्युरो तब्दील मुमकिन नहीं।[1]

निकाह़ में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत

ख़याल रहे कि निकाह़ की शराइत़ में से दो[2] मर्द या एक मर्द और दो[2] औरतें गवाह होना भी है लेकिन सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये येह शर्त़ नहीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निकाह़ बिग़ैर गवाहों के ही मुन्अ़क़िद हो जाता है। इमामुल ह़रमैन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ज़ियादा सह़ीह़ येह है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निकाह़

1 ...الطبقات الکبرٰی، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۴۱۳۲–زینب بنت جحش، ۸/۸۱.

www.dawateislami.net

बिग़ैर गवाहों के ही मुन्अ़क़िद हो जाता है क्यूंकि गवाह मुक़र्रर करने का मक़्सद येह है कि निकाह़ से इन्कार न किया जा सके और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से ऐसा होना ना मुमकिन व मुह़ाल है, अगर इसे औ़रत की त़रफ़ से फ़र्ज़ किया जाए तो येह हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तकज़ीब होगी और जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तकज़ीब करे वोह काफ़िर है (लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में गवाहों की शर्त़ नहीं) ।[(1)]

एक मज़मूम रस्म का ख़ातिमा

इस बा बरकत निकाह़ से ज़मानए जाहिलिय्यत की एक मज़मूम रस्म का ख़ातिमा भी हो गया इस की तफ़्सील कुछ यूं है कि दौरे जाहिलिय्यत में लोग अपने **मुतबन्ना** (मुंह बोले बेटे) को भी सुलबी व अस्ली बेटे की त़रह़ समझते थे और इस की मुत़ल्लक़ा (त़लाक़ याफ़्ता) या बेवा से निकाह़ को ह़राम जानते थे । मिरआतुल मनाजीह़ में है : “हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने ह़ज़रते ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को अपना बेटा बनाया था और अ़रब में दस्तूर था कि अपने मुंह बोले बेटे को ह़क़ीक़ी बेटा समझते थे, उसे मीरास भी मिलती थी, उस की बेवा को अपनी बहू समझते थे, अपनी त़रफ़ इस की निस्बत करते थे । इस क़ाइदे से लोग ह़ज़रते ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ज़ैद बिन मुह़म्मद कहते थे । जब ह़ज़रते ज़ैद

---

1 ...نھایۃ المطلب، کتاب النکاح، باب ما جاء فی امر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وازواجہ فی النکاح، ۱۲/۱۷.

www.dawateislami.net

बिन ह़ारिसा (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ने जनाबे ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنہا को त़लाक़ दी और वोह हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के निकाह़ में आईं, तब लोगों ने कहना शुरूअ़ कर दिया (कि) हुज़ूरे अन्वर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अपनी बहू से निकाह़ कर लिया।"[1] इन के रद्द में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मुतअ़द्दिद आयात नाज़िल फ़रमाई, एक मक़ाम पर फ़रमाया :

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآىٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًاؕ (پ۲۲، الاحزاب:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी कि मुसलमानों पर कुछ ह़रज न रहे उन के ले पालकों (मुंह बोले बेटों) की बीबियों में, जब उन से इन का काम ख़त्म हो जाए।*

बहर ह़ाल इस तमाम तर तफ़्सील से येह मस्अला मा'लूम हो गया कि ले पालक और मुंह बोले बेटे के वोह अह़काम नहीं होते जो ह़क़ीक़ी बेटे के हैं, जो लोग येह फ़र्क़ मल्ह़ूज़ नहीं रखते थे उन की इस ग़लत़ सोच और जाहिली रिवाज को दाइये इस्लाम, **मह़बूबे रब्बुल अनाम** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अपने अ़मल से चेलेन्ज कर के इस का ख़ातिमा फ़रमाया और उम्मत पर येह वाज़ेह़ हो गया कि ह़ज़रते ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ को अगर्चे **रसूलुल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने कमाले शफ़्क़त व मेहरबानी से अपना बेटा कह कर याद फ़रमाया है लेकिन आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिये वोह

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, मो'जिज़ों का बयान, पहली फ़स्ल, 8/466

www.dawateislami.net

अह्काम नहीं जो ह़क़ीक़ी बेटे के लिये होते हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सीन तरीन लम्ह़ात

काशानए नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में आने के बा'द उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ज़िन्दगी के ह़सीन तरीन लम्ह़ात का आग़ाज़ किया और शबो रोज़ मदीने के चांद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्वार से फ़ैज़ पा कर दिल में इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्अ़ को मज़ीद रोशन और चमक दार बनाने लगीं, आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते थे चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बहुत पसन्द फ़रमाते थे और कसरत से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़िक्र फ़रमाया करते थे।[2]

1.....वाज़ेह़ रहे कि येह हुक्म ख़ाली मुंह बोले बेटे या बेटी का है, रिज़ाअ़त (या'नी दूध के रिश्ते) का हुक्म इस से अ़लाहि़दा है : इस में दूध पिलाने वाली औ़रत बच्चे की मां बन जाती है और उस की अवलाद इस के भाई बहन, जिस की वज्ह से इन का आपस में निकाह़ ह़राम हो जाता है। हुर्मते रिज़ाअ़त के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब '**बहारे शरीअ़त**' जिल्द दुवुम के सफ़्ह़ा नम्बर 36 ता 42 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤١٣٢-زینب بنت جحش، ٨/٨١.

www.dawateislami.net

वाक़िअ़ए इफ़्क में सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا का मौक़िफ़

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, पांच[5] हिजरी जब कि ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا को सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की ज़ौजिय्यत में आए अभी तक़रीबन नव[9] या दस माह ही हुवे थे[(1)] कि बा'ज़ बद बातिन लोगों ने सरकारे ज़ी वक़ार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की सब से मह़बूब ज़ौजए मुत़ह्हरा ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا पर इन्तिहाई घिनावनी तोह़्मत लगाई और वोह बाज़ारे बद तमीज़ बपा किया कि दिल दहल कर रह जाएं, मुनाफ़िक़ीन का सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल ख़ास त़ौर पर इस तोह़्मत में पेश पेश रहा इस के पास तोह़्मत से मुतअ़ल्लिक़ बातें की जातीं और फिर इन्हें फैलाया जाता जिस से बा'ज़ भोले भाले मुख़्लिस मुसलमान भी इन सियाह बातिनों के दामे फ़रेब में फंस कर तोह़्मत में शरीक हो गए लेकिन फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाक दामनी के बयान में कुरआने करीम की 18 आयात नाज़िल फ़रमाईं जिस से मुनाफ़िक़ीन की इस साज़िश का क़ल्अ़ क़म्अ़ हो गया, इन के दामे फ़रेब में फंसे हुवे भोले भाले मुसलमान ताइब हो कर सच्चे दिल से बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में रुजूअ़ लाए और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا को वोह अ़ज़ीम मर्तबा अ़त़ा हुवा कि अब जो आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाक दामनी व इफ़्फ़त मआबी में ज़र्रा भर भी शक करे दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो कर कुफ़्र के तारीक गढ़े में जा पड़े। ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنھا की बराअत नाज़िल होने से पहले जब सय्यिदे

---

1 ....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, हिस्सए दुवुम, बाबे सिवुम, फ़स्ले चहारुम, स. 350 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की राए दरयाफ़्त फ़रमाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं देखे और सुने बिग़ैर कोई बात कहने (या'नी झूट बोलने) से अपने कानों और आंखों की ह़िफ़ाज़त करती हूं, **وَاللّٰہِ مَا عَلِمْتُ اِلَّا خَیْرًا** ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! मैं इन में सरासर भलाई ही देखती हूं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द अनमोल लम्ह़ात मुलाह़ज़ा किये कि किस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के आगे अपना सर ख़म कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से निकाह़ कर लिया लेकिन जब येह शादी निभाई न जा सकी और बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को त़लाक़ दे कर रिश्तए इज़्दिवाज से आज़ाद कर दिया तो फिर ब मुत़ाबिक़ रिज़ाए इलाही रसूले रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शरफ़े ज़ौजिय्यत से नवाज़ा और इस त़रह़ सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक होने

1 ...صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، ص۱۰۴۰، الحدیث:۴۱۴۱.
ارشاد الساری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، ۷/ ۲۹۰، الحدیث:۴۱۴۱.

www.dawateislami.net

की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا **'उम्मुल मोमिनीन'** के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ हो गईं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर करोड़ों रह़मतों और बरकतों का नुज़ूल हो और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सदक़े हमारे गुनाहों की बख़्शिश हो । अब आइये ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के नाम व नसब और ख़ानदान के बारे में भी चन्द ज़रूरी बातें मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे,

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम बर्रह था, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर **ज़ैनब** रखा ।[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वालिद का नाम जह़्श और वालिदा का नाम **उमैमा** है जो सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं ।[2] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब इस त़रह़ है : **"ज़ैनब बिन्ते जह़्श बिन रियाब बिन या'मर बिन सबिरह बिन मुर्रह बिन कबीर बिन ग़नम बिन दूदान बिन असद बिन ख़ुज़ैमा"**[3]

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

ह़ज़रते ख़ुज़ैमा में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है ।

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب الادب، باب تحویل الاسم...الخ، ص٥٣٢، الحدیث:٦١٩٢.

2 ...اسد الغابة، حرف الزاء، ٦٩٥٥-زینب بنت جحش، ١٢٦/٧.

3 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤١٣٢-زینب بنت جحش، ٨٠/٨.

www.dawateislami.net

हज़रते खुज़ैमा, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 15 वें दादाजान हैं और वालिदा की तरफ़ से दूसरी पुश्त में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वालिदा **उमैमा**, हज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं।

कुन्यत व अल्क़ाब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की कुन्यत **उम्मे ह़कम** है, सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को **अव्वाहा** के लक़ब से नवाज़ा है

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ لَاَوَّاهَةٌ जैनब बिन्ते जह़्श **अव्वाहा** है।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अव्वाहा** से क्या मुराद है ? इरशाद फ़रमाया : "اَلْمُتَخَشِّعُ الْمُتَضَرِّعُ ख़ुशूअ़ करने वाली और ख़ुदा के हुज़ूर गिड़ गिड़ाने वाली।"(1)

मरवी अह़ादीस की ता'दाद

अह़ादीस की मुरव्वजा कुतुब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी अह़ादीस की ता'दाद 11 है जिन में से दो[2] **मुत्तफ़िक़ुन अ़लैह** (या'नी बुख़ारी व

(1) ...اسد الغابة، حرف الزاء، ٦٩٥٥-زينب بنت جحش، ١٢٨/٧.

www.dawateislami.net

मुस्लिम दोनों में) और बक़िया नव9 दीगर किताबों में हैं ।(1)

चन्द अफ़रादे ख़ाना का तज़किरा

ख़ल्क़ी व ख़ुल्क़ी अवसाफ़े हमीदा (या'नी हुस्ने सूरत व हुस्ने सीरत) के साथ साथ ख़ानदानी अज़्मत व शराफ़त से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ख़ूब नवाज़ा था क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वालिदा **उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब**, रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं, इस लिहाज़ से आप, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ज़ाद भी हुईं, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ख़ानदान के कई अफ़राद इस्लाम के नूर में नहा कर आस्माने हिदायत के रोशन सितारे बन कर उभरे जिन में से चन्द का यहां ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

➥ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के भाई हैं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दारे अरक़म में दाख़िल होने से पहले मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे, ह़बशा की त़रफ़ दोनों हिजरतों नीज़ हिजरते मदीना में शरीक रहे, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें एक लश्कर पर अमीर बना कर भेजा था और येह पहले शख़्स हैं जिन्हें आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरे लश्कर बनाया, ग़ज़्वए बद्र व उहुद में भी शरीक हुवे और उहुद में जामे शहादत नोश फ़रमाया ।(2)

---

❶ ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم در ذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۷۹.

❷ ...اسد الغابۃ، باب العین والباء، ۲۸۵۸-عبد اللہ بن جحش، ۳/۱۹۵، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

हज़रते अबू अह़मद बिन जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ भी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا के भाई हैं, ह़बशा और मदीना की हिजरतों में अपने भाई ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہ के हमराह थे, शाइ़र और اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ सह़ाबए किराम علیہم الرضوان में से हैं, मरवी है कि आप नाबीना थे मगर बिग़ैर किसी क़ाइद (रहनुमा) के मक्का की ऊंची नीची जगहों में घूम फिर लिया करते थे ।(1)

ह़ज़रते ह़मना बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا की बहन हैं, जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में थीं, इन्हों ने ग़ज़्वए उहुद में जामे शहादत नोश फ़रमाया फिर अ़शरए मुबश्शरा में से एक जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप से निकाह़ किया और आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के बत़न से ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ के दो[2] बेटे मुह़म्मद और इमरान पैदा हुवे । ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़मना رضی اللہ تعالٰی عنہا ख़ुद भी ग़ज़्वए उहुद में शरीक हुईं और प्यासों को पानी पिलाने और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करने की ख़िदमात सर अन्जाम दीं ।(2)

---

❶...المرجع السابق، حرف الهمزة، ٥٦٦٩-ابو احمد بن جحش، ٦/٥.

❷...المرجع السابق، حرف الحاء، ٦٨٥٧-حمنة بنت جحش، ٧/٧١، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

हज़रते उम्मे हबीबा बिन्ते जह्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, भी उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं। हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, अ़शरए मुबश्शरा के एक जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के निकाह में थीं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

दुन्या से बे रग़बती और बे मिसाल सख़ावत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यूं तो उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बहुत से आ'ला अवसाफ़ अ़ता फ़रमाए थे लेकिन इन में से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वोह वस्फ़ जो बहुत ही नुमायां था वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुन्या से बे रग़बती और बे मिसाल सख़ावत है। दुन्या की आ़रिज़ी आसाइशें और इस की ज़ैबो ज़ीनत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नज़र में कुछ वक़्अ़त (इ़ज़्ज़त) न रखती थीं इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस फ़ानी दुन्या में दिल लगाने के बजाए हमेशा और हर वक़्त आख़िरत में बुलन्दो बाला मर्तबों के हुसूल के लिये कोशां रहती थीं चुनान्चे, हज़रते सय्यिदतुना बरज़ा बिन्ते राफ़िअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि एक दफ़्आ़ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना

1... المستدرک للحاکم،کتاب معرفۃ الصحابۃ رضی اللہ عنھم،۲۸۷۷-ذکر ام حبیبۃ واسمھا...الخ، ۸۳/۵، الحدیث:۶۹۹۱.

www.dawateislami.net

उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا की त़रफ़ कोई अ़तिय्या भेजा, जब वोह आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के पास पहुंचा तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने फ़रमाया : **अल्लाह** عزوجل उ़मर की बख़्शिश फ़रमाए, मेरी दूसरी बहनें इस की मुझ से ज़ियादा ह़क़दार हैं। लोगों ने अ़र्ज़ की : येह सब आप ही का है। इस पर आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने سُبْحٰنَ اللہ कहा और इस से पर्दा कर लिया और कहा : इस पर कपड़ा डाल दो। फिर ह़ज़रते बरज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से कहने लगीं कि इस में से मुठ्ठियां भर भर कर बनू फ़ुलां और बनू फ़ुलां के पास ले जाओ, येह आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के क़रीबी रिश्तेदार और कुछ यतीम बच्चे थे। (ह़ज़रते बरज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا इसे तक़्सीम करती रहीं) ह़त्ता कि जब अ़तिय्ये का थोड़ा सा माल बाक़ी रह गया तो अ़र्ज़ किया : ऐ उम्मुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہا ! ब ख़ुदा, इस में हमारा भी ह़क़ है। फ़रमाया : जो कुछ कपड़े के नीचे बचा है तुम्हारा है, फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने अपने दस्ते मुबारक आस्मान की त़रफ़ उठा दिये और अ़र्ज़ की : मौला ! आयिन्दा साल उ़मर का कोई हदिय्या मुझ तक न पहुंचे। **अल्लाह** عزوجل ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की दुआ़ को क़बूल फ़रमाया और फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का इन्तिक़ाल हो गया।[1]

दस्तकारी कर के सदक़ा

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا की सख़ावत से मुतअ़ल्लिक़ एक येह बात बहुत मश्हूर है कि आप

1...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۴۱۳۲-زینب بنت جحش، ۸/۸۶، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا दस्तकारी (हाथ से काम) करती थीं और फिर राहे खुदा में सदक़ा कर देतीं चुनान्चे, रिवायत है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا दस्तकारी करने वाली ख़ातून थीं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا खालें दबाग़ कर इन्हें सिलाई करतीं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा कर देतीं।(1)

मक़ाम व मर्तबा

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बा'द बारगाहे रिसालत علٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में एक ख़ास मक़ाम हासिल था हत्ता कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से महबूब ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़ाम व मर्तबे के ए'तिबार से येह मेरे बराबर थीं। और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के चन्द आ'ला अवसाफ़ का तज़्किरा करते हुवे फ़रमाती हैं : मैं ने इन से बढ़ कर दीनदार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाली, हक़ बात कहने वाली, सिलए रेहमी करने वाली और सदक़ा व ख़ैरात करने वाली कोई औरत नहीं देखी।(2)

हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जहश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वफ़ात पाने के बा'द एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अ़र्ज़ किया : ख़ाला जान ! रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सी

---

1 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ٢٨٠٧-كانت زينب صناعة اليد، ٥/٣٢، الحديث: ٦٨٥٠.

2 ...صحيح مسلم، كتاب فضائل الصحابة، باب في فضائل عائشة، ص٩٥٠، الحديث: ٢٤٤٢.

www.dawateislami.net

ज़ौजए मुत़ह्हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا ज़ियादा मह़बूब थीं ? फ़रमाया : मैं इस बारे में कुछ ज़ियादा नहीं जानती, हां ! ज़ैनब बिन्ते जह़्श और उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالٰی عنہما) को आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ख़ास मक़ाम ह़ासिल था और मेरा ख़याल है कि मेरे बा'द येह दोनों आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को सब से ज़ियादा मह़बूब थीं ।(1)

पाबन्दिये शरीअ़त

शरीअ़त ने मय्यित पर तीन3 दिन तक सोग करने की इजाज़त दी है, कोई चाहे कैसी ही बुज़ुर्ग हस्ती क्यूं न हो तीन3 दिन से ज़ियादा सोग की इजाज़त नहीं, हां ! बीवी को ख़ावन्द की वफ़ात पर चार4 माह और दस दिन तक सोग करना वाजिब है और इस में किसी क़िस्म की कमी बेशी जाइज़ नहीं । उम्मते मुस्लिमा का सब से पहला गुरौह जो कि सह़ाबा व सह़ाबियात رِضْوَانُ اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पर मुश्तमिल था, उन्हों ने दीगर अह़कामे शरइय्या की त़रह़ इस हुक्मे शरई पर भी अ़मल कर के क़ाबिले तक़्लीद नुमूना पेश किया है, आइये ! इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہا का अ़मल मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, रिवायत है कि जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के भाई का इन्तिक़ाल हुवा तो (ग़ालिबन तीन3 दिन के बा'द) आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने ख़ुश्बू मंगवा कर लगाई और फ़रमाया : ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! मुझे ख़ुश्बू की कोई ह़ाजत नहीं, मगर मैं ने अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते हुवे सुना :

---

1 ...الطبقات الكبرٰى ، ذكر ازواج رسول الله صلى الله عليه وسلم، ٤١٣٢-زينب بنت جحش، ٨/٩١.

www.dawateislami.net

لَا یَحِلُّ لِاِمْرَاَۃٍ تُؤْمِنُ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ تُحِدُّ عَلٰی مَیِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثٍ اِلَّا عَلٰی زَوْجٍ اَرْبَعَۃَ اَشْھُرٍ وَّعَشْرًا

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाली किसी औ़रत को येह जाइज़ नहीं कि वोह किसी मय्यित पर तीन[3] दिन से ज़ियादा सोग करे मगर ख़ावन्द का सोग चार[4] माह और दस दिन है।"[(1)]

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कैसा जज़्बा और अहकामे शरअ़ पर अ़मल का किस क़दर शौक़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के सदक़े हमें भी शरीअ़त की पाबन्दी और सुन्नतों से महब्बत व इश्क़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।
- रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का निकाह़ खुद रब तआ़ला ने फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस निकाह़ के गवाह हैं।
- जब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ के बा'द वलीमा फ़रमाया तो इस

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب حد المرأۃ...الخ، ص۳۶۳، الحدیث:۱۲۸۲.

www.dawateislami.net

मौक़अ़ पर आयते हिजाब नाज़िल हुई जिस से ग़ैर महरम औरतों और मर्दों के दरमियान पर्दा फ़र्ज़ हो गया।

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के नानाजान और रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दादाजान एक ही शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हैं।[1]
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़बशा की त़रफ़ दोनों हिजरतों और इन के बा'द हिजरते मदीना में भी शिर्कत फ़रमाई।[2]
- **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के बा'द अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ में से सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इन्तिक़ाल हुवा।[3]

सफ़रे आख़िरत

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशन गोई

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन्सानी फ़ित़रत है कि इन्सान हर तक्लीफ़ देह चीज़ को ना पसन्द करता और इस से दूर भागता है लेकिन जब कोई तक्लीफ़ महबूब का क़ुर्ब पाने और इस से मुलाक़ात का ज़रीआ़ हो तो फिर येह दुख नहीं बल्कि कैफ़ो सुरूर देती है येही वज्ह है कि मौत के

1 .....इसी किताब का सफ़्ह़ा नम्बर 24 मुलाह़ज़ा कीजिये।

2 ...اسد الغابۃ، باب العین، ۲۸۵۸-عبد اللّٰہ بن جحش، ۳/۱۹۵

3 .....तफ़्सील आगे आ रही है।

www.dawateislami.net

निहायत तक्लीफ़ देह शै होने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों को इस का शिद्दत से इन्तिज़ार रहता था क्यूंकि दुन्या इन के लिये क़ैदख़ाना और मौत इस क़ैद से रिहाई का परवाना हुवा करती है नीज़ येह प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से विसाल (मुलाक़ात) का ज़रीआ भी है, इसी लिये रसूले अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या से पर्दए ज़ाहिरी फ़रमा जाने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को शिद्दत से इस का इन्तिज़ार रहा और येह जानने के लिये कि कौन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सब से जल्द मिलेंगी, वोह अपने हाथों को आपस में नापा करती थी क्यूंकि इन्हें इन के महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह ग़ैबी ख़बर दी थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सब से पहले वोह ज़ौजए मुत़ह्हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मिलेंगी जिन के हाथ सब से लम्बे हैं चुनान्चे, अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने इस फ़रमाने आ़ली का ज़ाहिरी मा'ना मुराद ले कर अपने हाथों को नापना शुरूअ़ कर दिया लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हुवा तब उन्हें मा'लूम हुवा कि लम्बे हाथों से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुराद ज़ियादा सदक़ा करना थी जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी ज़ौजए मुत़ह्हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : हम में से कौन सब से पहले

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलेगी ? फ़रमाया : जिस के हाथ सब से लम्बे हैं । इन्हों ने छड़ी ले कर हाथों को नापा तो ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हाथ सब से लम्बे निकले लेकिन बा'द में हम ने जाना के लम्बे हाथों से मुराद ज़ियादा सदक़ा देना था और हम में सब से पहले वोही (ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलीं ।[1]

इन्तिक़ाले पुर मलाल

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पर्दए ज़ाहिरी फ़रमाने के तक़रीबन 10 साल बा'द 20 हिजरी को ज़मानए ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने पैके अजल को लब्बैक कहा और इस दारे नापाएदार से रुख़्सत हो कर अपने आख़िरत के सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया । इन्तिक़ाल से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने चन्द वसिय्यतें कीं, फ़रमाया : मैं ने अपना कफ़न तय्यार कर रखा है, हो सकता है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी कफ़न भेजें अगर वोह भेजें तो किसी एक को सदक़ा कर देना और मुझे क़ब्र में उतारने के बा'द अगर मेरा पटका भी सदक़ा कर सको तो कर देना । मज़ीद फ़रमाया कि मुझे रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चारपाई पर उठाया जाए और इस पर ना'श[2] बनाई जाए । जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का इन्तिक़ाल हो गया तो अमीरुल मोमिनीन

1 ...صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب صدقۃ الشحیح الصحیح، ص۳۹۷، الحدیث:۱۴۲۰.

2 .....जनाज़े की चारपाई पर दरख़्त की टहनियों को बांध कर कपड़ा डाल दिया जाता है जिस से येह कुब्बे की त़रह़ बन जाता है, इसे ना'श कहते हैं ।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ख़ज़ाने से कफ़न के लिये कपड़े भेजे उन्हीं में आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को कफ़न दिया गया और जो कफ़न आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने खुद तय्यार कर रखा था आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की बहन हज़रते सय्यिदतुना ह़मना رضی اللہ تعالٰی عنھا ने ह़स्बे वसिय्यत इसे सदक़ा कर दिया।(1)

क़ब्र पर नस्ब होने वाला पहला ख़ैमा

जिस दिन उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल हुवा था वोह शदीद गर्मी का दिन था इस लिये पहली मरतबा आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की तुर्बते मुबारक पर ख़ैमा लगाया गया चुनान्चे, रिवायत में है कि जब हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ क़ब्र बनाने वालों के पास से गुज़रे जो सख़्त गर्म दिन में हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنھا के लिये क़ब्र बना रहे थे तो फ़रमाने लगे कि मुझे इन पर ख़ैमा लगा देना चाहिये, येह पहला ख़ैमा था जो जन्नतुल बक़ीअ़ में किसी क़ब्र पर लगाया गया।(2)

हज़रते अबू अह़मद رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़क़ीदतो मह़ब्बत

जब आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का जनाज़ा ले जाया गया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के भाई हज़रते सय्यिदुना अबू अह़मद बिन जह़्श رضی اللہ تعالٰی عنہ ने भी चारपाई को उठा रखा था और रोते जा रहे थे, येह नाबीना थे, हज़रते

---

1 ...الطبقات الکبری، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤١٣٢-زینب بنت جحش، ٨/٨٠.

2 ...المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، ٢٨٠٤-نکاح النبی بزینب بنت جحش، ٥/٣١، الحدیث:٦٨٤٦.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन से फ़रमाया : ऐ अबू अह़मद ! आप चारपाई से दूर हो जाइये ताकि चारपाई पर लोगों की भीड़ आप को मशक़्क़त में न डाले। ह़ज़रते अबू अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "یَاعُمَرُ! هٰذِهِ الَّتِیْ نِلْنَابِهَا کُلَّ خَیْرٍ وَّاِنَّ هٰذَا یُبَرِّدُ حَرَّ مَا اَجِدُ" ऐ उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ येह वोह हैं कि हमें हर भलाई इन्हीं के वसीले से मिली है और इन के जनाज़े की चारपाई को उठा कर चलना उस दुख की गर्मी को ठन्डा कर देगा जो मैं इन की जुदाई की वज्ह से मह़सूस करता हूं।" एक भाई के अपनी बहन के साथ येह प्यार व मह़ब्बत और अ़क़ीदत भरे जज़्बात देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : पकड़े रखो, पकड़े रखो।(1)

नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और चार[4] तक्बीरें कहीं, फिर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को तदफ़ीन के लिये क़ब्र के पास लाया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की क़ब्र के पास खड़े हो कर पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की, फिर फ़रमाया : जब येह पाक बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बीमार हुई तो मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीगर अज़्वाजे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के पास एक क़ासिद को येह पूछने के लिये भेजा कि इन की तीमार दारी और देख भाल कौन करेगा ? उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ ने फ़रमाया : हम करेंगी। और मैं ने जान लिया कि

1 ...المرجع السابق، الحديث:٦٨٤٧.

www.dawateislami.net

इन्हों ने सच कहा है। फिर जब इन का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने क़ासिद को पूछने के लिये भेजा कि कौन इन्हें ग़ुस्ल दे कर ख़ुश्बू लगाएगा और कफ़न पहनाएगा ? उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ ने कहला भेजा कि येह सब काम हम करेंगी। और मैं ने जान लिया कि इन्हों ने सच कहा है। फिर मैं ने इन की तरफ़ क़ासिद को भेजा कि कौन इन की क़ब्र में उतर सकता है ? उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ ने फ़रमाया : जिसे इन की हयाते ज़ाहिरी में इन के पास आना जाइज़ था। मैं ने जान लिया कि इन्हों ने सच फ़रमाया है। लिहाज़ा ऐ लोगो ! तुम अलग हो जाओ। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने लोगों को इन की क़ब्र मुबारक के क़रीब से हटा दिया।[1]

तदफ़ीन के वक़्त हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीगर अकाबिर सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की क़ब्र मुबारक के पाउं की तरफ़ खड़े हुवे थे और हज़रते अबू अह़मद बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ क़ब्र के किनारे बैठे हुवे थे। फिर हज़रते उ़मर बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श (उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के भतीजे), हज़रते उसामा (सोतेले बेटे), हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू अह़मद बिन जह़्श (भतीजे), हज़रते मुह़म्मद बिन त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (भान्जे) (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) ने क़ब्र में उतर कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को क़ब्र में उतारा।[2]

---

1 ...الطبقات الکبری، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۴۱۳۲-زینب بنت جحش، ۸/۸۷.

2 ...المرجع السابق، ص۹۰.

www.dawateislami.net

माले विरासत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने विरासत में कोई माल नहीं छोड़ा सिर्फ़ एक घर था जिसे बा'द में वुरसा ने वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हाथ फ़रोख़्त कर दिया चुनान्चे, ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह जह़्शी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने तर्के में कोई दिरहमो दीनार नहीं छोड़ा, इन से जितना हो सकता सदक़ा कर दिया करती थीं आप मिस्कीनों की पनाहगाह थीं। तर्के में आप ने अपना घर छोड़ा जब वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ को शहीद कर के वसीअ़ किया तो आप के वुरसा ने पचास हज़ार दिरहम के बदले वोह घर इस के हाथ बेच दिया।[1]

सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अफ़्सुर्दगी

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वफ़ात हुई तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इस मौक़ए़ पर अफ़्सुर्दगी का इज़्हार करते हुवे फ़रमाया : एक क़ाबिले ता'रीफ़ और फ़क़ीदुल मिसाल ख़ातून चल बसी जो यतीमों और बेवाओं की पनाह गाह थीं। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इन्तिक़ाल हुवा तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इन्हें याद कर के रो रही थीं और इन के लिये दुआ़ए रह़मत कर रही

1 ...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

थीं, आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से इस बारे में कुछ कहा गया तो फ़रमाया : ज़ैनब नेक ख़ातून थीं।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रसूले पाक, साहिबे लौलाक صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की अज़्वाजे पाक رضی اللہ تعالٰی عنھن की पाकीज़ा ह़यात हमें ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये बेहतरीन राहे अ़मल फ़राहम करती है, हमें इन की पाकीज़ा सीरत व किरदार के सांचे में ढल कर ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये, दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल येही सोच व फ़िक्र देता है और इस की येही कोशिश हैं कि मुसलमान अपने अस्लाफ़े किराम رحمھم اللہ السلام की राह पर चलें और इन के त़रीक़े को अपना ह़िरज़े जां बना कर दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़ रूई ह़ासिल करें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل बे शुमार इस्लामी बहनें इस मदनी माह़ोल के साथ मुन्सलिक हो कर इस मदनी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये कोशां हैं और अस्लाफ़े किराम رحمھم اللہ السلام की सीरत के ख़ुशनुमा फूलों से ख़ुश्बू पा कर अपनी ज़िन्दगियों को ख़ुश्बूदार बना रही हैं, आइये ! एक ऐसी ही इस्लामी बहन की मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

सलातो सलाम की आ़शिक़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले '**सलातो सलाम की आ़शिक़ा**' सफ़ह़ा एक पर है : बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़ा रन्छोड़ लाइन के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी ह़क़ीक़ी बहन (उ़म्र तक़रीबन 22 साल) ने ग़ालिबन 1994 ईसवी में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,

1 ...المرجع السابق، ص ٩١.

www.dawateislami.net

बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी रज़वी دامت برکاتھم العالیہ से बैअ़त हो कर अ़त्ता़रिय्या बनने का शरफ़ ह़ासिल किया, इस अ़त्ता़री निस्बत की बरकत से इन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो गया, पंज वक़्ता नमाज़ पाबन्दी से पढ़ने लगीं और जब येह पता चला कि मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ **T.V** को सख़्त ना पसन्द फ़रमाते हैं तो उसी दिन से मेरी बहन शबाना अ़त्ता़रिय्या ने **T.V** देखना छोड़ दिया, घर के अफ़राद **T.V** चलाते तो येह दूसरे कमरे में चली जातीं।

1995 ईसवी में उन की त़बीअ़त ख़राब हुई, इलाज करवाया मगर दिन ब दिन ह़ालत बिगड़ती चली गई ह़त्ता कि इस क़दर कमज़ोर हो गई कि बिग़ैर सहारे के बैठ भी नहीं सकती थीं। वोह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकत से प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ा करतीं। जुमुआ़ के दिन जब आ़शिक़ाने रसूल की मसाजिद से बा'द नमाज़े जुमुआ़ पढ़े जाने वाला सलातो सलाम...

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम

शम्ए़ बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

की मधभरी सदाएं उन के कानों तक पहुंचतीं तो उन पर सुरूर की कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती। वोह शदीद तक्लीफ़ व कमज़ोरी के बा वुजूद खिड़की का सहारा ले कर पर्दे की एह़तियात़ के साथ अदबन खड़ी हो जातीं और सलातो सलाम की सदाओं में गुम हो जातीं। उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते ह़त्ता कि बारहा रोते रोते हिचकियां बंध जातीं और जब तक मुख़्तलिफ़ मसाजिद से सलातो सलाम की आवाज़ें आना बन्द न होतीं

www.dawateislami.net

वोह इसी त़रह़ ज़ौक़ो शौक़ और रिक़्क़त के साथ सलातो सलाम में ह़ाज़िर रहतीं । घरवाले तरस खा कर बैठने का मश्वरा देते तो रोते हुवे उन्हें मन्अ़ कर देतीं । उन की ज़बान पर वक़्तन फ़ वक़्तन बिस्मिल्लाह, कलिमए त़य्यिबा और दुरूदे पाक का विर्द जारी रहता ।

15 रमज़ानुल मुबारक 1415 हिजरी को उन्हों ने बड़ी बहन से पानी मांगा, पानी पीने से क़ब्ल दूपट्टा सर पर रखा, बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और फिर पानी पी कर एक दम लैट गईं । बहन ने संभालने की कोशिश की तो देखा कि उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी । अ़र्सए दराज़ तक बीमार रहने के बाइ़स मेरी बहन सूख कर कांटा बन चुकी थी । चेहरे की हड्डियां निकल आई थीं, फुन्सियां भी हो गई थीं और रंगत सियाही माइल हो चुकी थी मगर जब उन्हें बा'दे वफ़ात ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाया गया तो हम ने देखा कि ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मेरी बहन का चेहरा पुरगोश्त और रोशन हो गया और चेहरे की तमाम फुन्सियां भी ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर साफ़ हो चुकी थीं ।

»»»»»»...«·»...««««««

आ़जिज़ी इख़्तियार करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है ।

[المعجم الاوسط، ۳/۳۸۲، الحدیث:٤٨٩٤]

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते जुवैरिया رضی اللہ تعالٰی عنھا

नूरानी चेहरे वाला शख़्स

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से रिवायत है कि जिस शख़्स ने रोज़े जुमुआ़ नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा क़ियामत के दिन वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस के चेहरे पर नूरों में से एक नूर होगा जिसे देख कर लोग ह़ैरत से कहेंगे : येह क्या अ़मल करता था (जिस की वज्ह से इस का चेहरा इस क़दर पुरनूर है) ?[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसलमानों के अपने प्यारे वत़न **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से हिजरत कर आने के बा'द भी ज़ालिम व फ़ितना परदाज़ कुफ़्फ़ार और मुशरिकीन चैन से न बैठे बल्कि इस के बा'द तो वोह मुसलमानों को सफ़ह़ए हस्ती से मिटाने के दर पे हो गए जिस के नतीजे में इस्लाम व कुफ़्र के दरमियान कई फ़ैसला कुन जंगें हुईं और सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ब नफ़्से नफ़ीस इन में शिर्कत फ़रमा कर इस्लाम के परचम को बुलन्द फ़रमाया। ख़याल रहे कि वोह जंग जिस में ख़ुद **रसूलुल्लाह** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم भी शरीक हों, ग़ज़्वा कहलाती है। इन ग़ज़्वात में से एक ग़ज़्वए बनी मुस्त़लक़ भी है और इसे ग़ज़्वए मुरैसीअ़ ((مُ-رَیْ-سِیْ-عْ)) भी कहा जाता है।

[1] ...شعب الایمان، باب الحادی والعشرون، فصل فی فضل الصلوات علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم لیلۃ الجمعۃ، ۳/۱۱۲، الحدیث:۳۰۳۶.

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए मुरैसीअ़

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से तक़रीबन आठ8 मन्ज़िल के फ़ासिले पर एक कूंआं है, जिसे मुरैसीअ़ कहा जाता है।(1) चूंकि क़बीला बनी मुस्त़लक़ के साथ येह ग़ज़्वा इसी मक़ाम पर हुवा था इसी लिये इसे ग़ज़्वए मुरैसीअ़ भी कहा जाता है।

ग़ज़्वए मुरैसीअ़ का पस मन्ज़र

क़बीलए बनी मुस्त़लक़ के साथ येह कारज़ार (जंग) बर्पा होने का सबब येह बात थी कि रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर पहुंची कि क़बीला बनी मुस्त़लक़ के सरदार ह़ारिस बिन अबू ज़िरार ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जंग के लिये अपनी क़ौम और दीगर अहले अ़रब में से ह़त्तल मक्दूर अफ़राद को जम्अ़ कर लिया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर की तस्दीक़ और ह़ालात मा'लूम करने की ग़रज़ से ह़ज़रते बुरैदा बिन हुसैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा। चलते वक़्त ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ब वक़्ते ज़रूरत ऐसी बात कहने की इजाज़त त़लब की जो वाक़ेअ़ के ख़िलाफ़ हो ताकि पकड़े जाने की सूरत में ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात कर के काफ़िरों के शर से छुटकारा पा सकें, रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी चुनान्चे, फिर येह सफ़र के लिये निकल खड़े हुवे।

---

1 ...طبقات الکبری، ذکر عدد مغازی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، غزوۃ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم المریسیع، ۲/۴۸.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ क़बीलए बनी मुस्त़लक़ में...

चलते चलते जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ क़बीलए बनी मुस्त़लक़ में पहुंचे तो वहां एक लश्कर देखा। बनी मुस्त़लक़ के लोगों ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को देख कर पूछा : कौन हो ? आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जवाब दिया : तुम ही में से हूं, जब मुझे **मुह़म्मद** बिन अ़ब्दुल्लाह (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم) के ख़िलाफ़ तुम्हारी लश्कर कुशी की ख़बर पहुंची तो मैं चला आया। मैं अपनी क़ौम और उन लोगों में जा कर फिरूंगा जो मेरी बात मानते हैं इस त़रह़ हम सब यक जान हो कर उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ की बात सुन कर ख़ानदाने बनी मुस्त़लक़ का सरदार ह़ारिस बिन अबू ज़िरार कहने लगा : हम भी येही चाहते हैं, लिहाज़ा इस काम में देर मत करो। ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कहा : मैं अभी जा कर अपनी क़ौम का एक बड़ा लश्कर तुम्हारे पास ले आता हूं। इस पर वोह लोग बहुत ख़ुश हुवे।

रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को इत्तिलाअ़

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ वापस आए और सुल्ताने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को उन के नापाक इरादों के बारे में बताया जिसे सुन कर प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने लोगों को जंग के लिये बुलाया तो येह शम्ए़ रिसालत के परवाने जो हर वक़्त जान की बाज़ी लगाने के लिये तय्यार रहते थे, फ़ौरन लब्बैक कहते हुवे ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गए। येह पांच[5] हिजरी का वाक़िआ़ था जब कि शा'बान की दो[2] रातें गुज़र चुकी थीं। सहाबए किराम علیھم الرضوان

www.dawateislami.net

घोड़े भी साथ लाए, येह कुल 30 घोड़े थे जिन में से 10 मुहाजिरीन के थे (और इन में से दो[2] घोड़े **लिज़ाज़** और **ज़रिब** सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के) और 20 घोड़े अन्सार के थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पर अपने पीछे ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा, ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी या ह़ज़रते नुमैला (نُ-مَیْ-لَہ) बिन अ़ब्दुल्लाह लैसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ) में से किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में से ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते उम्मे सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को अपने साथ लिया।

ग़ज़्वे में मुनाफ़िक़ीन की शिर्कत

इस ग़ज़्वे में बहुत से ऐसे मुनाफ़िक़ीन भी शरीक हुवे जो पहले कभी किसी ग़ज़्वे में शरीक नहीं हुवे थे उन में से अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल और ज़ैद बिन सल्त भी थे। उन्हें जिहाद में शिर्कत का कोई शौक़ नहीं था बल्कि उन की ग़रज़ थोड़े सफ़र से फ़ाइदा उठाते हुवे दुन्यवी मालो मताअ़ का ह़ुसूल था।

लश्करे इस्लाम का पड़ाव और एक शख़्स का क़बूले इस्लाम

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र करते हुवे जब उस मक़ाम पर पहुंचे जहां पड़ाव करना था तो यहां क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस के एक आदमी ने ह़ाज़िर हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा घर बार कहां है ? उस ने अ़र्ज़ किया : रौह़ा के मक़ाम में। फ़रमाया : कहां का इरादा है ? अ़र्ज़ किया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ही आना

www.dawateislami.net

चाहता था और मैं इस लिये हाज़िर हुवा हूं कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाऊं और जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लाए हैं उस के ह़क़ होने की गवाही दूं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों से लड़ूं। इस पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करते हुवे फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَاكَ لِلْاِسْلَامِ" सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत फ़रमाई।"(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस त़रह़ कुफ़्र की तारीक और टेढ़ी राहों में भटकने वाला येह शख़्स हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त हो कर सिराते़ मुस्तक़ीम की रोशन व मुनव्वर राह पर गामज़न हो गया।

बनी मुस्त़लक़ के जासूस का सर तन से जुदा

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास मुशरिकीन का एक जासूस पकड़ कर लाया गया, उसे क़बीला बनी मुस्त़लक़ के सरदार ह़ारिस बिन अबू ज़िरार ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में ख़बर लाने के लिये भेजा था। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से लश्करे कुफ़्फ़ार के बारे में पूछा उस ने कुछ न बताया फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे इस्लाम क़बूल करने की दा'वत दी उस ने इस से भी इन्कार कर दिया तो मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ...السيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه، غزوة بنى المصطلق، ٢/٣٧٧، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

हज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को हुक्म फ़रमाया और उन्हों ने उस का सर तन से जुदा कर दिया। जब हारिस को रसूले अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के जंग के लिये कूच फ़रमाने और अपने जासूस के क़त्ल का इल्म हुवा तो वोह और उस के साथ वाले बहुत रन्जीदा व मलूल हुवे, उन्हें बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा जिस की वज्ह से उस के साथियों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त उस से अलग हो गई और उन्हों ने जंग में शरीक हो कर उस का साथ देने से इन्कार कर दिया।

मुहाजिरीन व अन्सार के झन्डे

जब लश्करे इस्लाम मुरैसीअ़ के मैदान में पहुंचा तो वहां आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के लिये चमड़े से बना हुवा एक क़ुब्बा नस्ब किया गया, हज़रते आ़इशा और हज़रते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالٰی عنھما) आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के साथ थीं। फिर मुसलमानों ने जंग की तय्यारी की। सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم ने मुहाजिरीन का झन्डा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ या हज़रते अ़म्मार बिन यासिर (رضی اللہ تعالٰی عنھما) को और अन्सार का झन्डा हज़रते सा'द बिन उ़बादा رضی اللہ تعالٰی عنہ के हाथ में दिया और हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ को हुक्म फ़रमाया कि वोह यहां क़ियाम पज़ीर लोगों से कहें कि तुम लोग لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ का इक़रार करो (या'नी इस्लाम क़बूल कर लो) इस से तुम लोग अपनी जानों और मालों को महफ़ूज़ कर लोगे।

जंग का मन्ज़र और नताइज

फ़रमाने रसूल के मुवाफ़िक़ हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन्हें दा'वते इस्लाम पेश की लेकिन उन्हों ने इस्लाम क़बूल

www.dawateislami.net

करने से इन्कार कर दिया। उसी लम्हे दोनों त़रफ़ से तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ हो गई फिर रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अपने अस्ह़ाब को हुक्म फ़रमाया तो इन्हों ने यकबारगी ह़म्ला कर दिया बिल आख़िर **अल्लाह** عزَّوجلَّ ने मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई। मुसलमानों की त़रफ़ से कोई जान ज़ाएअ़ न हुई[1] जब कि कुफ़्फ़ार के दस अफ़राद हलाक हुवे और बक़िय्या सब औ़रतें, मर्द और बच्चे जिन की ता'दाद 700 या इस से ज़ियादा थी, क़ैदी बना लिये गए, उन के जानवर हांक लाए गए जो दो[2] हज़ार ऊंट और पांच[5] हज़ार बकरियां थीं। रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अपने ग़ुलाम ह़ज़रते शुक़रान رضی اللہ تعالٰی عنہ को उन पर निगरान मुक़र्रर फ़रमाया। क़ैदियों में क़बीला बनी मुस्त़लक़ के सरदार ह़ारिस बिन ज़िरार की बेटी भी थी। रसूले मोह़तशम, ताजदारे अ़रबो अ़जम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हुक्म से क़ैदियों के हाथ पीछे कर के बांध दिये गए और ह़ज़रते बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ को आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने उन पर निगरान मुक़र्रर फ़रमाया, बा'द में उन्हें तक़्सीम कर दिया गया।

सरदारे क़बीला की बेटी बर्रह बिन्ते ह़ारिस

क़बीला बनी मुस्त़लक़ के सरदार ह़ारिस बिन ज़िरार की बेटी बर्रह बिन्ते ह़ारिस तक़्सीमे ग़नीमत में ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन

1.....एक रिवायत के मुत़ाबिक़ मुसलमानों में से एक शख़्स जिन्हें हिशाम बिन सुबाबा कहा जाता था, शहीद हुवे। उन्हें एक अन्सारी शख़्स ने दुश्मन का आदमी समझ कर ग़लत़ी से शहीद कर डाला था।

[البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ست من الھجرۃ، غزوۃ بنی المصطلق من خزاعۃ، المجلد الثانی، ٤/٥٤٤]

www.dawateislami.net

क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ और इन के एक चचाज़ाद भाई के हिस्से में आईं, हज़रते सय्यिदुना साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इन के हिस्से के बदले **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا के अपने खजूरों के दरख़्त उन्हें दे दिये और फिर नव[9] ऊक़िया सोने पर इन्हें मुकातबा[(1)] कर दिया।

बर्रह बिन्ते हारिस बारगाहे रिसालत में

इस क़दर कसीर माल अदा करना इन की बिसात से बाहर था चुनान्चे, येह इस्तिआनत (मदद मांगने) के लिये मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी के मा'बूद न होने और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल होने की गवाही दे कर इस्लाम क़बूल कर लिया है। मैं सरदारे क़ौम हारिस बिन अबू ज़िरार की बेटी बर्रह हूं। हमें जो मुआमला दरपेश आया है आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का इल्म है। तक़्सीमे ग़नीमत में, मैं हज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ और इन के एक चचाज़ाद भाई के हिस्से में आई थी फिर हज़रते साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अपने चचाज़ाद भाई को अपने मदीने में खजूरों के दरख़्त दे कर मुझे ख़ालिस अपनी मिल्क में ले लिया इस के

1....आक़ा अपने गुलाम से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और गुलाम इसे क़बूल भी कर ले अब येह मुकातब हो गया जब कुल अदा कर देगा आज़ाद हो जाएगा और जब तक इस में से कुछ भी बाक़ी है, गुलाम ही है। (बहारे शरीअत, हिस्सा नहुम, आज़ाद करने का बयान, 2/ 292)

www.dawateislami.net

बा'द इस क़दर कसीर माल के इवज़ मुझे मुकातबा किया कि जिसे अदा करने की मुझ में ताक़त नहीं लेकिन मैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से पुर उम्मीद हूं लिहाज़ा मेरा बदले किताबत अदा करने के सिलसिले में मेरी इआनत (मदद) फ़रमाइये....!![1]

निकाह़ की पेशकश

ह़ज़रते सय्यिदतुना बर्रह बिन्ते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अ़र्ज़ो मा'रूज़ सुनने के बा'द नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने करम बालाए करम करते हुवे फ़रमाया : वोह काम क्यूं नहीं कर लेती जो तुम्हारे लिये इस से बेहतर है। अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह क्या है ? इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हारा बदले किताबत अदा कर के तुम से शादी कर लेता हूं ? इस पर इन्हों ने राज़ी ख़ुशी इस पेशकश को क़बूल करते हुवे अ़र्ज़ किया : मैं येह ज़रूर करूंगी ।[2]

ग़ुलामी से नजात और निकाह़

इन की रिज़ा मा'लूम करने के बा'द शहनशाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर उन से ह़ज़रते बर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को त़लब फ़रमाया। ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हों, येह आप ही की है।

1 ...السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر مغازیہ، غزوۃ بنی المصطلق، ۲/۳۷۸، ملتقطاً.
2 ...سنن ابی داؤد، کتاب العتق، باب فی بیع المکاتب...الخ، ص۶۱۹، الحدیث:۳۹۳۱.

www.dawateislami.net

लेकिन प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ी व फ़य्याज़ त़बीअ़त ने बिला इ़वज़ लेना गवारा न किया, चुनान्चे, मरवी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का तमाम बदले किताबत अदा किया और फिर आज़ाद फ़रमा कर अपने निकाह़ में ले लिया। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की उ़म्र मुबारक 20 साल थी।(1)

बर्रह से जुवैरिय्या

सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 'बर्रह' नाम रखने को ना पसन्द फ़रमाते थे और अगर किसी का येह नाम होता तो तब्दील फ़रमा देते इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम भी तब्दील फ़रमा दिया और रिवायत में है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम तब्दील फ़रमा कर जुवैरिय्या (جُ-وَیْ-رِیْ-یَہ) रखा।(2) प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह नाम क्यूं ना पसन्द था और क्यूं इसे तब्दील फ़रमा दिया करते थे इस की वज्ह बयान करते हुवे मुह़द्दिसे जलील, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने बर्रह नाम इस लिये बदल दिया कि अगर आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपनी इन बीवी साहिबा के पास से तशरीफ़ लाएं तो (येह) न कहा जावे कि

1 ...السيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه، غزوة بنى المصطلق، ٢/٣٧٨، ملتقطاً.

2 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ٢٨١١-رؤيا جويرية سقوط القمر فى حجرها، ٥/٣٦، الحديث: ٦٨٦١.

www.dawateislami.net

आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) 'बर्रह' या'नी नेक के या नेकी के पास से आए कि इस का मत़लब येह बन जाता है कि नेकी से निकल कर आए तो نَعُوْذُبِاللّٰہ बुराई में आए।(1)

निकाह़ की ख़ैरो बरकत

हुज़ूर रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ज़रते जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ निकाह़ फ़रमाने की ख़बर जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को पहुंची तो इन शम्ए नबुव्वत के परवानों को येह बात गवारा न हुई कि जिस क़बीले में सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निकाह़ फ़रमाएं उस क़बीले का कोई फ़र्द इन की गुलामी में रहे चुनान्चे, इन के पास जितने लौंडी गुलाम थे सब को येह कह कर आज़ाद कर दिया कि येह हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हार (सुसराली रिश्तेदार) हैं।(2) चूंकि इस निकाह़ की बरकत से ख़ानदाने बनी मुस्त़लक़ के बहुत से अफ़राद ने गुलामी की ज़िन्दगी से नजात पाई इस लिये उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इसे बहुत ज़ियादा ख़ैरो बरकत वाला निकाह़ क़रार देते हुवे फ़रमाती हैं : "فَمَارَاَیْنَا اِمْرَاَۃً کَانَتْ اَعْظَمَ بَرَکَۃً عَلٰی قَوْمِھَا مِنْھَا क़ौम पर ख़ैरो बरकत लाने वाली कोई औ़रत हम ने ह़ज़रते जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर नहीं देखी।"(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....मिरआतुल मनाजीह़, नामों का बयान, पहली फ़स्ल, 6/410

2...سنن ابی داود، کتاب العتق، باب فی بیع المکاتب...الخ، ص۶۱۹، الحدیث:۳۹۳۱.

3...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता सुतूर में मर्क़ूम (लिखे गए) वाक़िए से बे शुमार ईमान अफ़रोज़ मदनी फूल हासिल होते हैं जिन में से चन्द एक दर्जे ज़ैल हैं :

सहाबा की जां निसारी व इश्क़े रसूल

मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इताअ़ते रसूल का जज़्बा बे मिसाल था। येह जज़्बा इन के अन्दर इस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था और येह हज़रात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की बजा आवरी के लिये हर वक़्त इस त़रह़ मुस्तइद व तय्यार रहते थे कि सिर्फ़ एक पुकार पर किसी भी शै को ख़ातिर में न लाते हुवे इन्तिहाई बे सरो सामानी की ह़ालत में मैदाने कारज़ार में कूद पड़ते और जान की बाज़ी तक लगा देते, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना आक़ा व मालिक और ख़ुद को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ममलूक व ग़ुलाम जानते नीज़ इन ह़ज़राते क़ुदसिय्या के दिलों में इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ इस क़दर फ़रोज़ां (रोशन) थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत का भी दिलो जान से एह़तिराम करते कि वोह ख़ानदान जिस से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रिश्तए मुसाहरत (सुसराली रिश्ता) क़ाइम हो गया इस के किसी फ़र्द को ग़ुलाम रखना तक गवारा न किया और बिला चूं व चरा और किसी के कुछ कहे बिग़ैर ही इस के हर हर फ़र्द को ग़ुलामी से आज़ादी दे दी जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं :

وَاللّٰهِ مَا كَلَّمْتُهُ فِيْ قَوْمِيْ حَتّٰى كَانَ الْمُسْلِمُوْنَ هُمُ الَّذِيْنَ اَرْسَلُوْهُمْ

www.dawateislami.net

खुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! मैं ने अपनी क़ौम के सिलसिले में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई बात नहीं की, मुसलमानों ने खुद ही उन्हें आज़ाद कर दिया।"[1]

खुद सिताई के नाम न रखे जाएं

येह भी मा'लूम हुवा कि ऐसे नाम जिन से बदफ़ाली (बद शुगूनी) निकलती हो, नहीं रखने चाहिये। नीज़ ऐसे नाम भी नहीं रखने चाहिये जिन में तज़्किया नफ़्स और खुद सिताई (अपनी ता'रीफ़) पाई जाती हो कि ऐसे नामों को नबियों के सालार, महबूबे परवर दगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ना पसन्द फ़रमाते थे और तब्दील फ़रमा दिया करते थे।

ब वक़्ते ज़रूरत झूट बोलना...

येह बात भी मा'लूम हुई कि ब वक़्ते ज़रूरत झूट बोलना या'नी ऐसी बात कहना जो हक़ीक़त में वाक़ेअ़ के खिलाफ़ हो, जाइज़ है। इन ज़रूरत की जगहों का बयान करते हुवे ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सद्रे शरीअ़त, बदरे तरीक़त हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الغَنِی फ़रमाते हैं : तीन[3] सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है। या'नी इस में गुनाह नहीं :

एक जंग की सूरत में कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, इसी तरह जब ज़ालिम ज़ुल्म करना चाहता हो उस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी जाइज़ है।

दूसरी सूरत येह है कि दो[2] मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह इन

1 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ٢٨١١-رؤيا جويرية سقوط القمر فى حجرها، ٥/ ٣٥، الحديث: ٦٨٥٩.

www.dawateislami.net

दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है, मसलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए।

तीसरी सूरत येह है कि बीबी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे।[1]

फ़त्ह़ व कामरानी का ह़ुसूल

एक बात येह भी सीखने को मिली कि जब कोई बन्दा ख़ुलूसे दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के ह़ुसूल के लिये कोशिश करता है तो कामयाबी हर मैदान में उस के क़दम चूमती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ग़ैबी इमदाद उस के शामिले ह़ाल होती है और ब ज़ाहिर अस्बाब न होने के बा वुजूद वोह हमेशा फ़लाह़ो कामरानी से हम किनार होता है। इस सिलसिले में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ज़िन्दगियां हमारे सामने हैं कि कैसे वोह बहुत कम ता'दाद में होने के बा वुजूद दुश्मन की भारी ता'दाद पर फ़त्ह़ पाते रहे....!! तारीख़ के अवराक़ पर नज़र करने से मा'लूम होता है कि येह ह़ज़रात अपनी कमी या कसरत पर नज़र किये बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्नूदी पाने के लिये और शहादत के शौक़ में मैदाने कारज़ार में कूदते थे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुफ़्फ़ार के दिलों में इन का रो'ब व दबदबा डाल देता। ग़ज़्वए मुरैसीअ़ भी इन्हीं में से एक है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदतुना

1 .....बहारे शरीअ़त, झूट का बयान, हिस्सा 16, 3/517

www.dawateislami.net

जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब रसूले अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने लोगों और घोड़ों की इस क़दर कसीर ता'दाद देखी कि बयान नहीं कर सकती फिर जब मैं इस्लाम ले आई और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह़ फ़रमा लिया तो मैं ने दोबारा मुसलमानों को देखा तो दर ह़क़ीक़त वोह इतने नहीं थे जितने पहले देखे थे इस से मैं ने जान लिया कि येह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से मुशरिकीन के दिलों में रो'ब डाला गया था । नीज़ क़बीलए बनी मुस्त़लक़ के एक और शख़्स ने मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने के बा'द इज़्हार किया कि हम चितकुबरे (सियाह व सफ़ेद) घोड़ों पर सुवार ऐसे नूरानी अफ़राद को देखते थे जिन्हें न पहले कभी देखा था न बा'द में ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

नाम व नसब और क़बीला

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम बर्रह था, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर जुवैरिय्या रखा । क़बीला बनी मुस्त़लक़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का तअ़ल्लुक़ है जो ख़ुज़ाआ़ की एक शाख़ है । वालिद का नाम ह़ारिस है और नसब इस त़रह़ है : "**ह़ारिस बिन अबू ज़िरार बिन ह़बीब बिन आ़इज़ बिन मालिक बिन जज़ीमा (मुस्त़लक़) बिन**

(1) ...المغازی للواقدی، باب غزوۃ المریسیع، ۱/ ۴۰۸.

www.dawateislami.net

सा'द बिन का'ब बिन अ़म्र बिन रबीआ़ (लुह़य) बिन ह़ारिसा बिन अ़म्र (मुज़ैक़िया) बिन आ़मिर (माउस्समा)[1] **बिन ह़ारिसा (ग़ित़रीफ़) बिन अमरिउल क़ैस बिन सा'लबा बिन माज़िन बिन अज़्द बिन ग़ौस बिन नब्त बिन मालिक बिन ज़ैद बिन कह्लान बिन सबअ (आ़मिर) बिन यशजुब बिन या'रुब बिन क़ह़त़ान बिन आ़बिर**, कहा गया है कि येह (या'नी आ़बिर) ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं।"[2]

विलादत और निकाह़

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا मुसाफ़ेअ़ बिन सफ़्वान के निकाह़ में थी, मुसाफ़ेअ़ ग़ज़वए मुरैसीअ़ में ह़ालते कुफ़्र में ही हलाक हुवा।[3] पांच5 हिजरी को जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह़ फ़रमाया उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की उ़म्र 20 साल थी इस ए'तिबार से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की विलादत बिअ़्सते नबवी से तक़रीबन दो2 साल पहले 608 ईसवी को बनती है।

हुस्नो जमाल

ख़ुल्क़ी हुस्न (हुस्ने अख़्लाक़) के साथ साथ ख़ल्क़ी हुस्न (या'नी ज़ाहिरी ख़ूब सूरती) से भी **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को बहुत नवाज़ा था, हुस्नो जमाल में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अपनी मिसाल

---

1 ...سبل الھدی والرشاد، جماع ابواب ذکر ازواجہ، الباب الاول، ۱۲/۱۸.

2 ...نسب معد والیمن الکبیر، ۱/۱۳۱، ۳۶۲، ۲/۳۴۲، ۴۳۹، ۴۵۵.

3 ...امتاع الاسماع، فصل فی ذکر ازواج رسول اللہ، ام المؤمنین جویریۃ...الخ، ۶/۸۴.

www.dawateislami.net

आप थीं चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आप के हुस्न का तज़्किरा करते हुवे फ़रमाती हैं :

''كَانَتِ امْرَأَةً حُلْوَةً مُّلَاحَةً لَّا يَكَادُ يَرَاهَا اَحَدٌ اِلَّا اَخَذَتْ بِنَفْسِهٖ''

ह़ज़रते जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا निहायत शीरीं व मलीह़ हुस्न वाली औ़रत थीं जो भी इन्हें देखता गिरवीदा हुवे बिग़ैर न रहता।''(1)

वालिद और बहन भाइयों का क़बूले इस्लाम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के वालिद ह़ारिस बिन अबू ज़िरार दो[2] भाई अ़म्र बिन ह़ारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस और एक बहन अ़मरह बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) सभी मुसलमान हो कर शरफ़े सह़ाबिय्यत से सर बुलन्द हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ बहुत ही दिलचस्प और तअ़ज्जुब ख़ेज़ है चुनान्चे, मरवी है कि येह अपनी क़ौम के क़ैदियों को छुड़ाने के लिये दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे इन के साथ चन्द ऊंट और एक सियाह लौंडी थी। इन्हों ने इन सब को रास्ते में ही छुपा दिया और फिर बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर असीराने जंग की रिहाई के लिये दरख़्वास्त पेश की। सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम (क़ैदियों के फ़िदये के लिये) क्या लाए हो ? कहा : कुछ भी नहीं। येह सुन कर ग़ैब दान प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे वोह ऊंट कहां हैं और वोह सियाह लौंडी

---

1 ...صحیح ابن حبان، کتاب النکاح، باب ذکر اباحۃ للامام...الخ، ص۱۱۰۱، الحدیث:۴۰۵۴.

www.dawateislami.net

किधर गई जिन्हें तुम ने फ़ुलां मक़ाम पर छुपाया था ? ज़बाने रिसालत से येह इल्मे ग़ैब की ख़बर सुन कर अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस फ़ौरन पुकार उठे : ''اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰہِ'' मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।'' और इस ग़ैबी ख़बर पर हैरतज़दा होते हुवे अ़र्ज़ किया : ''وَاللّٰہِ! مَا کَانَ مَعِیَ اَحَدٌ وَّلَا سَبَقَنِیْ اِلَیْکَ اَحَدٌ'' ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! न तो मेरे साथ कोई था और न मुझ से आगे निकल कर कोई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा है।''(1)

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का भी येही अ़क़ीदा था और कुफ़्फ़ार भी इस बात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिन मुबारक हस्तियों को नबुव्वत व रिसालत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया है उन्हें उ़लूमे ग़ैबिय्या से भी नवाज़ा है येही वज्ह है कि जब हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस को ग़ैब की बात बताई तो उन के दिल ने गवाही दी कि येह ग़ैबों से ख़बरदार मुबारक हस्ती झूटी नहीं हो सकती, ज़रूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें नबुव्वत व रिसालत के ताजे करामत से नवाज़ा है जिस से उन के सीने की तारीक

---

(1)...الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، باب العین والباء، ۳/۸۸۴.

नोट : कुछ फ़र्क़ के साथ येही वाक़िआ़ ह़ज़रते जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन अबू ज़िरार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में भी है, देखिये : [شرف المصطفٰی، جامع ابواب المغازی...الخ، فصل فی غزوۃ المریسیع، ۳/۴۴، الحدیث:۷۳۹]

وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ بِحَقِیْقَۃِ الْحَال.

www.dawateislami.net

वादी में ईमान का नूर जगमगाया और ज़बान पर कलिमए शहादत اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللّٰه जारी हो गया । आइये ! अम्बिया व मुर्सलीन صَلَوٰتُ اللّٰهِ تَعَالٰی وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को इल्मे ग़ैब दिये जाने पर एक कुरआनी शहादत भी मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे, **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪

(پ٤، اٰلِ عمران:١٧٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो ! तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे, हां ! **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे ।*

इस आयत में साफ़ व रोशन त़ौर पर येह बात बयान की गई है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों को ग़ैब का इल्म अ़ता फ़रमाता है तो फिर तमाम रसूलों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क्या शान होगी....? यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़मीनो आस्मान, मशरिक़ो मग़रिब बल्कि लौहे़ मह़फ़ूज़ के तमाम सरबस्ता राज़ों से आगाह फ़रमाया है । बरादरे आ'ला ह़ज़रत, उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

आ़लिमुल ग़ैब ने हर ग़ैब से आगाह किया
सदक़े इस शान की बीनाई व दानाई के[1]

1 .....ज़ौक़े ना'त, स. 169

www.dawateislami.net

रिवायते ह़दीस

अह़ादीस की राइज कुतुब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी अह़ादीस की ता'दाद सात7 है, जिन में से एक बुख़ारी शरीफ़ में, दो2 मुस्लिम शरीफ़ में और बक़िय्या अह़ादीस की दूसरी किताबों में हैं।(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन सब्बाक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से रिवायात ली हैं।(2)

मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

गोद में चांद

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बहुत से फ़ज़ाइल और कसीर बरकात से नवाज़ा था जिन में से एक येह है कि सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ से चन्द रोज़ पहले ही एक ख़्वाब के ज़रीए़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को इस फ़ज़ीलते बे पायां की बिशारत दे दी गई थी चुनान्चे, ख़ुद इन्हीं से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने से तीन3 शब पहले मैं ने एक ख़्वाब देखा : गोया कि एक चांद **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا से चलता हुवा आ रहा है ह़त्ता कि मेरी गोद में आ पड़ा।

---

1 ...سیر اعلام النبلاء، ۳۹-جویریة ام المؤمنین، ۲/۲۶۳.

2 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه صلی اللہ علیه وسلم...الخ، ۴/۴۲۸.

www.dawateislami.net

मैं ने लोगों में से किसी को इस ख़्वाब के बारे में बताना मुनासिब न समझा ह़त्ता कि जब रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई और हम क़ैदी हो गए तो मुझे अपना ख़्वाब पूरा होने की उम्मीद हो गई।[1]

कसरते इ़बादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बहुत ख़ुश नसीब होते हैं वोह मुसलमान जिन्हें कसरत से रब तबारक व तआ़ला की इ़बादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा होती है, येह ऐसी अ़ज़ीम ने'मत है जो इन्सान को ज़मीन की इन्तिहाई गहराइयों से उठा कर आस्मान की बुलन्दियों पर ला खड़ा करती है और उस मक़ाम पर फ़ाइज़ कर देती जहां फ़िरिश्ते भी उस पर रश्क करते हैं, उन रश्के मलाइका अफ़राद में कसीर ता'दाद हमें सय्यिदुल इन्सो जान, मह़बूबे रह़मान صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अहले बैत और अस्ह़ाब की नज़र आती है, इस मुक़द्दस गुरौह के जिस फ़र्द की भी सीरत उठा कर देखी जाए इ़बादत व रियाज़त की आ'ला मिसाल रक़म करेगी। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या رضی اللہ تعالٰی عنہا भी इ़बादत व रियाज़त की ख़ुश्बूओं से ख़ुश्बूदार गुलिस्तान की एक महकती हुई कली हैं। आइये ! आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की इ़बादत से मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, एक बार मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم नमाज़े फ़ज्र के बा'द इन के हुजरे से तशरीफ़ ले गए येह उस वक़्त अपनी सजदागाह

1 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ٢٨١١-رؤيا جويرية سقوط القمر فى حجرها، ٣٥/٥، الحديث: ٦٨٥٩.

www.dawateislami.net

में थीं फिर चाश्त के वक़्त वापस तशरीफ़ लाए येह अब भी उसी जगह बैठी हुई थीं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम उस वक़्त से यहीं बैठी हुई हो जब कि मैं तुम्हें छोड़ कर गया था ? अ़र्ज़ किया : जी हां। फ़रमाया : मैं ने यहां से जाने के बा'द चार[4] ऐसे कलिमात तीन[3] बार पढ़े हैं कि अगर उन्हें तुम्हारी सारे दिन की इबादत के साथ वज़्न किया जाए तो वोह भारी निकलें, (वोह कलिमात येह हैं) :

"سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ عَدَدَ خَلْقِہٖ وَرِضَا نَفْسِہٖ وَزِنَۃَ عَرْشِہٖ وَمِدَادَ کَلِمَاتِہٖ"(1)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ येह था उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़ौक़े इबादत। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उम्मत की इस अ़ज़ीम मां के सदक़े हमें भी कसरते इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जुमुआ के दिन का रोज़ा

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ के रोज़ उन के पास तशरीफ़ लाए और वोह रोज़े से थीं। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या कल रोज़ा रखा था ? अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : आयिन्दा

---

1 ...صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب التسبیح اول النہار وعند النوم، ص۱۰۴۷، الحدیث:۲۷۲۶.

www.dawateislami.net

कल रखने का इरादा है ? अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : नहीं । फ़रमाया : तो रोज़ा इफ़्तार कर लो ।(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रमज़ानुल मुबारक के फ़र्ज़ रोज़े रखने के साथ साथ दीगर अय्याम के नफ़्ली रोज़ों की भी कसरत करनी चाहिये कि येह मूजिबे ख़ैरो बरकत और रब तआ़ला और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा का बाइस है लेकिन ख़याल रहे कि तन्हा जुमुआ़ के दिन का रोज़ा न रखना बेहतर है, चुनान्चे, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **'फ़ैज़ाने सुन्नत'** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1416 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ आ़शूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ जुमुआ़ में भी करना है क्यूंकि ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा जुमुआ़ या सिर्फ़ हफ़्ता का रोज़ा रखना मकरूहे तन्ज़ीही (या'नी शरअ़न ना पसन्दीदा) है । हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को जुमुआ़ या हफ़्ता आ गया तो तन्हा जुमुआ़ या हफ़्ता का रोज़ा रखने में कराहत नहीं । मसलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 रजबुल मुरज्जब वग़ैरा ।

सफ़रे आख़िरत

इस्लाम ला कर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

---

(1) ...صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب صوم یوم الجمعة، ص٥٢٢، الحدیث:١٩٨٦ .

www.dawateislami.net

और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअत व फ़रमां बरदारी करते हुवे ज़िन्दगी बसर करती रहीं और फिर सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के कमो बेश 40 साल बा'द रबीउ़ल अव्वल 50 हिजरी में 65 बरस की उ़म्र पा कर सफ़रे आख़िरत को रवाना हुईं, मरवान बिन ह़कम जो उस वक़्त **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا का ह़ाकिम था उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का मज़ारे अक़्दस बना।[(1)] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर करोड़हा करोड़ रह़मतों और बरकतों का नुज़ूल फ़रमाए और इन के सदक़े हम गुनहगारों की मग़फ़िरत फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की मुबारक ह़यात से ह़ासिल होने वाले मदनी फूलों से अपने दिल के गुलदस्ते को सजाया, दीगर सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ की त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की सीरत से भी हमें ज़िन्दगी बसर करने के लिये ऐसे सुन्हरी ख़ुत़ूत़ ह़ासिल होते हैं जिन की पैरवी करने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाई जा सकती है, आइये ! उन मुबारक हस्तियों की सीरत की रोशनी में ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये **दा'वते इस्लामी** के महके महके और प्यारे प्यारे **मदनी माह़ोल** से मुन्सलिक हो जाइये कि इस मदनी

---

(1)...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤/٤٢٨، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

माहोल की बरकत से लाखों अंग्रेज़ी तौर व तरीके और फ़ेशन के रस्या (शौक़ीन) लोग अपनी ज़िन्दगियों को अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के तरीक़े के मुताबिक़ ढाल चुके हैं जिस के बाइस बा'ज़ दफ़्आ उन्हें रब तबारक व तआला की तरफ़ से ऐसे ऐसे इन्आमात अता होते हैं कि देखने और सुनने वाला अश अश कर उठता है, इस सिलसिले में एक **मदनी बहार** मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे,

अत्तारिया पर करम

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत्बूआ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले **'मदीने का मुसाफ़िर'** सफ़हा 10 पर है : एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि हमारा सारा घराना अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद है। हमारी वालिदा जिन को (कई) साल से हीपोटाइस C और शूगर का मरज़ था, 13 रबीउ़ल ग़ौस 1425 हिजरी को अचानक क़ोमा में चली गईं। उन्हें C.M.H हस्पताल I.T.C रूम में दाख़िल करवा दिया गया। डॉक्टरों का कहना था की मेडीकल (या'नी इल्मे तिब) की रू से येह बिल्कुल ख़त्म हो चुकी हैं मगर 12 दिन क़ोमा में रहने के बा'द उन को ख़ुद ही होश आ गया। सब डॉक्टर हैरान थे कि उन का जिगर बिल्कुल ख़त्म हो चुका है फिर येह क्यूंकर होश में आ गईं ? अम्मी जान होश में आने के बा'द हर किसी से येही कहती थीं कि अगर मैं क़ोमा की हालत में मर जाती तो मुझे तो कलिमए तय्यिबा पढ़ना भी नसीब न होता। हालत बेहतर होने पर हम उन्हें अस्पताल से घर ले आए। इस के बा'द से मेरी वालिदा अपने ईमान की हिफ़ाज़त की दुआ करती रहतीं, घर में इस्लामी बहनों का इजतिमाए ज़िक्रो ना'त भी करवातीं।

www.dawateislami.net

अस्पताल से आने के एक माह 22 दिन बा'द बरोज़ हफ़्ता रात के वक़्त उन्हों ने शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ की बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स सुना फिर सूरए रह़मान शरीफ़ की तिलावत सुनी और इस के बा'द उन्हों ने हुज़ूरे ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ की शान में लिखी हुई मन्क़बत पढ़ी (जिसे टेप में रिकॉर्ड कर लिया गया)। फिर दुआ़ करने लगीं : ऐ **अल्लाह** عزوجل मुझे सिह़्ह़त दे कि मैं पंजगाना नमाज़ ब आसानी अदा करूं, दौराने दुआ़ उन्हों ने झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद से तौबा भी की और येह शे'र पढ़ने लगीं :

ऐ सब्ज़ गुम्बद वाले मन्ज़ूर दुआ़ करना
जब वक़्ते नज़्अ़ आए दीदार अ़त़ा करना

और या **अल्लाह** عزوجل मेरी क़ब्र को नूर से भर दे, मेरी क़ब्र को कीड़े मकोड़ों से मह़फ़ूज़ फ़रमा। काफ़ी देर तक इसी त़रह़ ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मौत की दुआ़ करती रहीं। इस के बा'द उन्हों ने बा आवाज़े बुलन्द कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ पढ़ा और सोने के लिये लैट गईं। रात कमो बेश साढे बारह बजे वोह दोबारा क़ोमा में चली गई और क़ोमा की ही ह़ालत में छे 6 बज कर 20 मिनट पर मेरी अम्मी जान का इन्तिक़ाल हो गया। ग़ुस्ल के बा'द उन का चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे मुस्कुरा रही हों।

निफ़ाक़े ए'तिक़ादी की ता'रीफ़

ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना निफ़ाक़ है।

(बहारे शरीअ़त जि. 1 स. 182 मक्तबतुल मदीना (कराची))

www.dawateislami.net

सीरते ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنھا

मजलिसे दुरूद का ए'ज़ाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन नहावन्दी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स की ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र علیہ السلام से मुलाक़ात हुई तो उस ने आप علیہ السلام से अ़र्ज़ किया कि आ'माल में से अफ़्ज़ल अ़मल प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की इत्तिबाअ़ (اِ-تّ-بَاع) और आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर दुरूद भेजना है। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र علیہ السلام ने इरशाद फ़रमाया : और अफ़्ज़ल दुरूद वोह है जो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ह़दीस शरीफ़ बयान करते और लिखवाते वक़्त ज़बान से पढ़ा और किताब में लिखा जाए, नीज़ उसे बहुत ज़ियादा पसन्द किया जाए और उस पर बहुत ज़ियादा ख़ुश हुवा जाए। जब लोग इस काम के लिये किसी जगह इकठ्ठे होते हैं तो मैं उस मजलिस में उन के साथ मौजूद होता हूं।(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम के इब्तिदाई दौर में जब कि अभी बहुत थोड़े लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे थे और मुसलमान अफ़रादी व इक्तिसादी क़ुव्वत के ए'तिबार से बहुत कमज़ोर थे, कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन्हें अपने ज़ुल्मो सितम का निशाना बना रखा था, त़रह़ त़रह़ से अज़िय्यतें दे कर इन्हें इस्लाम से बर गश्ता करने की कोशिशें करते रहते। उन्हों ने इस्लाम को सफ़ह़ए हस्ती से मिटाने की जान तोड़ कोशिशें कर

(1)...الصلات والبشر، الباب الرابع، الآثار الواردۃ فی فضائل...الخ، ص ۱۷۱.

www.dawateislami.net

डालीं मगर ख़ुदाए ज़ुल जलाल को कुछ और ही मन्ज़ूर था चुनान्चे, इस्लाम को मिटाने की उन की तमाम तर कोशिशें ख़ाक में मिल गईं, उन के ह़द से ज़ियादा मज़ालिम भी मुसलमानों को दीने इस्लाम से बर गश्ता करने में कारगर न हुवे और सातवीं सदी ईसवी की पहली दहाई में लगाया हुवा इस्लाम का येह पौदा इसी त़रह़ फलता फूलता रहा। ख़ुदा की क़ुदरत कि जो लोग इस्लाम को नेस्तो नाबूद करने के सिलसिले में पेश पेश थे, जिन्हों ने इस्लाम को सफ़ह़ए हस्ती से मिटाने के लिये कोई कसर उठा न रखी उन्हीं के घरों से शजरे इस्लाम ने नमू (सैराबी को) पाया और ख़ूब फला फूला।

अबू सुफ़्यान सख़्र बिन ह़र्ब उमवी जो क़ुरैश के सरदारों में से थे और इस्लाम के ख़िलाफ़ कई जंगों में कुफ़्फ़ार के क़ाइद की ह़ैसिय्यत से शरीक होते रहे, बहारे नबुव्वत ने इन के घराने को भी मह़रूम न छोड़ा, इन का घराना भी चश्मए नबुव्वत से सैराब हुवा चुनान्चे, इब्तिदाए इस्लाम में ही जब कि इस्लाम की अफ़रादी क़ुव्वत कुफ़्र के मुक़ाबले में बहुत कम थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन की बेटी रम्ला का दिल खोल दिया जिस से उन पर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ हो गई और उन्हों ने मुशरिकीने मक्का का दीन तर्क कर दिया और अपने शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जह़्श के साथ इस्लाम क़बूल कर के اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ेहरिस्त में शामिल हो गईं, येह वोह सह़ाबा हैं जिन के बारे में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़रमाने अ़ज़्मत निशान है :

www.dawateislami.net

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾ (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे, **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें, हमेशा हमेशा इन में रहें, येही बड़ी कामयाबी है।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिजरते ह़बशा और इस का पस मन्ज़र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उस दौर में मुसलमानों को बहुत आज़माइशों का सामना था, कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम थमने का नाम ही न लेते थे बल्कि दिन ब दिन बढ़ते ही जा रहे थे, जो भी दाइरए इस्लाम में दाख़िल होता कुफ़्रो शिर्क की नजासत से आलूदा लोग उस का जीना दू भर कर के रख देते। बिल आख़िर जब मुसलमानों पर उन के मज़ालिम इन्तिहा को पहुंच गए तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें ह़बशा की त़रफ़ हिजरत कर जाने के लिये कहा क्यूंकि उस वक़्त ह़बशा में एक ऐसे आ़दिल व नेक दिल बादशाह की हुकूमत थी जिस की सल्त़नत में किसी पर ज़ुल्म नहीं होता था, जैसा कि रिवायत में है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को ह़बशा की त़रफ़ हिजरत कर जाने का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"اِنَّ بِاَرْضِ الْحَبَشَةِ مَلِكًا لَا يُظْلَمُ اَحَدٌ عِنْدَهٗ فَالْحَقُوْا بِبِلَادِهٖ حَتّٰى يَجْعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ فَرَجًا وَّمَخْرَجًا مِمَّا اَنْتُمْ فِيْهِ" सर ज़मीने ह़बशा में ऐसा आ़दिल बादशाह है कि उस के हां किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाता, तुम लोग उस के मुल्क में चले जाओ ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये कुशादगी और इन मसाइब से निकलने का रास्ता बना दे जिस में तुम मुब्तला हो।"[1] सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से मुसलमानों ने दो[2] मरतबा ह़बशा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई, पहली बार 11 मर्द और 4 औ़रतें और दूसरी बार 83 मर्द और 18 औ़रतें हिजरत के उस क़ाफ़िले में शरीक हुईं। इस दूसरी बार की हिजरत में ह़ज़रते सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا और उन के शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जह़्श भी शरीके क़ाफ़िला थे।[2]

ह़बशा की ज़िन्दगी

ह़बशा की ज़मीन मुसलमानों के लिये निहायत अम्नो आश्ती की जगह साबित हुई और मुसलमान यहां के पुरसुकून माह़ोल में बिग़ैर किसी ख़ौफ़ और डर के ख़ुदाए वाह़िद عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ हो गए। येह दोनों मियां–बीवी भी अम्नो सुकून में अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारने लगे थे कि यका यक ह़ालात ने पलटा खाया, ज़माने ने अपना रंग बदला और सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ज़िन्दगी में एक ऐसा कठिन मर्ह़ला आया जिस ने तमाम सुकून व आराम भुला कर रख दिया। येह एक परेशान कुन ख़्वाब था जिस से ह़ज़रते सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ज़िन्दगी में इन्तिहाई संगीन ह़ालात का दौर शुरूअ़ हुवा।

1 ...السنن الكبرى للبيهقي، كتاب السير، باب الاذن بالهجرة، ٩/١٦، الحديث: ١٧٧٣٤.

2 ...المواهب اللدنية، المقصد الاول، هجرته صلى الله عليه وسلم، ١/١٢٥ و ١٣٢، ملتقطا.

www.dawateislami.net

ख़्वाब और इस की भयानक ता'बीर

हुवा कुछ यूं कि एक रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने ख़्वाब में अपने शोहर उ़बैदुल्लाह बिन जह़्श को बड़ी भयानक सूरत में देखा जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا को बहुत ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा और दिल में कहने लगी : ब ख़ुदा ! ज़रूर इस की ह़ालत तब्दील हो गई है। जब सुब्ह़ हुई तो उ़बैदुल्लाह बिन जह़्श कहने लगा : ऐ उम्मे ह़बीबा (ह़ज़रते रम्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا की कुन्यत) ! मैं ने दीन के मुआ़मले में बहुत ग़ौरो फ़िक्र किया है मुझे तो सब से बेहतर दीन ईसाइय्यत ही मा'लूम हुवा। पहले मैं इसी दीन में था फिर दीने मुह़म्मदी (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में दाख़िल हो गया और अब फिर ईसाई हो चुका हूं। येह हौलनाक ख़बर सुन कर ह़ज़रते सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا का दिल डूब गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا बहुत परेशान हो गईं और उसे बहुत समझाया बुझाया, जैसा कि रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने उस से कहा : तेरे लिये कोई भलाई नहीं और अपना वोह ख़्वाब सुनाया जो उस के बारे में देखा था लेकिन उस ने ज़रा तवज्जोह न की, लगातार शराब के नशे में मस्त रहने लगा और बिल आख़िर इसी ह़ालत में मर गया।[1]

نَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَة (हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दीन, दुन्या और आख़िरत में अ़फ़्व और आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।)

सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल

शोहर के कुफ़्र व इर्तिदाद की गहरी खाई में कूद पड़ने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا की ज़िन्दगी ख़ुशियों से यक्सर वीरान

[1]...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ٢٧٩٩-خطبة النجاشي على نكاح ام حبيبة، ٢٦/٥، الحديث:٦٨٣٧.

www.dawateislami.net

हो कर रह गई, पराए देस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बिल्कुल तन्हा रह गईं, वालिदैन का साथ तो ईमान लाने के साथ ही ख़त्म हो चुका था एक शोहर का साथ था और वोह भी जाता रहा। ग़ौर कीजिये ! उस वक़्त कैसी कड़ी आज़माइश से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا दोचार होंगी, कैसी कैसी कठिन परेशानियों का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को सामना होगा......?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह वोह वक़्त होता है जब बड़े बड़े सूरमाओं (बहादुरों) के हौसले भी पस्त हो जाते हैं, ऐसे पुर आज़माइश अवक़ात में उन के भी क़दम डगमगा जाते हैं, उन के पायए सबात में भी लग़्ज़िश आ जाती है लेकिन यहां ऐसा हरगिज़ नहीं हुवा, क़ुरबान जाइये हज़रते सय्यिदतुना रम्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की साबित क़दमी पर कि ऐसी कड़ी आज़माइश में भी अपने ईमान के लहलहाते चमन को कुफ़्र की आग की आंच तक न आने दी और इस सिलसिले में किसी परेशानी व मुसीबत को ख़ातिर में न लाते हुवे निहायत ही अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल के साथ सिराते़ मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहीं। ग़ौर कीजिये कि आख़िर वोह कौन सा जज़्बा था, वोह कौन सी क़ुव्वत और वोह कौन सी ताक़त थी जिस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के हौसले को पस्त न होने दिया, आख़िर किस के आसरे पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने तमाम परेशानियों व मुसीबतों का ख़न्दा पेशानी से सामना किया....? याद रखिये ! वोह जज़्बा, जज़्बए ईमानी और वोह ताक़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत की ताक़त थी और येही वोह आसरा था जिस के भरोसे पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने तारीख़ के सुन्हरे अवराक़ में अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल की एक बेहतरीन मिसाल रक़्म की।

www.dawateislami.net

एक ख़ुश आईन ख़्वाब

हज़रते सय्यिदतुना रम्ला رضی اللہ تعالٰی عنھا निहायत सब्रो इस्तिक़्लाल के साथ तमाम परेशानियों व मुसीबतों का मुक़ाबला करते हुवे अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रही थीं कि एक बार फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की ज़िन्दगी में बहार के दिन आने लगे और ख़ुशियों के फूल खिलने लगे चुनान्चे, एक रात आप رضی اللہ تعالٰی عنھا ने ख़्वाब देखा कि कोई शख़्स इन्हें उम्मुल मोमिनीन कह कर पुकारता है। बेदार होने के बा'द इन्हों ने इस की येह ता'बीर की, कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم मुझे अपने निकाह़ में लाएंगे।(1)

ख़्वाब ह़क़ीक़त के रूप में

पैग़ामे निकाह़

ख़्वाब ने ह़क़ीक़त का रूप कैसे धारा और ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنھا ने येह दारैन (दोनों जहान) की सआ़दत कैसे पाई....? इस का वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ है कि ज़ुल हिज्जा छे[6] हिजरी को जब प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने बादशाहों को दा'वते इस्लाम देने के लिये मक्तूब रवाना फ़रमाए तो शाहे ह़बशा अस्ह़मा नज्जाशी की त़रफ़ ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رضی اللہ تعالٰی عنہ को(2) दो[2] मक्तूब दे कर रवाना किया, एक में उसे इस्लाम की दा'वत दी और क़ुरआने करीम की कुछ आयात भी

---

1 ...المرجع السابق، ص٢٧.

2 ....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, ह़िस्सए दुवुम, बाबे सिवुम, फ़स्ले शशुम, 6 हि. के वाक़िआ़त, स. 385

www.dawateislami.net

लिखीं और दूसरे मक्तूब में हुक्म फ़रमाया कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निकाह कर दें। जब नज्जाशी के पास सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिरामी नामा (या'नी मुबारक मक्तूब) पहुंचे तो उन्हों ने निहायत अदबो एहतिराम के साथ ले कर अपनी आंख पर रख लिये, अज़् राहे तवाज़ोअ़ व इन्किसारी तख़्त से नीचे उतर कर ज़मीन पर बैठ गए और हक़ की गवाही देते हुवे मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।(1) इस के बा'द दूसरे फ़रमाने नबुव्वत की ता'मील के लिये अपनी बांदी अबरहा को हज़रते उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में भेजा।

अबरहा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : बादशाह सलामत ने आप के लिये पैग़ाम भेजा है कि मेरे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गिरामी नामा तशरीफ़ लाया है कि मैं प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निकाह आप के साथ कर दूं। येह मसरूर कुन और फ़रहत बख़्श ख़बर सुन कर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अबरहा को दुआ देते हुवे फ़रमाया : "بَشَّرَکِ اللّٰہُ بِخَیْرٍ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें भी ख़ुश ख़बरी नसीब फ़रमाए।" फिर अबरहा ने कहा : बादशाह ने कहा है कि अपनी तरफ़ से किसी को वकील बना दें जो आप का निकाह कर दे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने हज़रते ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर वकील बनाया और येह फ़रहत बख़्श ख़बर सुनाने की ख़ुशी में चांदी के दो[2] कंगन और दीगर ज़ेवरात जो उस वक़्त पहन रखे थे, अबरहा को तोह़फ़े में दिये।

---

(1)...الوفاء باحوال المصطفٰی، ابواب مکاتبته الملوك، الباب الرابع، ۲/۲٦۷، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

ख़ुत़्बए निकाह़

शाम को ह़ज़रते नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़बशा में मौजूद दीगर मुसलमानों को जम्अ़ किया और तौह़ीदो रिसालत की गवाही पर मुश्तमिल एक जानदार ख़ुत़बा देते हुवे कहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمَلِکِ الْقُدُّوْسِ السَّلَامِ الْمُؤْمِنِ الْمُهَيْمِنِ الْعَزِيْزِ الْجَبَّارِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَقَّ حَمْدِهٖ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
وَاَنَّهُ الَّذِیْ بَشَّرَ بِهٖ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

"तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो बादशाहे ह़क़ीक़ी, तमाम ऐ़बो और बुराइयों से पाक, अपनी मख़्लूक़ को सलामती देने वाला, अपने फ़रमां बरदार बन्दों को अ़ज़ाब से अमान बख़्शने वाला, ह़िफ़ाज़त फ़रमाने वाला और इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाला है, उसी की ह़म्द है जिस क़दर ह़म्द का वोह ह़क़दार है। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येही वोह हस्ती हैं जिन की ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़ुश ख़बरी दी थी।"

ख़ुत़बा देने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : नबियों के सुल्त़ान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़त़ लिखा है कि मैं ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निकाह़ कर दूं। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर लब्बैक कहता हूं और इन का महर 400 दीनार मुक़र्रर करता हूं। येह कह कर ह़ज़रते सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 400 दीनार लोगों के

www.dawateislami.net

सामने रख दिये। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा देते हुवे कहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اَحْمَدُہٗ وَاَسْتَعِیْنُہٗ وَ اَسْتَنْصِرُہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ اَرْسَلَہٗ بِالْھُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْھِرَہٗ عَلَی الدِّیْنِ کُلِّہٖ وَلَوْ کَرِہَ الْمُشْرِکُوْنَ

"तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, मैं उसी की ह़म्द करता हूं, उसी से मदद त़लब करता और उसी की बारगाह में फ़रयाद करता हूं। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं जिन्हें उस ने हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि इसे सब दीनों पर ग़ालिब करे अगर्चे मुशरिकीन बुरा मानें।"

ख़ुत़बा देने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत को क़बूल करते हुवे ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का निकाह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कर दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह 400 दीनार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले कर दिये और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपने पास रख लिया फिर लोगों ने उठने का इरादा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बैठ जाओ ! अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नते मुबारका है कि वोह शादी के बा बरकत मौक़ए पर खाने का एहतिमाम फ़रमाते हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खाना मंगवाया और लोग खाना खा कर रुख़्सत हुवे।

www.dawateislami.net

अबरहा को तोह़्फ़ा

जब ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा रम्ला बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास माल आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अबरहा को बुला कर फ़रमाया : पहले मैं ने तुम्हें जो थोड़ा बहुत माल दिया था वोह ऐसा वक़्त था कि ख़ुद मेरे पास भी कुछ न था, अब येह पचास मिस्क़ाल सोना है इसे लो और काम में लाओ। येह सुन कर अबरहा ने एक थैली निकाली जिस में वोह सब चीज़ें थीं जो ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन्हें अ़ता फ़रमाई थीं, अबरहा ने उन्हें वापस करते हुवे कहा : बादशाह सलामत ने मुझ से अ़हद लिया है कि मैं आप से कुछ न लूं और मैं तो बादशाह की ख़िदमत गार हूं। मज़ीद कहा : मैं ने दीने मुह़म्मदी علٰی صاحِبِھا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की पैरवी इख़्तियार करते हुवे ख़ालिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस्लाम क़बूल कर लिया है। और कहा : बादशाह सलामत ने अपनी अज़्वाज को हुक्म फ़रमाया है कि वोह अपने पास मौजूद हर क़िस्म की ख़ुश्बू आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में भेजें। अगले रोज़ ह़ज़रते सय्यिदतुना अबरहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا कसीर मिक़्दर में ऊ़द, ज़ा'फ़रान अ़म्बर और ज़बाद (ख़ुश्बूयात के नाम) ले कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, उन्हें पेश करते हुवे ह़ज़रते अबरहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया : आप से मेरी एक ह़ाजत है वोह येह कि रसूले अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरा सलाम अ़र्ज़ कीजियेगा और बताइयेगा कि मैं ने भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की पैरवी इख़्तियार कर ली है। इस के बा'द येह

www.dawateislami.net

जब भी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर होतीं तो अ़र्ज़ करतीं : मेरी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से जो ह़ाजत है उसे भूलियेगा मत ।(1)

काशानए नबवी में....

काशानए नबवी علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में ह़ाज़िरी के लिये ह़ज़रते सय्यिदतुना अबरहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को तय्यार किया(2) और फिर शाहे ह़बशा ह़ज़रते नज्जाशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ह़ज़रते शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के हमराह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में भेज दिया ।(3) जब ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا शाहे आदम व बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निकाह़ का पैग़ाम मिलने और ह़ज़रते अबरहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के हुस्ने सुलूक के बारे में बताया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया, ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने ह़ज़रते अबरहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब देते हुवे फ़रमाया : ''وَعَلَیۡھَا السَّلَامُ وَرَحۡمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ'' ह़ज़रते

---

1 ...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، خطبة النجاشي على نكاح ام حبيبة، ٢٧/٥، الحديث: ٦٨٣٧، ملتقطًا.

2 ...المرجع السابق، ص ٢٨.

3 ...سنن ابي داؤد، كتاب النكاح، باب الصداق، ص ٣٣٦، الحديث: ٢١٠٧.

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا वोह तमाम अश्या ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई थीं जो शाहे ह़बशा ह़ज़रते नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में पेश की थीं, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास और इस्ति'माल में देखते थे लेकिन ना पसन्द न फ़रमाते।[1]

निकाह़ पर अबू सुफ़्यान का रद्दे अ़मल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मह़बूब, हु़ज़ूर अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हर लिह़ाज़ से कामिल व अकमल बनाया है, जिस ए'तिबार से भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा जाए अव्वलीनो आख़िरीन में कोई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सानी व हमसर नज़र नहीं आता, क्यूंकि

वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा! तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम[2]

और सच है कि

तुझे यक ने यक बनाया[3]

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूरत में भी आ'ला थे, सीरत में भी आ'ला थे, ख़ानदानी शराफ़त में भी आ'ला थे और नसब में भी सब से पाक व अत़हर नसब के ह़ामिल थे अल ग़रज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने

1... المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، خطبة النجاشي على نكاح ام حبيبة، ٥/٢٧، الحديث: ٦٨٣٧، بتقدم وتاخر.

2... ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 80

3... المرجع السابق، ص ٣٦٣.

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हर ऐब व नक़्स से पाक और तमाम कमालात व ख़ूबियों का जामेअ़ बनाया था, येही वज्ह थी कि वोह लोग जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन थे वोह भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत को बाइसे फ़ख़्र ख़याल करते थे चुनान्चे, जब रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा रम्ला बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ निकाह़ की ख़बर उन के वालिद अबू सुफ़्यान को पहुंची तो बा वुजूद इस के कि येह अभी तक इस्लाम नहीं लाए थे और इस्लाम के सख़्त मुख़ालिफ़ थे, इस रिश्ते को ना पसन्द नहीं किया बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ बयान करते हुवे कहा : "ذَاکَ الْفَحْلُ لَا یُقْرَعُ اَنْفُہٗ (ह़ज़रते) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ऐसे शरफ़ो इ़ज़्ज़त वाले बुलन्द रुत्बा कुफ़ू हैं जिन का पैग़ामे निकाह़ ठुकराया नहीं जाता।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तकरीम जुज़्वे ईमान है, जब तक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची ता'ज़ीम दिल में न हो अगर्चे उ़म्र भर इ़बादतो रियाज़त में गुज़रे सब बेकार व मर्दूद है। कुरआने करीम की कई आयात में **अल्लाह** तबारक व

1...المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، کان صداق النبی صلی اللہ علیہ وسلم لازواجہ...الخ، ۵/۲۹، الحدیث:۶۸۴۱.

www.dawateislami.net

तआ़ला ने मोमिनीन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाने का हुक्म फ़रमाया है, चुनान्चे, पारह 26 सूरए फ़त्ह़ की आयत नम्बर आठ[8] और नव[9] में अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान फ़रमाते हुवे और मोमिनीन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करने का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شٰهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۗ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٩

(پ٢٦، الفتح:٩،٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम अल्लाह की पाकी बोलो ।*

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबए किराम व सह़ाबियात رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن जो अह़कामाते इलाहिय्या की बजा आवरी में कोई कसर उठा न रखते थे, इस हुक्मे इलाही पर अ़मल के सिलसिले में भी इन्हों ने क़ाबिले तक़्लीद किरदार अदा किया, हुज़ूरे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला की ता'ज़ीम का तो बयान ही क्या...? जिस शै को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत हो जाती उस की ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदबो एह़तिराम भी येह ह़ज़रात अपने ऊपर लाज़िम जानते और हुदूदे शरअ़ की रिआ़यत के साथ ह़द दरजा ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाते, चुनान्चे, एक दफ़्आ़ का ज़िक्र है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद अबू सुफ़्यान सख़्र बिन ह़र्ब इस्लाम

www.dawateislami.net

लाने से पहले जब सुल्हे हुदैबिया की मुद्दत में इज़ाफ़े के सिलसिले में बातचीत करने रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे तो इस के बा'द अपनी बेटी ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास भी गए, जब येह रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिस्तरे मुबारक पर बैठने लगे तो सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उसे लपेट दिया। इस पर अबू सुफ़्यान ने कहा : बेटी ! मा'लूम नहीं, तुम ने इस बिस्तर को मुझ से बचाया है या मुझे इस बिस्तर से बचाया ? इस पर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भरपूर बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ जवाब दिया, फ़रमाया :

بَلۡ هُوَ فِرَاشُ رَسُوۡلِ اللّٰهِ وَ اَنۡتَ مُشۡرِكٌ نَّجِسٌ فَلَمۡ اُحِبَّ اَنۡ تَجۡلِسَ عَلٰى فِرَاشِهٖ

येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाक रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक बिस्तर है और आप नापाक मुशरिक हैं इस लिये मैं ने इस पाकीज़ा बिस्तर पर आप का बैठना गवारा न किया।"(1)

तआ़रुफे़ सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

विलादत

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत से 17 साल पहले **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا की

(1)...الطبقات الكبرىٰ، ذكر ازواج رسول الله صلى الله عليه وسلم، ٤١٣١-ام حبيبة بنت ابي سفيان، ٨/٧٩.
ودلائل النبوة للبيهقي، جماع ابواب فتح مكة...الخ، باب نقض قريش ماعاهدوا...الخ، ٨/٥.

www.dawateislami.net

मुबारक सर ज़मीन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की विलादत हुई ।(1)

नाम व नसब और कुन्यत

मश्हूर रिवायत के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम रम्ला है, वालिदे मोह़तरम का नाम सख़्र है येह अपनी कुन्यत अबू सुफ़्यान से ज़ियादा मश्हूर थे और वालिदा का नाम सफ़िय्या है येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफी हैं। वालिद की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब इस त़रह़ है : **"अबू सुफ़्यान सख़्र बिन ह़र्ब बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन कुसय्य बिन किलाब बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य बिन ग़ालिब"** और वालिदा की त़रफ़ से येह है : **"सफ़िय्या बिन्ते अबुल आ़स बिन उ़मय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़"**

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की कुन्यत उम्मे ह़बीबा है, नाम के बजाए कुन्यत से ही ज़ियादा मा'रूफ़ थीं ।(2)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

नसब के ह़वाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से ह़ज़रते अ़ब्दे मनाफ़ में ही मिल जाता है जब कि दीगर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ का नसब ह़ज़रते अ़ब्दे मनाफ़ से आगे जा कर हुज़ूरे

---

1 ...الاصابة، كتاب النساء، حرف الراء، ١١١٩١-رملة بنت ابي سفيان، ٨/١٥٤.

2 ...سبل الهدى والرشاد، جماع ابواب ذكر ازواجه، الباب السادس، ٩٧/١٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलता है, वाज़ेह रहे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नसब के हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ के साथ मिलने में चार[4] वासिते़ पाए जाते हैं :

(1).....**अबू सुफ़्यान** (2).....**ह़र्ब** (3).....**उमय्या** (4).....**अ़ब्दे शम्स** ।

पांचवें जद्दे मोह़तरम ह़ज़रते **अ़ब्दे मनाफ़** में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नसब हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नसब शरीफ़ से मिलता है जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चौथे दादा जान हैं जब कि ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नसब ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की निस्बत कुछ ऊपर जा कर मिलता है लेकिन सब से कम वासित़ों से मिलता है कि इस में सिर्फ़ तीन[3] वासिते़ पाए जाते हैं :

(1).....**ख़ुवैलिद** (2).....**असद** (3).....**अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा**

चौथे जद्दे मोह़तरम ह़ज़रते **कुसय्य** हैं जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पांचवें दादा जान हैं ।

शरफ़े सहा़बिय्यत पाने वाले चन्द क़राबत दार

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का तअ़ल्लुक़ अ़रब के सब से मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीले क़ुरैश की एक ज़ैली शाख़ बनू उमय्या से था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश के सरदारों में से थे इस लिहाज़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घराने का शुमार निहायत इ़ज़्ज़त दार घरानों में होता था, ज़मानए इस्लाम में भी इस

www.dawateislami.net

ने बहुत सी फ़ज़ीलतें पाईं, इस के बहुत से अफ़राद ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सहाबिय्यत का शरफ़ भी ह़ासिल किया, यहां इन्हीं में से चन्द एक का ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

➥ ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे मोह़तरम हैं, ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश के सरदारों के अ़लम बरदार थे, वाक़िअ़ए फ़ील से 10 साल पहले इन की विलादत हुई, फ़त्ह़े मक्का के दिन ईमान लाए, ग़ज़्वए हुनैन में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे। इस के बा'द ग़ज़्वए ताइफ़ में भी शिर्कत की और इस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक आंख जाती रही थी और कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ग़ज़्वए यरमूक में दूसरी आंख भी शहीद हो गई। 34 हिजरी को **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में वफ़ात पाई और **जन्नतुल बक़ीअ़** में दफ़्न हुवे।[(1)]

➥ ह़ज़रते मुआ़विय्या बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

उम्मलु मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बाप शरीक भाई हैं। उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हैं जिन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली वह़ी को लिखने का शरफ़ ह़ासिल किया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

---

❶...الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابۃ، ٣٥٥-ابوسفیان بن حرب، ص٤٥، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के बा'द शाम के ह़ाकिम मुक़र्रर हुवे और विसाल शरीफ़ तक रहे। रजबुल मुरज्जब, 60 हिजरी को दिमश्क़ में वफ़ात पाई।(1)

➥ ह़ज़रते उ़त्बा बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के बाप शरीक और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के सगे भाई हैं। रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की विलादत हुई, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने आप को त़ाइफ़ का ह़ाकिम बनाया था फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात के बा'द मिस्र का ह़ाकिम बना दिया, एक साल तक इस मन्सब पर क़ाइम रहे फिर वहीं इन्तिक़ाल फ़रमाया। बनू उमय्या में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से बड़ा ख़त़ीब कोई न था।(2)

➥ ह़ज़रते यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)

येह भी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के बाप शरीक भाई हैं। फ़त्ह़े मक्का के दिन ईमान लाए और फिर ग़ज़्वए हुनैन में रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह शिर्कत की सआ़दत भी ह़ासिल की। 12 हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इन्हें लश्करे इस्लाम के साथ फ़िलिस्त़ीन

❶...المرجع السابق، حرف الميم، فصل فی الصحابة، ٨٢٣-معاويه بن ابی سفيان، ص٩٩.

❷...اسد الغابة، باب العين مع التاء، ٣٥٤٦-عتبة بن ابی سفيان، ٣/٥٥٤، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

की त़रफ़ भेजा, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें फ़िलिस्त़ीन और इस के बा'द शाम पर ह़ाकिम बनाया।[1]

रिवायते ह़दीस

अह़ादीस की राइज कुतुब में ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी अह़ादीस की ता'दाद 65 है, जिन में से दो[2] **मुत्तफ़िक़ुन अ़लैह** (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में), एक सिर्फ़ मुस्लिम शरीफ़ में और बक़िया दीगर किताबों में हैं।[2] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अह़ादीस रिवायत करने वालों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की साह़िबज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़बीबा बिन्ते उ़बैदुल्लाह, भाई ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा, भान्जे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान बिन सईद सक़फ़ी, ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते शैबा और ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) जैसी अ़ज़ीम शख़्सिय्यत शामिल हैं।[3]

फ़रमाने मुस्त़फ़ा पर अ़मल

मह़ब्बत एक ऐसा उ़न्सर है जो मुह़िब्ब को मह़बूब की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी और इस के क़ौल व फ़े'ल की पैरवी करने पर उभारता है और रफ़्ता रफ़्ता परवान चढ़ती हुई जब येह अपने कमाल को पहुंचती है तो फिर मुह़िब्ब की हर हर अदा मह़बूब की अदाओं की आईनादार बन जाती है, तो येह शम्ए़ रिसालत के ह़क़ीक़ी परवाने सह़ाबए किराम व

---

1 ...امتاع الاسماع، فصل فی ذکر اصہارہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، اخوۃ ام حبیبۃ، ٦/٢٦٢.

2 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم در ذکر ازواج مطہرات، ٢/٤٨٢.

3 ...شرح الزرقانی، علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازوجہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤/٤٠٩.

www.dawateislami.net

सहाबियात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن जो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाओं को अदा करने में कोई कसर उठा न रखते थे इन से येह कब मुमकिन था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी हुक्म को बजा लाने और किसी फ़रमान की पैरवी करने में मा'मूली सी भी कोताही करते...!! आइये इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा रम्ला बिन्ते अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का अ़मल मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब मुल्के शाम से ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात की ख़बर आई तो तीसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ज़र्द रंग मंगवा कर अपने रुख़्सारों और कलाइयों पर मला और फ़रमाया : मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं थी अगर मैं ने रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह न सुना होता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाली औ़रत के लिये येह ह़लाल नहीं कि वोह सिवाए शोहर के किसी और पर तीन[3] दिन से ज़ियादा सोग मनाए अलबत्ता शोहर पर चार[4] महीने दस दिन तक सोग करेगी ।[(1)]

सोग के दिन कितने....?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम में मय्यित पर सोग करने के लिये तीन[3] दिन मुक़र्रर हैं कोई कितना ही अ़ज़ीज़ क्यूं न हो तीन[3] दिन से ज़ियादा सोग करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं अलबत्ता औ़रत को शोहर की वफ़ात पर चार[4] माह और दस दिन तक सोग करना ज़रूरी है ।

1 ...صحيح البخاری، كتاب الجنائز، باب حد المرأة...الخ، ص٣٦٣، الحديث:١٢٨٠.

www.dawateislami.net

आस्माने हिदायत के रोशन सितारों सहाबा व सहाबियात رضی اللہ تعالٰی عنھم ने इस हुक्मे शरई और फ़रमाने नबवी علی صاحِبِھا الصّلوٰۃ والسّلام की पैरवी करने के सिलसिले में भी आ'ला मिसाल रक़म की है और राहे हिदायत के मुतलाशियों को ज़िन्दगी बसर करने के लिये बेहतरीन राहे अ़मल फ़राहम की है कि कैसी ही परेशानी हो, कैसा ही मुश्किल और कठिन मरहला हो और ज़िन्दगी कैसा ही ख़तरनाक मोड़ क्यूं न ले हमेशा, हर हाल में शरीअ़त के दामन को थामे रखो और फ़रमाने रसूल से सरताबी हरगिज़ हरगिज़ मत करो। **अल्लाह** عزّوجلّ हमें इन अ़ज़ीम लोगों की अ़ज़ीम सीरत की पैरवी की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رضی اللہ تعالٰی عنھا हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।
- आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को उन छे[6] अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رضی اللہ تعالٰی عنھن) में से होने का शरफ़ ह़ासिल है जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से था।
- अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن में आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का महर सब से ज़ियादा था।

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह ख़ुसूसिय्यत भी ह़ासिल है कि जब सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से निकाह़ फ़रमाया उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ियाम गाह से बहुत दूर सर ज़मीने ह़बशा में मुक़ीम थीं ।

اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْن सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ेहरिस्त में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का भी शुमार होता है ।(1)

सफ़रे आख़िरत

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तक़रीबन चार[4] बरस तक आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त व हमराही में रहने की सआ़दत ह़ासिल की फिर ज़माने पर क़ियामत से पहले एक क़ियामत आई कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमा गए । इस क़ियामत ख़ेज़ सानिह़े के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا कमो बेश 34 बरस तक ह़यात रहीं । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे हु़कूमत में 44 हिजरी को इस दारे फ़ानी से कूच फ़रमाया ।(2) **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर करोड़ों रह़मतों और बरकतों का नुज़ूल हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1.....इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 24 मुलाह़ज़ा कीजिये ।

2...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، كان صداق النبي صلى الله عليه وسلم...الخ، ٥/٢٩، الحديث:٦٨٤٢.

www.dawateislami.net

वफ़ात शरीफ़ से कुछ पहले....

वफ़ात शरीफ़ से कुछ पहले ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا को बुलाया और कहने लगीं : हमारे दरमियान और हुज़ूरे अक्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की दूसरी अज़्वाज رضی اللہ تعالٰی عنھن के दरमियान बा'ज़ अवक़ात कोई ना मुनासिब बात हो जाती थी, ऐसी जितनी भी बातें हैं **अल्लाह** عزّوجلّ उन में मेरी और आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने कहा : रब्बे करीम عزّوجلّ उन सब में आप की बख़्शिश व मग़्फ़िरत फ़रमाए, आप से दरगुज़र फ़रमाए और आप के ज़ेहन से इस ख़लिश को दूर कर दे। इस पर ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने कहा : आप ने मुझे ख़ुश किया है **अल्लाह** عزّوجلّ आप को ख़ुश करे फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہا को बुला कर उन से भी येही बातें कीं।(1)

तज़्किरए अवलाद

उ़बैदुल्लाह बिन जह़्श से आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के एक बेटी ह़ज़रते ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا की विलादत हुई, आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की कुन्यत उम्मे ह़बीबा इन्ही की निस्बत से है। ह़ज़रते ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने अपने वालिदैन के साथ हिजरते ह़बशा की फिर अपनी वालिदा ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا के साथ ही **मदीनतुल मुनव्वरा** زادھا اللہ شرفا و تعظیما चली आईं।(2)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...الطبقات الكبرىٰ، ذكر ازواج رسول الله صلى الله عليه وسلم، ٤١٣١-ام حبيبة بنت ابي سفيان، ٧٩/٨.

2 ...الاستيعاب، كتاب النساء وكناهن، باب الحاء، ٣٢٩١-حبيبة بنت عبيد الله..الخ، ١٨٠٩/٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की पाकीज़ा व मुबारक हयात से एक बहुत अहम येह मदनी फूल हासिल होता है कि जब इस्लाम की राह में किसी पर बलाएं व मुसीबतें नाज़िल हों फिर वोह साबित क़दम रहे और इन से घबरा कर अपने पायए सबात में लर्ज़िश न आने दे, राहे इस्लाम पर मज़बूती से क़ाइम रहे तो एक वक़्त आता है कि जब उसे इन मुसीबतों पर सब्र करने का फल मिलता है तो वोह तमाम बलाएं व मुसीबतें उस की नज़रों में हैच हो जाती हैं और इन्आमाते इलाहिय्या की उस पर ऐसी छमा छम बारिशें होती हैं कि ज़माना उस की क़िस्मत पर नाज़ करने लग जाता है। अब आइये ! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की सीरत को सामने रखते हुवे इस पर शैख़ुल हदीस हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का बड़ा ही बसीरत अफ़रोज़ व फ़िक्र आमोज़ और नसीहतों के मदनी फूलों से भरपूर तबसेरा मुलाहज़ा कीजिये और अमल का ज़ेहन बनाइये, फ़रमाते हैं : **अल्लाहु अकबर** ! हज़रते बीबी उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ज़िन्दगी कितनी इब्रत खेज़ और तअज्जुब अंगेज़ है, सरदारे मक्का की शहज़ादी हो कर दीन के लिये अपना वतन छोड़ कर हबशा की दूरो दराज़ जगह में हिजरत कर के चली जाती हैं और पनाह गुज़ीनों की एक झोंपड़ी में रहने लगती हैं फिर बिल्कुल ना गहां येह मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ता है कि शोहर जो परदेस की ज़मीन में तन्हा

www.dawateislami.net

एक सहारा था, ईसाई हो कर अलग थलग हो गया और कोई दूसरा सहारा न रह गया मगर ऐसे नाज़ुक और ख़तरनाक वक़्त में भी ज़रा भी इन का क़दम नहीं डग-मगाया और पहाड़ की तरह दीने इस्लाम पर क़ाइम रहीं, एक ज़र्रा भी इन का हौसला पस्त नहीं हुवा न इन्हों ने अपने काफ़िर बाप को याद किया न अपने काफ़िर भाइयों भतीजों से कोई मदद तलब की, ख़ुदा पर तवक्कुल कर के एक ना मानूस परदेस की ज़मीन में पड़ी ख़ुदा की इबादत में लगी रहीं यहां तक कि ख़ुदा के फ़ज़्लो करम और रहमतुल्लिल आलमीन की रहमत ने इन की दस्तगीरी की और बिल्कुल अचानक ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इन को अपने महबूब की महबूबा बीबी और सारी उम्मत की मां बना दिया कि क़ियामत तक सारी दुन्या इन को उम्मुल मोमिनीन (मोमिनों की मां) कह कर पुकारती रहेगी और क़ियामत में भी सारी ख़ुदाई (मख़्लूक़) ख़ुदा के इस फ़ज़्लो करम का तमाशा देखेगी।

ऐ मुसलमान औरतो ! देखो ईमान पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहने और ख़ुदा पर तवक्कुल करने का फल कितना मीठा और किस क़दर लज़ीज़ होता है और येह तो दुन्या में अज्र मिला है अभी आख़िरत में इन को क्या क्या अज्र मिलेगा और कैसे कैसे दरजात की बादशाही मिलेगी ? इस को ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता हम लोग तो इन दरजों और मर्तबों की बुलन्दी व अज़मत को सोच भी नहीं सकते।

अल्लाहु अक्बर....! अल्लाहु अक्बर...!(1)

---

1 ...जन्नती ज़ेवर, तज़्किरए सालिहात, हज़रते उम्मे हबीबा رضی اللہ تعالٰی عنھا, स. 490

www.dawateislami.net

बुराइयों से नजात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन पाकबाज़ हस्तियों की सीरत से रूशनास हो कर अपने तर्ज़े ह़यात को इन की सीरत के मुत़ाबिक़ ढालने के लिये दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से लाखों इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया है।

चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **'मैं ह़यादार कैसे बनी ?'** के सफ़ह़ा 25 पर है : गुजरात (पंजाब, पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मुझ समेत घर के अफ़राद फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने के जुनून की ह़द तक शौक़ीन थे। घर की ख़वातीन बे पर्दगी के गुनाह में भी मुब्तला थीं। हमें दा'वते इस्लामी का महका महका मदनी माह़ोल तो क्या मयस्सर आया हमारे तो दिन ही फिर गए, रफ़्ता रफ़्ता हमारा घराना मदनी माह़ोल के सांचे में ढलता चला गया, फ़िल्मों डिरामों, गानों बाजों और बे पर्दगी जैसे गुनाहों की नुहूसत से जान छूट गई, घर के मर्द इस्लामी भाइयों के और औ़रतें इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत करने लगीं। मदनी माह़ोल से वाबस्तगी के बा'द जहां इन बुराइयों से नजात मिली वहीं फ़ौतशुदा रिश्तेदारों से ब ज़रीअ़ए ख़्वाब दा'वते इस्लामी के मुतअ़ल्लिक़ बिशारतें भी ह़ासिल हुईं। हमें मदनी माह़ोल से

www.dawateislami.net

मुन्सलिक हुवे अभी कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि मेरी वालिदा को ख़्वाब में मेरी नानी जान का दीदार हुवा तो उन्हों ने मेरी वालिदा से पूछा कि तुम्हारी बेटियां दा'वते इस्लामी के इजतिमाअ़ में जाती हैं ? ख़्वाब में येह बात सुन कर मेरी वालिदा हैरान हुईं क्यूंकि हम मदनी माहोल से 2000 ईसवी में वाबस्ता हुवे थे और नानीजान का इन्तिक़ाल 1992 ईसवी में हुवा था जब कि उस वक़्त हम दा'वते इस्लामी के मुतअ़ल्लिक़ जानते भी नहीं थे। जब वालिदा ने येह ख़्वाब मुझे सुनाया तो मैं ने कहा कि अम्मीजान हम इजतिमाआ़त में जो सवाब फ़ौतशुदा रिश्तेदारों को ईसाल करते हैं वोह यक़ीनन उन्हें मिलता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुझे बाबुल मदीना (कराची) में 12 दिन का तर्बिय्यती कोर्स करने की सआ़दत ह़ासिल हो रही है।

»»»»»»...«·»...««««««

तीन 3 नफ़्अ़ बख़्श चीज़ें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब आदमी इन्तिक़ाल करता है तो उस का अ़मल मुन्क़त़अ़ हो जाता है मगर तीन 3 अ़मल जारी रहते हैं :

- सदक़ए जारिया
- या इ़ल्म जिस से नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता हो
- या नेक बच्चा जो इस के लिये दुआ़ करता हो।

[صحیح مسلم، کتاب الوصیة، باب مایلحق الانسان...الخ، ص٦٣٨، الحدیث:١٦٣١]

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

रात दिन के गुनाह मुआ़फ़

हज़रते सय्यिदुना अबू काहिल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक बार शहनशाहे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू काहिल ! जिस ने हर दिन और हर रात मुझ पर महब्बत व शौक़ से तीन[3] तीन[3] बार दुरूद पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़बीलए बनी नज़ीर के दो[2] शख़्स सुब्ह मुंह अन्धेरे ही अपने घरों से निकल खड़े हुवे, सारा दिन ग़ाइब रहे, फिर शाम को जब सूरज डूबने के साथ बेहद थके मांदे, ग़मगीन और अफ़्सुर्दा ह़ालत में घर वापस आए तो बातों में इस क़दर गुम थे कि अपने सामने खड़ी अपनी सब से लाडली और प्यारी बेटी की भी ख़बर न हुई जिसे वोह अपनी तमाम अवलाद से ज़ियादा प्यार करते थे और जब भी येह उन में से किसी के पास आती तो इस की तवज्जोह, प्यार और शफ़्क़त का मह़्वर व मर्कज़ सब को छोड़ छाड़ कर येही प्यारी सी बच्ची बन जाती । उन दिनों मदीने शरीफ़ में प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद हुई थी और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के मह़ल्ले में क़ियाम फ़रमाया था । सुब्ह मुंह अन्धेरे घर से निकलने वाले येह दोनों शख़्स येहीं

(1)...الصلات والبشر، الباب الثانی فی ذکر الاحادیث...الخ، الحدیث الخامس والستون، ص ٨٩.

www.dawateislami.net

हालात का जाइज़ा लेने आए थे और सारा दिन गुज़ार कर शाम को जब घर पहुंचे तो ह़स्बे मा'मूल उस बच्ची ने उन्हें खुश आमदीद कहा लेकिन बातों में मगन होने की वज्ह से उन्हें इस की कुछ ख़बर न हो सकी। इसी दौरान बच्ची ने उन में से एक को जो इस का चचा था, येह कहते सुना : क्या येह वोही हैं ? दूसरा शख़्स जो इस बच्ची का बाप था, उस ने जवाब दिया : हां ! ब खुदा येह वोही शख़्स हैं। उस ने फिर पूछा : क्या तुम इन्हें अच्छी त़रह़ पहचानते हो ? कहा : हां ! पूछा : फिर तुम्हारे दिल में इन के बारे में क्या है ? कहा : ब खुदा जब तक ज़िन्दा रहा दुश्मन रहूंगा।[1] वक़्त गुज़रता रहा और फिर वोह ज़माना भी आया जब उन की वोह लाडली और प्यारी बेटी बियाह कर अपने घर की हो गई लेकिन किसी वज्ह से दोनों मियां बीवी में निभा न हो सका और आपस में जुदाई वाक़ेअ़ हो गई फिर कुछ अ़र्से बा'द एक और नौजवान के साथ उस का निकाह़ हो गया। एक दिन जब वोह अपने शोहर की गोद में सर रखे सो रही थी तो उस ने एक ख़्वाब देखा कि गोया एक चांद उस की गोद में आ पड़ा है। बेदार होने पर जब उस ने अपने शोहर को इस बारे में बताया तो चूंकि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते नूरबार इन पर चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ बिल्कुल ज़ाहिर व इयां थी इस लिये चांद से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला तबार मुराद लेना कुछ मुश्किल न था चुनान्चे, इस ने जान लिया कि इस से ह़ज़रते **मुह़म्मदे** अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी ज़ात मुराद है और चांद के गोद में आ पड़ने का मत़लब है कि अ़न क़रीब येह

---

1 ...السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، شھادۃ عن صفیۃ، المجلد الاول، ۲/۱۲۶.

www.dawateislami.net

लड़की आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक होगी। इस पर येह बद बख़्त आदमी ह़क़ के सामने सरे तस्लीम ख़म करने के बजाए ग़ैज़ व ग़ुस्से से भर गया और उस बे गुनाह के चेहरे पर इस ज़ोर से थप्पड़ रसीद किया कि निशान पड गया फिर कहने लगा : तू शाहे यसरब (या'नी ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ख़्वाब देख रही है....!!![1]

ह़क़ से मुंह फेरने वाले बद बख़्त लोग

क्या आप को मा'लूम है कि सुब्ह़ मुंह अन्धेरे घरों से निकलने वाले वोह दो शख़्स कौन थे, जिन्हों ने ह़क़ को पहचानने के बा वुजूद इस से मुंह फेरा और बात़िल पर क़ाइम रहे ? इन दोनों का तअ़ल्लुक़ यहूदी घराने से था, इन में से एक क़बीला बनी नज़ीर का सरदार हुयय बिन अख़्त़ब, दूसरा इस का भाई अबू यासिर बिन अख़्त़ब था, इस्लाम के ख़िलाफ़ इन दोनों भाइयों की दुश्मनी ह़द से बढ़ी हुई थी और वोह प्यारी सी बच्ची हुयय बिन अख़्त़ब की बेटी **सफ़िय्या बिन्ते हुयय** थी।[2] जब येह बच्ची बड़ी हुई तो एक यहूदी शख़्स सल्लाम बिन मिश्कम क़ुरज़ी के निकाह़ में आई लेकिन आपस में निभा न होने की वज्ह से जब दोनों में जुदाई वाक़ेअ़ हुई तो फिर एक और यहूदी शख़्स किनाना बिन अबू ह़क़ीक़ के साथ इस का निकाह़ हुवा, येह किनाना वोही बद नसीब आदमी है जिस ने ख़्वाब सुन कर

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواهب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات، ٤/٤٣٤، بتغیر قلیل.
صحیح ابن حبان، کتاب المزارعة، ذکر خبر ثالث...الخ، ص١٤٠٧، الحدیث:١٥٩٩، مختصرًا.

2 ...السیرة النبویة لابن هشام، شهادة عن الصفیة، ٢/١٢٦.

www.dawateislami.net

और इस की रोशन ता'बीर समझ कर इन्हें थप्पड़ रसीद किया था।(1)

यहूदियों की इस्लाम दुश्मनी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा किया कि कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार यहूदे ना हन्जार ने किस त़रह़ ह़क़ को पहचानने के बा वुजूद इस से रूगर्दानी की। दर अस्ल जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे रसूल व नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया तो इन यहूदियों के दिल बुग़्ज़ो कीना से भर गए, सीने ह़सद की आग में जलने लगे और वोह अ़ज़ीम हस्ती जिन के वसीले से दुआ़एं मांग कर येह दुश्मन पर फ़त्ह़ पाया करते थे, उन्ही की जान के दरपे हो गए, उन्ही के दीन को सफ़ह़ए हस्ती से मिटाने के लिये उठ खड़े हुवे। यूं तो तक़रीबन सब ही कुफ़्फ़ार इस्लाम और मुसलमानों को नाबूद करने के सिलसिले में पेश पेश थे लेकिन यहूद और इन में भी ख़ास तौर पर येह दोनों भाई हुयय बिन अख़्त़ब और अबू यासिर बिन अख़्त़ब इस मुहिम में तमाम कुफ़्फ़ार से बढ़ कर थे, येह दोनों मुसलमानों को इस्लाम से बरगश्ता करने में कोई कसर उठा न रखते और हमेशा ऐसे मौक़ए़ की तलाश में रहते जिस से मुसलमानों को किसी त़रह़ नुक़्सान पहुंच सकता हो जिस के नतीजे में यहूदियों और मुसलमानों के दरमियान कई दफ़्आ़ मैदाने कारज़ार (जंग का मैदान) बरपा हुवा और हर दफ़्आ़ इन यहूदे बे बहबूद को मुंह की खानी पड़ी लेकिन इन सब वाक़िआ़त से इ़ब्रत पकड़ कर भी यहूदी बैठ नहीं रहे बल्कि और ज़ियादा इन्तिक़ाम की आग इन के सीनों में भड़कने लगी चुनान्चे,

(1)...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاھرات...الخ، ٤/٤٢٩.

www.dawateislami.net

ग़ज़वए ख़ैबर का मुख़्तसर बयान

सात[7] हिजरी का वाक़िआ़ है जब यहूदियों ने इन्तिक़ाम की आग बुझाने के लिये **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا पर ह़म्ला कर के मुसलमानों को तह्स नह्स करने का मन्सूबा बनाया और इस मक़्सद के लिये अ़रब के एक बहुत ही त़ाक़तवर और जंग जू क़बीले ग़ित़फ़ान को भी अपने साथ मिला लिया । जब रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई कि ख़ैबर[(1)] के यहूदी क़बीलए ग़ित़फ़ान को साथ ले कर मदीने पर ह़म्ला करने वाले हैं तो उन की इस चढ़ाई को रोकने के लिये सोला सो (1,600) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का लश्कर साथ ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ैबर रवाना हुवे, रात के वक़्त ख़ैबर की ह़ुदूद में पहुंचे और नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द शहर में दाख़िल हुवे, कई रोज़ की जंग के बा'द बिल आख़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई ।[(2)]

सरदारे क़बीला की बेटी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला जो मिट्टी से फूल पैदा फ़रमाता है, इस पर भी क़ादिर है कि कुफ़्र के

1.....'ख़ैबर' **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا से शाम की त़रफ़ आठ[8] मन्ज़िल की दूरी पर है । [معجم البلدان، ۲/۴۰۹] एक अंग्रेज़ी सय्याह़ ने लिखा है कि ख़ैबर मदीने से 320 किलो मीटर दूर है । येह बड़ा ज़रख़ैज़ अ़लाक़ा था और यहां उ़म्दा खजूरें ब कसरत पैदा होती थीं । अ़रब में यहूदियों का सब से बड़ा मर्कज़ येही ख़ैबर था । (सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, बारहवां बाब, जंगे ख़ैबर, स. 380)

2.....सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, बारहवां बाब, जंगे ख़ैबर, स. 381-384 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बयाबानों में ईमान की कली खिला दे। आज यहां भी कुछ इसी त़रह़ का मुआ़मला होने वाला था कि सरदारे क़बीला की बेटी ईमान के नूर से मुनव्वर होने वाली थी, आज इस के दिल में ईमान की बहार आने वाली थी, इस की सआ़दत की मे'राज होने वाली थी, और शरफ़ो करामत का वोह ताज अ़त़ा होने वाला था जिस से इन्हें उम्मुल मोमिनीन या'नी क़ियामत तक आने वाले तमाम मोमिनों की मां होने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल हुवा। जब ख़ैबर के क़ैदियों को जम्अ़ किया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना दह़िय्या कल्बी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم इन में से एक बांदी मुझे इनायत फ़रमा दीजिये। आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने उन्हें इख़्तियार देते हुवे फ़रमाया : ख़ुद जा कर कोई बांदी ले लो। उन्हों ने सफ़िय्या बिन्ते हुयय को ले लिया।[1]

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़र्ज़ो मा'रूज़

सफ़िय्या बिन्ते हुयय क़बीला बनी नज़ीर के सरदार हुयय बिन अख़्त़ब की बेटी थीं और इन की वालिदा क़बीलए बनी क़ुरैज़ा के सरदार की बेटी थीं इस लिह़ाज़ से इन्हें दोनों क़बीलों की रईसा होने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल था, नीज़ येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद में से थीं और निहायत ह़सीनो जमील भी थीं। कहा गया है कि येह औ़रतों में सब से ज़ियादा रोशन व

1 ...سنن ابی داؤد، کتاب الخراج...الخ، باب ما جاء فی سھم الصفی، ص ٤٨٣، الحدیث: ٢٩٩٨.

www.dawateislami.net

चमकदार रंगत वाली थीं। इस लिये जब ह़ज़रते सय्यिदुना दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें मुन्तख़ब किया तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दिल में ख़याल गुज़रा कि इस क़दर कसीर शरफ़ो करामात की ह़ामिल ख़ातून हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ही होनी चाहिये क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन तमाम अवसाफ़ बल्कि हर अच्छी सिफ़त में सब से कामिल व अक्मल तर हैं, चुनान्चे, एक शख़्स दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने क़बीलए बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर की रईसा सफ़िय्या बिन्ते हुयय, ह़ज़रते दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दी हैं, वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा किसी और के लाइक़ नहीं।

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आ़म बांदियों में से किसी के लेने का इख़्तियार दिया था लेकिन जब इन्हों ने ह़सबो नसब और हुस्नो जमाल के ए'तिबार से सब से नफ़ीस बांदी को लिया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई ह़िक्मतों के पेशे नज़र सफ़िय्या को इन से वापस त़लब फ़रमाने का इरादा किया ताकि येह सारे लश्कर पर मुमताज़ न हों क्यूंकि लश्कर में इन से अफ़्ज़ल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी मौजूद थे, चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि दह़िय्या को सफ़िय्या के साथ बुला लाओ। जब

www.dawateislami.net

येह दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया कि सफ़िय्या के इलावा किसी और बांदी को मुन्तख़ब कर लो।(1)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करीमाना शान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने प्यारे मह़बूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को कौनैन का मालिको मुख़्तार बनाया है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस को जो चाहें, जब चाहें अ़त़ा फ़रमा दें और जिस को जब चाहें मन्अ़ फ़रमा दें, काइनात में किसी को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहनशाही के सामने पसो पेश की गुन्जाइश नहीं कि

ख़ालिके़ कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहां हैं आप के क़ब्ज़े व इख़्तियार में(2)

लेकिन येह प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करीमाना शान है कि किसी को मह़रूम नहीं फ़रमाते और अगर किसी ह़िक्मत के पेशे नज़र किसी से कुछ त़लब फ़रमाते भी हैं तो उसे बेहतरीन बदल अ़त़ा फ़रमाते हैं, यहां भी जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते दिह़्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات...الخ، ٤/٤٢٩، بتقدم وتاخر.
وسنن ابی داؤد، کتاب الخراج...الخ، باب ما جاء فی سھم الصفی، ص٤٨٣، الحدیث:٢٩٩٨، مختصرًا.

2 ....रसाइले नईमिय्या, सल्त़नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, स. 14

www.dawateislami.net

से सफ़िय्या बिन्ते हुयय को वापस त़लब फ़रमाया तो इन की दिलजूई के लिये इन्हें नव9 अफ़राद अ़ता फ़रमाए।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नफ़रत महब्बत में कैसे बदली....?

सफ़िय्या बिन्ते हुयय के वालिद, भाई और शोहर जंग में मुसलमानों के हाथों मारे जा चुके थे इस लिये इन के दिल में मुसलमानों खु़सूसन **सय्यिदुल मुस्लिमीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये सख़्त बुग़्ज़ो अ़दावत थी लेकिन हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ'ला अख़्लाक़ और ह़कीमाना त़र्ज़े गुफ़्तार ने इन्हें इस क़दर मुतअस्सिर किया कि चन्द लम्ह़ों में ही इन के ख़यालात का बहाव पलटने लगा, दिल के वीराने में सरकारे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत के फूल खिलने लगे और दिल में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का ऐसा दरया मौजज़न हुवा कि बुग़्ज़ो अ़दावत की मेल धुल कर बिल्कुल साफ़ व सुथरा हो गया, जैसा कि रिवायत में है, फ़रमाती हैं : मुझे रसूले खुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सब से ज़ियादा अ़दावत थी क्यूंकि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (के लश्कर) ने मेरे शोहर, बाप और भाई को हलाक कर डाला था। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देर तक मेरे सामने इन के क़त्ल की वुजूहात बयान फ़रमाते रहे, फ़रमाया : तुम्हारे बाप ने अ़रबों को मेरी दुश्मनी पर उभारा, उक्साया और जम्अ़ किया और ऐसे किया, ऐसे

---

1 ...السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر مغازیہ صلی اللہ علیہ وسلم، غزوۃ خیبر، ۳/۶۴.

www.dawateislami.net

किया.. ह़त्ता कि वोह बुग़्ज़ो अ़दावत मेरे दिल से जाती रही।[1] दूसरी रिवायत में फ़रमाया : और जब मैं अपनी जगह से उठी तो मुझे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब कोई न था।[2]

मदनी फूल

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर सिफ़ते मह़मूद की त़रह़ उ़म्दा सीरत व किरदार और हुस्ने अख़्लाक़ में भी उस आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे जिस में कोई आप का हमसर व हम पल्ला नहीं और येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना ही थे कि दुश्मन भी मुतअस्सिर हुवे बिग़ैर न रहता और जान का दुश्मन पलभर में जान कुरबान करने वाला बन जाता। इस से मा'लूम हुवा कि इस्लाम ने तीर व शमशीर के ज़ोर पर दुन्या के कोने कोने में रसाई नहीं पाई बल्कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे मिस्लो बे मिसाल हुस्ने अख़्लाक़ की बदौलत हर दिल अ़ज़ीज़ बना है। इस में हमारे लिये येह **मदनी फूल** भी है कि हमें अपने आक़ा व मालिक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुवे हुस्ने अख़्लाक़ का ऐसा पैकर बनना चाहिये जिस से हमारी बद आ'मालियों के अन्धेरे छट जाएं और हमारे हर हर क़ौलो फ़े'ल से इस्लाम का ह़क़ीक़ी हुस्न आश्कार हो और ऐ काश ! ऐसा हो जाए कि जो काफ़िर भी हमें देखे इस्लाम का हुस्न उस के दिल में

1 ...صحیح ابن حبان، کتاب المزارعۃ، ذکر خبر ثالث...الخ، ص۱۴۰۷، الحدیث:۵۱۹۹.

2 ...مسند ابی یعلی، ۱۷۷-حدیث صفیۃ بنت حیی، ۵/۳۱۸، الحدیث:۷۱۰۹.

www.dawateislami.net

बैठ जाए और ऐ काश...! ऐ काश...!! वोह कुफ़्र व गुमराही के अन्धेरों से निकल कर इस्लाम के उजालों में आ जाए।

दूर दुन्या का मेरे दम से अन्धेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए (1)

इस्लाम के सायए रहमत में...

प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ और हकीमाना तर्ज़े गुफ़्तार से जब इन के दिल से बुग़्ज़ो अदावत की आग बुझ गई तो महब्बत का ऐसा ठाठें मारता समन्दर रवां हुवा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें सब लोगों से ज़ियादा महबूब हो गए और फिर येह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हद दरजा ता'ज़ीमो तकरीम बजा लाने लगीं, चुनान्चे, दिल के अन्दर इस समन्दर को रवां हुवे अभी कुछ ही देर हुई होगी कि सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के पास तशरीफ़ लाए तो येह जिस शै पर बैठी हुई थीं उसे अपने नीचे से निकाल कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बिछा दिया।

सरकारे आली वक़ार, महबूबे रब्बे गफ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें दो2 बातों का इख़्तियार दिया कि या तो इन्हें आज़ाद कर दिया जाए और येह अपने घर वालों के पास चली जाएं या फिर येह इस्लाम क़बूल कर लें तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें अपने लिये ख़ास फ़रमा लें। इस पर इन्हों ने कहा : "اَخْتَارُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ मैं

(1).....कुल्लियाते इक़्बाल, बांगे दरा, स. 65

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इख़्तियार करती हूं।[1] और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें आज़ाद कर के निकाह़ फ़रमा लिया।[2] उस वक़्त इन की उ़म्र 17 साल के क़रीब थी।[3]"

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और हर चीज़ से बढ़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मह़ब्बत करना ईमान की जान है, इस सिलसिले में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरत हमारे लिये बेहतरीन राहनुमा है। ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते हुयय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا जिन्हें मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे अभी बहुत थोड़ा वक़्त हुवा था और इस थोड़े से वक़्त में ही इन के दिल में रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत इस क़दर पुख़्ता हो गई जिस ने तारीख़ में ता'ज़ीमो तकरीम की आ'ला मिसाल रक़म की, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन उ़मर वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की रिवायत के मुत़ाबिक़ जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर से वापसी का इरादा फ़रमाया[4] ऊंट क़रीब लाया गया, शाहे ग़यूर, मह़बूबे

---

1 ...صفۃ الصفوۃ، ١٣٣-صفیۃ بنت حیی...الخ، المجلد الاول، ٢/٣٦.

2 ...صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ص١٠٥١، الحدیث: ٤٢٠٠، ماخوذاً.

3 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ٤/٤٣٦.

4 .....दूसरी रिवायत के मुत़ाबिक़ येह वाक़िआ़ उस वक़्त पेश आया जब हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़ामे सहबा में क़ियाम फ़रमा कर आगे रवानगी का इरादा किया, देखिये : [صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ص١٠٥٣، الحدیث: ٤٢١١]

وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم.

www.dawateislami.net

रब्बे ग़फ़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को अपने कपड़े से पर्दा कराया और ज़ानूए मुबारक (घुटने के ऊपर की हड्डी, रान) को क़रीब किया ताकि हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا इस पर पाउं रख कर ऊंट पर सुवार हो जाएं ।[1] लेकिन क़ुरबान जाइये हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के अदब व ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप के इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के दिल ने येह गवारा न किया कि अपना पाउं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़ानू पर रखें, चुनान्चे, रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के पेशे नज़र आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ानूए मुबारक पर पाउं नहीं रखा बल्कि घुटना रख कर सुवार हुईं ।[2]

سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते हुयय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के सदक़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी हर क़िस्म की बे अदबी से महफ़ूज़ व मामून फ़रमाए और हर हर बात में हद्दे अदब की रिआयत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए कि है :

बा अदब बा नसीब   बे अदब बे नसीब

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...المغازی للواقدی، غزوۃ خیبر، انصراف رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۲/۷۰۸.

2 ...المعجم الکبیر للطبرانی، احادیث عبد اللہ بن العباس...الخ، مقسم عن ابن عباس، ۱۱/۳۸۲، الحدیث:۱۲۰۶۸.

www.dawateislami.net

क़ाफ़िले की वापसी

हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सुवार कराने के बा'द सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ऊंट पर सुवार हुवे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन पर अपनी मुबारक चादर डाल दी और फिर वापसी के लिये चल पड़े।(1) दौराने सफ़र येह वाक़िआ़ भी पेश आया कि हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ऊंघ आना शुरूअ़ हो गई जिस से बार बार इन का सर कजावे के पिछले ह़िस्से से टकराने लगा। फ़रमाती हैं : मैं ने प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाला कोई शख़्स नहीं देखा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रह़मत भरे हाथों से मुझे छू कर फ़रमाते : "یَا ھٰذِہٖ مَھْلًا یَا بِنْتَ حُیَیٍّ ऐ लड़की... ! ऐ हुयय की बेटी....! ठहरो, इन्तिज़ार करो।" ह़त्ता कि जब मक़ामे सहबा(2) आया तो फ़रमाने लगे : ऐ सफ़िय्या ! क्या मैं ने तुझ से इस की वुजूहात बयान नहीं की जो तुम्हारी क़ौम के साथ किया है...? इन्हों ने मुझे ऐसे ऐसे कहा था।(3)

मक़ामे सहबा में क़ियाम

इस मक़ाम पर पहुंच कर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रस्मे अ़रूसी अदा फ़रमाने का इरादा किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने

---

1 ...صفۃ الصفوۃ، ۱۳۳-صفیۃ بنت حیی...الخ، المجلد الاول، ۲/ ۳۷.
المغازی للواقدی، غزوۃ خیبر، انصراف رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۲/ ۷۰۸.

2 ....."मक़ामे सहबा" ख़ैबर से 12 मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है।
[کتاب المغازی، غزوۃ خیبر، انصراف رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۲/ ۷۰۸]

3 ...مسند ابی یعلی، حدیث صفیۃ بنت حیی، ۵/ ۳۲۰، الحدیث: ۷۱۱۵، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

एक ख़ादिमे ख़ास और जलीलुल क़द्र सहाबी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالٰی عنہ की वालिदा ह़ज़रते उम्मे सुलैम رضی اللہ تعالٰی عنہا से ह़ज़रते सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنہا को कंघी वग़ैरा कर के तय्यार करने के लिये कहा। ह़ज़रते उम्मे सुलैम رضی اللہ تعالٰی عنہا ने इन के कंघी की और इत़्र लगा कर तय्यार कर दिया, फिर इसी मक़ाम पर आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने रस्मे अ़रूसी अदा फ़रमाई।[1]

ह़ज़रते अबू अय्यूब رضی اللہ تعالٰی عنہ की पहरादारी

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से जिस दरजा अ़क़ीदतो मह़ब्बत थी और येह शम्ए़ रिसालत के परवाने आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर अपनी जानें निछावर करने के लिये हर वक़्त जिस त़रह़ तय्यार रहते थे तारीख़ के सफ़ह़ात इस की मिसाल बयान करने से क़ासिर हैं। आइये ! गुरौहे सह़ाबा के एक बरगुज़ीदा सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ के इ़श्क़े रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, ताजदारे रिसालत शहनशाहे नबुव्वत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने जब मक़ामे सहबा में पड़ाव किया तो येह शम्ए़ रिसालत के परवाने सारी रात गले में तल्वार लटकाए आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ह़िफ़ाज़त के लिये जागते रहे और ख़ैमे के गिर्द चक्कर लगाते रहे ह़त्ता कि जब सुब्ह़ हुई और रसूले नामदार, मदीने के

1 ...الطبقات الکبری، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۴۱۳۵-صفیۃ بنت حیی، ۹۶/۸، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुलाहज़ा किया तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ अबू अय्यूब ! क्या हुवा ? अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इन ख़ातून की त़रफ़ से अन्देशा हुवा क्यूंकि इन का बाप, शोहर और क़ौम के दीगर अफ़राद मुसलमानों के हाथों हलाक हो चुके हैं नीज़ येह नई नई मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुई हैं इस लिये मेरे दिल में इन की त़रफ़ से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जान पर अन्देशा गुज़रा । रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस जांनिसार की अ़ज़ीम सोच को **आफ़रीन** (ख़ुश आमदीद) करते हुवे बारगाहे रब्बे ज़ुल जलाल में दुआ़ की : "اَللّٰھُمَّ احْفَظْ اَبَا اَیُّوْبَ کَمَا بَاتَ یَحْفَظُنِیْ" ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जैसे अबू अय्यूब ने सारी रात जाग कर मेरी ह़िफ़ाज़त की है तू भी इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमा ।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ते हुवे ह़ज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ऐसी ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम फ़रमाया कि देखने और सुनने वाले अंगुश्त ब दन्दां (या'नी ह़ैरान) रह गए। इस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि हिजरत के 50 वें साल ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुस्त़न-त़ीना (قُسْ-طَنْ-طِیْ-نَہ नया नाम "इस्तम्बुल") को फ़त्ह़ करने के लिये जो लश्कर रवाना फ़रमाया इस में मेज़बाने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शामिल थे, यहां पहुंच कर इन का इन्तिक़ाल हो

(1)...السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، بناء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بصفیۃ، المجلد الثانی، ۳/۲۲۵.

www.dawateislami.net

गया। इन्तिक़ाल से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई कि इन्हें रूम से क़रीब तरीन मक़ाम पर दफ़्न किया जाए, ह़स्बे वसिय्यत दफ़्न कर दिया गया। अहले रूम ने जब इन के बारे में दरयाफ़्त किया तो मुसलमानों ने कहा : येह हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक बरगुज़ीदा सह़ाबी हैं। बोले : तुम लोग किस क़दर अह़मक़ हो, क्या तुम्हें इस बात का बिल्कुल ख़ौफ़ नहीं कि हम तुम्हारे बा'द इन की क़ब्र खोद कर लाश की बे हुर्मती करेंगे ? जब लश्करे इस्लाम के सिपह सालार को येह बात पहुंची तो इन की त़रफ़ कह भेजा : अगर तुम ने ऐसा करने की जुरअत की तो हम अ़रब की सर ज़मीन में मौजूद तुम्हारे हर गिर्जे को गिरा कर ज़मीन बोस कर देंगे और तुम्हारे बुज़ुर्गों की क़ब्रें खोद डालेंगे। येह सुन कर अहले रूम के दिलों में मुसलमानों की दहशत बैठ गई और उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक क़ब्र की ह़िफ़ाज़त करने और इकराम बजा लाने की क़सम खाई। रिवायत में है कि अहले रूम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र के वसीले से बारिश की दुआ़ मांगते और इन्हें बारिश से सैराब किया जाता।(1)

लम्ह़ए फ़िक्रिया

इस वाक़िए़ से पहले के मुसलमानों के जाहो जलाल और हैबत व अ़ज़मत का पता चला कि त़ाक़त वर तरीन क़ौमों के दिलों पर भी इन की अ़ज़मत का सिक्का बैठा हुवा था और इन की हैबत से कुफ़्फ़ार के सीने

(1)...الروض الأنف، ابو ایوب فی حراسة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۴/۹۴، ملخصًا.

www.dawateislami.net

दहल कर रह जाते थे लेकिन आज इस के बिल्कुल बर अक्स बुज़दिल से बुज़दिल और कमज़ोर से कमज़ोर क़ौम भी मुसलमानों को आंखें दिखा रही है, इस की एक बड़ी वज्ह क़ुरआन और साहिबे क़ुरआन صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ता'लीमात को भुला बैठना और इन पर अ़मल न करना है। आह ! सद आह !

निशाने राह दिखाते थे जो सितारों को
तरस गए हैं किसी मर्दे राह दां के लिये [1]

याद रखिये ! येह नाज़ुक सूरते ह़ाल हमारे लिये **लम्ह़ए फ़िक्रिया** है कि अगर अब भी हम ने क़ुरआन की ता'लीमात को भुलाए रखा और साहिबे क़ुरआन صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के फ़रामीन पर अ़मल न करते हुवे गोया इन्हें पसे पुश्त डाले रखा तो एक वक़्त आएगा जब हमारा निशान तक मिट जाएगा। आइये ! सरकारे दो आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के फ़रामीन पर जी जान से अ़मल कर के इस नाज़ुक सूरते ह़ाल से निमटने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये اِنْ شَآءَاللہ عزوجل ज़माने में एक बार फिर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा और अस्लाफ़े किराम رحمھم اللہ السلام की त़रह़ आज का मुसलमान भी आने वाली नस्लों के लिये सुन्हरी तारीख़ रक़म करेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 .....कुल्लियाते इक़्बाल, बाले जिब्रील, स. 380

www.dawateislami.net

बरकत वाला वलीमा

प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़ामे सहबा में रात गुज़ार कर सुब्ह़ वलीमे का एहतिमाम फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बा बरकत दा'वत का ज़िक्र करते हुवे फ़रमाते हैं कि मैं ने मुसलमानों को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वलीमे की दा'वत दी, इस मुबारक वलीमे में न तो रोटी थी और न गोश्त, सिर्फ़ येह था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दस्तर ख़्वान बिछाने का हुक्म दिया तो वोह बिछा दिया गया, फिर इस पर खजूरें, पनीर और कुछ घी रखा गया[(1)] और मुसलमानों ने इसे खाया। येह मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक वलीमा था।[(2)]

मदीने के क़रीब ह़ादिसा

सहबा के मक़ाम पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन[3] शब क़ियाम फ़रमाया और फिर मदीने की त़रफ़ चल पड़े।[(3)] ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब हमें **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के दरो दीवार नज़र आने लगे तो हमारे दिल इस की त़रफ़ खींचने लगे जिस की वज्ह से हम ने अपनी सुवारियों को तेज़ कर दिया और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपनी सुवारी को तेज़

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ص ١٠٥٤، الحدیث: ٤٢١٣.
2 ...مسند أبی عوانۃ، کتاب النکاح ومایشاکلہ، باب ایجاب اتخاذ الولیمۃ...الخ، ٣/ ٥٥، الحدیث: ٤١٧٤.
3 ...صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ص ١٠٥٤، الحدیث: ٤٢١٣.

www.dawateislami.net

फ़रमा दिया । उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे बैठी हुई थीं, कि अचानक जानवर ने ठोकर खाई जिस से रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। फ़रमाते हैं : लोगों में से किसी ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ नहीं देखा ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इन्हें पर्दा कराया फिर हम आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई नुक़्सान नहीं हुवा ।(1)

मदीने शरीफ़ में आमद

जब सुल्त़ाने अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا में आमद हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर में ठहराया। अन्सार की औ़रतों ने जब इन के और इन के ह़ुस्नो जमाल के बारे में सुना तो देखने के लिये आने लगीं ।(2)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर को तोह़्फ़ा

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ख़ैबर से आई उस वक़्त आप के कानों में सोने की बालियां थीं। रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने येह बालियां

---

1 ...صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب فضیلة اعتاقه...الخ، ص۵۳۳، الحدیث:۱۳۶۵.

2 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواجه رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ، ۴۱۳۵–صفیة بنت حیی، ۸/۱۰۰.

www.dawateislami.net

रसूले खुदा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और इन के साथ वाली औ़रतों को तोह़फ़े में दे दीं ।[1]

ज़िन्दगी के ह़सीन लम्ह़ात

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर काशानए नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन तरीन लम्ह़ात का आग़ाज़ किया, शबो रोज़ सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे गफ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से फ़ैज़याब होते हुवे इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ का ज़ौक़ो शौक़ ह़ासिल किया और सुब्ह़ो शाम ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ की पाकी बयान करते हुवे गुज़ारने लगीं नीज़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मी व रूह़ानी फ़ैज़ान से भी ख़ूब ख़ूब बहरावर होने लगीं, एक दफ़्अ़ा का ज़िक्र है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास चार[4] हज़ार गुठलियां पड़ी हुई थीं जिन पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا तस्बीह़ पढ़ रही थीं । येह देख कर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब से मैं तुम्हारे पास खड़ा हूं इस दौरान मैं ने तुम से ज़ियादा रब तबारक व तआ़ला की पाकी बयान कर ली है । इसे सुन कर ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अ़र्ज़ करने लगीं :

---

1 ...المرجع السابق.

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे भी सिखाइये। इरशाद फ़रमाया कि इस त़रह़ कहो : "سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जितनी उस की मख़्लूक़ की ता'दाद है।"(1)

क़ियामत ख़ैज़ सानिह़ा

शबो रोज़ इसी त़रह़ हंसी ख़ुशी बसर हो रहे थे कि वोह दिल फ़िगार वाक़िआ़ पेश आया जिस से शम्ए़ रिसालत के ह़क़ीक़ी परवानों के दिल दहल कर रह गए और इन पर क़ियामत से पहले एक क़ियामत आ गई। येह वाक़िआ़ साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने का है। ज़रा सोचिये ! वोह आ़शिक़ाने रसूल जो कुछ देर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर का दीदार न कर पाते तो बेताब हो जाते, इस क़ियामत ख़ैज़ सानिह़े से उन पर क्या बीती होगी, यक़ीनन उन की दुन्या ही वीरान हो कर रह गई होगी, लेकिन क़ुरबान जाइये कि इस नाज़ुक मर्ह़ले में भी अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उन सच्चे पैरूकारों ने शरीअ़त के दामन को हाथ से न छोड़ा और इस त़रह़ सब्र व ह़ौसले की बे मिसाल तारीख़ रक़म की। वफ़ाते अक़्दस से कुछ पहले जब बीमारी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे नाज़नीन से बरकत लेने आई तो उसी वक़्त आ़शिक़ाने रसूल के दिल बेताब हो गए, उन के बस में न था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लाह़िक़ होने वाले इस मरज़ शरीफ़ को अपने ऊपर ले लेते, उसी दौर की बात है कि एक दफ़्अ़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाक अज़्वाज आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास

---

1 ...مسند ابی یعلی، حدیث صفیۃ بنت حیی...الخ، ۵/۳۱۹، الحدیث:۷۱۱۳.

www.dawateislami.net

जम्अ़ थीं इतने में ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बे क़रार हो कर अ़र्ज़ करने लगीं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब ख़ुदा ! मैं चाहती हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मरज़ मुझे लाह़िक़ हो जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दिलों के राज़ जानने वाले प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की तस्दीक़ करते हुवे फ़रमाया : "وَاللّٰہِ اِنَّہَا لَصَادِقَۃٌ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सच कहती हैं।"(1)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द ख़ुशनुमा उ़नवान मुलाह़ज़ा किये, इन में एक नुमायां बात प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इ़श्क़ो मह़ब्बत, प्यार और उल्फ़त का दर्स है। इस्लाम ला कर और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने जिस त़रह़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ बसर किये ह़क़ीक़त येह है कि इन के बयान का लफ़्ज़ लफ़्ज़ जाने काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मह़ब्बत व उल्फ़त का दर्स देता है और इन के ह़र्फ़ ह़र्फ़ से इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छलकता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी नसीब फ़रमाए। आइये ! अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के नाम व नसब और ख़ानदान के ह़वाले से सीरत की चन्द इब्तिदाई और बुन्यादी बातें मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

(1)...الطبقات الکبریٰ، ذکر الحزن علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۲/۲۳۹، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम सफ़िय्या है, येह भी कहा गया है कि पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम ज़ैनब था फिर जब क़ैदी हो कर आईं और सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें अपने लिये मुन्तख़ब फ़रमाया तो सफ़िय्या कहा जाने लगा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वालिद का नाम हुयय और वालिदा ज़र्रा बिन्ते समव-अल (سَ-مَوْ-اَل) हैं । हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बनी इस्राईल में से हज़रते सय्यिदुना हारून बिन इमरान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद में से हैं ।[1] नसब इस तरह है : **“सफ़िय्या बिन्ते हुयय बिन अख़्तब बिन अबू यह्या बिन का'ब बिन ख़ज़रज बिन अबू ह़बीब बिन नज़ीर बिन ख़ज़रज बिन ज़रीह़ बिन तूमान बिन सिब्त़ बिन यसअ़ बिन सा'द बिन लावा बिन ज़ुबैर बिन नह्ह़ाम बिन बन्ह़ूम बिन अ़ज़रा बिन हारून बिन इमरान बिन बस्हर बिन क़ह्स बिन लावा बिन या'क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम”** (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)[2]

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नसब हुज़ूर अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواهب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه، ۴/۴۲۸، ملتقطاً.

2 ...معرفة الصحابة لابی نعیم، ذکر الصحابیات من البنات والزوجات، ۳۷۵۵-صفیة بنت حیی بن اخطب، ۶/۳۲۳۲.

www.dawateislami.net

मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल जाता है, क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बनी इस्राईल (बनी या'क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) में से हैं और प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बनी इस्माईल (बनी इस्माईल बिन इब्राहीम عَلَیۡہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) में से हैं।

क़बीला और विलादत

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का तअ़ल्लुक़ **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا के एक यहूदी क़बीले बनी नज़ीर से था। पीछे गुज़र चुका कि जिस वक़्त सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के साथ निकाह़ फ़रमाया उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की उ़म्र 17 साल थी और चूंकि येह सात हिजरी का वाक़िआ़ है लिहाज़ा इस ए'तिबार से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की विलादत हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ए'लाने नबुव्वत के तक़रीबन दो[2] साल बा'द बनती है। وَاللہُ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم

ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के मामूंजान

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के मामूंजान ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ बिन समव-अल क़ुरज़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ईमान ला कर शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़ हुवे।[(1)]

रिवायते ह़दीस

अह़ादीस की राइज किताबों में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी अह़ादीस की कुल ता'दाद दस है, जिन में से एक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है और

1 ...اسد الغابۃ، باب الراء والفاء، ١٦٩٠-رفاعہ بن سموال، ٢/٢٨٣.

www.dawateislami.net

बाक़ी नव दीगर किताबों में दर्ज हैं।[1] जिन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से अहादीस रिवायत की हैं उन में हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन हुसैन बिन अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) जैसी अ़ज़ीम हस्ती भी शामिल हैं।[2]

चन्द मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

जब आ़म सी मिट्टी कुछ अ़र्से किसी फूल की सोहबत में रहती है तो उस की ख़ुश्बू से महक उठती है तो जो प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत से बहरा वर हो वोह क्यूं कर मह़रूम रह सकता है। उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने भी सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चश्मए इल्मो अ़मल से सैराब हो कर शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में गुज़ारे और अपने बा'द के ज़माने वालों के लिये एक आ'ला मिसाल रक़म की, येही वज्ह है कि ज़ोहदो इबादत वग़ैरा अवसाफ़े आ़लिय्या के ह़वाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का शुमार उन औ़रतों में होता है जिन्हों ने इन सिफ़ाते आ़लिय्या में तमाम औ़रतों की सरदारी का दरजा पाया, जैसा कि तारीख़े इब्ने कसीर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के बारे में मज़्कूर है : ''كَانَتْ مِنْ سَيِّدَاتِ النِّسَاءِ عِبَادَةً وَّ وَرَعًا وَّ زَهَادَةً وَّبِرًّا وَّصَدَقَةً'' हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا इबादत, तक़्वा, ज़ोहद, नेकी और सदक़े

1 ...सीरते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन्नीसवां बाब, हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا, स. 683

2 ...شرح الزرقانی علی المواهب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه...الخ، ٤/ ٤٣٥.

www.dawateislami.net

के ए'तिबार से उन औ़रतों में से थीं जो तमाम औ़रतों की सरदार हैं।"(1) और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : كَانَتْ صَفِيَّةُ عَاقِلَةً حَلِيْمَةً فَاضِلَةً " ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا बहुत अ़क़्ल मन्द, बुर्दबार और साह़िबे फ़ज़्लो कमाल ख़ातून थीं।"(2) आइये ! आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के चन्द और फ़ज़ाइलो मनाक़िब मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

रिज़ाए रसूल की त़लब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की नाराज़ी ईमान के लिये सख़्त तबाह कुन है येही वज्ह थी कि सह़ाबा व सह़ाबियात رضوان اللہ تعالٰی علیھم اجمعین हमेशा आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की नाराज़ी से बचते रहते थे, हर बात में आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की पसन्दीदगी व ना पसन्दीदगी का ख़याल रखते थे और अगर कभी किसी मौक़ए़ पर आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की नाराज़ी का शुबा भी हो जाता तो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को राज़ी व ख़ुश करने की हर कोशिश कर डालते, आइये ! इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا की एक ईमान अफ़रोज़ और सबक़ आमोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, रिवायत का ख़ुलासा है कि जब सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم अपनी पाक

---

1 ...البداية والنهاية، السنة الخمسين للهجرة، صفية بنت حيي، المجلد الرابع، ٨/٤٣٥.

2 ...الاصابة، كتاب النساء، حرف الصاد المهملة، ١١٤٠٧-صفية بنت حيي، ٨/٢٣٣.

www.dawateislami.net

अज़्वाज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ को साथ ले कर ह़ज के लिये रवाना हुवे तो रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का ऊंट गिर पड़ा जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रो पड़ीं । रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दस्ते रह़मत से इन के आंसू पोंछने लगे लेकिन येह रोती रहीं । जब रोना बहुत ज़ियादा हो गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सख़्ती से मन्अ़ फ़रमाया और लोगों को पड़ाव करने का हुक्म दे दिया ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ाव का इरादा न था । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक ख़ैमा नस्ब किया गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस में तशरीफ़ ले गए । यका यक ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने के लिये अपनी बारी का दिन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को हिबा कर दिया, चुनान्चे, रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास जा कर कहा : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को मा'लूम है कि मैं रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अपनी बारी का दिन कभी किसी शै के बदले नहीं दे सकती लेकिन मैं येह आप को इस शर्त़ पर देती हूं कि आप प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुझ से राज़ी कर दें ।(1)

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करम नवाज़ी

माहे रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की बात है कि जब सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में ए'तिकाफ़ किये

(1) ...مسند احمد، مسند النساء، حدیث صفیة...الخ، ۱۱/۱۲۳، الحدیث: ۲۷۶۲۲، ملخصًا.

www.dawateislami.net

हुवे थे, एक रात ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुईं, थोड़ी देर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू की फिर जब वापस जाने के लिये खड़ी हुईं तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उठ कर इन के साथ चले और मस्जिद के दरवाज़े तक सोह़बते बा बरकत से नवाज़ा।[1]

अ़फ़्वो दर गुज़र

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़िल्म व बुर्दबारी और अ़फ़्वो दर गुज़र की सिफ़त बहुत नुमायां थी, दूसरों की ख़त़ाओं पर चश्मपोशी करना और मुआ़फ़ कर देना आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अख़्लाक़ का ऐक दरख़्शां (دَرَخْشاں–रोशन) पहलू था, चुनान्चे, एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की एक बांदी ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आ कर ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में कोई झूटी बात कही, बा'द में जब इन्हें इस का इ़ल्म हुवा तो उस बांदी से पूछा : तुम्हें ऐसा करने पर किस ने उक्साया ? कहने लगी : शैत़ान ने। इस पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़फ़्वो दर गुज़र की क़ाबिले तक़्लीद मिसाल क़ाइम करते हुवे फ़रमाया : ''اِذْھَبِیْ، فَاَنْتِ حُرَّۃٌ जाओ ! तुम आज़ाद हो।''[2]

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب الاعتکاف، باب ھل یخرج المعتکف لحوائجہ الی باب المسجد، ص ۵۳۱، الحدیث: ۲۰۳۵، بتقدم وتاخر.

2 ...الاصابۃ، کتاب النساء، حرف الصاد المھملۃ، ۱۱۴۰۷-صفیۃ بنت حیی، ۸/۲۳۳، ملخصًا.

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत

ज़माने को अपने इल्म व तक़्वा और ज़ोह्दो इबादत के नूर से जगमगाते हुवे बिल आख़िर रमज़ानुल मुबारक के महीने में बक़ौले सहीह़ 50 हिजरी को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमाया, येह ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दौरे हुकूमत था। ब वक़्ते वफ़ात उ़म्र मुबारक 60 बरस थी। **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के मश्हूर क़ब्रिस्तान **जन्नतुल बक़ीअ़** में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दफ़्न किया गया।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तुर्बते मुबारक पर करोड़हा करोड़ रह़मतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का अ़मल

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इन्तिक़ाल की ख़बर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से बड़ी निशानी क़रार दिया और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सर ब सुजूद हो गए चुनान्चे, इस का वाक़िआ़ ज़िक्र करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ हमें **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में कोई आवाज़ सुनाई दी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मुझ से फ़रमाने लगे :

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات...الخ، ٤/٤٣٦، ملتقطاً.

व सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन्नीसवां बाब, ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, स. 683

www.dawateislami.net

ऐ इकरमा ! देखो, येह कैसी आवाज़ है ? फ़रमाते हैं : मैं गया तो पता चला कि प्यारे नबी صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ौजए मुतह्हरा हज़रते सफ़िय्या बिन्ते हुयय رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल हो गया है। जब मैं वापस आया तो हज़रते अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ को सजदे में पाया हालांकि अभी सूरज तुलूअ़ नहीं हुवा था, इस लिये मैं ने (तअ़ज्जुब के त़ौर पर) कहा : سُبْحَانَ اللہ عزوجل आप सजदा करते हैं, हालांकि अभी सूरज नहीं निकला....? हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : क्या प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने येह नहीं फ़रमाया कि जब तुम कोई निशानी देखो तो सजदा करो । ''فَاَیُّ اٰیَۃٍ اَعْظَمُ مِنْ اَنْ یَّخْرُجْنَ اُمَّھَاتُ الْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ بَیْنَ اَظْھُرِنَا وَ نَحْنُ اَحْیَاءٌ'' इस से बड़ी निशानी और कौन सी होगी कि उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن दुन्या से तशरीफ़ ले गईं हैं और हम अभी ज़िन्दा हैं....?''(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا की सीरत के चन्द बाब मुलाह़ज़ा किये, सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की सोह़बत की बरकत से इन की ज़िन्दगी इबादतो रियाज़त और ज़ोह्दो तक़्वा के नूर से किस क़दर नूरानी और किस दरजा पकीज़ा थी...!! ऐ काश ! इन के सदक़े हमारी ज़िन्दगी भी गुनाहों की नजासत से पाक हो

(1)...السنن الکبریٰ للبیھقی، کتاب صلاۃ الخسوف، باب من استحب الفزع...الخ، ۳/ ۴۷۷، الحدیث:۶۳۷۹، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

कर इबादत और तक़्वा की ख़ुश्बूओं से महक उठे, हमारे दिलों से गुनाहों की मैल धुल जाए और सीना प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की महब्बत का ख़ज़ीना बन जाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन क़ुदसी सिफ़ात शख़्सिय्यात के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अपने तर्ज़े ह़यात को ढालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के महके महके और प्यारे प्यारे मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से हज़ारों लाखों इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया है और गुनाहों की दल दल में धंसी हुई बे शुमार इस्लामी बहनें इस से निकल कर हुज़ूर रिसालत मआब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की पाक व मुक़द्दस अज़्वाज رضی اللہ تعالٰی عنھن की सीरत के सांचे में ढल गई हैं, आइये ! एक ऐसी ही इस्लामी बहन की **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा कीजिये :

मेरी इस्लाह़ हो गई

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **'मैं ह़यादार कैसे बनी ?'** के सफ़ह़ा 15 पर है : बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े रन्छोड़ लाइन (बग़दादी) की एक इस्लामी बहन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मैं गुनाहों के दल दल में बुरी त़रह़ धंसी हुई थी। नित नए फ़ेशन की दिलदादह थी। इल्मे दीन से दूरी की वज्ह से दुन्या की चका चौन्द ज़िन्दगी को ही अव्वलीन मक़्सद समझती थी जिस के बाइस दुन्या की महब्बत दिल में घर कर चुकी थी। मेरी इस्लाह़ की सूरत कुछ यूं हुई कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से

www.dawateislami.net

मुन्सलिक एक इस्लामी बहन की इनफ़िरादी कोशिश से दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई और दिल की काया ही पलट गई। कल तक दुन्या को ही सब कुछ समझती थी, इस की रंगीनियों की त़रफ़ मैलान था लेकिन दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों से या वहगोई, फ़ेशन परस्ती जैसे बुरे अफ़्आ़ल से छुटकारा नसीब हो गया। निय्यत की है कि اِنْ شَآءَاللہ عزوجل आख़िरी दम तक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहूंगी।

»»»»»»···«·»···««««««

चार[4] फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

- ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसे आग लकड़ी को।
- सदक़ा बुराइयों को ऐसे मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है।
- नमाज़ मोमिन का नूर है और
- रोज़ा दोज़ख़ से ढाल है।

[سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، ص٦٨٣، الحديث:٤٢١٠]

www.dawateislami.net

सीरते हज़रते मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا

सैरो सियाहत करने वाले फ़िरिश्ते

सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِنَّ لِلّٰہِ مَلَائِکَۃً سَیَّاحِیْنَ فِی الْاَرْضِ یُبَلِّغُوْنِیْ مِنْ اُمَّتِیَ السَّلَامَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते ज़मीन में सैरो सियाहत करते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं।''(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुल्हे हुदैबिय्या

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम छे[6] हिजरी की बात है कि प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया और चौदह सो (1400) से ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अपने साथ ले कर उ़मरह करने के लिये **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ रवाना हुवे(2) लेकिन कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार आड़े आए और मुसलमानों को मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने से रोक दिया, फिर कुफ़्फ़ार और मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ का एक मुआ़हदा तै़ पाया जिसे तारीख़ में सुल्हे हुदैबिय्या के नाम से

1 ...سنن النسائی، کتاب السھو، باب السلام علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ص۲۱۹، الحدیث:۱۲۷۹.

2 ...المواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، صلح الحدیبیۃ، ۱/۲۶۶، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

जाना जाता है। मुआ़हदे के मुत़ाबिक़ इस साल मुसलमानों को बिग़ैर उ़मरह किये ही वापस जाना होगा अलबत्ता आयिन्दा साल उ़मरह करने आएंगे लेकिन सिर्फ़ तीन[3] दिन ठहर कर वापस चले जाएंगे। जब सुल्ह़ नामा मुकम्मल हो गया तो नबिय्ये मोह़तरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुदैबिय्या के मैदान में ही एह़राम खोला, क़ुरबानी की और फिर अपने अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के साथ वापस मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले आए।(1)

वापसी के बा'द...

इस सुल्ह़ के बा'द चूंकि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की जानिब से जंग व जिदाल के ख़त़रात टल गए थे और एक त़रह़ से अम्नो सुकून की फ़ज़ा पैदा हो गई थी इस लिये अब सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूर दराज़ के अ़लाक़ों में बसने वाले लोगों को भी इस्लाम की दा'वत देने का इरादा फ़रमाया क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत किसी एक अ़लाक़े, शहर और मुल्क में मह़दूद नहीं बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत का दाइरा तो तमाम आ़लम का इह़ात़ा किये हुवे है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ात के नबी हैं और काइनात की कोई शै आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत पर ईमान लाने से बे नियाज़ नहीं। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़रबो अ़जम के मुख़्तलिफ़ सलात़ीन और बादशाहों की त़रफ़ ख़ुत़ूत़ रवाना फ़रमाए और उन्हें इस्लाम की त़रफ़ बुलाया। सुल्ह़े हुदैबिय्या के

1 ...الكامل فى التاريخ، ذكر عمرة الحديبية، ٢/٩٠، ملخصًا.

www.dawateislami.net

बा'द बादशाहों को दा'वते इस्लाम देने के इलावा और भी कई वाक़िआ़त पेश आए जिन में से एक मश्हूर वाक़िआ़ ग़ज़्वए ख़ैबर और इस के बा'द ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते हुयय رضی اللہ تعالٰی عنہا से निकाह़ का है। बहर ह़ाल वक़्त रफ़्ता रफ़्ता गुज़रता रहा और आयिन्दा साल रवानगी के दिन क़रीब आते रहे और फिर इन्तिज़ार के दिन बीत (गुज़र) गए और वोह सुहानी घड़ी भी आ ही गई जब माहे ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम सात[7] हिजरी का चांद नज़र आते ही तैबा के चांद صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने सह़ाबए किराम علیہم الرضوان को रख़्ते सफ़र बांधने का फ़रमाया और उ़मरह की तय्यारी करने का हुक्म दिया।

उ़मरतुल क़ज़ा

रिवायत में है कि जब ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम का चांद नज़र आया तो शाहे बह़रोबर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने अपने अस्ह़ाब رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین को हुक्म फ़रमाया कि "अपने गुज़श्ता उ़मरे की क़ज़ा करें और जो लोग हुदैबिय्या में मौजूद थे उन में से कोई भी पीछे न रहे।" फ़रमाने रसूल पर लब्बैक कहते हुवे सब ही उ़मरे के लिये निकल खड़े हुवे सिवाए उन ह़ज़रात के जो ग़ज़्वए ख़ैबर में जामे शहादत नोश फ़रमा चुके थे या जिन का इन्तिक़ाल हो चुका था, बहुत सारे वोह लोग भी इन के साथ हो लिये जो हुदैबिय्या में मौजूद न थे। इस तरह़ औ़रतों और बच्चों के सिवा कुल ता'दाद दो[2] हज़ार (2000) तक पहुंच गई।(1) फिर आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने **मदीनतुल मुनव्वरा** زادھا اللہ شرفا و تعظیما पर ह़ज़रते अबू रुह्म कुल्सूम बिन हुसैन ग़िफ़ारी رضی اللہ تعالٰی عنہ या किसी

1 ...فتح الباری، کتاب المغازی، باب عمرۃ القضاء، ۷/۶۲۷، تحت الحدیث: ۴۲۵۲ ملتقطًا.

www.dawateislami.net

और सहाबी को अपना ख़लीफ़ा व नाइब मुक़र्रर किया और जानिबे मक्का सफ़र का आग़ाज़ फ़रमा दिया।(1)

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दरख़्वास्त

इस सफ़र का एक मश्हूर वाक़िआ़ शहनशाहे ज़ी वक़ार, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाना है जिस की वज्ह से इस सफ़र की शोहरत में कई गुना इज़ाफ़ा हो गया है चुनान्चे, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को शरफ़े हमराही से नवाज़ते हुवे **जुह़्फ़ा**(2) के मक़ाम पर पहुंचे तो यहां आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात की और ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़ालात के बारे में बताते हुवे अ़र्ज़ किया कि उन के शोहर का इन्तिक़ाल हो गया है और फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन से निकाह़ की दरख़्वास्त की।(3) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे क़बूल फ़रमा लिया।

ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पैग़ामे निकाह़

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ जब सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، باب عمرۃ القضاء، ۳/۳۱۴، ملتقطا.

2 ....."जुह़्फ़ा" **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا **से मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ चार[4] मन्ज़िल की दूरी पर वाक़ेअ़ है। येह मिस्र और शाम की त़रफ़ से आने वालों का मीक़ात है। [معجم البلدان، ۲/۱۱۱]

3 ...الاستیعاب، باب المیم، ۴۰۹۹-میمونۃ بنت الحارث، ۴/۱۹۱۷، ملخصًا.

www.dawateislami.net

याजज صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم[1] के मक़ाम पर पहुंचे तो यहां से ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رضی اللہ تعالٰی عنہ को ह़ज़रते मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا की त़रफ़ भेजा ताकि वोह इन्हें सरकारे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से निकाह़ का पैग़ाम दें।[2] मरवी है कि जिस वक़्त इन्हें आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम पहुंचा उस वक़्त येह ऊंट पर सुवार थीं, येह जां अफ़रोज़ ख़बर पा कर ख़ुद प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के लिये हिबा करते हुवे कहने लगीं : "اَلْبَعِیْرُ وَمَا عَلَیْهِ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ ऊंट और जो इस पर है ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का है।"[3] इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :[4]

وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِیِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِیُّ اَنْ یَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ (پ۲۲، الاحزاب:۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ईमान वाली औ़रत अगर वोह अपनी जान नबी की नज़्र करे अगर नबी इसे निकाह़ में लाना चाहे येह ख़ास़ तुम्हारे लिये है उम्मत के लिये नहीं।*

मरवी है कि ह़ज़रते मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا ने अपना मुआ़मला ह़ज़रते अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ के सिपुर्द कर (के उन्हें अपने निकाह़ का वकील बना) दिया, फिर ह़ज़रते अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

1 ...येह मक़ाम **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से आठ8 मील के फ़ासिले पर है। [معجم البلدان، ۵/۴۲۴]

2 ...السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر مغازیہ، عمرۃ القضاء...الخ، ۳/۹۱.

3 ...المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، توفیت میمونۃ...الخ، ۴/۳۹، الحدیث:۶۸۷۴.

4 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دُوُم دربیانِ ذکرِ ازواجِ مطہرات، ۲/۴۸۵.

www.dawateislami.net

के साथ इन का निकाह़ कर दिया(1) और चार[4] या पांच[5] सो दिरहम महर मुक़र्रर किया।(2)

मक्का शरीफ़ आमद और क़ियाम

हुज़ूर शहनशाहे मौजूदात, बाइसे ख़ल्क़े काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان सफ़र की तमाम मनाज़िल तै कर के चार[4] ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम की सुब्ह़ को मक्का शरीफ़ पहुंचे।(3) जब येह ह़ज़राते क़ुदसिय्या **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में दाख़िल हुवे तो कुफ़्रो शिर्क की नजासत से आलूद कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के दिल ग़ैज़ो ग़ज़ब से भर गए, इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम के ख़िलाफ़ उन के दिलों में जो नफ़रत व अ़दावत की आग जल रही थी और ज़ियादा भड़क उठी ह़त्ता कि रिवायत में है कि मुशरिकीन के सरदारों में से बा'ज़ बद बख़्त ग़ैज़ो ग़ज़ब और ह़सद की वज्ह से दूर चले गए ताकि जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देख पाएं। बहर ह़ाल सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन[3] रोज़ तक **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में क़ियाम फ़रमाया।(4)

---

1 ...المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، توفیت میمونۃ...الخ، ۵/۴۰، الحدیث:۶۸۷۴، ملتقطاً.

2 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات، میمونۃ ام المؤمنین، ۴/۴۲۳، ملتقطاً.

3 ...البدایۃ والنھایۃ، السنۃ السابعۃ للھجرۃ، عمرۃ القضاء، المجلد الثانی، ۴/۶۲۲.

4 ...المرجع السابق، ص۶۲۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

चौथे दिन ज़ोहर के वक़्त **सुहैल बिन अ़म्र** और **हुवैत़िब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा** आए, उस वक़्त प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्सार की मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे और ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू कर रहे थे, वोह आ कर कहने लगे : आप की मुद्दत ख़त्म हो गई है लिहाज़ा हमारे पास से चले जाइये। नबिय्ये मोह़तरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम मुझे कुछ देर और रहने दो ताकि मैं यहां रस्मे अ़रूसी अदा कर सकूं तो इस में तुम्हारा क्या जाता है, नीज़ इस के बा'द मैं तुम्हारे लिये खाने का भी एहतिमाम करूंगा....? उन्हों ने कहा : हमें आप के खाने की कोई ह़ाजत नहीं, बस ! हमारे हां से चले जाइये, ऐ **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हम आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस अ़हद का वासित़ा देते हैं जो हमारे और तुम्हारे दरमियान हुवा था कि हमारी ज़मीन से चले जाइये क्यूंकि मुआ़हदे के तीन[3] दिन पूरे हो चुके हैं। सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ उन की सख़्त कलामी देख कर ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़ब नाक हो गए और सुहैल से कहने लगे : तू ने झूट कहा है, येह ज़मीन तेरी है न तेरे बाप की, ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! हम यहां से नहीं हटेंगे मगर अपनी ख़ुशी व रिज़ा से।

मक्का से रवानगी और मक़ामे सरिफ़ में क़ियाम

ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जवाब समाअ़त फ़रमा कर प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ सा'द ! इन लोगों को तक्लीफ़ मत दो जो हमारी जाए क़ियाम में हम से

www.dawateislami.net

मिलने आए हैं, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को कूच (का ए'लान करने) का हुक्म दिया और फ़रमाया कि किसी मुसलमान को यहां शाम न होने पाए। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार हो कर चले ह़त्ता कि मक़ामे सरिफ़[1] में पहुंच कर ठहरे, तमाम लोग भी पहुंच गए सिर्फ़ ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीछे छोड़ दिया था ताकि वोह ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ले आएं। ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ शाम तक वहां ठहरे रहे फिर शाम के वक़्त ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ले कर चले[2] और मक़ामे सरिफ़ में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए। इस मक़ाम पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रस्मे अ़रूसी अदा फ़रमाई और फिर रात के इब्तिदाई ह़िस्से में जानिबे मदीना सफ़र का आग़ाज़ फ़रमा दिया।[3]

सीरते सह़ाबा के चन्द रोशन बाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता सफ़ह़ात में आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सरकारे नामदार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ का

1.....येह मक़ाम **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعۡظِیۡمًا से छे[6] मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। [معجم البلدان، ٣/٢١٢]

2...المغازی للواقدی، غزوة القضية، ٢/٧٤٠، ملتقطا.

3...البداية والنهاية، السنة السابعة للهجرة، عمرة القضاء، المجلد الثانی، ٤/٦٢٠، ملتقطا.

www.dawateislami.net

वाक़िआ मुलाहज़ा किया, इस से सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان की सीरत के ऐसे बहुत से रोशन व चमक दार बाब हमारे सामने आते हैं जिन पर अ़मल के नतीजे में हमारी दुन्या भी संवर सकती है और आख़िरत भी। आइये इन में से चन्द एक मुलाहज़ा कीजिये :

- मा'लूम हुवा कि इन्हें प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन्तिहाई महब्बत बल्कि इश्क़ था हत्ता कि अपने माल, जान, अवलाद और हर चीज़ से बढ़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़ीज़ जानते थे, जैसा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا के अ़मल से पता चलता है कि जब इन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचा तो फ़र्ते महब्बत व शौक़ से पुकार उठीं : "اَلْبَعِیۡرُ وَمَا عَلَیۡهِ لِلّٰهِ وَلِرَسُوۡلِهٖ ऊंट और जो कुछ इस पर है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है।"(1)
- येह भी इन हज़रात का इश्क़े रसूल ही था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बे अदबी का एक जुम्ला भी गवारा न करते थे जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ के अ़मल से पता चलता है कि जब कुफ़्फ़ार के नुमाइन्दों ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ सख़्त कलामी की तो येह ग़ज़ब नाक हो गए और उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया।

---

(1)...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، ذکر ازواجه الطاھرات، میمونة ام المؤمنین، ٤/٤٢٣، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

नीज़ मा'लूम हुवा कि येह ह़ज़राते कुदसिय्या रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी और आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हुक्म की बजा आवरी को हर चीज़ पर तरजीह़ देते थे और हमेशा हर मुआ़मले में आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा व ख़ुश्नूदी का ह़ुसूल इन के पेशे नज़र होता था । येही वज्ह है कि दुन्या व आख़िरत में इन्हें शरफ़ो करामत का वोह आ़ली व बुलन्द मक़ाम नसीब हुवा कि बड़े से बड़ा वली इन की गर्दे राह को भी नहीं पहुंच सकता ।

तआ़रुफ़े सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنھا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिस رضی اللہ تعالٰی عنھا की ज़िन्दगी में आने वाली उस दिल अफ़रोज़ साअ़त के बारे में पढ़ा जिस के बा'द इन्हें एक नया नाम और नई पहचान ह़ासिल हुई, वोह आ़ली व बुलन्द मक़ाम नसीब हुवा जिस से येह उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की मां होने) के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ हो गईं और शबो रोज़ सरकारे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ख़िदमते अक़्दस में गुज़ारते हुवे दीनो दुन्या की भलाइयां समेटने लगीं । आइये ! अब इन के नाम व नसब और ख़ानदान के ह़वाले से चन्द इब्तिदाई बातें मुलाह़ज़ा कीजिये :

नाम व नसब

आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का नाम पहले बर्रह था, सरकारे अक़्दस صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तब्दील फ़रमा कर मैमूना रखा । वालिद का नाम

www.dawateislami.net

हारिस है और वालिदा हिन्द बिन्ते औफ़ हैं। वालिद की त़रफ़ से आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का नसब इस त़रह है : **"मैमूना बिन्ते हारिस बिन हज़्न बिन बुजैर बिन हुज़्म बिन रुवैबा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हिलाल बिन आ़मिर बिन सा'सआ़ बिन मुआ़विय्या बिन बक्र बिन हवाज़िन बिन मन्सूर बिन इक्रमा बिन ख़सफ़ा बिन क़ैस बिन ऐ़लान बिन मुज़र"** और वालिदा की त़रफ़ से येह है : **"हिन्द बिन्ते औफ़ बिन ज़ुहैर बिन हारिस बिन हमात़ह बिन हिमयर"**(1)

रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से नसब का इत्तिसाल

हज़रते मुज़र رضی اللہ تعالٰی عنہ में जा कर आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का नसब रसूले ख़ुदा, अहमदे मुजतबा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है। वाज़ेह रहे कि हज़रते मुज़र رضی اللہ تعالٰی عنہ रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के 18 वें जद्दे मोहतरम हैं।

काशानए नबवी में आने से पहले....

जब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا ने बचपने की सीढियों को फलांग कर शुऊर की वादियों में क़दम रखा तो सब से पहले आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का निकाह मसऊ़द बिन अ़म्र सक़फ़ी से हुवा लेकिन किसी वज्ह से दोनों में अ़लाहिदगी हो गई फिर अबू रुह्म बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा के निकाह में आई, कुछ अ़र्से बा'द जब इस का इन्तिक़ाल

---

1 ...سبل الھدی والرشاد، جماع ابواب ذکر ازواجہ، ۱۲/ ۱۸و ۱۱۷، بتقدم وتاخر.

www.dawateislami.net

हो गया तो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक हुईं।[1]

ख़ानदानी शराफ़त व अ़ज़मत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का तअ़ल्लुक़ उस मुअ़ज़्ज़ज़ घराने से था जिसे शराफ़त व अ़ज़मत ने हर त़रफ़ से घेर रखा था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस आ़ली रुत्बा ख़ानदान को ऐसे बहुत से ए'ज़ाज़ात से नवाज़ा था जिन पर ज़माना रश्क करता है चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा हिन्द बिन्ते औ़फ़ के बारे में कहा जाता था कि येह सुसराली रिश्तों के ए'तिबार से सब से मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ातून हैं। इस की वज्ह येह थी कि इन की दो[2] बेटियां ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा और ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आईं कि जब ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया तो फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया और दीगर बेटियां भी मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन अफ़राद के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक थीं, चुनान्चे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन हाद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) जैसे अ़माइदीने

---

1 ...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات...الخ، میمونۃ ام المؤمنین، ۴/ ۴۱۹ و ۴۲۲، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

इस्लाम भी इन के दामादों में शामिल हैं।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के क़राबत दारों में ऐसे बहुत से मर्दों और औ़रतों के नाम आते हैं जो इस्लाम ला कर शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़ हुवे और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अजिल्ला सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ेहरिस्त में शामिल हुवे, यहां इन में से चन्द का ज़िक्र किया जाता है, चुनान्चे,

➥ ह़ज़रते उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सगी बहन हैं। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की ज़ौजा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शहज़ादे, जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की वालिदए माजिदा हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का नाम लुबाबा है और लुबाबतुल कुब्रा कहा जाता था। क़दीमुल इस्लाम सह़ाबियात में से हैं, एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बा'द सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाली ख़ातून आप ही हैं। रसूले अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के घर क़ैलूला (दोपहर के वक़्त का आराम) फ़रमाया करते थे।[2]

➥ ह़ज़रते सलमा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अख़्याफ़ी (मां शरीक) बहन हैं रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान

---

1 ...اسد الغابة، حرف اللام، ٧٢٥٢–لبابة بنت الحارث، ٧/٢٤٦، بتغير قليل.
2 ...المرجع السابق، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (رضی اللہ تعالٰی عنھما) की ज़ौजए मोह़तरमा थीं और इन की शहादत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद लैसी رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में आईं।[1]

➥ ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رضی اللہ تعالٰی عنہا

येह भी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا की अख़्याफ़ी (मां शरीक) बहन हैं। क़दीमुल इस्लाम सह़ाबिय्या हैं। पहले ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में थीं और इन्हीं के साथ ह़बशा और **मदीनतुल मुनव्वरा** زادھا اللہ شرفاً و تعظیماً की त़रफ़ हिजरत की, जब येह किसी ग़ज़्वे में शहादत से सरफ़राज़ हुवे तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में आईं और जब इन का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجھہ الکریم ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہا से निकाह़ फ़रमाया।[2]

नोट

मज़्कूरए बाला तीनों सह़ाबियात और ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا को सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने **अल अख़वातुल मोमिनात** के अ़ज़ीमुश्शान ख़ित़ाब से नवाज़ा है।[3]

---

1 ...المرجع السابق، حرف السين، ٧٠١٢-سلمى بنت عميس، ص١٤٩، ملتقطًا.

2 ...المرجع السابق، حرف الهمزة، ٦٧١٣-اسماءبنت عميس، ص١٢، ملتقطًا.

3 ...معرفة الصحابة لابي نعيم، باب السين، ٣٩٠٤-سلمى بنت عميس الخثعمية، ٦/٣٣٥٤، الحديث:٧٦٧٦.

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ

येह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के भान्जे हैं और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की सगी बहन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे फ़ज़्ल लुबाबतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के साहिबज़ादे हैं। हिजरत से तीन[3] साल पहले विलादत हुई और आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के वक़्त 13 बरस के थे । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के लिये इ़ल्मो हिक्मत की दुआ़ फ़रमाई थी। दो[2] मरतबा हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को बहुत ज़ियादा कु़र्ब ह़ासिल था ह़त्ता कि अजिल्ला सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان के साथ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को भी मश्वरे में शामिल रखते थे। आख़िर उ़म्र में नाबीना हो गए थे और 68 हिजरी को 71 साल की उ़म्र पा कर त़ाइफ़ में वफ़ात पाई।(1)

हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ

येह भी उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के भान्जे हैं। ज़मानए जाहिलिय्यत में कु़रैश के सरदारों में से थे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को **सैफ़ुल्लाह** के अ़ज़ीम

---

1 ...الاکمال، حرف العین، فصل فی الصحابۃ، ۵۰۷-عبداللہ بن عباس، ص ۶۳، ملتقطًا.

www.dawateislami.net

लक़ब से नवाज़ा था । ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में 21 हिजरी में वफ़ात पाई[1] और सो100 लश्करों में शरीक हुवे ब वक़्ते वफ़ात जिस्मे मुबारक में बालिश्त भर जगह भी ऐसी नहीं थी जिस पर चोट, नेज़े या तल्वार का निशान न हो ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ुदाए ज़ुल जलाल ने अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक अज़्वाज को बहुत आ़ली रुत्बा सिफ़ात से नवाज़ा था, अह़कामे शरअ़ की पासदारी, तक़्वा व परहेज़गारी, ज़ोह्दो इ़बादत अल ग़रज़ ऐसी बे शुमार सिफ़ात हैं कि अगर उन के ज़ाविये में उम्मत की इन मुक़द्दस माओं को देखा जाए तो दुन्या जहां की सब औ़रतों से नुमायां और ऊंचे मक़ाम पर नज़र आएंगी । ज़ेरे नज़र बयान चूंकि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरते त़य्यिबा पर मुश्तमिल है जो उम्महातुल मोमिनीन के सिलसिले की आख़िरी कड़ी है चुनान्चे, यहां इन्हीं की एक आ़ली रुत्बा सिफ़त का तज़्किरा किया जाता है, मुलाह़ज़ा कीजिये :

शरीअ़त की पासदारी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का एक बहुत ही नुमायां वस्फ़ शरीअ़त की पासदारी है, एक दफ़्आ़ का ज़िक्र है कि आप का कोई क़रीबी अ़ज़ीज़ आप के पास आया, उस के मुंह से शराब की बू आ रही थी जिस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

1 ...المرجع السابق، حرف الخاء، ۲۱۶-خالدبن الولید، ص ۲۹، ملتقطاً.

2 ...اسد الغابۃ، باب الخاء، ۱۳۹۹-خالدبن الولید...الخ، ۲/۱۴۳.

www.dawateislami.net

ने उसे फ़ौरन शरई अ़दालत में हाज़िर हो कर ए'तिराफ़े जुर्म करने और उस की सज़ा पाने का हुक्म दिया हत्ता कि रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : "لَئِنْ لَّمْ تَخْرُجْ اِلَى الْمُسْلِمِیْنَ فَیَجْلِدُوْکَ لَا تَدْخُلْ عَلٰی بَیْتِیْ اَبَدًا अगर तुम मुसलमानों के पास न गए ताकि वोह तुझे कोड़े लगाएं, तो आयिन्दा कभी मेरे घर न आना ।"(1)

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हुक्मे शरई के सिलसिले में किसी की रिआ़यत न करना और हर तअ़ल्लुक़ व रिश्तेदारी को बालाए त़ाक़ रख कर इस पर खुद भी अ़मल करना और दूसरों को भी अ़मल का दर्स देना वोह बुन्यादी वस्फ़ है जो दीने इस्लाम के अव्वलीन पैरूकारों ह़ज़राते सह़ाबए किराम और सह़ाबियात رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की अ़ज़मत का सिक्का हमारे दिलों में और ज़ियादा पुख़्ता करता है और दुश्मन भी इन की अ़ज़मत का ए'तिराफ़ किये बिग़ैर नहीं रहता लेकिन बद क़िस्मती से आज का मुसलमान अपने अस्लाफ़ के त़रीक़े से हटता चला जा रहा है येही वज्ह है कि कुफ़्फ़ार के दिलों में इस्लाम की हैबत व अ़ज़मत का जो सिक्का वोह ह़ज़रात अपने अ़मल से बिठा गए थे आज वोह ख़त्म होता जा रहा है और दीने इस्लाम के मानने वालों को हर त़रफ़ से परेशानियों और मुसीबतों का सामना है । आह...!!

गंवा दी हम ने जो अस्लाफ़ से मीरास पाई थी
सुरय्या से ज़मीन पर आस्मां ने हम को दे मारा(2)

---

1 ...الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٤١٣٧-میمونۃ بنت الحارث، ٨/١١٠.

2 .....कुल्लियाते इक़्बाल, बांगदरा, स. 192.

www.dawateislami.net

हालते एह़राम में निकाह़

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को येह ए'ज़ाज़ भी ह़ासिल है कि उम्मते मुस्लिमा को मुतअ़द्दिद मसाइल का ह़ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ज़रीए़ से मिला है जिन में से एक मस्अला हालते एह़राम में निकाह़ करने का है चूंकि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमाया उस वक़्त ह़ालते एह़राम में थे जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है : "تَزَوَّجَ مَيْمُوْنَةَ وَ هُوَ مُحْرِم" सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से ह़ालते एह़राम में निकाह़ फ़रमाया।"(1) चुनान्चे, इस से येह मस्अला मा'लूम हो गया कि मुह़रिम (जिस ने ह़ज या उ़मरे का एह़राम बांधा हो उस) को इस ह़ालत में निकाह़ करने की शरअ़न इजाज़त है।

सुन्नते मिस्वाक

मिस्वाक प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी कसरत से इस का इस्ति'माल फ़रमाया है और उम्मत को भी इस की बहुत ताकीद फ़रमाई है ह़त्ता कि फ़रमाया : अगर मुझे मोमिनीन को मशक़्क़त में डालने का ख़ौफ़ न होता तो इन्हें नमाज़े इशा ताख़ीर से पढ़ने और हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता।(2)

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب جزاء الصید، باب تزویج المحرم، ص۴۹۰ الحدیث:۱۸۳۷.

2 ...سنن ابی داؤد، کتاب الطھارۃ، باب السواك، ص۲۳، الحدیث:۴۶.

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस से आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिस्वाक से महब्बत का पता चलता है, येही वज्ह थी कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर अदा को दीवाना वार अपनाते थे, येह क्यूंकर मुमकिन था कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़दर ताकीदी हुक्म को पसे पुश्त डाल देते और अ़मल से रू गर्दानी करते...? उन शम्ए़ रिसालत के परवानों ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस हुक्म पर अ़मल के ह़वाले से भी तक़्लीदी किरदार अदा किया है और तारीख़ के सफ़ह़ात में एक आ'ला मिसाल रक़म की है। आइये इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अ़मल मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे, रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا मिस्वाक को पानी में भिगो कर रखती थीं अगर नमाज़ या किसी और काम में मश्ग़ूलिय्यत न होती तो मिस्वाक उठा कर करने लगतीं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू

- आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा और उम्मुल मोमिनीन (तमाम मोमिनों की अम्मीजान) हैं।
- रसूले रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से आख़िरी ज़ौजए मुत़ह्हरा हैं।

(1) ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الطھارات، ماذکر فی السواك، ۱/۱۹۷، الحدیث:۲۰.

www.dawateislami.net

- उन औ़रतों में से हैं जिन्हों ने ख़ुद को प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के लिये हिबा कर दिया था।
- प्यारे आक़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से ह़ालते एह़राम में निकाह़ फ़रमाया।(1)
- उन चार[4] बहनों में से हैं जिन्हें सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने अल अख़वातुल मोमिनात के दिल नशीन ख़ित़ाब से नवाज़ा था।(2)
- आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को येह ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल है कि सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मक़ामे सरिफ़ में आप رضی اللہ تعالٰی عنھا से निकाह़ फ़रमाया, इसी मक़ाम पर रस्मे अ़रूसी अदा फ़रमाई, फिर इसी मक़ाम पर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल हुवा।(3) और इसी मक़ाम पर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की मुबारक तुर्बत (क़ब्र) बनी।

सफ़रे आख़िरत

ज़माना एक अ़र्से तक आप رضی اللہ تعالٰی عنھا के इ़ल्मो अ़मल, ज़ोह्दो इ़बादत और तक़्वा व परहेज़गारी के नूर से चमकता दमकता रहा बिल आख़िर वोह वक़्त क़रीब आया जिस में आप ने इस दुन्याए फ़ानी से कूच करना था, उस वक़्त आप رضی اللہ تعالٰی عنھا **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا

1...صحيح البخاری، كتاب الصيد، باب تزويج المحرم، ص٤٩٠، الحديث:١٨٣٧.
2...معرفة الصحابة لابی نعيم، باب السين، ٣٩٠٤-سلمى بنت عميس الخثعمية، ٦/٣٣٥٤، الحديث:٧٦٧٦.
3...المعجم الاوسط للطبرانی، باب العين، من اسمه العباس، ٣/١٧٢، الحديث:٤٢٢٥.

www.dawateislami.net

में थीं, रिवायत में है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मरज़े वफ़ात ने शिद्दत इख़्तियार की तो फ़रमाने लगीं : मुझे **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا से बाहर ले जाओ क्यूंकि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बताया है कि मेरा इन्तिक़ाल मक्का में नहीं होगा। चुनान्चे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मक्का शरीफ़ से बाहर मक़ामे सरिफ़ में उस दरख़्त के पास लाया गया जिस के नीचे एक ख़ैमे में रसूले रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के साथ रस्मे अ़रूसी अदा फ़रमाई थी, तो आप का इन्तिक़ाल हो गया।[1]

साले वफ़ात

सहीह क़ौल के मुताबिक़ 51 हिजरी को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने पैके अजल को लब्बैक कहा और अपने आख़िरत के सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया।[2] येह हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का दौरे हुकूमत था।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत का एहतिराम

रिवायत में है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इन्तिक़ाल के बा'द आप के भान्जे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने लोगों से फ़रमाया : येह सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए पाक हैं, जब तुम इन का जनाज़ा

1...دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ما جاء في اخبارہ...الخ، ۶/۴۳۷۔

2...شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ۴/۴۲۳

www.dawateislami.net

उठाओ तो न ज़ोर से हिलाओ न झटके दो, इन पर बहुत नर्मी करो।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस से सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان के इश्क़े रसूल का पता चलता है कि इन हज़राते कुदसिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के कुलूब व अज़हान में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उल्फ़त व महब्बत इस क़दर पुख़्ता थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत का भी एह़तिराम करते थे। **याद रखिये !** शम्ए रिसालत के इन ह़क़ीक़ी परवानों ह़ज़राते सह़ाबए किराम व सह़ाबियात رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن का त़रीक़ा हमारे लिये बेहतरीन राहे अ़मल है और येह हमें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर निस्बत का अदबो एह़तिराम बजा लाने की तल्क़ीन करता है।

नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन

अ़ज़ीम सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और फिर क़ब्र में भी उतरे।[2]

रिवायते ह़दीस

अह़ादीस की राइज कुतुब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी अह़ादीस की कुल ता'दाद 76 है जिन में से सात[7] **मुत्तफ़क़ुन अ़लैह** (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में) हैं।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب کثرۃ النساء، الحدیث:٥٠٦٧.

2 ...شرح الزّرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ...الخ، ام المؤمنین میمونۃ، ٤/٤٢٤.

3 ...مدارج النبوۃ، قسم پنجم، باب دوم در ذکر ازواجِ مطہرات، ٢/٤٨٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इन पाक अज़्वाज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की सीरत हमारे लिये ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन नुमूना है, हमें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इन पाक व त़य्यिब अज़्वाज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की सीरत के मुत़ाबिक़ अपने त़र्ज़े ह़यात को ढालना चाहिये ताकि दुन्या व आख़िरत में फ़लाह़ व कामरानी से हम किनार हों और रोज़े क़ियामत जब मैदाने ह़श्र में ह़ाज़िर हों तो रब तबारक व तआ़ला की रह़मत के साए तले हों । आइये अपनी ज़िन्दगी को सीरते अस्लाफ़ के सांचे में ढालने के लिये दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो जाइये क्यूंकि इस मदनी माह़ोल की बरकत से बे शुमार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों और फ़ेशन के रसया लाखों अफ़राद मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के दीवाने बन गए हैं । आइये ! एक ऐसी ही इस्लामी बहन की **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा कीजिये :

इनफ़िरादी कोशिश की बरकत

बाबुल मदीना (कराची) में रिहाइश पज़ीर एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल हमारे घर वाले बद अ़मली का शिकार थे, घर में हर वक़्त फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों की आवाज़े गुंजती रहतीं, सभी घर वाले अपनी क़ब्र के इम्तिह़ान को भुलाए ग़फ़्लत की चादर ताने अपने अनमोल हीरे टीवी देखते हुवे ज़ाएअ़ कर देते थे । येही वज्ह थी कि घर में

www.dawateislami.net

बे सुकूनी और वह्शत की फ़ज़ा क़ाइम रहती, घर की ख़्वातीन बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنھا की अदाओं को अपना कर अपनी क़ब्रो आख़िरत को संवार ने के बजाए फ़िल्मी बेहया अदा काराओं की बेहूदा ह़रकात व सकनात के चुंगल में फंसी हुई थीं। घर का हर फ़र्द फ़ेशन की दुन्या में सरगर्दां था, कोई एक भी ऐसा न था जो बारगाहे इलाही में सर ब सुजूद होने की सआ़दत पाता हो, नमाज़ों की अदाएगी का दूर दूर तक ज़ेह्न न था, रोज़ाना अल्लाह عزوجل के घर से मुनादी फ़लाह़ व कामयाबी की दा'वत देता मगर हमारे कान तो गाने बाजे के इस क़दर आ़दी हो चुके थे कि इन नूरानी सदाओं का कोई असर न होता। अल ग़रज़ सारा घर गुनाहों की नुहूसत में डूब चुका था। अल्लाह عزوجل दा'वते इस्लामी को तरक़्क़ी व उ़रूज अ़ता फ़रमाए जो इस पुर फ़ितन दौर में लोगों को गुनाहों की दल दल से निकालने में अहम किरदार अदा कर रही है, ख़ुश क़िस्मती से एक दिन दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक बा पर्दा इस्लामी बहन ने हमारे घर के दरवाज़े पर दस्तक दी, उन्हों ने दिल मोह लेने वाले अन्दाज़ में सलाम करते हुवे अन्दर आने की इजाज़त त़लब की, इजाज़त मिलने पर वोह घर में दाख़िल हुईं और घर की तमाम ख़्वातीन को क़रीब आने की और **नेकी की दा'वत** सुनने की दा'वत पेश की। उन की पुर असर ज़बान से फ़िक्रे आख़िरत की बातें सुन कर दिल में एक हल चल सी मच गई, उन्हों ने दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले इस्लामी बहनों के **सन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शरीक हो कर इल्मे दीन की बरकतें समेटने का ज़ेह्न दिया, उन की पुर ख़ुलूस दा'वत की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि हम

www.dawateislami.net

बहुत जल्द ही सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जाने लगीं, इजतिमाअ़ में होने वाले पुरसोज़ बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने दिल पर छाए **'ग़फ़्लत'** के पर्दे चाक कर दिये, जिस के सबब गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से महब्बत हो गई, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे देखने सुनने से सभी ने तौबा कर ली, नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और बेपर्दगी को छोड़ कर शरई पर्दा करने लगीं, घर में सुकून की फ़ज़ा क़ाइम हो गई, हमारा सारा घराना सुन्नत का गहवारा बन गया, घर का हर एक फ़र्द क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मसरूफ़ हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर सब घर वाले दा'वते इस्लामी से बे पनाह मह़ब्बत करते और मदनी कामों की तरक़्क़ी व उ़रूज के लिये अपनी ख़िदमात सर अन्जाम देते हैं। मेरा छोटा भाई **मद्रसतुल मदीना** में हिफ़्ज़ की सआ़दत पा रहा है। येह सब फ़ैज़ाने दा'वते इस्लामी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की गुलामी पर इस्तिक़ामत और दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में रह कर ख़ूब ख़ूब नेकियां करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।(1)

ज़ियादा हंसने की मुमानअ़त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ज़ियादा न हंसा करो क्यूंकि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।

[سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، ص ٦٨١، الحديث:٤١٩٣]

---

1 .....अनोखी कमाई, स. 7

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

इजमाली फ़ेहरिस्त	4	**सीरते हज़रते ख़दीजा** رضی اللہ تعالٰی عنھا	**26**
किताब को पढ़ने की 13 निय्यतें	5	क़बूलिय्यते दुआ का एक सबब	26
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़	6	तारीकियों का ख़ातिमा	27
पेशे लफ़्ज़	8	क़दम क़दम हुज़ूरे अक़्दस ﷺ का साथ	29
उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنھن	**11**	एक अनमोल मदनी फूल	30
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	11	तआरुफ़े ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنھا	31
अज़्वाजे मुतह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की ता'दाद	11	अव्वलीन इज़्दिवाजी ज़िन्दगी	31
चार से ज़ियादा औरतें निकाह में रखना	13	विलादत और नाम व नसब	32
निकाह की हिक्मतें	14	रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से नसब का इत्तिसाल	32
अह्कामे शरीअ़त की तब्लीग़ो इशाअ़त	15	कुन्यत व अल्क़ाब	33
ग़लत् रुसूमात का ख़ातिमा	17	मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब	33
मुख़्लिस व जांनिसार अस्हाब की हौसला अफ़्ज़ाई	17	यादे ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنھا	34
ग़ुलामी से आज़ादी	19	चार अफ़्ज़ल जन्नती ख़वातीन	34
अज़्वाजे मुतह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنھن की शानो अ़ज़्मत	20	दुन्या में जन्नती फल से लुत्फ़ अन्दोज़	35

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत	35	दो मुबारक ख़्वाब	46
नमाज़े जनाज़ा	36	ख़्वाब हक़ीक़त के रूप में	47
तदफ़ीन	37	हज़रते सकरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल	47
सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की अवलाद	37	मसाइबो आलाम का पहाड़	47
रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अवलादे पाक	38	हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वफ़ात के बा'द...	48
क़ाबिले रश्क मौत	39	हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निकाह की पेशकश	49
सीरते हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا	**41**	हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को निकाह का पैग़ाम	50
सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी	41		
ज़ुल्माते शिर्क से अन्वारे तौहीद तक	42	हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह	52
اَلسّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ	42		
सब्रो इस्तिक़ामत	44	निकाह पर हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के भाई का रद्दे अमल	53
हिजरते हबशा की इजाज़त	44		
मुसलमानों की हिजरते हबशा और कुफ़्फ़ार का तआक़ुब	45	इस्लाम लाने के बा'द...	53
		हिजरते मदीना	55
हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की मक्का वापसी	46	मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में क़ियाम	56

www.dawateislami.net

रिज़ाए रसूल की त़लब	56	ईसार व सख़ावत	63
तआ़रुफ़े सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا	58	पर्दे का एहतिमाम	64
नाम व नसब	58	सय्यिदतुना सौदह رضی اللہ تعالٰی عنھا की	
कुन्यत	58	पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू	65
रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم		सफ़रे आख़िरत	66
से नसब का इत्तिसाल	59	**सीरते ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا**	**68**
हुल्या मुबारक और अवलाद	59		
मरवी अह़ादीस की ता'दाद	59	क़ियामत के ह़िसाब से जल्द नजात	68
चन्द शरफ़े सह़ाबिय्यत पाने		इस्लाम का सायए रह़मत	69
वाले क़राबतदार	60	विलादते सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا	70
ह़ज़रते अ़ब्द बिन ज़मआ़ رضی اللہ عنہ	60	ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा	
ह़ज़रते मालिक बिन ज़मआ़ رضی اللہ عنہ	60	رضی اللہ تعالٰی عنھا का इन्तिक़ाल	70
ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़मआ़ رضی اللہ عنہ	60	हु़ज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم	
मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइल व मनाक़िब	61	को निकाह़ की पेशकश	71
ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا		ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا को	
की पसन्दीदा शख़्सिय्यत	61	निकाह़ का पैग़ाम	72
मसर्रत भरा मुज़ाह़	61	हु़ज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم	
पसन्दीदा व ना पसन्दीदा मुज़ाह़ का बयान	62	को भाई कहना....??	73

www.dawateislami.net

हिजरते मदीना	74
सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रुख़्सती	76
काशानए नबवी में आने के बा'द	76
परों वाला घोड़ा	77
उमूरे ख़ानादारी	77
इल्मी शानो शौकत	78
इबादत गुज़ारी	78
शदीद गर्मी में भी रोज़ा	79
सख़ावत	79
हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल	81
सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करीमाना शान	82
सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की एक बड़ी फ़ज़ीलत	82
दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा	83
तआरुफ़े सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	84
नाम व नसब	84
कुन्यत	84

अल्क़ाब	85
रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल	85
मरवी रिवायात की ता'दाद	85
ख़ानदानी पस मन्ज़र	86
वालिदे गिरामी सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	86
वालिदए आलिय्या सय्यिदतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	87
भाईजान सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	88
सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाकीज़ा हयात के चन्द नुमायां पहलू	88
सफ़रे आख़िरत	90
दीदारे शहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	91
सीरते हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	**94**
बा'दे अज़ान दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	94

www.dawateislami.net

इस्लाम के झन्डे तले	95	ख़ानदाने सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنھا के चन्द जलीलुल क़द्र सह़ाबी	108
ह़ज़रते ख़ुनैस बिन हु़ज़ाफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से निकाह़	98	वालिदे माजिद	109
हिजरते मदीना	99	चचाजान	110
ग़ज़्वए बद्र	99	वालिदए माजिदा	111
ह़ज़रते ख़ुनैस رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात	100	फूफीजान	111
ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की फ़िक्रमन्दी	100	भाईजान	112
रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की हौसला अफ़्ज़ाई	101	ग़ज़्वए बद्र में ख़ानदाने ह़फ़्सा का किरदार	113
हु़ज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से निकाह़	102	रिवायत कर्दा अह़ादीस	113
ह़ज़रते ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنھا की इबादत गुज़ारी	105	सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू	114
मदनी फूल	106	सफ़रे आख़िरत	115
तआ़रुफ़े सय्यिदतुना ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنھا	107	**सीरते ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رضی اللہ تعالٰی عنھا**	**119**
विलादत, नसब और क़बीला	107	कसरते दुरूद के सबब नजात	119
रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से नसब का इत्तिसाल	108	तुलूए़ आफ़्ताबे इस्लाम	120
		काशानए नबवी में आने से पहले	121
		निराली दुआ़	121

www.dawateislami.net

जज़्बए शहादत	123	दुन्या तबाही के किनारे...	135
काशानए नबवी में.....	123	आफ़्ताबे रिसालत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की किरनें	136
तआरुफ़े सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا	124		
नाम व नसब	124	मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार के मज़ालिम	137
रसूले खुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से नसब का इत्तिसाल	125	इस्लाम पर इस्तिक़ामत....!!	139
		हिजरते ह़बशा का पस मन्ज़र	139
मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन ख़ातून	125	हिजरते ह़बशा	140
अल अख़वातुल मोमिनात	126	ह़बशा की ज़िन्दगी	141
सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू	127	मक्का वापसी और हिजरते मदीना	141
		ग़ज़्वए बद्र व उहुद	145
शर्हे ह़दीस	129	निराली वफ़ा	146
सफ़रे आख़िरत	130	सय्यिदुना अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ का लश्कर	147
हुजरए सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رضی اللہ تعالٰی عنھا	130	सय्यिदुना अबू सलमह رضی اللہ تعالٰی عنہ का इन्तिक़ाल	147
मैं ने मदनी बुर्क़अ़ कैसे अपनाया....?	131	प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की तशरीफ़ आवरी	148
सीरते ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا	**134**	नज़र, रूह़ के पीछे जाती है....	148
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	134	शर्हे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم	148
क़बूले इस्लाम और वाक़िआते हिजरत	135	अहले ख़ाना की आहो बुका	149

www.dawateislami.net

मग़्फ़िरत की दुआ़	149	ख़ानदानी और नसबी शराफ़तें	160
मय्यित पर रोना बुरा नहीं मगर...!!	149	शरफ़े इस्लाम	160
नौह़ा के मा'ना और हुक्म	150	रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم	
मुसीबत पर सब्र	150	से क़राबत दारी	162
मुसीबत में बेहतर इ़वज़ पाने का नुस्ख़ा	151	फ़ज़ाइलो मनाक़िब	162
शर्हे ह़दीस	152	हिक्मते अ़मली और मुआ़मला फ़हमी	162
रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم		मदनी फूल	165
के साथ निकाह़	153	फ़िक़्ह में महारत	166
निकाह़ की तारीख़ और रिहाइश गाह	155	सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا	
ह़क़्क़े महर	155	से सुवालात	167
नज्जाशी के दरबार से वापस आया		अय्यामे इ़द्दत में सुर्मे का इस्ति'माल	167
हुवा तोह़्फ़ा	156	इ़द्दत के चन्द अह़काम	167
शादी की रात खाना पकाना	157	नोट	168
बेहतरीन राहे अ़मल	157	दिल में शैत़ानी ख़याल आए तो...?	168
तआ़रुफ़े ह़ज़रते उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا	158	वस्वसा क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं	169
नाम व नसब	159	वस्वसा आए तो....?	169
रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم		नोट	170
से नसब का इत्तिसाल	159	रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم	
कुन्यत	159	से मह़ब्बत	171

www.dawateislami.net

कुल काइनात के मालिको मुख़्तार	171	तारीख़े विसाल	184
हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की		नमाज़े जनाज़ा व तदफ़ीन	185
ख़िदमत गुज़ारी	173	अवलादे अत्हार	185
मक़ामो मर्तबा	173	मैं रोज़ाना तीन चार फ़िल्में देख डालती	186
मूए सरकार से तबर्रुक	174	**सीरते हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह्श رضی اللہ تعالٰی عنھا**	**188**
जिब्रीले अमीन علیہ السلام की ज़ियारत	175		
ख़ुश्बूए रसूल	176	गुनाह कैसे ख़त्म हों......?	188
तौबा की क़बूलिय्यत	176	हल्क़ा बगोशे इस्लाम	189
सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا		हिजरते हबशा व मदीना	190
के प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم		घर पर क़ब्ज़ा	191
से सुवालात	177	सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा	
गुनाहों की नुहूसत	177	رضی اللہ تعالٰی عنہ से निकाह	192
नोट	179	महरे निकाह	193
मस्ख़शुदा क़ौम की नस्ल	179	शादी निभाई न जा सकी	193
यतीमों पर ख़र्च करने का सवाब	182	चन्द मदनी फूल	194
शर्हे हदीस	182	काशानए नबवी में...	197
सय्यिदतुना उम्मे सलमह رضی اللہ تعالٰی عنھا		रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का	
की पाकीज़ा हयात के चन्द नुमायां पहलू	183	पैग़ामे निकाह	197
सफ़रे आख़िरत	184	सय्यिदतुना ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنھا का जवाब	198

www.dawateislami.net

दा'वते वलीमा	199
बा बरकत ह़ल्वा	201
बे मिसाल निकाह़	204
निकाह़ में प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत	205
एक मज़्मूम रस्म का ख़ातिमा	206
ह़सीन तरीन लम्ह़ात	208
वाक़िअ़ए इफ़्क में सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का मौक़िफ़	209
तआ़रुफ़े सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا	210
नाम व नसब	211
रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब का इत्तिसाल	211
कुन्यत व अल्क़ाब	212
मरवी अह़ादीस की ता'दाद	212
चन्द अफ़रादे ख़ाना का तज़्किरा	213
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ	213
ह़ज़रते अबू अह़मद बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ	214
ह़ज़रते ह़मना बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا	214
ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا	215
मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब	215
दुन्या से बे रग़बती और बे मिसाल सख़ावत	215
दस्तकारी कर के सदक़ा	216
मक़ामो मर्तबा	217
पाबन्दिये शरीअ़त	218
सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू	219
सफ़रे आख़िरत	220
रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशन गोई	220
इन्तिक़ाले पुर मलाल	222
क़ब्र पर नस्ब होने वाला पहला ख़ैमा	223

www.dawateislami.net

हज़रते अबू अहमद رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़क़ीदतो महब्बत	223	बनी मुस्त़लक़ के जासूस का सर तन से जुदा	234
नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन	224	मुहाजिरीन व अन्सार के झन्डे	235
माले विरासत	226	जंग का मन्ज़र और नताइज	235
सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنھا की अफ़्सुर्दगी	226	सरदारे क़बीला की बेटी बर्रह बिन्ते ह़ारिस	236
		बर्रह बिन्ते ह़ारिस बारगाहे रिसालत में	237
सलातो सलाम की आ़शिक़ा	227	निकाह़ की पेशकश	238
सीरते ह़ज़रते जुवैरिय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا	**230**	ग़ुलामी से नजात और निकाह़	238
		बर्रह से जुवैरिय्या	239
नूरानी चेहरे वाला शख़्स	230	निकाह़ की ख़ैरो बरकत	240
ग़ज़्वए मुरैसीअ़	231	मदनी फूल	241
ग़ज़्वए मुरैसीअ़ का पस मन्ज़र	231	सह़ाबा की जां निसारी व इ़श्के़ रसूल	241
सय्यिदुना बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ क़बीलए बनी मुस्त़लक़ में...	232	ख़ुद सिताई के नाम न रखे जाएं	242
		ब वक़्ते ज़रूरत झूट बोलना.....	242
रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को इत्त़िलाअ़	232	फ़त्ह़ व कामरानी का ह़ुसूल	243
ग़ज़्वे में मुनाफ़िक़ीन की शिर्कत	233	तआ़रुफ़े सय्यिदतुना जुवैरिय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا	244
लश्करे इस्लाम का पड़ाव और एक शख़्स का क़बूले इस्लाम	233	नाम व नसब और क़बीला	244
		विलादत और निकाह़	245

www.dawateislami.net

हुस्नो जमाल	245	पैग़ामे निकाह़	262
वालिद और बहन भाइयों का क़बूले इस्लाम	246	ख़ुत़बए निकाह़	264
रिवायते ह़दीस	249	अबरहा को तोह़फ़ा	266
मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब	249	काशानए नबवी में....	267
गोद में चांद	249	निकाह़ पर अबू सुफ़्यान का रद्दे अ़मल	268
कसरते इ़बादत	250	ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم	269
जुमुआ़ के दिन का रोज़ा	251	तआ़रुफ़े सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا	271
सफ़रे आख़िरत	252	विलादत	271
अ़त्तारिया पर करम	254	नाम व नसब और कुन्यत	272
सीरते ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رضی اللہ تعالٰی عنہا	**256**	रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से नसब का इत्तिसाल	272
मजलिसे दुरूद का ए'ज़ाज़	256	शरफ़े सह़ाबिय्यत पाने वाले चन्द क़राबतदार	273
हिजरते ह़बशा और इस का पस मन्ज़र	258	ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ	274
ह़बशा की ज़िन्दगी	259	ह़ज़रते मुआ़विय्या बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہما	274
ख़्वाब और इस की भयानक ता'बीर	260	ह़ज़रते उ़त्बा बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہما	275
सय्यिदतुना रम्ला رضی اللہ تعالٰی عنہا का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल	260		
एक ख़ुश आईन ख़्वाब	262		
ख़्वाब ह़क़ीक़त के रूप में	262		

www.dawateislami.net

हज़रते यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا	275
रिवायते हदीस	276
फ़रमाने मुस्तफ़ा पर अ़मल	276
सोग के दिन कितने....?	277
सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की पाकीज़ा हयात के चन्द नुमायां पहलू	278
सफ़रे आख़िरत	279
वफ़ात शरीफ़ से कुछ पहले....	280
तज़्किरए अवलाद	280
मदनी फूल	281
बुराइयों से नजात	283
सीरते हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا	**285**
रात दिन के गुनाह मुआ़फ़	285
हक़ से मुंह फेरने वाले बद बख़्त लोग	287
यहूदियों की इस्लाम दुश्मनी	288
ग़ज़्वए ख़ैबर का मुख़्तसर बयान	289
सरदारे क़बीला की बेटी	289
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़र्ज़ो मा'रूज़	290
रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की करीमाना शान	292
नफ़रत महब्बत में कैसे बदली....?	293
मदनी फूल	294
इस्लाम के सायए रहमत में...	295
हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अदबो एहतिराम	296
क़ाफ़िले की वापसी	298
मक़ामे सहबा में क़ियाम	298
हज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की पहरादारी	299
लम्हए फ़िक्रिया	301
बरकत वाला वलीमा	303
मदीने के क़रीब हादिसा	303
मदीने शरीफ़ में आमद	304
रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर को तोहफ़ा	304

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी के हसीन लम्हात	305	**सीरते हज़रते मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنھا**	**318**
क़ियामत ख़ेज़ सानिहा	306		
तआरुफ़े सय्यिदतुना सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا	307	सैरो सियाहत करने वाले फ़िरिश्ते	318
नाम व नसब	308	सुल्हे हुदैबिय्या	318
रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से नसब का इत्तिसाल	308	वापसी के बा'द..	319
		उमरतुल क़ज़ा	320
क़बीला और विलादत	309	हज़रते अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ की दरख़्वास्त	321
हज़रते सफ़िय्या رضی اللہ تعالٰی عنھا के मामूंजान	309	हज़रते मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنھا को पैग़ामे निकाह	321
रिवायते हदीस	309		
चन्द मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब	310	मक्का शरीफ़ आमद और क़ियाम	323
रिज़ाए रसूल की तलब	311	मक्का से रवानगी और मक़ामे सरिफ़ में क़ियाम	324
प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की करम नवाज़ी	312	सीरते सहाबा के चन्द रोशन बाब	325
अफ़्वो दर गुज़र	313	तआरुफ़े सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنھا	327
सफ़रे आख़िरत	314		
हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنھما का अमल	314	नाम व नसब	327
मेरी इस्लाह हो गई	316	रसूले ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से नसब का इत्तिसाल	328

www.dawateislami.net

काशानए नबवी में आने से पहले....	328	हालते एह़राम में निकाह़	335
ख़ानदानी शराफ़त व अ़ज़मत	329	सुन्नते मिस्वाक	335
ह़ज़रते उम्मे फ़ज़्ल رضی اللہ تعالٰی عنہا	330	सय्यिदतुना मैमूना رضی اللہ تعالٰی عنہا की पाकीज़ा ह़यात के चन्द नुमायां पहलू	336
ह़ज़रते सलमा बिन्ते उ़मैस رضی اللہ تعالٰی عنہا	330	सफ़रे आख़िरत	337
ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رضی اللہ تعالٰی عنہا	331	साले वफ़ात	338
नोट	331	हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की निस्बत का एह़तिराम	338
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما	332	नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन	339
		रिवायते ह़दीस	339
ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ	332	इनफ़िरादी कोशिश की बरकत	340
मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइलो मनाक़िब	333	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	343
शरीअ़त की पासदारी	333	माख़ज़ो मराजेअ़	357

»»»»»»···«·»···««««««

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह عزَّوَجَلَّ से उस इ़ल्म का सुवाल करो जो फ़ाइदा पहुंचाए और उस इ़ल्म से पनाह मांगो जो फ़ाइदा न पहुंचाए।

[سنن ابن ماجه، كتاب الدعاء، باب ماتعوذ منه...الخ، ص٦١٦، الحديث:٣٨٤٣]

www.dawateislami.net

माख़ज़ो मराजेअ़

☼	القرآن الکریم	کلام باری تعالیٰ	☼—☼—☼
نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف مع سن وفات	ناشر مع سن طباعت
		तर्जमए क़ुरआन व तफ़ासीर	
1	کنـز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
2	تفسیر البغوی	امام محی السنۃ ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	پشاور ۱۴۲۳ھ
3	الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۳۲ھ
4	تفسیر روح المعانی	شہاب الدین ابو فضل سید محمود آلوسی بغدادی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
5	خزائن العرفان	مفتی سید محمد نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
6	نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
7	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات

www.dawateislami.net

अहादीस व शुरूहात

8	المؤطا برواية يحيى بن يحيى الليثي	امام دارِ ہجرت مالک بن انس بن مالک مدنی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۳۳ھ
9	المصنف فى الأحاديث والآثار	امام عبداللہ بن محمد ابن ابو شیبہ، متوفی ۲۳۵ھ	ملتان پاکستان
10	المسند	امام ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
11	صحيح البخارى	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۸ھ
12	الأدب المفرد	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۰ھ
13	صحيح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
14	سنن ابن ماجه	امام ابن ماجہ محمد بن یزید قزوینی، متوفی ۲۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2009ء
15	سنن ابى داؤد	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2007ء
16	سنن الترمذى	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
17	سنن النسائى	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2009ء

www.dawateislami.net

18	السنن الکبریٰ	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۲۱ھ
19	المسند	حافظ ابویعلیٰ احمد بن علی تمیمی، متوفی ۳۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۲ھ
20	المسند	امام ابوعوانہ یعقوب بن اسحاق اسفرائینی، متوفی ۳۱۶ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
21	صحیح ابن حبان	امام ابوحاتم محمد بن حبان، متوفی ۳۵۴ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۵ھ
22	المعجم الاوسط	امام ابوقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالفکر عمان ۱۴۲۰ھ
23	المعجم الکبیر	امام ابوقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت 2007ء
24	المستدرک علی الصحیحین	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۷ھ
25	السنن الکبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
26	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت 2008ء
27	فردوس الأخبار	ابوشجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالکتاب العربی ۱۴۰۷ھ

www.dawateislami.net

28	تتمہ جامع الاصول	امام مجد الدین ابو سعادات مبارک بن محمد ابن اثیر جزری، متوفی ۶۰۶ھ	دار الفکر بیروت
29	المطالب العالیۃ بزوائد المسانید الثمانیۃ	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار العاصمہ عرب شریف ۱۴۱۹ھ
30	کنـز العمال	علاء الدین علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
31	فتح الباری	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار السلام عرب شریف ۱۴۲۱ھ
32	ارشاد الساری	امام شہاب الدین ابو عباس احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ
33	مرقاۃ المفاتیح	شیخ ابو الحسن علی بن سلطان محمد قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2007ء
34	مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات

सियर, तारीख़ व मग़ाज़ी

35	السیرۃ النبویۃ	ابو بکر محمد بن اسحاق مدنی، متوفی ۱۵۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
36	کتاب المغازی	ابو عبد اللہ امام محمد بن عمر واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	عالم الکتب بیروت ۱۴۰۴ھ
37	السیرۃ النبویۃ	ابو محمد جمال الدین عبد الملک بن ہشام حمیری، متوفی ۲۱۳ھ	دار الفجر مصر ۱۴۲۵ھ

www.dawateislami.net

38	الطبقات الکبریٰ	ابو عبد اللہ محمد بن سعد ہاشمی بغدادی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۰ھ
39	شرف المصطفٰی	ابو سعد عبد الملک بن ابو عثمان نیشاپوری، متوفی ۴۰۶ھ	دار البشائر الاسلامیہ ۱۴۲۴ھ
40	دلائل النبوة	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دار النفائس بیروت ۱۴۰۶ھ
41	معرفة الصحابة	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الوطن عرب شریف ۱۴۱۹ھ
42	دلائل النبوة	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
43	الاستيعاب في معرفة الاصحاب	ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الجیل بیروت ۱۴۱۲ھ
44	تاريخ مدينة دمشق	ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
45	الروض الأنف	ابو قاسم عبد الرحمن بن عبد اللہ سُہیلی، متوفی ۵۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
46	الوفا باحوال المصطفٰی	جمال الدین عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	المکتبة العصریہ بیروت ۱۴۳۲ھ
47	صفة الصفوة	جمال الدین عبد الرحمن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۷ھ

www.dawateislami.net

48	أسد الغابة في معرفة الصحابة	ابو حسن علی بن محمد ابن اثیر جزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
49	الكامل فی التاریخ	ابو حسن علی بن محمد ابن اثیر جزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۷ھ
50	عیون الاثر فی فنون المغازی والسیر	حافظ ابو فتح محمد بن محمد بن محمد یعمری، متوفی ۷۳۴ھ	مکتبہ دار التراث المدینۃ المنورہ
51	الاکمال في أسماء الرجال	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۸ھ
52	سیر أعلام النبلاء	ابوعبد اللہ محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۰۵ھ
53	البداية والنهاية	ابو فداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۶ھ
54	امتاع الأسماع	تقی الدین ابو عباس احمد بن علی مقریزی، متوفی ۸۴۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
55	الاصابة في تمييز الصحابة	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	المکتبۃ التوفیقیہ مصر
56	تاريخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ 2008ء
57	المواهب اللدنية	امام شہاب الدین ابو عباس احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2009ء

www.dawateislami.net

58	سبل الھدی والرشاد	امام محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ	لجنۃ احیاء التراث الاسلامی ۱۴۱۸ھ
59	تاریخ الخمیس	شیخ حسین بن محمد بن حسن دیار بکری، متوفی ۹۶۶ھ	موسسۃ شعبان بیروت
60	السیرۃ الحلبیہ	نور الدین علی بن ابراہیم حلبی، متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
61	مدارج النبوۃ	شیخ محقق شاہ عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	النوریۃ الرضویہ لاہور 1997ء
62	شرح الزرقانی علی المواہب	ابو عبد اللہ محمد بن عبد الباقی زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
63	سیرتِ سیّد الانبیاء	شیخ کبیر علامہ محمد ہاشم ٹھٹھوی، متوفی ۱۱۷۴	مظہر علم لاہور ۱۴۲۱ھ
64	شانِ حبیب الرحمٰن	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
65	اجمال ترجمہ اکمال	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
66	سیرتِ مصطفٰے	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفٰی اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
67	فیضانِ خدیجۃ الکبریٰ	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ

www.dawateislami.net

अक़ाइद, फ़िक़्ह व फ़तावा

68	جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	قادری پبلشرز لاہور 2003ء
69	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنّت ابوبلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
70	نهاية المطلب	امام الحرمین عبد الملک بن عبد اللہ جوینی، متوفی ۴۷۸ھ	دار المنہاج عرب شریف ۱۴۲۸ھ
71	احیاء علوم الدین	حجۃ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ 2008ء
72	الایضاح فی مناسک الحج والعمرة	امام محی الدین یحییٰ بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار البشائر الاسلامیہ ۱۴۱۴ھ
73	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
74	جنتی زیور	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
75	پردے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنّت ابوبلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
76	رفیق المعتمرین	امیر اہلسنّت ابوبلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
77	وضو کے بارے میں وسوسے اور ان کا علاج	امیر اہلسنّت ابوبلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

78	اسلامی بہنوں کی نماز	امیرِ اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
79	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
80	فتاوی ملک العلماء	ملک العلماء مفتی محمد ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ	شبیر برادرز لاہور ۱۴۲۶ھ

कुतुबे अश्आर

81	نورِ ایمان	مولانا محمد عبد السمیع بیدل رامپوری، متوفی ۱۳۱۷ھ	دار الاسلام لاہور ۱۴۳۳ھ
82	ذوقِ نعت	شہنشاہِ سخن مولانا حسن رضا خان، متوفی ۱۳۲۶ھ	شبیر برادرز لاہور ۱۴۲۸ھ
83	حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
84	دیوانِ سالک	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
85	ماہنامہ نعت لاہور (کافی کی نعت)	علامہ کفایت علی کافی شہید، متوفی ۱۸۵۷ء	راجا رشید محمود اکتوبر 1995ء
86	کلیاتِ اقبال	شاعرِ مشرق ڈاکٹر محمد اقبال، متوفی 1938ء	استقلال پریس لاہور ۱۴۱۰ھ
87	بہارِ عقیدت	سیّد محمد مرغوب اختر الحامدی	
88	برہانِ رحمت	محمد عبد القیوم طارق سلطانپوری	رضا اکیڈمی لاہور ۱۴۲۵ھ
89	شاہنامۂ اسلام	ابو الاثر حفیظ جالندھری	الحمد پبلی کیشنز 2006ء
90	وسائلِ بخشش	امیرِ اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ

www.dawateislami.net

मुतफ़र्रिक़ कुतुब

91	الصلات والبشر	شیخ الاسلام مجد الدین محمد بن یعقوب فیروز آبادی، متوفی ۸۱۷ھ	مکتبہ اشاعۃ القرآن لاہور
92	القول البدیع	امام شمس الدین محمد بن عبد الرحمن سخاوی، متوفی ۹۰۳ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۰۵ھ
93	الجوھرۃ فی نسب النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم	محمد بن ابو بکر انصاری تلمسانی، متوفی ۶۴۵ھ	دار الرفاعی عرب شریف ۱۴۰۳ھ
94	نسب قریش	ابو عبد اللہ مصعب بن عبد اللہ، متوفی ۲۳۶ھ	دار المعارف قاہرہ
95	نسب معد والیمن الکبیر	ابو منذر ہشام بن محمد بن سائب کلبی، متوفی ۲۰۴ھ	عالم الکتب ۱۴۰۸ھ
96	معجم البلدان	شہاب الدین یاقوت بن عبد اللہ حموی، متوفی ۶۲۶ھ	دار صادر بیروت ۱۳۹۷ھ
97	جامع العلوم والحکم	حافظ عبد الرحمن بن شہاب الدین ابن رجب بغدادی، متوفی ۷۹۵ھ	مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۱۹ھ
98	صحابۂ کرام کا عشقِ رسول	مولانا محمد اکرم رضوی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
99	شفاءُ القلوب	مولانا محمد نبی بخش حلوائی	مکتبہ نبویہ لاہور ۱۴۲۷ھ
100	غفلت	امیر اہلسنّت ابو بلال محمد الیاس عطّار قادِری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
101	شرح کلامِ رضا	مفتی غلام حسن قادِری	مشتاق بک کارنر لاہور
102	رسائل نعیمیہ	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
103	لسان العرب	جمال الدین ابو فضل محمد بن مکرم افریقی، متوفی ۷۱۱ھ	کوئٹہ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारिये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आमात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-425-7
0125183

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E-mail : ilmiapak@dawateislami.net